सिंघी जैन ग्रन्थ-माला

[ग्रन्थाङ्क ५३]

संस्थापक

स्व० श्रीमद् बहादुर सिंहजी सिंघी

संरक्षक

श्री राजेन्द्र सिंह सिंघी तथा श्री नरेन्द्र सिंह सिंघी

प्रधान सम्पादक तथा सञ्चालक

आचार्य जिन विजय मुनि

भिन्न भिन्न गच्छीय ऐतिहासिकवृत्तविषयक

विविध गच्छीय पट्टावली संग्रह

[प्रथम भाग]

संपादन कर्ता

पुरातत्त्वाचार्य, पद्मश्री, जिन विजय मुनि

अधिष्ठाता – सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ, भारतीय विद्या भवन, बम्बई।

[प्रकाशनकर्ता]

सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ

भारतीय विद्या भवन, बम्बई ७

२०१७] [मूल्य रु १३.५०

स्वर्गवासी साधुचरित श्रीमान् डालचन्दजी सिंघी

बाबू श्री बहादुर सिंहजी सिंघीके पुण्यश्लोक पिता

जन्म-वि. सं. १९२१ मार्ग वदि ६ 卐 स्वर्गवास-वि. सं. १९८४ पोष सुदि

दानशील - साहित्यरसिक - संस्कृतिप्रिय

स्व० बाबू श्री बहादुर सिंहजी सिंघी

अजीमगंज-कलकत्ता

जन्म ता २८-६-१८८५] [मृत्यु ता ७-७-१९४४

सिंघी जैन ग्रन्थ माला

[ग्रन्थांक ५३]

अनेकविद्वत्सग्रथित - प्राकृत, सस्कृत, देशभाषा - निबद्ध
भिन्न भिन्न गच्छीय ऐतिहासिकवृत्तविषयक

विविध गच्छीय पट्टावली संग्रह

— [प्रथम भाग] —

SINGHI JAIN SERIES

[NUMBER 53]

VIVIDHA-GACCHĪYA-PAṬṬĀVALI-SAMGRAHA

A Collection of historical records comprising the account of successions of the Jainācharyas belonging to various traditional monastic lineages and their different branches

कलकत्तानिवासी

साधुचरित-श्रेष्ठिवर्य श्रीमद् डालचन्दजी सिंघी पुण्यस्मृतिनिमित्त

प्रतिष्ठापित एवं प्रकाशित

सिंघी जैन ग्रन्थमाला

[जैन आगमिक, दार्शनिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, कथात्मक-इत्यादि विविधविषयगुम्फित प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, प्राचीनगूर्जर, राजस्थानी आदि नाना भाषानिबद्ध सार्वजनीन पुरातन वाङ्मय तथा नूतन संशोधनात्मक साहित्य प्रकाशिनी सर्वश्रेष्ठ जैन ग्रन्थावलि]

प्रतिष्ठाता

श्रीमद्-डालचन्दजी-सिंघीसत्पुत्र

स्व० दानशील-साहित्यरसिक-संस्कृतिप्रिय

श्रीमद् बहादुर सिंहजी सिंघी

प्रधान सम्पादक तथा संचालक

आचार्य जिनविजय मुनि

अधिष्ठाता, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ

निवृत्त ऑनररि डायरेक्टर

भारतीय विद्या भवन, बम्बई

*

ऑनररी फाउंडर-डायरेक्टर

राजस्थान ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, जोधपुर (राजस्थान)

ऑनररी मेंबर-जर्मन ओरिएण्टल सोसाइटी, जर्मनी भाण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना (दक्षिण), गुजरात साहित्यसभा, अहमदाबाद (गुजरात) विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध प्रतिष्ठान होशियारपुर (पंजाब) इत्यादि।

*

संरक्षक

श्री राजेन्द्र सिंह सिंघी तथा श्री नरेन्द्र सिंह सिंघी

व्यवस्थापक

अधिष्ठाता, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ

भारतीय विद्या भवन, बम्बई

प्रकाशक-ज. ह. दवे ऑनररी डायरेक्टर, भारतीय विद्या भवन, बम्बई नं. ७

मुद्रक-छोटालाल मगनलाल शाह, मनोरथ प्रिंटरी, टंकसाल अहमदाबाद

अनेकविद्वत्सग्रथित - प्राकृत, सस्कृत, देशभाषा - निबद्ध

भिन्न भिन्न गच्छीय ऐतिहासिकवृत्तविषयक

विविध गच्छीय पट्टावली संग्रह

—[प्रथम भाग]—

(अनेक प्राचीनलिखित पुस्तकानुसार संकलित एव सपादित)

❀

संपादन कर्ता

पुरातत्त्वाचार्य, पद्मश्री, जिन विजय मुनि

अधिष्ठाता - सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ, भारतीय विद्या भवन, बबई।

तथा

सम्मान्य अध्यक्ष - राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राजस्थान)

प्रधान सपादक - राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

अध्यक्ष - राजस्थान इतिहास सपादक मडल, जयपुर

प्रकाशनकर्ता

अधिष्ठाता, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ

भारतीय विद्याभवन, बम्बई

विक्रमाब्द २०१७] प्रथमावृत्ति [खिस्ताब्द १९६१

ग्रन्थांक ५३]

[मूल्य रु० १३/३०

SINGHI JAIN SERIES

अद्यावधि मुद्रितग्रन्थ नामावलि

१ मेरुतुङ्गाचार्यरचित प्रबन्धचिन्तामणि मूल संस्कृत ग्रन्थ
२ पुरातनप्रबन्धसंग्रह बहुविध ऐतिह्यतथ्यपरिपूर्ण अनेक प्राचीन निबन्ध संचय
३ राजशेखरसूरिरचित प्रबन्धकोश
४ जिनप्रभसूरिकृत विविधतीर्थकल्प
५ मेघविजयोपाध्यायकृत देवानन्दमहाकाव्य
६ यशोविजयोपाध्यायकृत जैनतर्कभाषा
७ हेमचन्द्राचार्यकृत प्रमाणमीमांसा
८ भट्टाकलङ्कदेवकृत अकलङ्कग्रन्थत्रयी
९ प्रबन्धचिन्तामणि – हिन्दी भाषांतर
१० प्रभाचन्द्रसूरिरचित प्रभावकचरित
११ सिद्धिचन्द्रोपाध्यायरचित भानुचन्द्रगणिचरित
१२ यशोविजयोपाध्यायविरचित ज्ञानबिन्दुप्रकरण
१३ हरिषेणाचार्यकृत बृहत्कथाकोश
१४ जैनपुस्तकप्रशस्तिसंग्रह, प्रथम भाग
१५ हरिभद्रसूरिविरचित धूर्ताख्यान (प्राकृत)
१६ दुर्गदेवकृत रिष्टसमुच्चय (प्राकृत)
१७ मेघविजयोपाध्यायकृत दिग्विजयमहाकाव्य
१८ कवि अब्दुल रहमानकृत संदेशरासक (अपभ्रंश)
१९ भर्तृहरिकृत शतकत्रयादि सुभाषितसंग्रह
२० शान्त्याचार्यकृत न्यायावतारवार्तिक-वृत्ति
२१ कवि धाहिलरचित पउमसिरीचरिउ (अप०)
२२ महेश्वरसूरिकृत नाणपंचमीकहा (प्रा०)
२३ श्रीभद्रबाहुआचार्यकृत भद्रबाहुसंहिता
२४ जिनेश्वरसूरिकृत कथाकोषप्रकरण (प्रा०)
२५ उदयप्रभसूरिकृत धर्माभ्युदयमहाकाव्य
२६ जयसिंहसूरिकृत धर्मोपदेशमाला (प्रा०)
२७ कोऊहलविरचित लीलावइ कहा (प्रा०)
२८ जिनदत्ताख्यानद्वय (प्रा०)
२९ ३० ३१ स्वयंभूविरचित पउमचरिउ भाग १ २ ३ (अप०)
३२ सिद्धिचन्द्रकृत काव्यप्रकाशखण्डन
३३ दामोदरपण्डित कृत उक्तिव्यक्तिप्रकरण
३४ भिन्नभिन्न विद्वत्कृत कुमारपालचरित्रसंग्रह
३५ जिनपालोपाध्यायरचित खरतरगच्छ बृहद् गुर्वावलि
३६ उद्द्योतनसूरिकृत कुवलयमाला कहा (प्रा०)
३७ गुणपालमुनिरचित जंबुचरिय (प्रा०)
३८ पूर्वाचार्यविरचित जयपायड-निमित्तशास्त्र (प्रा०)
३९ भोजनृपतिरचित शृङ्गारमञ्जरी (संस्कृत कथा)
४० धनसारगणीकृत-भर्तृहरिशतकत्रयटीका
४१ कौटल्यकृत अर्थशास्त्र सटीक (कतिपयअंश)
४२ विज्ञप्तिलेखसंग्रह विज्ञप्तिमहालेख-विज्ञप्तित्रिवेणी आदि अनेक विज्ञप्तिलेख समुच्चय
४३ महेन्द्रसूरिकृत नर्मदासुन्दरीकथा (प्रा०)
४४ हेमचन्द्राचार्यकृत-छन्दोऽनुशासन
४५ वस्तुपालगुणवर्णनात्मक काव्यद्वय कीर्तिकौमुदी तथा सुकृतसंकीर्तन
४६ सुकृतकीर्तिकल्लोलिनीआदि वस्तुपालप्रशस्तिसंग्रह
४७ विविधगच्छीय पट्टावलिसंग्रह
४८ जयसोमविरचित मन्त्रीकर्मचन्द्रवंशप्रबन्ध

•

Shri Bahadur Singh Singhi Memoirs

Dr G H Buhler's Life of Hemachandrāchārya
Translated from German by Dr Manilal Patel, Ph D

1 स्व बाबू श्रीबहादुरसिंहजी सिंघी स्मृतिग्रन्थ [भारतीयविद्या भाग ३] सन १९४५
2 Late Babu Shri Bahadur Singhji Singhi Memorial Volume BHARATIYA VIDYA [Volume V] A D 1945
3 Literary Circle of Mahāmātya Vastupāla and its Contribution to Sanskrit Literature By Dr Bhogilal J Sandesara, M A, Ph D (S J S 33)
4-5 Studies in Indian Literary History Two Volumes By Prof P K Gode, M A (S J S No 37-38)

———

संप्रति मुद्यमाणग्रन्थनामावलि

१ जैनपुस्तकप्रशस्तिसंग्रह भाग २
२ गुणप्रभाचार्यकृत विनयसूत्र (बौद्धशास्त्र)
३ रामचन्द्रकविरचित मल्लिकामकरन्दादिनाटकसंग्रह
४ जयपायड तथा चूडामणि शास्त्र
५ तरुणप्रभाचार्यकृत षडावश्यकबालावबोधवृत्ति
६ प्रद्युम्नसूरिकृत मूलशुद्धिप्रकरण-सटीक
७ कुवलयमाला कथा, भाग २
८ सिंहतिलकसूरिरचित मन्त्रराजरहस्य

विविधगच्छीय पट्टावलीसंग्रह ।

चदगच्छिअसिरिअजियसिंहसूरिविरइया

ग ण ह र स त्त री ।

सिरिवद्धमाण माणवदाणवअमरिंदवंदिय जिणिंद ।
तुह संताण ताणं जंतूण दूसमसमाए ॥ १

तित्थाहिवो सुहम्मो लहुकम्मो गरिमगयणसंकासो ।
वीरेण मज्झिमाए संठविओ अग्गिवेसाणो ॥ २

तेण वि जंबुमुणिंदो कासवगोत्तो विसुक्कमाणिक्को ।
ठविओ केवलनाणी अपच्छिमो वीरतित्थम्मि ॥ ३

कच्चायणो य पभवो पट्टे तस्सासि पसरियपयावो ।
सेजंभवो य वच्छो जसभद्दो तुंगियसगुत्तो ॥ ४

तस्स य सीसो पढमो पायन्नो भद्दबाहुनामेण ।
बीओ अंतेवासी संभूओ माढरसगोत्तो ॥ ५

गोदासे अग्गिदत्ते य जन्नदत्ते य कासवे ।
कासवा य इमे सीसा सिरिमंभद्दबाहुणो ॥ ६

तामलित्ती तओ साहा कोडीवरिसा अहावरा ।
साहा खवडिया नाम चउत्थी पुंडवद्धिणी ॥ ७

गोदासगच्छसंभूया चउरो साहा इमा तया ।
संभूयविजयस्सेए सीसा बारस ते जहा ॥ ८

नंदणभद्दे य भद्दे य तह चेव य तीसभद्द–जसभद्दे।
थेरे य सुमणभद्दे मणिभद्दे पुन्नभद्दे य ॥ ९
थेरे य थूलभद्दे उज्जमई अज्जजवुनामे य।
थेरे य दीहभद्दे थेरे तह पड्डुभद्दे य ॥ १०

अज्जमहागिरिगरुओ अज्जसुहत्थी य हत्थिसोंडीरो।
सिरिथूलभद्दगुरुणो दो सीसा पयंडमाहप्पा ॥ ११
उत्तर-थेरवलिस्सह थेरधणड्ढे तहा सिरिड्ढे य।
कोडिन्न नागमित्ते नागे तह छलुगनामे य ॥ १२
गिरिगरुयमहागिरिणो गुणिणो सीसा इमे तया अट्ठ।
उत्तरवलिस्सहगच्छे साहा चउरो इमा नेया ॥ १३
सोत्तिमई[1] य कोसंबी[2] साहा तो चंदनागरी[3]।
कोडिधाणी[4] चउत्थी य साहा देविंदपूइया ॥ १४
पढमेत्थ अज्जरोहण भद्दजसे महगणी य कामड्ढी।
सुट्ठिय–सुप्पडिबुद्धे रक्खिय तह रोय(ह)गुत्ते य ॥ १५
इसिगुत्ते सिरिगुत्ते गणी य बंभे गणी य महसोमे।
दस दो य गणहरा खलु एए सीसा सुहत्थिस्स ॥ १६

कासववससमुब्भवरोहणगुरुणो गणम्मि उद्देहे।
चउसाह कुला छच्च उ वन्निज्जती इमे पयड ॥ १७
उडवरक्खिया साहा सोमपुरिसा तहावरा।
महुरज्जी तओ होइ साहा सोवन्नवत्तिया ॥ १८
पढमेत्थ नायभूय बीय पुण सोमभूईय होइ।
अवणेलय च तइय चउत्थय हत्थिलिज्ज तु ॥ १९
पचमय नदिज्ज छट्ठ पुण वारिहम्मिय होइ।
उद्देहगणस्स एए छच्च कुला हुति नायव्वा ॥ २०

साएयगुत्त-सिरिगुत्तसूरिणो चारणगणम्मि उप्पन्ने ।
ससुरासुरभुवणेसरा नायजिणिंदस्स तित्थम्मि ॥ २१
ह्यारिय-मालागारिय सकासिय पुणो तया(ह्या) ।
गवेहुया तहा साहा चउत्थी वज्जनागरी ॥ २२
पढमं च वच्छलिज्ज वीय पुण पीइधम्मिय होइ ।
तइयं पुण ह्यालिज्ज चउत्थय पूसमित्तिज्जं ॥ २३
पंचमय मालिज्जं छट्ठ पुण अज्जचेडग होइ ।
सत्तमयं कन्नसह सत्त कुला चारणगणस्स ॥ २४
तह उड्ढवाडियगणो भारद्दसमाणगुत्तभद्दजसा ।
चउरो साहा तम्मि य तिन्नि कुलाइ च वोच्छामि ॥ २५
तत्थ चपज्जिया साहा वीया भद्दिज्जिया तथा ।
कागिंदिया तओ वुत्ता चउत्थी महिलज्जिया ॥ २६
कुले भद्दजसे नाम भद्दगुत्ते य आहिए ।
तइए य जसोभद्दे गोयमेण पससिए ॥ २७
माणवगणम्मि रम्मे इसिगुत्ताणं सुसीसजुत्ताणं ।
चउरो साहा वुत्ता तिन्नि कुलाइ च विउलाइ ॥ २८
साहा य कसविज्ज त्ति विन्नेया गुत्तमिज्जिया ।
वासट्ठिया तओ होइ सोवीरी य पुणो तथा ॥ २९
इसिगुत्तिय थ पढमं वीय सिरिगुत्तिय मुणेयव्व ।
तइय च अभिजयतं तिन्नि कुला माणवगणस्स ॥ ३०
सुट्ठिय-सुप्पडिवुद्धा कोडियकागदगोत्तमसगोत्ता ।
कोडियगण त्ति गच्छे विणिग्गया तेसिमा साहा ॥ ३१
उच्चानागर विज्जाहरी य वयरी य मज्झिमाछा य ।
कोडियगणस्स एया हवति चत्तारि साहाओ ॥ ३२
कुलमित्थ वभणिज्ज वीय नामेण वच्छलिज्ज तु ।
तइयं पुण वाणिज्ज चउत्थय पन्नवाहणयं ॥ ३३

अज्जदिन्ने य थेरे य पियगथे तहेव य ।
विज्जाहरे य गोवाली इसिदत्ते मुणीसरे ॥ ३४

सुट्ठिय सुपडिबुद्धयमुणिंदसीसा इमे य पन्नत्ता ।
पियगथमुणिंदाओ मज्झिमसाहा य विन्नेया ॥ ३५

विज्जाहरगोवालियगुरूण विज्जाहरी तओ साहा ।
सुरविहियपाडिहेरा तिहुयणविक्खायमाहप्पा ॥ ३६

अज्जदिन्नसुसीसस्स चददिन्नस्स सूरिणो ।
सनिमेणे तया(हा) सीसे थेरे सीहगिरी वि य ॥ ३७

सतिसेणमुणिंदाओ साहया उच्चनागरी ।
सातिसेणस्स सूरिस्स विणेया चउरो इमे ॥ ३८

सेणीए तावसे चेव कुबेरे इसिपालिए ।
एएसिं च जहासख साहा पढम सेणिया ॥ ३९

तावसी य कुबेरी य चउत्थी इसिपालिया ।
गुरुसीहगिरीणेए चउरो थेरा य निस्सुया ॥ ४०

धणगिरी पायडे तत्थ अज्जवयरे महारिसी ।
माउले समिए तस्स अरिहदिन्ने य सूरिणो ॥ ४१

अज्जसमियाउ तो साहा जाया बभगदीवगा ।
गोयमगोत्ताओ वयराओ वयरसाहा विणिग्गया ॥ ४२

वयरे तिन्नि सीसा उ पढमे वेरसेणए ।
अज्जपउमे तओ सूरी अज्जअरिहे तहेव य ॥ ४३

वयरसेणाउ जा साहा सा वुत्ता अज्जनाइला ।
अज्जपउमा पुणो साहा अज्जपउमाउ निग्गया ॥ ४४

अज्जअरिहजा साहा जयती जगपायडा ।
अज्जअरिहस्स सीसो उ सूरी पूसगिरी तओ ॥ ४५

सिरिपूसगिरी सीसे थेरे जे फग्गुमित्तए ।
गोयमे सेयगुत्तेणं वंदणिज्जे सुराण वि ॥ ४६

वंदामि लोयपयडं नामेणं धणगिरि च वासिट्ठं ।
सिवभूइगोच्छगोत्तं कोसिय दोजन्तकन्ने य ॥ ४७

त वदीऊण सिरसा वत्सं वंदामि कासवसगोत्त ।
निक्खं कासवगोत्त रिक्खपि च यासव वंदे ॥ ४८

वंदामि अज्जनागं च गोयमं जिट्ठिलं च वासिट्ठ ।
विण्हुं माढरगोत्तं कालयमवि गोयम वदे ॥ ४९

गोयमगोत्तकुमार सव्वलगं चेव भद्दय वदे ।
थेर च अज्जवुड्ढ गोयमगोत्त नमसामि ॥ ५०

तं वदीऊण सिरसा थिरसत्तचरित्तनाणसपन्नं ।
थेर च सघपालिय गोयमगोत्तं नमसामि ॥ ५१

मिउमद्दवसपन्न उवउत्त नाणदसणचरित्ते ।
गणथेर दिन्न पि य कासवगोत्तं पणिवयामि ॥ ५२

तत्तो य थिरचरित्त उत्तमसमत्तसत्तसजुत्तं ।
दूसगणिखमासमण माढरगोत्तं नमसामि ॥ ५३

तत्तो अणुओगधर वंदे सइसागर महासत्तं ।
सिरिगोत्तखमासमण वच्छसगोत्तं पणिवयामि ॥ ५४

तत्तो कासवगोत्त सुट्ठियनाम मुणिंदमुहतिलयं ।
थेरं कुमारधम्म देवड्ढिं गणहरं वंदे ॥ ५५

एसा गणहरसेणी दसासुयखधगथओ भणिया ।
संपइ नदिऽणुसारा सुहात्थिवसाउ पयडेमि ॥ ५६

गणहरसुहत्थिसीसो बहुलस्स सरिव्वओ उ कोसियओ ।
साई नामेण गुरू हारियगोत्तो तओ जाओ ॥ ५७

तग्गुत्ते सामज्जो कोसियगुत्तम्मि तयणु सडिल्लो ।
अज्जसमुद्दमुणिदो मगू तह अज्जधम्मो य ॥ ५८

भद्दगुत्तो गणाहीसो वयरसामी य रक्खिओ ।
अणुयोगधरा एए पायडा जिणसासणे ॥ ५९

अज्जो नंदिलसूरी सूरी सिरिअज्जनागहत्थी य ।
इंदीवरदलकंती रेवयनामो गणहरिंदो ॥ ६०

बंभगदीवगगुरुणो अयलपुराओ पुरीउ निक्खंता ।
खंदिलसूरिमहप्पा हिमगिरिगुरुओ य हिमवंतो ॥ ६१

नागुज्जणमुणिनाहो गोविंदरिसी य भूयदिन्नरिसी ।
लोहिच्चो समयधरो दूसगणी दूसमविहूणो ॥ ६२

नियगुरुउवएसाओ साहाण उच्चनागराईण ।
पुव्वुत्ताण सरूवं किं पि अह वन्नइस्सामि ॥ ६३

उच्चानागरयाण साहूण कोडिओ गणो नेओ ।
उच्चानागर साहा एएसिं बंभसेज्ज कुलं ॥ ६४

विज्जाहराण तग्गण विज्जाहर साह वच्छलिज्ज कुलं ।
नाइलचंदुद्देहियनिव्वुइवंधूण सोपारे ॥ ६५

तस्संताणम्मि तहा कोडिय गण वयरसाह अह साहा ।
तेसिं वाणिज्ज कुलं जहत्थनामं तया जायं ॥ ६६

चंदकुलं वाणिज्जं एगट्ठा हुंति दो वि सद्दाए ।
जम्हा चंदस्स कुलं तदन्नवधूण य तमेव ॥ ६७

सिरिवयरसामिगणहरसमुब्भवं वइरसाहमाहु गुरू ।
केई पुण वइराओ खुड्डाओ वइरसाह त्ति ॥ ६८

मज्झिमसाहसमुब्भवसाहूण कोडियम्मि वरगच्छे ।
मज्झिमसाहा साहा तेसिं कुलं पन्नवाहणयं ॥ ६९

इय ससिगच्छविहूसणजयसिंघमुणिंदसीसमुहतिलया ।
सिरिविमलसूरिगणहरसीसा जे समयजलनिहिणो ॥ ७०

सिरिअजियसिंहसूरी गणहरसयरी इमेहिं किल लिहिया।
संताणजाणणत्थं सिरिमंतसुहम्मसामिस्स ॥ ७१

॥ गणहरसत्तरी जुगपहाणसत्तरी सताणसत्तरी वा समत्ता॥

卐 卐 卐

सवत् १२३७ माघ वदि ९ सोमे प० महादेवेन प्रकरणपुस्तिका लिखितेति।

उपकेशगच्छगुर्वावली

श्रीपार्श्वं नौमि सद्भक्त्या ब्रुवे गच्छपरम्पराम्।
पट्टानुक्रमशाख्यां च वक्ष्येऽह सद्गुणाधिकाम्॥
पासजिणेसरतित्थे केसी नामेण गणहरो पुव्वि।
तस्स सुसीसो सूरी सयपहो आसि सिरमाले॥
सिरियणप्पहसूरी तस्स विणेओ अ खेअरो तइया।
उवएसगच्छकंदो उवएसपुरम्मि विक्खाओ॥
उवएसे कोरंटे सत्तरिवरिसम्मि वीरमुक्खाओ।
इक्के लग्गम्मि जेण पइट्ठिय बिंबजुअलमिण॥

तत्या वत्सराणा चरमजिनपतेर्मुक्तिजा(या)तस्य माघे,
पञ्चम्या शुक्लपक्षे सुरगुरुदिवसे ब्रह्मण. सन्मुहूर्ते।
नाचार्यैरिहार्यैः प्रतिभगुणयुतैः सर्वसङ्घानुयातैः,
श्रीमद्वीरस्य बिम्बे भवसितुमथने निर्मिताऽत्र प्रतिष्ठा॥
का च सुरी श्रेष्ठा कृता स्वदर्शने दृढा। गच्छाधिष्ठायिका जाता देवी श्रीजिनशासने॥
 चापि कोरण्टे तथा च वल्लभीपुरे। स्तम्भतीर्थे च सजाताः शाखाश्चत्वारि ता इमाः॥
ीमदुपकेशगच्छे ककुदाचार्यीयप्रवरसन्ताने। श्रीकक्कसूरिसुगुरुश्चक्रेश्वर्याज्ञया जातः॥
ीकक्कसूरिसुपट्टे गच्छभारधुरन्धर। श्रीसिद्धसूरिः सजातो भुवनत्रयपावनः॥
ालङ्कारगणभृत्सूरिश्रीदेवगुप्तस्य। गच्छाधिष्ठायिकादेव्या दत्त नामत्रय तदा॥ १
धुभिः पञ्चशताभिः सच्चारित्रविभूषितैः। सत्पाठकसप्तयुतैर्वाचनाचार्यभिर्मिश्रैः॥ १
द्वादशसङ्ख्यासहितैर्गुरुपदभक्त सदा गणेशयुगम्।
त्रितय वा युग्मद्विक, महत्तरायाश्च युग्मवरम्॥ १

ाः सप्तशत, प्रवर्त्तिन्या द्वादशा सदा गच्छे ।
श्राद्धाना गोत्राणि, त्रिंशन्मात्राणि गच्छेऽस्मिन् ॥ १३

ा गोत्राणि, सच्चिकादेविपूजनपराणि ।
द्वादश गोत्राणि तथा, चक्रेश्वर्याश्च भक्तानि ॥ १४

: ये च श्राद्धा अम्बोत्सुप्राह्लासुरीभक्ता ।
जीउल्यानागसुरी येषा कुले गोत्रदेव्यभूत् ॥ १५

स्मिन् गणे सूरीश्वरैकोऽपि सकलगणनाथ ।
ध्याया वरवचनात् सङ्घाज्ञयैव चेदृश सुकृतम् ॥ १६

क्रमतो नामत्रितय स्थाप्यते जनैः । कक्कसूरेश्चाभिधान गणद्वयविराजितम् ॥ १७

त-दिनकर १२६६ वर्षे, मासे मधुमाधवे च सञ्ज्ञायाम् ।
ताता द्विवन्दनीका , श्रीमत्श्रीसिद्धसूरिवरा. ॥ १८

गच्छाद् गृहीतः सामाचारीति सूरिमन्त्रवर ।
परमेष्ठिपदोच्चारणगृहीतनियत प्रतिक्रमणे ॥ १९

ास्तु ते जाता द्वादशावर्तवन्दनासमये। वैराग्यरङ्गसागरसत्सूत्रे सावधानास्ते ॥ २०

र होईति मङ्गल च द्विवन्दनम्। नोपधान न मालापि गच्छेऽस्मिन्नीदृशी क्रिया ॥ २१

णे पूर्वमुपाध्यायशिरोमणि' । शालिभद्रस्ततो माणिभद्रो देवप्रभुस्तत' ॥ २२

तोऽप्यासीत् श्रीमद्देवयशास्तत । ततो भुवनचन्द्राख्यः श्रीरत्नतिलकस्तत' ॥ २३

सिद्धसूरौ ततो जाते श्रीचन्द्रो वाचकोऽभवत् ।
शुभकीर्त्तिस्ततोऽप्यासीत् जयादितिलकोऽपि च ॥ २४

द्धान्तपारीण सोमप्रभमुनीश्वर' । कलाकलापसम्पूर्णो धर्मनामाऽभवत्ततः ॥ २५

त्रिशृङ्गमाख्ये सद्ग्रामे, महीपालस्थिते प्रभौ ।
खरतपाविरुद जात वस्वभ्राग्न्येक १३०८ वर्षे च ॥ २६

ततोऽपि द्वितीयसजाता शाखा सन्मुनिसयुता।
स्वा साधिकारसम्पूर्णा कथ्यतेऽत्र प्रसङ्गत ॥ २७

देन्द्रियरुद्रकालजनित ११५९ पक्षोऽस्ति पूर्णाभिधः,
वेदाभ्रारुण १२०४ काल उष्ट्रिकभवो, विश्वार्क १२१४ कालेऽञ्चल ।
ार्केषु १२३६ च साधुपूर्णिम इति व्योमेन्द्रियार्के १२५० पुनः,
वर्षे त्रिस्तुतिकोऽक्षमङ्गलरवौ १२८५ गाढग्रहास्तापसाः ॥ २८

ाखाङ्कुरा गणभृतोऽस्य बभूविरे ते, नागेन्द्र इत्यमलकीर्त्तिनदीनगेन्द्रः ।
न्द्रस्ततश्च भगवानथ निर्वृतिश्च, विद्याधरश्च भुवि विश्रुतनामधेयाः ॥
तेषु चन्द्र इति सूरिपुरन्दरो यस्तस्य प्रफुल्लगुणगच्छवनस्य गच्छे ।
यांस एव भुवनत्रयवन्दनीया' सजज्ञिरे गणधरा गणिनो धरायाम् ॥ ३
ौतमाग्रहमात्रेण श्वेताम्बर गृहीतवान् । केसीकुमारगुरुणा व्रत पञ्चम जगृहे ॥ ३
च द्विविधा ज्ञेया पार्श्व-वीरसमुद्भवा । परम्परा कृता चैका ज्ञातव्या सर्वदा बुधैः॥ ३
ाले हीयमाने शाखा जाता द्विधा पुनः । वसुनन्दवेदेन्दुके १४९८ वर्षे शाखा पृथक्कृता॥ ३
ुप्तसूरीणा शिष्योऽपि मतिसागर' । तेनाभिमानमात्रेण, खदिरी शाखा कृता तदा ॥ ३
ीदेवगुप्तस्य पट्टे श्रीसिद्धसूरय. । तत्पट्टे कक्कसूरीशो भुवनत्रयदीपक ॥ ४
ण्यभिधानानि त्रीणि त्रीणि भवन्तीह । सत्सदाचारकुशला जयन्तु गुरवः सदा ॥ ४
ं पूर्वसूरीणां नाममात्रप्रभावत । कल्मष विलय याति कल्याण चोपतिष्ठति ॥ ४
ादप्रसादेन स्वल्पबुद्ध्या मयाऽधुना । व्याख्या प्रारभ्यते किञ्चित्, श्राद्धाना साधुसंसदि॥ ४
स्तु गुरुचन्द्राय यत्करः स्पृष्टमूर्द्धनि । आविर्भवति भवेऽस्मिन्नपि वाक्यसुधारसः ॥ ४
ुतिरेव सद्गुरूणा पठन्ति शृण्वन्ति ये च भावेन ।
लभते (?) शिवपदसौख्य भव्यास्ते नास्ति सन्देह ॥ ४

॥ इति उपकेशगच्छगुर्वावली समाप्ता ॥

आगमिकगच्छीयपट्टावली ।

ुण्याऽऽस्पद गणभृतोऽन्तिमतीर्थभर्तुरेकादशात्रिदशचन्द्यपदा बभूवुः ।
ुर्योत्तरोऽभवदमीषु पुनः सुधर्मा यस्यान्वयोऽयमवनीमभितः पुनीते ॥
कुन्देन्दुसुन्दरमहासि यशासि यस्य, विश्वत्रयी धवलयन्ति किमत्र चित्रम् ? ।
मिथ्यादृशा मलिनयन्ति नयप्रशस्तिमेतत्पुनर्मनसि कस्य न कौतुकाय ॥
कम्बूज्ज्वलेन यशसा कलितश्च जम्बूस्वामी तदीयगणनायकतामवाप ।
कोट्यो नवतिराप्तनवाऽमुनाष्टौ वधू' प्रवव्रजिषुणा गणितास्तृणाय ॥
मन्यामहे ऋषभदत्तभुवो भुवीह सौभाग्यमप्यधिकमेव मुनीश्वरस्य ।
यस्मादमुं समधिगम्य गतेऽपि तस्मिन्नन्यापि नान्यमधिगच्छति केवलश्रीः ॥
तस्य प्रशस्यविभवः प्रभवो भवोपभेत्ता पदे प्रभव इत्यभवत् प्रसिद्धः ।
यो जैनशासनवनीनवनीरदश्री. रेजे यशोभिरभितो त्रिशकण्टकाभैः ॥
शय्यम्भवो भवपयोनिधिकुम्भजन्मा मन्मानपात्रमजनिष्ट पदे तदीये ।
य शासनावधिविसर्पिमहाश्रुताब्धेर्वैकालिक किल दशादिपद चकार ॥

पुरस्कृतयशाः क्रिययापि भद्रश्रीमानमेयमहिमाऽस्य पदे बभूव।
रीव ननु यः किल पञ्चगणपञ्चानन व्यवहारचरणप्रचारैः ॥ ७
तेपूर्वविजयो विजितान्तरारिर्वार्त्ता निरर्गलयशस्ततिरस्य पट्टे।
जिनागमपयोनिधिपूर्णचन्द्रो गोभिस्ततान कुमुद शिशिरोज्ज्वलाभिः॥ ८
द्रबाहुरिति मन्मथबाहुशक्तिमाथोन्मदस्तदपर प्रथितो बभूव।
ःपमावलिचतुर्दशपूर्वधारी धीमानभूदभयदुर्गमिव श्रुतस्य ॥ ९
ीस्थूलिभद्र इति मूलगुणानुकूल शीलव्रते शमवतामधिभूरतोऽभूत्।
ीमाऽभवद् भुवि चतुर्दशपूर्विणा यः स्वामीव केवलजुषामृषभप्रसूतिः॥ १०

वेणीदण्ड विधृत्योन्नतकुचकलशाग्रे च तत्पाणिमूल,
कोशया वेश्या विदेशानतपतिपुरतो दर्शयन्ती विभाति।
तच्चित्तोहापनोदव्यतिकरकरणव्याकुला कालकल्प,
हस्तेनेव सतीत्वाद् घटभुजगमिवाकर्षयन्ती प्रतीत्यै ॥ ११

कालः सोऽय प्रणयिनि मयि प्रेमकुटिलः, कटाक्ष कालिन्दीलघुलहरि यत्र प्रसरति।
नीमस्माक जरठकमठीपृष्ठिकठिना, मनोवृत्तिस्तत् किं व्यसनिनि मुधैव क्षिपयसि॥ १२
र्यो महागिरिरभूद् दशपूर्वधारी शिष्य सुहस्त्यपि च तस्य नमस्यधाम्नः।
भाषितेन भरतार्द्धमिद ततान धर्मैकतानमिह सम्प्रतिभूमिपाल ॥ १३
ाभवस्तदनु सुस्थित-सुप्रबुद्धमुख्याः क्रमेण दशपूर्वभृतो मुनीन्द्राः।
ा यशोभिरमलैर्धवलीकृतेषु विश्वेषु पर्यटति कृष्णदिदृक्षया श्रीः॥ १४
मानभिन्नदशपूर्वधरस्ततोऽभूद् वज्रो विनिर्जितपुरन्दररूपलक्ष्मी ।
ान्युपश्रुतिवशाच्छिशुरप्यपाठीदेकादशापि जिनशासनमण्डन यः॥ १५
ये न मातृवचनैरतिदीनदीनैः स्निग्धाङ्गनार्थनगिरा न हि यौवनेऽपि।
सभ्यैरपि चचाल मनो न यस्य तस्मै नमोऽस्तु दशपूर्वभृतेऽन्तिमाय ॥ १६
वैरसेन इति निर्जितभाववैरिसेनस्तदङ्घ्रिकमलद्वयषट्पदोऽभूत्।
ाखा य एष जिनशासनकल्पवृक्षः स्कन्धा दिगन्तरगता सुषुवे चतस्रः॥ १७
ाखाङ्कुरा गणभृतोऽस्य बभूवुरेते नागेन्द्र इत्यमलकीर्तिनदीनगेन्द्र ।
द्रस्ततश्च भगवानथ निर्वृतिश्च विद्याधरश्च भुवि विस्तृतनामधेयाः॥ १८
स्य प्रभो समभवन् भुवनप्रशस्या शुद्धा श्रुताब्जकमलोद्धरणप्रवीणाः।
त्वार ऊर्जितरजोविदुषा नु सेव्या देव्या करा इव पुराणकविप्रसूते ॥ १९
नेषु चन्द्र इति सूरिपुरन्दरो यस्तस्य प्रफुल्लगुणगच्छवनस्य गच्छे।
ुयास एव भुवनत्रयवन्दनीया सजज्ञिरे गणधरा गुणिनो धरायाम् ॥ २०

जज्ञे वीरजिनात् सुधर्मगणभृत् तस्माच्च जम्बूस्ततः,
सख्यातेषु गतेषु सूरिषु भुवि श्रीवज्रशाखाऽभवत्।

तस्या चन्द्रकुलं मुनीन्द्रविपुलं तस्मिन् बृहद्गच्छता,
तत्राभूत् स्वयशःप्रसारितककुप् श्रीसर्वदेवः प्रभु ॥
: श्रीसर्वदेवाख्यः सारदो धर्मबान्धवः । बृहद्गच्छो यतो जातो वबृधे चाधिकं भुवि ॥
अथाभवन् श्रीजयसिंहसूरयः श्रियस्तपःकेलिविलासमन्दिरम् ।
अथास्य शिष्या अभवन्नवस्फुरत्सुधीधनाढ्या निधयश्चला इव ॥
सिद्धान्तरत्नाकरपारबोधैर्बुधेश्वरैस्तैरभितोऽभितोऽपि ।
आह्लादिनी लोचनकैरवाणा सा पूर्णमासी ददृशे सुधेव ॥
साम्प्रत विषमदुःषमावशात् पर्वयुग्मकरणासुतो(?) जनः ।
तत्तपोऽजनि चतुर्दशीदिने पाक्षिक च तदिद भृशायते ॥
अष्टमीयुतचतुर्दशीकुहूपूर्णिमातिथिषु धीरधीरधीः ।
आयुषो हि विदधाति बन्धन शोभनासु किल जन्तुजातिषु ॥
चातुर्दशीये दिवसेऽपि साय कुहूमुहूर्तं यदि पूर्णिमा वा ।
कार्यस्तदा पाक्षिकपक्षपात आज्ञापयन्तीति यतिक्षितीशाः ॥
बन्धः पुण्येषु नैवोपधिषु सुविधिषु स्थापन नो जिनेषु,
श्राद्धस्वान्तेषु नित्यस्थितिरुचितपुरग्रामगोष्ठेषु नैव ।
तृष्णा ज्ञानामृतेषु प्रणतजनपुरस्कारसौख्येषु नैव,
सर्वज्ञोक्तेष्वपेक्षा न च धनिषु मुनिस्वामिना येन चक्रे ॥
कैलासं दशकण्ठवद् गिरिवर गोवर्द्धन विष्णुवत्,
क्षोणीमादिवराहवद्गुरुधुर धौरेयवृद्धोक्षवत् ।
योऽन्यैर्दुर्द्धरमुद्दधार विधिवत् पक्ष विधेर्धीरधी,
श्रीचन्द्रप्रभसूरिरेष भवतां भद्राय भूयात् प्रभुः ॥
रिचंद्रप्पहसूरि जइ न पयासत पुन्निमापक्खं । उदयम्मि अजयपाले चउद्दशी जंतु पायालं ॥
एकस्या विधुनाऽतिघोरहयता दुष्कर्मदग्धा दशा,
पूर्णा वारिधयो दिश कुसुमिता सिक्ता सुधाभिर्मही ।
यदन्या अपि पूर्णिमासमतिथी धाताऽकरिष्यत्तदा,
को जानाति कक्षया रचनयाऽधास्यत् समस्त जगत् (?) ॥
आज्ञैश्वर्यमकृत्रिम कुसुमयन्नशेषसङ्घेऽपि यः,
पूजा श्रीजयसिंहदेवनृपतौ कुर्वत्यपि प्रत्यहम् ।
गर्वस्य त्रसरेणुनाऽपि न परा स्पृष्टौ विशिष्टाऽऽशयः,
सोऽय मङ्गलमादधातु भवतां श्रीधर्मघोषप्रभुः ॥
रूसउ कुमरनरिंदो अहवा रूसतु लिंगिणो सव्वे ।
पुन्निमसुद्धपयट्टा न हु चत्ता समत्तसूरीहिं ॥ २३ ॥

नाम्ना पुरस्कृतयशाः क्रिययापि भद्रश्रीमानमेयमहिमाऽस्य पदे बभूव।
भद्राङ्गरीव ननु यः किल पञ्चबाणपञ्चाननं व्यघटयच्चरणप्रचारैः॥ ७
संभूतिपूर्वविजयो विजितान्तरारिर्वार्ता निरर्गलयशस्ततिरस्य पट्टे।
श्रीमज्जिनागमपयोनिधिपूर्णचन्द्रो गोभिस्तताान कुमुदं शिशिरोज्ज्वलाभिः॥ ८
श्रीभद्रबाहुरिति मन्मथराहुशक्तिमाथोन्मदस्तनदपर प्रथितो बभूव।
यो दुःषमावलिचतुर्दशपूर्वधारी धीमानभूदभयदुर्गमिव श्रुतस्य॥ ९
श्रीस्थूलिभद्र इति मूलगुणानुकूलः शीलव्रते शमवतामधिभूरतोऽभूत्।
सीमाऽभवद् भुवि चतुर्दशपूर्विणां यः स्वामीव केवलजुषामृषभप्रसूतिः॥ १०
वेणीदण्डं विधृत्योन्नतकुचकलशाग्रे च तत्पाणिमूलं,
कोश्या वेश्या विदेशानतपतिपुरतो दर्शयन्ती विभाति।
तच्चित्तोहापनोदव्यतिकरकरणव्याकुला कालकल्पं,
हस्तेनेव सतीत्वाद् घटभुजगमिवाकर्षयन्ती प्रतीत्यै॥ ११
गतः कालः सोऽयं प्रणयिनि मयि प्रेमकुटिलं, कटाक्षः कालिन्दीलघुलहरि यत्र प्रसरति।
इदानीमस्माकं जरठकमठीपृष्ठिकठिना, मनोवृत्तिस्तत् किं व्यसनिनि मुधैव क्षिपयसि॥ १२
आर्यो महागिरिरभूद् दशपूर्वधारी शिष्यः सुहस्त्यपि च तस्य नमस्यधाम्न।
यद्भाषितेन भरतार्द्धमिदं ततान धर्मैकतानमिह संप्रतिभूमिपालः॥ १३
सप्ताभवंस्तदनु सुस्थित-सुप्रबुद्धमुख्याः क्रमेण दशपूर्वभृतो मुनीन्द्राः।
येषां यशोभिरमलैर्धवलीकृतेषु विश्वेषु पर्यटति कृष्णदिदृक्षया श्रीः॥ १४
श्रीमानभिन्नदशपूर्वधरस्ततोऽभूद् वज्रो विनिर्जितपुरन्दररूपलक्ष्मीः।
अङ्गान्युपश्रुतिवशाच्छिशुरप्यपाठीदेकादशापि जिनशासनमण्डनं यः॥ १५
बाल्ये न मातृवचनैरतिदीनदीनैः स्निग्धाङ्गनार्थनगिरा न हि यौवनेऽपि।
श्रीसञ्चयैरपि चचाल मनो न यस्य तस्मै नमोऽस्तु दशपूर्वभृतेऽन्तिमाय॥ १६
श्रीवैरसेन इति निर्जितभाववैरिसेनस्तदङ्घ्रिकमलद्वयषट्पदोऽभूत्।
शाखा य एष जिनशासनकल्पवृक्षः स्कन्धा दिगन्तरगता सुषुवे चतस्रः॥ १७
शाखाङ्कुरा गणभृतोऽस्य बभूवुरेते नागेन्द्र इत्यमलकीर्तिनदीनगेन्द्रः।
चन्द्रस्ततश्च भगवानथ निर्वृतिश्च विद्याधरश्च भुवि विस्तृतनामधेयाः॥ १८
तस्य प्रभोः समभवन् भुवनप्रशस्या शुद्धाः श्रुताक्षकमलोद्धरणप्रवीणाः।
चत्वार ऊर्जितरजोविदुषां नु सेव्या देव्याः करा इव पुराणकविप्रसूते॥ १९
एतेषु चन्द्र इति सूरिपुरन्दरो यस्तस्य प्रफुल्लगुणगह्वनस्य गच्छे।
भूपास एव भुवनत्रयवन्दनीयाः सजज्ञिरे गणधरा गुणिनो धरायाम्॥ २०
जज्ञे वीरजिनात् सुधर्मगणभृत् तस्माच्च जम्बूस्ततः,
सङ्ख्यातेषु गतेषु सूरिषु भुवि श्रीवज्रशाखाऽभवत्।

तस्यां चन्द्रकुलं मुनीन्द्रविपुलं तस्मिन् बृहद्गच्छता,
तत्राभूत् स्वयशःप्रसाधितककुब् श्रीसर्वदेवः प्रभुः ॥

सूरिः श्रीसर्वदेवाख्यः सारदो धर्मबान्धवः । बृहद्गच्छो यतो जातो वबृधे चाधिकं भुवि ॥

अथाभवन् श्रीजयसिंहसूरयः श्रियस्तपःकेलिविलासमन्दिरम् ।
अथास्य शिष्या अभवन्नवस्फुरत्सुधीधनाढ्या निधयश्चला इव ॥

सिद्धान्तरत्नाकरपारयोधैर्बुधेश्वरैस्तैरभितोऽभितोऽपि ।
आह्लादिनी लोचनकैरवाणां सा पूर्णमासी ददृशे सुधेव ॥

साम्प्रतं विपमदुःषमावशात् पर्वयुग्मकरणासुतो(?) जनः ।
तत्तपोऽजनि चतुर्दशीदिने पाक्षिकं च तदिदं भृशायते ॥

अष्टमीयुतचतुर्दशीकुहूपूर्णिमातिथिषु धीरधीरधीः ।
आयुषो हि विदधाति बन्धन शोभनासु किल जन्तुजातिषु ॥

चातुर्दशीये दिवसेऽपि साय कुहूमुहूर्तं यदि पूर्णिमा वा ।
कार्यस्तदा पाक्षिकपक्षपात आज्ञापयन्तीति यतिक्षितीशाः ॥

बन्धः पुण्येषु नैवोपधिषु सुविधिषु स्थापनं नो जिनेषु,
श्राद्धस्वान्तेषु नित्यस्थितिरुचितपुरग्रामगोष्ठेषु नैव ।
तृष्णा ज्ञानामृतेषु प्रणतजनपुरस्कारसौख्येषु नैव,
सर्वज्ञोक्तेष्वपेक्षा न च धनिषु मुनिस्वामिना येन चक्रे ॥

कैलास दशकण्ठवद् गिरिवर गोवर्द्धनं विष्णुवत्,
क्षोणीमादिवराहवद्गुरुधुर धौरेयवृद्धोक्षवत् ।
योऽन्यैर्दुर्द्धरमुद्दधार विधिवत् पक्ष विधेर्धीरधी,
श्रीचन्द्रप्रभसूरिरद्य भवता भद्राय भूयात् प्रभुः ॥

सिरिचंद्रप्पहसूरि जइ न पयासत पुन्निमापक्ख । उदयमि अजयपाले चउदशी जतु पायालं ॥

एकस्यां विधुनाऽतिघोरहयता दुष्कर्मदग्धां दशा,
पूर्णा वारिधयो दिशः कुसुमिताः सिक्ता सुधाभिर्मही ।
यदन्या अपि पूर्णिमासमतिथीः याताऽकरिष्यत्तदा,
को जानाति कक्षया रचनयाऽधास्यत् समस्तं जगत् (?) ॥

आज्ञैश्वर्यमकृत्रिमं कुसुमयन्नशेपसङ्घेऽपि यः,
पूजां श्रीजयसिंहदेवनृपतौ कुर्वत्यपि प्रत्यहम् ।
गर्वस्य त्रसरेणुनाऽपि न परा स्पृष्टौ विशिष्टाऽऽशयः,
सोऽय मङ्गलमादधातु भवतां श्रीधर्मघोषप्रभुः ॥

रूसउ कुमरनरिंदो अहवा रूसतु लिंगिणो सव्वे ।
पुन्निमसुद्धपयट्टा न हु चत्ता समत्तसूरीहिं ॥ २३ ॥

अद्यापि नर्नर्त्ति यदीयकीर्त्तिर्विद्वन्मनोरङ्गवसुन्धरायाम् ।
नवीनसत्काव्यवराङ्गहारैः समन्तभद्राय नमोऽस्तु तस्मै ॥३४॥

भुवणरुद्दसमवरसि जम्मु हूओ गुणभूरिहिँ,
तह चउवीसइ हूय दिक्खं चंदप्पहसूरिहिँ ।
छत्तीसइ संठविय सूरि सिरिजयसिंहसूरिहिँ,
सपा वसही चाहु जितु चउरासी सूरिहिँ ।
एगुणवन्चासई तिहिँ वरसि सघ सक्खि पट्टण पवारि ।
उगसट्टइ सिद्धु परिगमणु किर यावन्न सव्वायु वरि ॥१॥

जिम इक्किण दिणयरण निशिहिँ तमपसर विहाडिय ।
जिम इक्कण शशिहरण गयणमंडलु परि पयडिय ।
जिम इक्कण केसरिण करड कोडि किय खडण ।
तिम पइ इक्कण चन्द्रसूरि किय अविहिविहडण ॥
पायाल जतु दूसमवसिण सत्तहीण नर परिहरिय ।
इक्कल्लण हरिहिँ धरित्त जिम पइ विहिपक्ख समुद्धरिय ॥१॥

पुब्बि नहु परिहरिय मग्गु सिद्धात न चालिओ,
उद्यासणि न थयट्ठ पाउ सिंहासणि वालिओ ।
थिंथह किय न पतिट्ठ मासकप्पह नहु चुक्कउ ।
दमसि दलि मेलीइ जेण अप्पाणु न मुक्कउ ॥
निघडिय जु गुरु कसवट्टिहिँ चिरु चउद्दसि न मणुरओ ।
कुमरु नरिंदसउ तुटि करवि समतसूरि कुकणि गयउ ॥२॥

येन ध्वस्तमदेन सप्त निर्मायिकाना कुल,
धर्मेऽबोधि पडापथाऽन्वयमुख गोत्र च जैने स्थिरम् ।
हिंस्र मद्यपभावसारककुल भूपस्तथा कोङ्कणे,
पायात् श्रीसमन्तभद्रसुगुरुर्नः पासि बोधप्रसु ॥३॥

श्रीपूर्णिमापक्षसरोजबोधगभस्तयोऽभ्यस्तसमस्तशास्त्रा ।
श्रीचन्द्रगच्छाम्बुधिचन्द्रतुल्याश्चन्द्रप्रभाख्या गुरवो जयन्ति ॥१॥

आद्यो नैष्ठिकमौलिमण्डनमणि' श्रीधर्म्मघोषप्रभुः,
श्रीभद्रेश्वरसूरिरित्यभिधया ख्यातो गुणग्रामणी. ।
सूरि शीलगुणाभिधस्तदपर' श्रीपद्मदेवाह्वय–
श्चत्वारोऽपि समुद्रघोषकलिता. पञ्च प्रधाना अमी ॥२॥

॥ इति गुरुगुणवर्णनम् ॥

बृहत्पोसालिकपट्टावली।

॥श्री॥ श्रीबृहत्तपागच्छाधिराजश्रीपूज्यश्री ५ श्रीधनरत्नसूरीश्वरसद्गुरुभ्यो नम ॥

इहादौ गुरुपरिपाटीकथनाय मङ्गलाचरणमाह–

सत्थिसिरिसिद्धिसयणं णमिऊणं वद्धमाणजिणनाहं।
गुरुपरिवाडीहेउं तहेव सिरिइदभुइगुरु ॥१॥

'सत्थि' त्ति–अह वर्धमानजिननाथ नत्वा, वर्द्धमानश्चासौ जिननाथश्च त चरमतीर्थङ्कर नत्वेत्यर्थः। कथंभूतं वर्द्धमानजिननाथम् ?–'स्वस्तिश्रीसिद्धिसदन' तम्। स्वस्ति अविनाशम्। श्रीश्चतुस्त्रिंशदतिशयलक्ष्मीः। सिद्धिरष्टौमहासिद्धयः। अथवा सिद्धिरमृतं मोक्ष इति यावत्। तेषा सदन गृहम्। पुनः कथ० 'गुरुपरिपाटीहेतु'–गुरव आचार्यास्तेषां परिपाटी अनुक्रमः। 'परिपाटी अनुक्रमः' इत्यमरः। तस्य गुर्वनुक्रमस्य हेतुमाद्य कारणम्। जिननाथा हि आचार्यपरिपाट्या उत्पत्तिहेतवो भवन्ति। न पुनस्तदन्तर्गताः। तेषा स्वयमेव तीर्थप्रवर्तकत्वेन कस्यापि पट्टधरत्वाभावात्। 'तहेव'त्ति–तथैव श्रीइन्द्रभूतिगुरुम्। श्रीमहावीरस्य प्रथमगणधर नत्वेति गाथार्थः ॥१॥

श्रीवर्द्धमानजिननाथ श्रीइन्द्रभूतिं च नत्वा किं कुर्वे इत्याह–

गुरुपरिवाडीं वुच्छ तत्थेव जिणदवीरदेवस्स।
पट्टोदयपढमगुरुसुहम्मनामेण गणसामी ॥२॥

'गुरु'त्ति–गुरुपरिपाटीं गुर्वनुक्रम वक्ष्ये। 'तत्थेव'त्ति–तत्राचार्यपरिपाट्यां जिनेन्द्रश्रीवीरदेवस्य। 'पट्टोदय'त्ति–पट्टे उदये च प्रथमगुरुरादिसूरिः। 'सुहम्म'त्ति–सुधर्मा इति नामा श्रीमहावीरस्य पञ्चमगणधरः। स च कीदृशः ? गणस्वामी। यत एकादशानामपि शिष्याणा गणधरपदस्थापनावसरे श्रीमहावीरेण श्रीसुधर्मस्वामिन पुरस्कृत्य गणोऽनुज्ञातः, दुःप्रसह यावत् श्रीसुधर्मस्वाम्यपत्यानामेव प्रवर्तनात्। इह पट्टोदयेत्यत्र उदयपदं प्रथमोदयस्यापि प्रथमाचार्यश्रीसुधर्मस्वामीति सूचकम्। स च पञ्चाशद्वर्षाणि ५० गृहस्थपर्याये, त्रिंशद्वर्षाणि ३० श्रीवीरसेवाया, द्वादशवर्षाणि १२, छाद्मस्थ्ये, अष्टौ वर्षाणि ८ केवलपर्याये चेति। सर्वायुर्वर्षशतमेक १०० परिपाल्य श्रीवीरात् विंशत्या वर्षैः २० सिद्धिं गतः। श्रीवीरज्ञानोत्पत्तेश्चतुर्दशवर्षे १४ जमालिनामा प्रथमो निह्नवः, षोडशवर्षे १६ तिष्यगुप्तनामा द्वितीयो निह्नव इति ॥२॥

बीओ गणवइजंबू पभवो तइओ गणाहिवो जयइ ।
सिरिसिज्जंभवसामी जसभद्दो दिसउ भद्दाणि ॥३॥

'बीओ'त्ति–द्वितीय. श्रीसुधर्मस्वामिपट्टे श्रीजम्बूस्वामी गणपति.। स च नवनवतिकाञ्चनकोटिसंयुक्ता अष्टौ कन्यका परित्यज्य श्रीसुधर्मस्वाम्यन्तिके प्रव्रजित'। स च षोडशवर्षाणि गृहस्थपर्याये, विंशतिवर्षाणि व्रतपर्याये, चतुश्चत्वारिंशद्वर्षाणि युगप्रधानपर्याये चेति। सर्वायुरशीति वर्षाणि ८० परिपाल्य, श्रीवीरात् चतु षष्टि ६४ वर्षे सिद्ध'। अत्र कवि –

मत्कृते जम्बूना त्यक्ता नवोढाष्टौ सुकन्यका । तन्मन्ये मुक्तिवध्वाऽन्यो न वृतोऽन्यरतो नरः ॥

अन्यच्च–

स्युर्ब्रह्मणो नृसुरमोक्षसुखानि किं तु जम्बूमुने सुभगताऽभिनवैव काचित्।
भेजुर्व्रत सममनेन मुदा प्रियास्ता अन्या रता सह जगाम च केवलश्री ॥

मण १ परमोहि २ पुलाए ३ आहारग ४ खवग ५ उवसमे ६ कप्पे ७।
संयमतिग ८ केवल ९ सिज्झणा य १० जम्बूम्मि विच्छिन्ना ॥

'प्रभव'त्ति–प्रभवस्तृतीयो गणाधिपो, जयति उत्कर्षेण वर्तते। सोऽपि त्रिंशद्वर्षाणि ३० गृहस्थपर्याये, चतुश्चत्वारिंशद्वर्षाणि ३३ व्रतपर्याये, एकादश वर्षाणि ११ युगप्रधानपर्याये, पञ्चाशीति वर्षाणि ८५ सर्वायु' परिपाल्य श्रीवीरात् पञ्चसप्तति ७५ वर्षातिक्रमे स्वर्गभागिति।

ननु यदा श्रीजम्बूस्वामिसार्द्धं श्रीप्रभवस्वामिना व्रत ग्रहीतमिति रूढि' सत्या, तदा श्रीजम्बूस्वामिपट्टे श्रीप्रभवस्वामिन एकादश वर्षाणि युगप्रधानपर्यायो न घटते। यतो जम्बूस्वामिनो गृहस्थपर्याये १६ वर्षाणि, प्रभवस्वामिन स्त्रिंशद्वर्षाणि, ततो ज्ञायते, यदाऽनेन चौर्यार्थमागत तदाय दशवर्षीय सभाव्यते, ततो गृह गत्वा कतिचिद्वर्षाणि स्थित्वा पश्चाज्जम्बूस्वामिसविध समागत्य चारित्रमग्रहीत्। एतच्चोक्त परिशिष्टपर्वणि श्रीहेमसूरिभि । तद्यथा–

प्रभवोऽप्यभ्यधाद् मित्रपितृनापृच्छ्य सत्वरम्।
परिव्रज्यासहायस्ते भविष्यामि न सशय' ॥ –तृतीयसर्गे २७९ श्लोक.।

'सिरिसिज्जभव'त्ति–श्रीप्रभवस्वामिपट्टे श्रीशय्यभवस्वामी। स च श्रीप्रभवस्वामिप्रहितसाधुमुखाद्–'अहो कष्टमहो कष्ट, तत्त्व न ज्ञायते परम्'–इत्यादिवचसा यज्ञस्तम्भादध श्रीशान्तिनाथप्रतिमादर्शनादवाप्तधर्मा प्रव्रज्य क्रमेण मनकनाम्न स्वसुतस्य निमित्त दशवैकालिकसूत्र कृतवान्। यत.–

कृत विकालवेलाया दशाध्ययनगर्भितम्। दशवैकालिकमिति नाम्ना शास्त्र बभूव तत् ॥
अत पर भविष्यन्ति प्राणिनो ह्यल्पमेधस । कृतार्थास्ते मनकवत् भवन्तु त्वत्प्रसादत' ॥
श्रुताम्भोजस्य किञ्जल्क दशवैकालिके स्वद' । आचम्याचम्य मोदन्तामनगारमधुव्रता' ॥
इति सघोपरोधेन श्रीशय्यभवसूरिभि । दशवैकालिकग्रन्थो न सवव्रे महात्मभि' ॥

स चाष्टाविंशतिवर्षाणि २८ गृहस्थपर्याये, एकादश ११ व्रतपर्याये, त्रयोविंशति २३ युगप्रधानपर्याये; सर्वायुर्द्वापष्टिवर्षाणि ६२ परिपाल्य श्रीवीरात् अष्टनवति ९८ वर्षातिक्रमे स्वर्गभाक् ॥

'जसभद्दो'त्ति–श्रीशय्यंभवस्वामिपदे श्रीयशोभद्रस्वामी। स च द्वाविंशतिवर्षाणि २२ गृहे, चतुर्दशवर्षाणि १४ व्रते, पञ्चाशद्वर्षाणि ५० युगप्रधानपर्याये, सर्वायुः षडशीतिवर्षाणि ८६ परिपाल्य श्रीवीरात् अष्टचत्वारिंशद्-धिकशते १४८ वर्षे अतीते स्वर्गभाक् ॥ श्रीयशोभद्रसूरिर्भद्राणि दिशतु ॥

सभूइविजयसूरी सुभद्दबाहू य थूलभद्दो अ।
अज्जमहागिरिसूरी अज्जसुहत्थी दुवे पट्टे॥४॥

संभूतिविजयो द्विचत्वारिंशद्वर्षाणि ४२ गृहे, चत्वारिंशद्वर्षाणि ४० व्रते, अष्टौ ८ वर्षाणि युगप्रधानपर्याये च सर्वायुर्नवति ९० वर्षाणि परिपाल्य स्वर्गभाक् ॥

श्रीभद्रबाहुस्वाम्यपि श्रीआवश्यकनिर्युक्तिविधाता, व्यन्तरीभूतवराहमिहरकृतसंघोपद्रववारकोपसर्गहरस्तवनेन प्रवचनस्य महोपकारं कृत्वा पञ्चचत्वारिंशत् ४५ वर्षाणि गृहे, सप्तदश १७ व्रते, चतुर्दश १४ युगप्रधानपर्याये चेति सर्वायुः षट्सप्तति ७६ वर्षाणि परिपाल्य श्रीवीरात् सप्तत्यधिकैकशतवर्षे १७० स्वर्गभाक् ॥

'थूलभद्दो अ'त्ति–च पुनः श्रीसंभूतिविजय–भद्रबाहुस्वामिनोः पट्टे श्रीस्थूलभद्रस्वामी, कोशाप्रतिबोधजनितयशोधवलीकृताखिलजगत् सर्वजनप्रसिद्धः, चतुर्दशपूर्वविदामपश्चिमः। क्वचित् चत्वार्य्यन्त्यानि पूर्वाणि सूत्रतोऽधीतानीत्यपि। स च त्रिंशद्वर्षाणि ३० गृहे, चतुर्विंशति २४ व्रते, पञ्चचत्वारिंशत् ४५ युगप्रधानपर्याये, सर्वायुर्नवनवति ९९ वर्षाणि परिपाल्य श्रीवीरात् पञ्चदशाधिकशतद्वयवर्षे २१५ स्वर्गभाक्।

श्रीवीरनिर्वाणाच्चतुर्दशाधिकवर्षशतद्वये २१४ आषाढाचार्यादव्यक्तनामा तृतीयो निह्नवः संजातः।

श्रीस्थूलभद्रस्वामिपट्टे 'अज्ज महागिरि' त्ति–श्रीआर्यमहागिरिसूरिः–आर्यसुहस्तिसूरिश्च इमौ द्वावपि गुरुभ्रातरौ पट्टधरौ। तत्र श्रीआर्यमहागिरिर्जिनकल्पतुलनामारूढो जिनकल्पिकतुल्यः, त्रिंशद्वर्षाणि ३० गृहे, चत्वारिंशत् ४० व्रते, त्रिंशत् ३० युगप्रधानत्वे, सर्वायुर्वर्षशतमेकं १०० परिपाल्य स्वर्गभाक्। द्वितीय आर्यसुहस्तिस्वामी येन पूर्वभवे द्रमकीभूतोऽपि संप्रतिजीवः प्रव्राज्य त्रिखण्डाधिपतित्वं प्रापितः। तेन संप्रतिराज्ञा त्रिखण्डमिताऽपि मही जिनप्रासादमण्डिता विहिता। साधुवेषधारिनिजभटपुरुषप्रेषणेन अनार्यदेशेऽपि साधुविहारः कारितः। स चार्यसुहस्ती त्रिंशद्वर्षाणि ३० गृहे, चतुर्विंशति २४ व्रते, षट्चत्वारिंशत् ४६ युगप्रधानत्वे, सर्वायुः शतमेकं १०० परिपाल्य श्री वीराद् एकनवत्यधिकशतद्वये २९१ स्वर्गभाक्। यद्यपि स्थूलभद्रस्य पञ्चदशाधिकशतद्वय २१५ वर्षे स्वर्गो गुर्वावल्यनुसारेणोक्तः। श्रीमहागिरि–सुहस्तिनौ तु त्रिंशत् ३० वर्षगृहस्थपर्यायौ शतवर्ष १०० जीविनौ दुःषमासंघस्तोत्रयन्त्रकानुसारेणोक्तौ। तथा च सति, आर्यमहागिरि–सुहस्ती श्रीस्थूलभद्रदीक्षितौ न संपद्येते। तथापि गृहस्थपर्याये वर्षाणि न्यूनानि, व्रतपर्याये चाधिकानि संभाव्यन्त इति। तथा श्रीसुहस्तिदीक्षितावन्तिसुकुमालमृतिस्थाने तत्सुतेन देवकुलकारितस्य महाकाल इति नाम संजातम्। श्रीवीरनिर्वाणाद् विंशत्यधिकवर्षशतद्वये २२० अश्वमित्रात् सामुच्छेदकनामा चतुर्थो निह्नवः। तथाऽष्टविंशत्यधिकशतद्वये २२८ गङ्गनामा द्विक्रियः पञ्चमो निह्नवः ॥

सुट्ठियसुप्पडिबुद्धा कोडिअकाकंदिगा गणाभिक्खा।
सिरिइंददिन्न–दिन्ना सीहगिरी वयरसामी अ ॥५॥

'सुट्ठिय'त्ति–सुहस्तिनः पट्टे सुस्थित–सुप्रतिबद्धौ गुरुभ्रातरौ, कथंभूतौ कौटिक–काकंदिकौ, कोटिशः सूरिमन्त्र-

ज्ञापात् कौटिकौ, काकद्या नगर्यां संभवत्वात् काकंदिकौ। कौटिकौ च तौ काकंदिकौ च तौ। 'गणाभिक्खे'त्ति–गणस्य गच्छस्य अभिख्या नाम याभ्यां तौ। श्रीसुधर्मस्वामिनोऽष्टौ सूरीन् यावत् निर्ग्रन्था साधवोऽनगारा इत्यर्थाभिधायिन्याख्या आसीत्। नवमे च पट्टे कौटिका इति विशेषार्थावबोधक द्वितीय नाम प्रादुर्भूतमिति।

श्रीआर्यमहागिरिसुशिष्यौ बहुल-बलिस्सहौ यमलभ्रातरौ। तत्र बलिस्सहशिष्य स्वाति, तत्त्वार्थादयो ग्रन्थास्तत्कृता एव संभाव्यन्ते। तच्छिष्य श्यामाचार्य प्रज्ञापनाकृत्। श्रीवीरात् षट्सप्तत्यधिकशतत्रये ३७६ स्वर्गभाग्। तच्छिष्यः साडिल्यो जीतमर्यादाकृत्। एते नंदिसूत्रस्थविरावल्यामुक्ता सन्ति। पर मा पट्टपरम्पराऽन्येति बोध्यम्।

'सिरिइंददिन्न'त्ति–श्रीसुस्थित-सुप्रतिबद्धयो. पट्टे इन्द्रदिन्नसूरि। अत्रान्तरे–श्रीवीरनिर्वाणात् त्रिपञ्चाशदधिकचतु शतवर्षे ४५३ भृगुकच्छे आर्यखपुटाचार्य इति पट्टावल्याम्। प्रभावकचरित्रे तु–श्रीवीरात् चतुरशीत्यधिकचतु.शत४८४वर्षे आर्यखपुटाचार्य। तत्त्व तु बहुश्रुतगम्यम्। तथा सप्तषष्ट्यधिकचतु शत४६७वर्षे आर्यमगु, वृद्धवादी, पादलिप्तश्च। तथा गन्धहस्त्याचार्यसिद्धसेनोऽपि। येन भगवतोज्जयिन्यां महाकालप्रासादे रुद्रलिङ्गस्फाटन विधाय कल्याणमन्दिरस्तवेन श्रीपार्श्वनाथबिम्ब प्रकटीकृतम्, श्रीविक्रमादित्यश्च प्रतिबोधित। तद्राज्य तु श्रीवीरात् सप्तत्यधिकवर्षशतचतुष्टये संजातम् ४७०। तानि वर्षाणि चैवम्–

> ज रयणिं कालगओ अरहा तित्थकरो महावीरो।
> त रयणिं अवनिवई अहिसित्तो पालओ राया॥
> सट्टी पालयरज्ञ ६० पणवन्नसय तु १५५ होइ नदाण।
> अट्ठसय मोरीआण १०८ तीसच्चिय ३० पूसमित्तस्स॥
> बलमित्तभाणमित्ता सट्टी वरिसाणि चत्तनहवाणे।
> तह गद्दभिल्लरज्ज तेरस १३ वरिसा सगस्स चउ॥

'दिन्ने'त्ति–श्रीइन्द्रदिन्नसूरिपट्टे श्रीदिन्नसूरि। 'सीहगिरि'त्ति–श्रीदिन्नसूरिपट्टे श्रीसीहगिरिः।

'वयरसामी अ'त्ति–श्रीसीहगिरिपट्टे श्रीवज्रस्वामी। यो बाल्यादपि जातिस्मृतिभाक्, नभोगमनविद्यया संघरक्षाकृत्, दक्षिणस्या दिशि बौद्धराज्ये जिनेन्द्रपूजानिमित्तपुष्पाद्यानयनेन प्रवचनप्रभावनाकृत्, देवाभिवन्दितो दशपूर्वविदामपश्चिमो वज्रशाखोत्पत्तिमूलम्। तथा स भगवान् पण्णवत्यधिकचतु शतवर्षान्ते ४९६ जात सन्, अष्टौ वर्षाणि ८ गृहे, चतुश्चत्वारिंशत् ४४ वर्षाणि व्रते, षट्त्रिंशत् ३६ वर्षाणि युगप्रधानपर्याये, सर्वायुरष्टाशीतिवर्षाणि परिपाल्य श्रीवीरात् चतुरशीत्यधिकपञ्चशत ५८४ वर्षे स्वर्गभाक्। श्रीवज्रस्वामितो दशमपूर्व-चतुर्थसंहनन-संस्थानाना व्युच्छेदः।

चतु कुलसमुत्पत्तिपितामहमह विभुम्। दशपूर्वनिर्धि वन्दे वज्रस्वामिमुनीश्वरम्॥

अत्र श्रीमदार्यसुहस्ति-श्रीवज्रस्वामिनोरन्तराले श्रीगुणसुन्दरसूरि १, श्रीकालिकाचार्य. २, श्रीस्कन्दिलाचार्य ३, श्रीरेवतीमित्रसूरि ४, श्रीधर्मसूरि ५, श्रीभद्रगुप्ताचार्य ६, श्रीगुप्ताचार्यश्चेति ७, युगप्रधानसप्तक बभूव।

तत्र श्रीवीरात् त्रयस्त्रिंशदधिकपञ्चशत ५३३ वर्षे श्रीआर्यरक्षितसूरिणा श्रीभद्रगुप्ताचार्यो नियामित स्वर्गभागिति पट्टावल्या दृश्यते, पर तु पमासधस्तनयन्त्रकानुसारेण चतुश्चत्वारिंशदधिकपञ्चशत ५४४ वर्षातिक्रमे श्रीआर्यरक्षितसूरीणां दीक्षा विज्ञायते। तथा सति उक्तसंवत्सरे निर्यापण न संभवतीत्येतद् बहुश्रुतगम्यमिति।

तथाऽष्टचत्वारिंशदधिकपञ्चशत ५४८ वर्षान्ते त्रैराशिकजित् श्रीभद्रगुप्ताचार्य स्वर्गभाक्।

तथा श्रीवीरात् सपादपञ्चशतवर्षे ५२५ श्रीशत्रुञ्जयोच्छेद, सप्तत्यधिकपञ्चशत ५७० वर्षे जावडयुद्धार इति पञ्चमगाथार्थ॥५॥

सिरिवज्जसेणसूरी कुलहेऊ चंदसूरितप्पट्टे।
सामंतभद्दसुगुरू वणवासरुई विरागेण ॥६॥

'सिरिवज्जसेण'त्ति–व्याख्या–श्रीवज्रस्वामिपट्टे श्रीवज्रसेनसूरिः। स च बहुदुर्भिक्षे श्रीवज्रस्वामिवचसा से कपत्तने गत्वा जिनदत्तव्यवहारिगृहे ईश्वरीनाम्न्या तद्भार्यया लक्षपाकभोज्ये विषनिक्षेपविधानचिन्तनश्रावणे प्रातः सुकालो भावीत्युक्त्या विषनिक्षेपं निवार्य, नागेन्द्र १ चन्द्र २ निर्वृति ३ विद्याधराह्वान् ४ चतुरः स... इभ्यपुत्रान् प्रव्राजितवान्। तेभ्यः स्वस्वनामाङ्कितानि चत्वारि कुलानि सजातानि। तेन श्रीवज्रसेनसूरिः ... एषां चतुर्णां कुलाना मूलकारणमित्यर्थः। स च श्रीवज्रसेनसूरिर्नव ९ वर्षाणि गृहे, षोडशाधिकशत ११६ त्रीणि ३ वर्षाणि युगप्रधानपर्याये। सर्वायुः साष्टाविंशतिशत १२८ परिपाल्य श्रीवीरात् विंशत्यधिकषट्शत ६२ वर्षान्ते स्वर्गभाग्।

अत्र श्रीवज्रस्वामि-वज्रसेनयोरन्तराले श्रीमदार्यरक्षितसूरिः, श्रीदुर्बलिकापुष्यसूरिश्चेति युगप्रधानद्वय सजातम् तत्र श्रीमदार्यरक्षितसूरिः सप्तनवत्यधिकपञ्चशत ५९७ वर्षान्ते स्वर्गभागिति पट्टावल्या दृश्यते। ... श्रीमदार्यरक्षितसूरीणा स्वर्गगमनानन्तर चतुरशीत्यधिकपञ्चशत ५८४ वर्षान्ते सप्तमनिह्नवोत्पत्तिरुक्ताऽस्ति ... श्रुतगम्यमिति। तथा नवाधिकषट्शत ६०९ वर्षान्ते श्रीवीरात् दिगम्बरोत्पत्तिः।

'चदसूरितप्पट्टे'त्ति–तत् श्रीवज्रसेनसूरिपट्टे श्रीचन्द्रसूरिः। तस्माच्चन्द्रगच्छ इति तृतीय नाम प्रादुर्भूतम्। ... क्रमेणानेकगणहेतवो भूयासः सूरयो बभूवासः।

'सामत'त्ति–श्रीचन्द्रसूरिपट्टे श्रीसामन्तभद्रसूरिः। स कथभूतः शोभनो गुरुः, पुनः कथभूतो वनवासरुचिः वनवासे रुचिर्यस्य सः। केन वैराग्येण। स भगवान् पूर्वगतश्रुतविशारदो वैराग्यनिधिर्निर्ममतया दे... ष्ववस्थानात् लोकैर्वनवासीत्युक्तः। तस्माच्चतुर्थं नाम वनवासीति प्रादुर्भूतमिति षष्ठगाथार्थः॥

सिरिवुड्ढदेवसूरी पज्जोयण–माणदेव–मुणिदेवा।
सिरिमाणतुंगपुज्जो वीरगुरू जयउ जयदेवा ॥७॥

'सिरिवुड्ढ'त्ति–श्रीसामन्तभद्रसूरिपट्टे श्रीवृद्धदेवसूरिः। स च वृद्धो देवसूरिरिति ख्यातः। श्रीवीरात् पञ्चनव... धिकषट्शत ६९५ वर्षातिक्रमे कोरटके नाहडमन्त्रिप्रासादे प्रतिष्ठाकृत्। श्रीजज्जगसूरिणा च सप्तत्यधिकषट्शत ६७ वर्षे सत्यपुरे नाहडनिर्मापितप्रासादे श्रीमहावीर. प्रतिष्ठितः।

'पज्जोयण'त्ति–श्रीवृद्धदेवसूरिपट्टे श्रीप्रद्योतनसूरिः। श्रीप्रद्योतनसूरिपट्टे श्रीमानदेवसूरिः। इमौ द्वौ पट्टधरौ क... भूतौ, 'मुणि'त्ति–मुनिदेवौ रूपविशेषेण मुनीना मध्ये देवाविव देवौ। तत्र श्रीमानदेवसूरेश्च सूरिपद ...वसरे तस्य स्कन्धोपरि गुरुणा साक्षात् सरस्वती–लक्ष्म्यौ दृष्टे। तदनसरे गुरुभिश्चिन्तितमस्य चारित्रभ्रंशो भावीति ... गुरवो विषण्णचेतसो बभूवास.। तद्विज्ञाय श्रीमानदेवसूरिभिः भक्तकुलभिक्षा सर्वाश्च विकृतयस्त्यक्ताः। ... नड्डूलपुरे पद्मा १ जया २ विजया ३ अपराजिता ४ भिधाभिर्देवीभि. पर्युपास्यमान दृष्ट्वा कथ नारीभिः ... सूरिरिति शकापरायणः कश्चिन्मुग्धस्ताभिरेव शिक्षित इति।

'सिरिमाणतुग'त्ति–श्रीमानदेवसूरिपट्टे श्रीमानतुगसूरिः। 'पुज्जो'त्ति–पूज्यः सर्वजनानामिति शेष.। येन 'भक्तामरस्तव' कृत्वा बाण-मयूरपडितविद्याचमत्कृतोऽपि वृद्धभोजक्षितिपतिः प्रतिबोधितः। 'भयहरस्तव' करणेन धरणेन्द्रोऽपि वशीकृतः। 'भत्तिब्भरे'त्यादि स्तवनानि च कृतानि। प्रभावकचरित्रे तु प्रथम श्रीमानतुगचरित्रमुक्त्वा पश्चाच

श्रीदेवसूरिशिष्यश्रीप्रद्योतनसूरिशिष्यश्रीमानदेवसूरिप्रबन्ध उक्त, पर तत्र नाशका विधेया। येन तत्र अन्येऽपि प्रबन्धा व्यस्ततयोक्ता दृश्यन्त इति।

'वीरगुरु'त्ति–श्रीमानतुगसूरिपट्टे श्रीवीरगुरुः–श्रीवीरसूरिर्जयतु। स च श्रीवीरात् सप्ततिसप्तशत ७७० वर्षे विक्रमत त्रिशती ३०० वर्षे नागपुरे श्रीनमिप्रतिष्ठाकृत्। यदुक्तम्–

नागपुरे नमिभुवने प्रतिष्ठाया महितपाणिसौभाग्य ।
अभवद् वीराचार्यस्त्रिभि शतै साधिके राज्ञ.॥

'जयदेवो'त्ति–श्रीवीरसूरिपट्टे श्रीजयदेवसूरि ।

देवाणदो विक्कम-नरसिंह-समुद्द-माणदेववरा ।
विबुहप्पहाभिहाणो युगप्पहाणो जयाणदो ॥८॥

'देवाणदो'त्ति–श्रीजयदेवसूरिपट्टे श्रीदेवानन्दसूरि । अत्रान्तरे श्रीवीरात् पञ्चचत्वारिंशदधिकाष्टशत ८४५ वर्षातिक्रमे वलभीभग । द्व्यशीत्यधिकाष्टशत ८८२ वर्षातिक्रमे चैत्यस्थिति.। षडशीत्यधिकशत ८८६ वर्षातिक्रमे ब्रह्मदीपिका'।

'विक्कम'त्ति–श्रीदेवानन्दसूरिपट्टे श्रीविक्रमसूरि । 'नरसिंह'त्ति–श्रीविक्रमसूरिपट्टे श्रीनरसिंहसूरि । यत –

नरसिंहसूरिरासीदतोऽखिलग्रन्थपारगो येन । यक्षो नरसिंहपुरे मासरतिं त्याजित स्वगिरा ॥

'समुद्द'त्ति–श्रीनरसिंहसूरिपट्टे श्रीसमुद्रसूरि.। स च किंलक्षण'–

खोमाणराजकुलजोऽपि समुद्रसूरिर्गच्छ शशास किल य प्रवणप्रमाणी।
जित्वा तदा क्षपणकान् स्ववश वितेने नागह्रदे भुजगनाथनमस्यतीर्थम्॥

'माणदेव'–त्ति। श्रीसमुद्रसूरिपट्टे पुन श्रीमानदेवसूरि'। एते पूर्वोक्ता गुरवो वरा प्रधाना इत्यर्थ'। स श्रीमानदेव कथभूत ?

विद्यासमुद्रहरिभद्रमुनीन्द्रमित्र सूरिर्बभूव पुनरेव हि मानदेव ।
मान्द्यात् प्रयातमपि योऽनघसूरिमन्त्र लेभेऽम्बिकामुखगिरा तपसोज्जयन्ते ॥

श्रीवीरात् वर्षसहस्रे १००० गते सत्यमित्राचार्ये पूर्वव्यवच्छेद.। अत्र च श्रीनागहस्ती १ रेवतीमित्रो २ ब्रह्म ३ नागार्जुनो ४ भूतदिन्न ५ श्रीकालिकसूरिश्चेति ६ षट् युगप्रधाना यथाक्रम श्रीवज्रसेन-सत्यमित्रयोरन्तरालकालवर्तिनो बोध्या। एषु च युगप्रधान शक्राभिनन्दितपादपद्म प्रथमानुयोगसूत्राणा सूत्रधारकल्प श्रीकालिकाचार्यगुरुवर। तै श्रीकालिकाचाय श्रीवीरात् त्रिनवत्यधिकनवशत ९९३ वर्षातिक्रमे "अतराविय से कप्पइ, नो से कप्पइ त रयणि उवाइणा वित्तए' त्ति श्रीवीरवचनात् पचमीतश्चतुर्थ्यां पर्युषणापर्वानीतमिति। श्रीवीरात् पचपचाशदधिकसहस्र १०५५ वर्षातिक्रमे, विक्रमात् पचाशीत्यधिकपचशत ५८५ वर्षातिक्रमे, याकिनीसूनु श्रीहरिभद्रसूरि स्वर्गभाक्। तथा श्रीवीरात् पचदशाधिकैकादशशत १११५ वर्षे श्रीजिनभद्रगणिर्युगप्रधान । जिनभद्रीयध्यानशतकादेर्हरिभद्रसूरिभिर्वृत्तिकरणाच्चिन्त्य इति पट्टावल्या दृश्यते, पर श्रीजिनभद्रगणिश्चतुरुत्तरशत १०४ वर्षायुष्कस्तेन हरिभद्रसूरिकालेऽपि सभवात्, नाशकावकाश इति।

'विबुह'त्ति–श्रीमानदेवसूरिपट्टे श्रीविबुधप्रभसूरि.। 'जुगप्पहाणो'त्ति–युगप्रधान इव युगप्रधान.। 'जयाणद' त्ति–श्रीविबुधप्रभसूरिपट्टे श्रीजयानन्दसूरि ।

सिरिरविपहसूरिदो जसदेवो देवयाहिं दीवंतो ।
पज्जुन्नसूरि पुण माणदेव-सिरिविमलचदगुरू ॥९॥

'सिरिरवि' त्ति–श्रीजयानन्दसूरिपट्टे श्रीरविप्रभसूरिः । स च श्रीवीरात् सप्तत्यधिकैकादशशतवर्षे ११७०, मात् सप्तशतवर्षे ७०० नड्डूलपुरे श्रीनेमिनाथप्रासादप्रतिष्ठाकृत् । तथा च श्रीवीरात् नवत्यधिकैकादशशत ११९० वर्षे श्रीउमास्वातिवाचको युगप्रधानः ।

'जसदेवो' त्ति–श्रीरविप्रभसूरिपट्टे श्रीयशोदेवसूरिः । कथभूतः ? 'देवयाहिं'ति–देवताभिः मन्त्रा... दीप्यन् दीप्यमान इत्यर्थः ।

अत्र च श्रीविरात् द्विसप्तत्यधिकद्वादशशतवर्षे १२७२, विक्रमात् द्व्युत्तराष्टशतवर्षे ८०२ अणहिल्लपुरपत्तन स्थापना वनराजेन कृता । तथा च सप्तत्यधिकद्वादशशत १२७० वर्षे श्रीवीरात्, विक्रमकालाच्च अष्टशत ८०० ... भाद्रपदशुक्लतृतीयाया बप्पभट्टिसूरेर्जन्म। येन आमराजा प्रतिबोधित'। स च श्रीवीरात् ५५५० विक्रम... १३६५ वर्षे, विक्रमात् पचनवत्यधिकाष्टशत ८९५ वर्षे भाद्रपदशुक्लषष्ठ्या स्वर्गभाक् ।

'पज्जुन्न'त्ति–श्रीयशोदेवसूरिपट्टे श्रीप्रद्युम्नसूरिः । 'पुण माणदेव'त्ति–श्रीप्रद्युम्नसूरिपट्टे पुनरपि तृतीयः श्रीमानदेव सूरि. । 'उपधानवाच्य' ग्रन्थविधाता । 'सिरिविमल'त्ति–श्रीमानदेवसूरिपट्टे श्रीविमलचन्द्रगुरुस्तत्त्वोपदेष्टा सूरिरित्यर्थः ॥

उज्जोयणो य सूरी वडगच्छो सव्वदेवसूरिपहू ।
सिरिदेवसूरि तत्तो पुणो वि सिरिसव्वदेवमुणी ॥१०॥

'उज्जोयणो य'त्ति–उद्योतनश्च सूरिः । श्रीविमलचन्द्रसूरिपट्टे उद्योतनसूरि. । कथभूत' ? 'वडगच्छो'त्ति–वटाद्गच्छो यस्यासौ वडगच्छः, बृहद्गच्छो वा । स श्रीउद्योतनसूरिरन्यदाऽर्बुदाचलयात्रार्थं पूर्वावनीतः समागतः । आगच्छन् ढे(टे ?)लीग्रामस्य सीम्नि पृथोर्वटस्य छायायामुपविष्टो निजपट्टोदयहेतु शुभमुहूर्तं विज्ञाय श्रीवीरात् चतुःषष्ट्यधिकचतुर्दशशत १४६४ वर्षे, विक्रमात् चतुर्नवत्यधिकनवशत ९९४ वर्षे निजपट्टे श्रीसर्वदेवसूरिप्रभृतीनष्टौ सूरीन् स्थापितवान् । केचित्तु सर्वदेवसूरिमेकमेव वदन्ति । वटस्याध' सूरिपदकरणात् वडगच्छ इति पञ्चम नाम लोकप्रसिद्धमिति । तथा प्रधानशिष्यसन्तत्या ज्ञानादिगुणै' प्रधानचरितैश्च बृहत्त्वाद् बृहद्गच्छ इति वा ।

'सव्वदेव'त्ति–श्रीउद्योतनसूरिपट्टे श्रीसर्वदेवसूरिप्रभु । स च गौतमवत् सुशिष्यलब्धिमान् । विक्रमाद् दशाधिकदशशतवर्षे १०१० रामसैन्यपुरे श्रीऋषभचैत्ये श्रीचन्द्रप्रभप्रतिष्ठाकृत् । चन्द्रावत्या निर्मितोत्तुङ्गप्रासाद कुकुणमन्त्रिण स्वगिरा प्रतिबोध्य प्राव्राजयत् । यदुक्तम्–

> चारित्रशुद्धिं विधिवज्जिनागमाद् विधीय भव्यानभित प्रबोधयन् ।
> चकार जैनेश्वरशासनोन्नतिं य. शिष्यलब्ध्याऽभिनवो नु गौतमः ॥
> भूपाद्दशाग्रे शरदा सहस्रे १०१० यो रामसैन्याह्वपुरे चकार ।
> नाभेयचैत्येऽष्टमतीर्थराजबिम्बप्रतिष्ठा विधिवत् सदर्च्यं ॥
> चन्द्रावतीभूपतिनेत्रकल्प श्रीकुकुण मन्त्रिणमुच्चऋद्धिम् ।
> निर्मापितोत्तुङ्गविशालचैत्यं योऽदीक्षयच्छुद्धगिरा प्रबोध्य ॥

तथा विक्रमाद् एकोनत्रिंशदधिकदशशतवर्षे १०२९ धनपालपण्डितेन देशीनाममाला कृता । विक्रमात् पण्णवत्यधिकसहस्र १०९६ वर्षे श्रीमदुत्तराध्ययनबृहट्टीकाकृत् थिरापद्रीयवादिवेतालश्रीशान्तिसूरिः स्वर्गभाक् ।

श्रीदेवसूरिशिष्यश्रीप्रद्योतनसूरिशिष्यश्रीमानदेवसूरिप्रबन्ध उक्त', पर तत्र नाशका निधेया। येन तत्र अन्येऽपि प्रबन्धा व्यस्ततयोक्ता दृश्यन्त इति।

'वीरगुरु'त्ति–श्रीमानतुगसूरिपट्टे श्रीवीरगुरुः–श्रीवीरसूरिर्जयतु। स च श्रीवीरात् सप्ततिसप्तशत ७७० वर्षे विक्रमत. त्रिशती ३०० वर्षे नागपुरे श्रीनमिप्रतिष्ठाकृत्। यदुक्तम्–

नागपुरे नमिभुवने प्रतिष्ठाया महितपाणिसौभाग्य।
अभवद् वीराचार्यस्त्रिभि शतै साधिके राज्ञः॥

'जयदेवो'त्ति–श्रीवीरसूरिपट्टे श्रीजयदेवसूरि'।

देवाणदो विक्कम-नरसिंह-समुद्द-माणदेववरा।
विबुहप्पहाभिहाणो युगप्पहाणो जयाणदो ॥८॥

'देवाणदो'त्ति–श्रीजयदेवसूरिपट्टे श्रीदेवानन्दसूरिः। अत्रान्तरे श्रीवीरात् पञ्चचत्वारिंशदधिकाष्टशत ८४५ वर्षातिक्रमे वलभीभग। द्व्यशीत्यधिकाष्टशत ८८२ वर्षातिक्रमे चैत्यस्थिति। षडशीत्यधिकशत ८८६ वर्षातिक्रमे ब्रह्मदीपिका'।

'विक्कम'त्ति–श्रीदेवानन्दसूरिपट्टे श्रीविक्रमसूरि'। 'नरसिंह'त्ति–श्रीविक्रमसूरिपट्टे श्रीनरसिंहसूरि'। यत –

नरसिंहसूरिरासीदतोऽखिलग्रन्थपारगो येन। यक्षो नरसिंहपुरे मासरतिं त्याजित. स्वगिरा॥

'समुद्द'त्ति–श्रीनरसिंहसूरिपट्टे श्रीसमुद्रसूरि। स च किलक्षण'–

खोमाणराजकुलजोऽपि समुद्रसूरिर्गच्छ शशास किल य प्रवणप्रमाणी।
जित्वा तदा क्षपणकान स्ववश वितेने नागह्रदे भुजगनाथनमस्यतीर्थम्॥

'माणदेव'–त्ति। श्रीसमुद्रसूरिपट्टे पुन श्रीमानदेवसूरि। एते पूर्वोक्ता गुरवो वरा प्रधाना इत्यर्थ। स श्रीमानदेव कथभूत. ?

विद्यासमुद्रहरिभद्रमुनीन्द्रमित्र सूरिर्बभूव पुनरेव हि मानदेव।
मान्द्यात् प्रयातमपि योऽनघसूरिमन्त्र लेभेऽम्बिकामुखगिरा तपसोज्जयन्ते॥

श्रीवीरात् वर्षसहस्रे १००० गते सत्यमित्राचार्ये पूर्वव्यवच्छेद। अत्र च श्रीनागहस्ती १ रेवतीमित्रो २ ब्रह्म-३ नागार्जुनो ४ भूतदिन्न' ५ श्रीकालिकसूरिश्चेति ६ षट् युगप्रधाना यथाक्रम श्रीवज्रसेन–सत्यमित्रयोरन्तरालकालवर्तिनो बोध्या। एषु च युगप्रधान शक्राभिनन्दितपादपद्म प्रथमानुयोगसूत्राणा सूत्रधारकल्प श्रीकालिकाचार्यगुरुरः। तै' श्रीकालिकाचार्य' श्रीवीरात् त्रिनवत्यधिकनवशत ९९३ वर्षातिक्रमे "अतराविय से कप्पइ, नो से कप्पइ त रयणि उवाइणा विइत्तए"त्ति श्रीवीरवचनात् पचमीतश्चतुर्थ्या पर्युषणापर्वानीतमिति। श्रीवीरात् पचपचाशदधिकसहस्र १०५५ वर्षातिक्रमे, विक्रमात् पचाशीत्यधिकपचशत ५८५ वर्षातिक्रमे, याकिनीसूनु श्रीहरिभद्रसूरि स्वर्गं गत। तथा श्रीवीरात् पचदशाधिकैकादशशत १११५ वर्षे श्रीजिनभद्रगणिर्युगप्रधान'। जिनभद्रीयध्यानशतकादेर्हरिभद्रसूरिभिर्वृत्तिकरणाद्भिन्न इति पट्टावल्या दृश्यते, पर श्रीजिनभद्रगणिश्चतुरुत्तरशत १०४ वर्षायुष्कस्तेन हरिभद्रसूरिकालेऽपि सभवात्, नाशकावकाश इति।

'विबुह'त्ति–श्रीमानदेवसूरिपट्टे श्रीविबुधप्रभसूरि। 'जुगप्पहाणो'त्ति–युगप्रधान इव युगप्रधान। 'जयाणद' त्ति–श्रीविबुधप्रभसूरिपट्टे श्रीजयानन्दसूरि'।

सिरिरविपहसूरिंदो जसदेवो देवयाहिं दीवंतो ।
पज्जुन्नसूरि पुण माणदेव-सिरिविमलचंदगुरू ॥९॥

'सिरिरवि' त्ति–श्रीजयानन्दसूरिपट्टे श्रीरविप्रभसूरिः । स च श्रीवीरात् सप्तत्यधिकैकादशशतवर्षे ११७०, विक्रमात् सप्तशतवर्षे ७०० नड्डूलपुरे श्रीनेमिनाथप्रासादप्रतिष्ठाकृत् । तथा च श्रीवीरात् नवत्यधिकैकादशशत ११९० वर्षे श्रीउमास्वातिवाचको युगप्रधानः ।

'जसदेवो' त्ति–श्रीरविप्रभसूरिपट्टे श्रीयशोदेवसूरिः । कथंभूतः ? 'देवयाहिं'ति–देवताभिः मन्त्राधिष्ठात्रीभिः दीप्यन् दीप्यमान इत्यर्थः ।

अत्र च श्रीवीरात् द्विसप्तत्यधिकद्वादशशतवर्षे १२७२, विक्रमात् द्व्युत्तराष्टशतवर्षे ८०२ अणहिल्लपुरपत्तन-स्थापना वनराजेन कृता । तथा च सप्तत्यधिकद्वादशशत १२७० वर्षे श्रीवीरात्, विक्रमकालाच्च अष्टशत ८०० वर्षे भाद्रपदशुक्लतृतीयायां बप्पभट्टिसूरेर्जन्म । येन आमराजा प्रतिबोधितः । स च श्रीवीरात् पञ्चषष्ठ्यधिकत्रयोदशशत १३६५ वर्षे, विक्रमात् पञ्चनवत्यधिकाष्टशत ८९५ वर्षे भाद्रपदशुक्लषष्ठ्या स्वर्गभाक् ।

'पज्जुन्न'त्ति–श्रीयशोदेवसूरिपट्टे श्रीप्रद्युम्नसूरिः । 'पुण माणदेव'त्ति–श्रीप्रद्युम्नसूरिपट्टे पुनरपि तृतीयः श्रीमानदेव-सूरिः । 'उपधानवाच्य' ग्रन्थविधाता । 'सिरिविमल'त्ति–श्रीमानदेवसूरिपट्टे श्रीविमलचन्द्रगुरुस्तत्त्वोपदेष्टा सूरिरित्यर्थः ।

उज्जोयणो य सूरी वडगच्छो सव्वदेवसूरिपट्टे ।
सिरिदेवसूरि तत्तो पुणो वि सिरिसव्वदेवमुणी ॥१०॥

'उज्जोयणो य'त्ति–उद्योतनश्च सूरिः । श्रीविमलचन्द्रसूरिपट्टे उद्योतनसूरिः । कथभूतः ? 'वडगच्छो'त्ति–वटाद्गच्छो यस्यासौ वडगच्छः, बृहद्गच्छो वा । स श्रीउद्योतनसूरिरन्यदाऽर्बुदाचलयात्रार्थं पूर्वावनीतः समागतः । आगच्छन् ढे(टे ?)लीग्रामस्य सीम्नि पृथोर्वटस्य छायायामुपविष्टो निजपट्टोदयहेतु शुभमुहूर्तं विज्ञाय श्रीवीरात् चतुःषष्ठ्यधिक-चतुर्दशशत १४६४ वर्षे, विक्रमात् चतुर्नवत्यधिकनवशत ९९४ वर्षे निजपट्टे श्रीसर्वदेवसूरिप्रभृतीनष्टौ सूरीन् स्थापि-तवान् । केचित्तु सर्वदेवसूरिमेकमेव वदन्ति । वटस्याधः सूरिपदकरणात् वडगच्छ इति पञ्चमं नाम लोकप्रसिद्ध-मिति । तथा प्रधानशिष्यसन्तत्या ज्ञानादिगुणैः प्रधानचरितैश्च बृहत्त्वाद् बृहद्गच्छ इति वा ।

'सव्वदेव'त्ति–श्रीउद्योतनसूरिपट्टे श्रीसर्वदेवसूरिप्रभुः । स च गौतमवत् सुशिष्यलब्धिमान् । विक्रमाद् दशाधि-कदशशतवर्षे १०१० रामसैन्यपुरे श्रीऋषभचैत्ये श्रीचन्द्रप्रभप्रतिष्ठाकृत् । चन्द्रावत्यां निर्मितोत्तुङ्गप्रासादं कुकुणमन्त्रिणं स्वगिरा प्रतिबोध्य प्राव्राजयत् । यदुक्तम्–

चारित्रशुद्धिं विधिवज्जिनागमाद् विधीय भव्यानभितः प्रबोधयन् ।
चकार जैनेश्वरशासनोन्नतिं यः शिष्यलब्ध्याऽभिनवो नु गौतमः ॥
भूपादशाग्रे शरदां सहस्रे १०१० यो रामसैन्याह्वपुरे चकार ।
नाभेयचैत्येऽष्टमतीर्थराजबिम्बप्रतिष्ठां विधिवत् सदर्च्य. ॥
चन्द्रावतीभूपतिनेत्रकल्पं श्रीकुकुणं मन्त्रिणमुच्चऋद्धिम् ।
निर्मापितोत्तुङ्गविशालचैत्यं योऽदीक्षयच्छुद्धगिरा प्रबोध्य ॥

तथा विक्रमाद् एकोनत्रिंशदधिकदशशतवर्षे १०२९ धनपालपण्डितेन देशीनाममाला कृता । विक्रमात् पण्ण-वत्यधिकसहस्र १०९६ वर्षे

'सिरिदेवसूरि तत्तो'त्ति–तत श्रीसर्वदेवसूरिपट्टे श्रीदेवसूरि'। स च श्रीदेवसूरी रूपश्रीतर्जितरतिपतिर्भूपप्रदत्त-मिरुदधारी।

'पुणो वि सिरिसव्वदेवमुणी'त्ति–श्रीदेवसूरिपट्टे पुनरपि श्रीसर्वदेवमुनि' सूरिरित्यर्थ'॥

जेण य अट्ठायरिया समयसुत्तत्थदायगा ठविआ।
तत्थ धणेसरसूरी पभावगो वीरतित्थस्स ॥११॥

'जेणय'त्ति–येन श्रीसर्वदेवसूरिणा, 'अट्ठायरिय'त्ति–अष्टौ आचार्या'। कथभूता'? 'समयसुत्तत्थे'ति–समय' सिद्धान्तः, तस्य सूत्रार्थौ तौ ददन्तीति समयसूत्रार्थदायका'। 'ठविय'–त्ति स्थापिता.। 'तत्थे'त्ति–तत्र तेषु आचार्येषु, 'धणेसर'त्ति-धनेश्वरसूरि', 'वीर'त्ति-श्रीवीरतीर्थस्य प्रभावकः। श्रीवीरतीर्थस्य प्रभावकत्व दर्शयति–

खवणाण सत्तसया एगु च्चिअ दिक्खिआ सहत्थेण।
चित्तपुरे जिणवीरो पइट्ठिओ चित्तगच्छो य ॥१२॥

'खवणाण'ति–क्षपणका दिग्वाससो निन्हवाः, तेषा सप्तशतानि, 'एगु'त्ति–एकवार स्वहस्तेन दीक्षितानि। ते च नग्नाटा स्वमतपक्षपातदुग्रहा' चैत्रपुरे राजसभाया श्रीधनेश्वरसूरिभिः सार्द्धं पणीकृत्य विवदितुमागता'। ते सर्वे श्रीगुरुभि' स्वयुक्त्या जिता, समयामृतोपदेशेन बोधिताश्च। तदा ते सर्वे शिष्यीभाव प्रतिपद्य श्रीगुरूणामन्तिके स्थिता। श्रीगुरुभिस्तेषा श्वेताम्बरीदीक्षाप्रदानेन बहूपकारितम्। एतत्सर्वं चैत्रपुरे जातम्। तस्मिश्च चैत्रपुरे श्रीमहावीर-प्रतिष्ठा कृता। तत्र चैत्र इति नाम्ना गच्छोऽपि प्रतिष्ठित.॥

तत्थ सिरिचित्तगच्छे तओ गुरू भुवणचदतप्पट्टे।
जावज्जीव अविलतवकरणाभिग्गहा उग्गा ॥१३॥

'तत्थे' ति–तत्र तस्मिन् श्रीधनेश्वरसूरिस्थापिते श्रीचैत्रनाम्नि गच्छे, तत' श्रीधनेश्वरसूरिपट्टालकरणश्री-भुवनचन्द्रसूरि'। तथेह श्रीधनेश्वरसूरि–भुवनचन्द्रसूर्यन्तरालकाले विक्रमात् पचत्रिंशदधिकैकादशशतवर्षे ११३५, केचिदेकोनचत्वारिंशदधिकैकादशशते ११३९ नवागवृत्तिकृत् श्रीअभयदेवसूरि स्वर्गभाक्। तथा कूर्चपुरगच्छीय-चैत्यवासी जिनेश्वरसूरिशिष्यो जिनवल्लभगणिश्चित्रकूटे षष्ठ कल्याणक प्ररूपितवान्। अत्र च एकोनषष्ट्यधिकैकादश-शतवर्षे ११५९ पौर्णिमीयकमतोत्पत्ति। तत्प्रतिबोधाय च श्रीमुनिचन्द्रसूरिभि 'पाक्षिकसप्ततिका' कृतेति।

श्रीमुनिचन्द्रसूरिशिष्यश्रीवादिदेवसूरिभि श्रीअणहिल्लपुरपत्तने जयसिंहदेवराजस्थानेकविद्वज्जनकलिताया सभायां चतुरशीतिवादलब्धजययशस नग्नाटचक्रवर्त्तिन वादलिप्सु कुमुदचन्द्राचार्यं वादे निर्जित्य श्रीपत्तने दिगम्बरप्रवेशो निवारितोऽद्यापि प्रतीत। तथा विक्रमात् चतुरधिकद्वादशशतवर्षे १२०४ फलवर्द्धिग्रामे चैत्य बिम्बयो. प्रतिष्ठा कृता। तत्तीर्थं तु सम्प्रत्यपि प्रसिद्धम्। तथा आरासणे च श्री नेमिनाथप्रतिष्ठा कृता। तथा चतुरशीतिसहस्र ८४००० प्रमाण. 'स्याद्वादरत्नाकर' नामा प्रमाणग्रन्थ कृत। येभ्यश्च यन्नाम्नैव ख्यातिमचतुर्विंशतिसूरिशाखा बभूव। एषा च श्री-वादिदेवसूरीणा विक्रमात् चतुस्त्रिंशदधिकैकादशशत ११३४ वर्षे जन्म, द्विपचाशदधिकैकादशशत ११५२ वर्षे दीक्षा, चतु सप्तत्यधिके ११७४ सूरिपदम्। षड्विंशत्यधिकद्वादशशत १२२६ वर्षे श्रावणवदिसप्तमीगुरौ स्वर्गभाक्।

तत्समये पूर्णतल्लगच्छीयश्रीदेवचन्द्रसूरिशिष्यस्त्रिकोटिग्रन्थकर्त्ता 'कलिकालसर्वज्ञ' ख्यातिमान् श्रीहेमचन्द्रसूरि.। तस्य विक्रमात् पचचत्वारिंशदधिकैकादशशत ११४५ वर्षे कार्तिकसुदिपूर्णिमाया जन्म, पचाशदधिकैकादशशते

११५० व्रतम्, षट्षष्ठ्येकादशशते ११६६ सूरिपदम्, एकोनत्रिंशदधिकद्वादशशते १२२९ वर्षे स्वर्गः।

तत्समये विक्रमात् चतुरधिकद्वादशशत १२०४ वर्षे खरतरोत्पत्तिः। तथा विक्रमात् त्रयोदशाधिकद्वादशशत १२१३ वर्षे अचलिकमतोत्पत्तिः। विक्रमात् षट्त्रिंशदधिकद्वादशशत १२३६वर्षे सार्द्धपौर्णमीयकोत्पत्तिः। विक्रमात्पञ्चाशदधिकद्वादशशत १२५०वर्षे आगमिकमतोत्पत्तिः। यदुक्तं 'गुरुतत्त्वप्रदीपे'–

हु नन्देन्द्रियरुद्र(११५९)कालजनितः पक्षोऽस्ति राकांकितो
वेदाभ्रारुण(१२०४)काल उष्ट्रिकभवो, विश्वार्ककाले(१२१३)ऽञ्चलः।
षट्त्र्यर्केषु च (१२३६) सार्द्धपौर्णिम इति. व्योमेन्द्रियार्के (१२५०) पुनः
त्रिस्तुतिकोऽक्षमंगलरवौ(१२८५)गाढक्रियास्तापसाः॥

तथा च जीर्णपत्रे गाथाचतुष्कम्–

एगारसए पुण्णे एगुणसट्ठिम्मि विक्कमाओ गए।
वडगच्छाओ पुण्णिम जाया चंदप्पहक्कसाया॥ १
बारसवाससएसु विक्कमकालाओ जलहिअहिएसु।
जिणवल्लहकोहाओ कुचरयगणाउ खरयरया॥ २
बारसचउदुत्तरए जाया उ पुण्णिमाओ अचलया।
बारसपचासम्मि अचलिआओ अ आगमिआ॥ ३
बारह छत्तीसंमि पुण्णमीआओ अ साहुपुण्णमीआ।
बारसपचासियम्मि तवागणो देवभद्दाओ॥ ४

तथा च श्रीवीरात् द्विनवत्यधिके षोडशशतवर्षे श्रीशत्रुंजये बाहडोद्धारः।

'जावज्जीव'त्ति–श्रीभुवनचन्द्रसूरिपट्टे 'वैराग्यरसैकसमुद्रा' श्रीदेवभद्रगणिगुरवः। कथंभूताः? चारित्रकालाद् आजीवितं यावत्, 'अविल'त्ति–षष्ठतपःपारणके आचामाम्लतपःकरणाभिग्रहो येषां ते। तथा पुनः कथंभूताः? 'उग्गा'–उग्रविहारिणः।

'आबाल'त्ति–बालाश्च गोपाश्च बालगोपाः, बालगोपान् आमर्यादीकृत्य आबालगोपं प्रसिद्धा सर्वत्र विख्याता शुद्धा निर्मला सम्प्राप्ता 'तपागण' इत्यभिख्या नाम यैः,ते आबालगोपसुप्रसिद्धसम्प्राप्ततपोगणाभिख्याः। ते च के इत्याह–'सिरि'त्ति–श्रीदेवभद्रगुरवः, देवानां पूज्यानां मध्ये भद्रजातीभद्रा इव भद्रा देवभद्राः, श्रीमन्तश्च ते देवभद्राः, अथवा श्रीमन्तश्च ते देवाश्च पूज्याश्च श्रीदेवाः। पूर्वर्षयो गौतमादयस्तद्वद्भद्राः। श्रीदेवभद्राश्च ते गुरवश्च श्रीदेवभद्रगुरवः। बहुवचनं पूज्यत्वात्। ते च भगवन्तः श्रीभुवनचन्द्रसूरीणां शिष्याः,श्रीजैनसमयामृतवारापारपारीणाः, स्वगणे किंचित् क्रियाशैथिल्यमवलोक्य श्रीगुर्वाज्ञया संवेगरंगचेतसः सत्क्रियोद्धारं चक्रिरे। क्रियोद्धारदिनमारभ्य यावज्जीवं षष्ठतपःपारणके आचामाम्लतपःकरणाभिग्रहधारिणो गणित्वमापन्नाः। प्रवचने सांगधीती गणिस्तद्भावो गणित्वम्। अथवा गणोऽस्यास्तीति गणी तद्भावो गणित्वमिति। इतश्च वडगच्छीयश्रीमणिरत्नसूरिशिष्याः श्रीजगच्चन्द्राचार्याः क्रियाशिथिलं स्वगणं विहाय श्रीदेवभद्रगुरुं सर्वोत्कृष्टक्रियाधरगण्यर्थगरिष्ठं संवेगसागरं ज्ञात्वा तेषां सन्निधमुपागत्य श्रीदेवभद्रगणिं गुरुत्वेन प्रतिपद्य तेभ्यश्चारित्रोपदां गृहीत्वा, तत्समीप एव स्थिताः। श्रीदेवभद्रगुरुभिरपि स्वपदे स्थापिताः। उभयोरपि गाढक्रिया तपोबाहुल्यं दृष्ट्वा सहर्षैर्लोकैरेते तपा इति बिरुदं प्रसिद्धं प्रदत्तम्। एतच्च विक्रमात् पञ्चाशीत्यधिकद्वादशशतवर्षे श्रीविद्यापुरनगरे भूपसभासमक्षं तपाबिरुदं लेभिरे।

'जगचंदो'त्ति-श्रीजगचन्द्रसूरिरपि 'हीरलाजगचन्द्रसूरि' इति ख्यातिभागभूत्। तथा च निर्ग्रंथ १, कौटिक २, चन्द्र ३, वनवासि ४, वडगच्छापरनामबृहद्गच्छ ५, तपा ६ इति षण्णा नाम्ना प्रवृत्तिहेतवो गुरवः क्रमेण-श्रीसुधर्म्मस्वामी १, श्रीसुस्थित २, श्रीचन्द्र ३, श्रीसामन्तभद्र ४, श्रीउद्योतन ५, श्रीदेवभद्र-जगचन्द्र ६ नामानः स्युरिति।

देविंद-विजयचंदा गुरुबंधू खेमकित्तिकित्तिधरो।
गुरुहेमकलसपुज्जो रयणायरसूरिणो सच्चा ॥१५॥

'देविंद'त्ति-श्रीदेवेन्द्रसूरि-श्रीविजयचन्द्रसूरी उभावपि श्रीजगचन्द्रसूरीणा गुरुभ्रातरौ, श्रीदेवभद्रगुरोः शिष्यत्वात्। एतच्चोक्तं श्रीबृहत्कल्पवृत्तिप्रशस्तौ-

श्रीजैनशासननभस्तलतिग्मरश्मिः श्रीसद्मचन्द्रकुलपद्मविकाशकारी।
सज्ज्योतिरावृतदिगम्बरडम्बरोऽभूत् श्रीमान् धनेश्वरगुरुः प्रथितः पृथिव्याम् ॥ १

श्रीमच्चैत्रपुरैकमण्डनमहावीरप्रतिष्ठाकृतस्तस्माच्चैत्रपुरप्रबोधतरणेः श्रीचैत्रगच्छोऽजनि।
तत्र श्रीभुवनेन्दुसूरिसुगुरुर्भूभूषणं भास्करः ज्योतिः सद्गुणरत्नरोहणगिरिः कालक्रमेणाभवत् ॥ २

तत्पादाम्बुजमण्डनं समभवत् पक्षद्वयाच्छुद्धिमान् नीरक्षीरसदृक्षदूषणगुणत्यागग्रहैकव्रतः।
कालुष्यं च जडोद्भवं परिहरन् दूरेण सन्मानसस्थायी राजमरालवद्गणिवरः श्रीदेवभद्रप्रभुः ॥ ३

शस्याः शिष्यास्त्रयस्तत्पदसरसिरुहोत्सगशृङ्गारभृङ्गा
विध्वस्तानङ्गसगाः सुविहितविहितोत्तुङ्गरङ्गा बभूवुः।
तत्राद्यः सच्चरित्रानुमतिकृतमतिः श्रीजगच्चन्द्रसूरिः
श्रीमान् देवेन्द्रसूरिः सरलतरलसच्चित्तवृत्तिर्द्वितीयः ॥ ४

तृतीयशिष्याः श्रुतवारिवार्द्धयः परीषहाक्षोभ्यमनःसमाधयः।
जयन्ति पूज्या विजयेन्दुसूरयः परोपकारादिगुणौघभूरयः ॥ ५

प्रौढं मन्मथपार्थिवं त्रिजगतीजैत्रं विजित्येयुषा,
येषां जैनपुरे परेण महसा प्रक्रान्तकान्तोत्सवे।
स्थैर्यं मेरुरगाधता च जलधिः सर्वंसहत्वं मही,
सोमः सौम्यमहर्पतिः किलमहत्तेजः कृतं प्राभृतम् ॥ ६

वापं वापं प्रवचनवचोबीजराजीं विनेय-
क्षेत्रव्राते सुपरिमिलिते शब्दशास्त्रादिसारे।
यैः क्षेत्रज्ञैः शुचिगुरुजनाम्नायवाक्सारणीभिः
सिक्त्वा तेने सुजनहृदयानन्दिसज्ज्ञानसस्यम् ॥ ७

यैरप्रमत्तैः शुभमन्त्रजापैर्वेतालमाधाय कलिं स्ववश्यम्।
अतुल्यकल्याणमयोत्तमार्थः सत्पूरुषैः सत्त्वधनैरसाधि ॥ ८

ज्योत्स्नामञ्जुलया यया धवलितं विश्वम्भरामण्डलं,
या निःशेषविशेषविज्ञजनताचेतश्चमत्कारिणी।

तस्याः श्रीविजयेन्दुसूरिसुगुरोर्निष्कृत्रिमाया गुण-
श्रेणेः स्याद्यदि वास्तवस्तवकृतौ विज्ञः स वाचांपतिः ॥ ९

* * *

श्रीदेवेन्द्रसूरिभिरपि धर्मरत्नप्रकरणवृत्तिप्रशस्तौ-

विष्णोरिव यस्य विभोः पदत्रयी व्यानशे जगन्निखिलम् ।
सद्धर्मरत्नजलधिः स श्रीवीरो जिनो जयतात् । १
कुंदोज्ज्वलकीर्त्तिभरैः सुरभीकृतसकलविष्टपाभोगः ॥
शतमखशतविनतपदः श्रीगौतमगणधरः पातु ॥ २
तदनु सुधर्मस्वामी जंबू प्रभवादयो मुनिवरिष्ठाः ।
श्रुतजलनिधिपारीणा भूयांसः श्रेयसे सन्तु ॥ ३
क्रमशश्चित्रावालकगच्छे कविराजराजिनभसीव ।
श्रीभुवनचन्द्रसूरिर्गुरुरुदियाय प्रवरतेजाः ॥ ४
तस्य विनेयः प्रशमैकमन्दिर देवभद्रगणिपूज्यः ।
शुचिसमयकनकनिकषो बभूव भुविविदितभूरिगुणः ॥ ५
तत्पादपद्मभृङ्गा निस्सङ्गाश्चङ्गसंवेगाः ।
सजनितशुद्धबोधा जगति जगचन्द्रसूरिवराः ॥ ६
तेषामुभौ विनेयौ श्रीमान् देवेन्द्रसूरिरित्याद्यः ।
श्रीविजयचन्द्रसूरिर्द्वितीयकोऽद्वैतकीर्त्तिभरः ॥ ७
स्वान्ययोरुपकाराय श्रीमद्देवेन्द्रसूरिणा ।
धर्मरत्नस्य टीकेयं सुखबोधा विनिर्ममे ॥ ८
श्रीहेमकलशवाचकपण्डितवरधर्मकीर्त्तिमुख्यबुधैः ।
स्वपरसमयैककुशलैस्तदैव संशोधिता चेयम् ॥ ९

* * *

पुनः श्रीदेवेन्द्रसूरिविरचितश्राद्धदिनकृत्यवृत्तिप्रशस्तौ-

जीयाच्छ्रीवर्धमानस्य तीर्थं सुरसरित्समम् । पवित्रं विबुधैः सेव्यं पङ्कतृष्णापहं च यत् ॥ १
गौतमादनु तत्राभूत् श्रुतगङ्गाहिमाचलः । आद्यो युगप्रधानानां सुधर्मा गणभृद्वरः ॥ २
ततश्च केवली जंबू प्रभवः श्रुतकेवली । शय्यंभवो यशोभद्रः संभूतिविजयोऽपि च ॥ ३
ततोऽभूद्वज्रसेनर्षिर्वज्रशाखा ततोऽप्यभूत् । गणस्य कौटिकाभिख्या कुलं चन्द्रकुलं तथा ॥ ४
तत्र क्रमेण चित्रावालकगच्छो बभूव भूविदितः । श्रीभुवनचन्द्रसूरिस्तत्राभूद्भव्यपद्मरविः ॥५
तच्छिष्यरत्नमभवद् भुवनप्रसिद्धाश्चारित्रपात्रमखिलश्रुतपारगामाः ।
गाम्भीर्यमुख्यगुणरत्नमहासमुद्राः श्रीदेवभद्रगणिमिश्रसुनामधेयाः ॥ ७
तत्पादाम्बुजरोलम्बावपुण्यपि । अभूवन् भूरिभाग्याढ्याः श्रीजगच्चन्द्रसूरयः ॥ ८
देवेन्द्रसूरिसंज्ञस्तेषामाद्यो बभूव शिष्यलवः । श्रीविजयचन्द्रसूरिस्तथा द्वितीयो गुणैस्त्वाद्यः ॥ ९

चक्रे भव्यावबोधाय सम्प्रदायात्तथागमात्। सच्छ्राद्धदिनकृत्यस्य वृत्तिर्देवेन्द्रसूरिभिः॥ १०
श्रीविजयचन्द्रसूरिप्रमुखैर्विद्वद्गणैर्गुणगरिष्ठैः। स्वपरोपकारनिरतैस्तदैव संशोधिता चेयम्॥ ११
प्रथमां प्रतिमप्रतिममतिहस्तितत्रिदशसूरिः। श्रीहेमकलशनामा सदुपाध्यायो लिलेखास्याः॥ १२

* * *

श्रीगुणरत्नसूरिकृतक्रियारत्नसमुच्चयप्रशस्तावप्येवम्–

विद्योश्चैत्रगणाम्भोधौ तपोज्ञानक्रियानिधेः। वाचकानामलंकारात् देवभद्रगणीश्वरात्॥ २७
चारित्रमुपसपद्य यावज्जीवमभिग्रहात्। आचामाम्लतपस्तेनुस्तपागच्छस्ततोऽभवत्॥ २८
तत्पट्टोदयभूधरे शशिरवी वागीश्वरौ मन्दरे
सेनान्यौ वृपभूपतेः शमरमाकर्णावतंसावुभौ।
श्रीदेवेन्द्रमुनीश्वरोऽमवमना आद्यो द्वितीय पुन.
सूरीशो विजयेन्दुरुत्तरगुण. सेव्यावभूता सताम्॥ २९

इति बृहत्कल्पवृत्तिप्रशस्त्यनुसारेण श्रीविजयचन्द्रसूरिप्रभृतयस्त्रयोऽपि सतीर्थ्या, श्रीदेवभद्रगुरूणा शिष्यत्वादिति। ग्रन्थत्रयप्रशस्त्यनुसारेण तु देवेन्द्र–विजयचन्द्रौ गुरुभ्रातरावित्यर्थ.।

अथ श्रीदेवभद्र–श्रीजगच्चन्द्रौ द्वावपि गुरू स्वर्गभाजावभूताम्। इतश्च तत्समये श्रीदेवेन्द्रसूरयो मालवके विचरन्ति स्म, श्रीविजयचन्द्रसूरयस्तु स्तभतीर्थे सन्ति स। तदा श्रीदेवेन्द्रसूरीणामाकारण प्रेषितम्। ते तु किमपि कारणवशान्नायाताः। तत' श्रीस्तभतीर्थे साधु–साध्वी–श्रावक–श्राविकाभिश्चतुर्विधसघेन श्रीविजयचन्द्रगुरु गुणगणगरिष्ठ पट्टधरयोग्य निज्ञाय गणधरपदे स्थापयाचक्रे। तच्छ्रुत्वा श्रीदेवेन्द्रसूरयोऽपि स्तभतीर्थे ममागता.। पृथक्स्थाने स्थिता.। तत्र श्रीहेमकलशादयो गीतार्था. श्रीविजयचन्द्रसूरिसमुदायस्य 'वृद्धशालिका' इत्युक्तम्, देवेन्द्रसूरिनिश्रितस्य शालिका' इति ख्यातिः।

श्रीविजयचन्द्रसूरिव्यतिकरस्त्वेवम्–पूर्वं माणसानाम्नि नगरे निवासी अनेकऋद्धिवृद्धिविलासी श्रीओसवशशृगार–दुःस्थितजनाधार–मन्त्रिश्रीगजराजकुलाबरभास्कर' श्रीवीरधवलनृपतिराजव्यापारी पचशतग्रामाधिकारी श्रीजिनधर्मवासितान्त'करणो दीनजनसमुद्धरण. श्रीसम्यक्त्वमूलस्थूलद्वादशव्रतधारी सर्वजनोपकारी निरवद्यविद्यानिशालो मन्त्रीश्वर-श्रीविजयपाल', एकस्मिन्नवसरे श्रीदेवभद्रगुरु विद्यापुरे विचरन्त श्रुत्वा पचविंशतिनैगमपरिवृतोऽनेकपरिकरयुतः श्रीविद्यापुरे श्रीगुरुसमीप चतुर्दशीपौषधोपवासग्रहणार्थमाजगाम। तत्र श्रीगुरुसन्निधि सनैगम पौषधव्रत जग्राह। तद्दिने श्रीगुरूणा देशना श्रुत्वा वैराग्यरसपूर्णचेता. परमसवेगमापन्न। प्रभाते श्रीगुरवो विज्ञप्ता'–पूज्या मम ससारसागर निस्तारयध्वम्। गुरुभिरुक्तम्–यथासुखम्। मन्त्रीश्वरोऽपि पौषध पारयित्वा स्वगृह समागत्य, मन्त्रिवस्तुपालस्य सर्वाधिकारलेखक दत्त्वा महता महेन भूरिद्रव्यव्ययपुरस्सर मन्त्रिश्रीवस्तुपालविहितसयमोत्सव पचविंशति नैगम. सह सपुत्र-कलत्र. श्रीदेवभद्रगुरुहस्तेन सयम ग्रहीतवान्। श्रीगुरुसमीपे सुखेनानेकशास्त्राभ्यासेन गीतार्थत्वमासदत्। तद् दृष्ट्वा श्रीवस्तुपालमहामात्योऽत्यर्थं जहर्ष। श्रीमन्त्रिभि श्रीदेवभद्र–जगच्चन्द्रगुरुवरौ विज्ञप्तौ श्रीविजयचन्द्रोपरहमाचार्य–पदोत्सव चक्रे (करोमि)। श्रीगुरुभिरपि शिष्यद्वय सूरिपदयोग्य विज्ञाय श्रीदेवेन्द्र विजयचन्द्राचार्यो स्थापितौ। बहु-'लघुद्रव्यव्ययपुरस्सर महोत्सव तु मन्त्रिवस्तुपालः कृतवानिति वृद्धा.। स्तभतीर्थे चतु पथस्थितकुमारपालविहारे धर्मदेशनायामष्टादशशत १८०० मुखवस्त्रिकाभि. मन्त्रिवस्तुपालादय' श्रीगुरूणा वदनकप्रदानेन गाढक्रियाबहुमान वहन्ति-स्म। अथ च येऽत्र न्यूनाधिक वदन्ति तेषा वार्त्ता त एव जानन्ति। वय तु उभयेषा गुणरागिण स्म, वृद्धाम्नाया-दायातव्यतिकरलेखका'। तत्त्ववेदिनस्तु केवलिन इति।

'खेमकित्ति'त्ति–श्रीविजयचन्द्रसूरीणा पदे श्रीखेमकीर्त्तिसूरिः। कथंभूतः? कीर्त्तिधरः, सर्वत्र विख्यातकीर्त्तिः। द्विचत्वारिंशत्सहस्रप्रमाणा श्रीबृहत्कल्पजिनागमस्य टीकामकार्षीत्। तेन चतुर्दिक्षु व्याप्तयशाः। तदुक्तम्–

तच्छिष्यः सुरवृक्षोऽभूद् विनेयार्थप्रदानतः। राद्धान्तवारापारस्य पारगः पूज्यपूजितः॥ १

क्षेमकीर्त्तिगुरुर्मत्या विनेयीकृतवाक्पतिः। बृहत्कल्पसदाप्तोक्तेश्चक्रे टीकां सुविस्तराम्॥ २

* * *

तथा श्रीक्षेमकीर्त्तिसूरिभिरेकविंशतिकृत्वो भूपसभासमक्ष परवादिनो जिताः। उक्तं च–

अनवद्यवादविद्यावैशारद्याद् भृतं वचो यस्य। श्रुत्वाऽप्यखर्वगर्वं त्यजन्ति वादीन्द्रवृन्दानि॥ १

तथा श्रीविजयचन्द्रसूरीणा शिष्यद्विकमाचार्यपदधरम्, गणधरस्तु क्षेमकीर्तिसूरिः। तच्चोक्तं बृहत्कल्पवृत्तिप्रशस्तौ–

तत्पाणिपंकजरजःपरिपूतशीर्षाः शिष्यास्त्रयो दधति संप्रति गच्छभारम्।
श्रीवज्रसेन इति सद्गुरुरादिमोऽत्र श्रीपद्मचन्द्रसुगुरुस्तु ततो द्वितीयः॥ १६

तार्तीयीकस्तेषां विनेयपरमाणुरनणुशास्त्रेऽस्मिन्।
श्रीखेमकीर्त्तिसूरिर्विनिर्ममे विवृतिमल्पमतिः॥ १७

श्रीविक्रमतः क्रामति नयनाग्निगुणेन्दु (१३३२) परिमिते वर्षे।
ज्येष्ठश्वेतदशम्या समर्थिता चैष हस्तार्के॥ १८

प्रथमादर्शे लिखिता नयप्रभप्रभृतिभिर्यतिभिरेषा।
गुरुतरगुरुभक्तिभरोद्वहनादिव नम्रितशिरोभिः॥ १९

इह च– सूत्रादर्शेषु यतो भूयस्यो वाचना विलोक्यन्ते।
विषमाश्च भाष्यगाथाः प्रायः स्वल्पाश्च चूर्णिगिरः॥ २०

तत्सूत्रे भाष्ये वा यन्मतिमोहान्मयाऽन्यथा किमपि।
लिखितं वा विवृतं वा तन्मिथ्यादुष्कृतं भूयात्॥ २१

श्रीक्षेमकिर्त्तिसूरिशिष्य पं० श्रीनयप्रभगणिर्गुरुतत्त्वप्रदीपापरनामोत्सूत्रकंदकुद्दालग्रन्थकृत्।

'गुरु'त्ति–श्रीक्षेमकीर्त्तिसूरिपट्टे श्रीहेमकलशसूरिः। कथभूतः? पूज्यः, सर्वेषां वन्दनीयः। उक्तं च–

तत्पट्टाम्बरमार्त्तण्डश्चण्डः कर्मारिभेदने। हेमकुम्भगुरुः ख्यातो हेमकुम्भ इवोज्ज्वलः॥ १

तथा च–कर्णावत्या नगर्यां महाराजाधिराज श्रीसारंगदेवभूपसभायामनेकपण्डितजनपरिकलितायां येषां श्रीहेमकलशसूरीणां वचोऽमृतनिमग्नचेतोभिः सारंगदेवनृपमुख्यैराप्रभातात्संध्यापर्यन्तं दिवसगमनं नावबुद्धं केवलं देशनारस एव पीतः। ततश्च सारंगदेवनृपप्रभृतयो बहवो जनाः सम्यक्त्ववासितान्तःकरणा जाता इति प्रतीतिः।

तथा श्रीहेमकलशसूरिसंस्थापिताचार्याः श्रीयशोभद्रसूरयः। तेऽपि च प्रभावकाः श्रीयशोभद्रसूरिरिव विख्यातयशसः।

'रयणायर'त्ति–श्रीहेमकलशसूरिपट्टधारिणः श्रीरत्नाकरसूरयः। कथभूताः? सत्याः, सत्यसंज्ञाधराः, साक्षाद्रत्नाकरा इव रत्नाकराः। यन्नाम्नाऽद्यापि श्रीवृद्धतपागणो 'रत्नाकरगच्छो'ऽयमिति ख्यातिं प्राप्तः। उक्तं च–श्रीस्तंभतीर्थनिवासिव्यवहारिकोटिकोटीर साधुश्रीशाणराजनिर्म्मापितश्रीविमलनाथप्रासादप्रशस्तौ गिरिनारगिरौ–

श्रीमद्वीरविनेयपंचमगणाधीशः सुधर्म्माऽभवत्
तत्पट्टक्रमतो बभूव गणभृच्छ्रीवज्रसेनप्रभुः ।
तत्पट्टे किलचन्द्रनिर्वृतिमुनी नागेन्द्र-विद्याधरौ
चत्वारश्चतुरम्बुधिप्रसृमरोत्कर्षो बभुः सूरयः ॥ ६८
चान्द्रे तेषु कुलेऽतिदुस्तपतपोनिष्णाततातविश्रुताः
सूरीशा विजयेन्दवः समभवन् वृद्धास्तपा' ख्यातितः ।
तेषामन्वयशालिनस्त्वभिनवश्रीगौतमश्रीधराः
श्रीरत्नाकरसूरयस्त्रिजगतीविख्यातसत्कीर्त्तयः ॥ ६९
यतो धर्मं लब्ध्वा द्विनवतिविहारानरचयत्
सुधीः श्राद्धः पृथ्वीधर उरुवरालङ्कृतिधरान् ।
तथा सिद्धाद्रौ श्रीवृषभभुवनं हेमघटिकै-
कविंशत्या मेरोः शिखरमिव गांगेयकलितम् ॥ ७०
किं वर्ण्यते झङ्खणदेवनाम्नः सूनोस्तदीयस्य यशःप्रशस्तिम् ।
शत्रुंजयादागिरिनारशृङ्गं योऽदाद् ध्वजं हेममयं किलैकम् ॥ ७१
वर्षे विक्रमतः कुसप्तदहनैकस्मिन् (१३७१) युगादिप्रभुः
श्रीशत्रुंजयमूलनायकमतिप्रौढप्रतिष्ठोत्सवम् ।
साधुश्रीसमराभिधस्त्रिभुवनीमान्यो वदान्यः क्षितौ
श्रीरत्नाकरसूरिभिर्गणधरैर्यः स्थापयामासिवान् ॥ ७२

उक्तं च पुनरपि-

ततो रत्नाकरः सूरिर्ज्ञानरत्नमहोदधिः । यतो रत्नाकराभिख्या लेभे वृद्धतपागणः ॥ १

ते च श्रीगुरवोऽन्यदा श्रीगिरिनारतीर्थे श्रीनेमियात्रार्थं चलिताः । तत्पर्वते परीक्षार्थमम्बिकया चिन्तामणिर्दर्शितः । श्रीगुरुभिः सपरिकरैर्दृष्टः । तदा शिष्यैः पृष्टा गुरवः-पूज्याः ! कोऽयं मणिः ? । गुरुभिरुक्तम्-चिन्तारत्नम् । कथं ज्ञायते परीक्षां विना ? । गुरुभिरुक्तम्-हे मणे ! सम्मतीर्थेचित्कोशतः सघृतिकं भगवत्यङ्गमानय । तदा तेन तत्क्षणमेवानीतम् । परीक्षया ज्ञातश्चिन्तामणिः । श्रीगुरुभिर्निर्लोभतया तत्रैव मुक्तो मणिः, अदृष्टश्चाभूत् । कैश्चिदुक्तम्-पूज्याः कथं कस्मैचित् श्रद्धालवे न दद्ध्वम् ? गुरव आहुः-नायं निस्पृहाणामाचारः । तद् दृष्ट्वा श्रुत्वा च सर्वत्र चमत्कृतो जनः । इति पंचदशगाथार्थः ॥

रयणप्पह-मुणिसेहरगुरुणो सिरिधम्मदेवनाणससी ।
अभयाओ सिहवरा जयतिलया रयणसिंहगुरू ॥१६॥

'रयणप्पह'त्ति-श्रीरत्नाकरसूरिपट्टे श्रीरत्नप्रभसूरिः केचिद्वदन्ति । अयमाचार्यः प्रशस्तौ च पट्टभृत् ।
तत्पट्टनभोमणिः श्रीरत्नप्रभसूरिराड् बभूव ।

'मुणिसेहर'त्ति-तत्पट्टे श्रीमुनिशेखरसूरिः ।
मुनिशेखरसूरिराजमीडे तत्पट्टाम्बुजभृङ्गरङ्गदङ्गः (?) ॥७२॥

भवपयोनिधितीरवनद्रुमश्रितमधीश्वरपक्षिकुलाकुलम् ।
कुसुमितं यशसा हि सदा फलं नमत तं गणभृन्मुनिशेखरम् ॥ १

'गुरुणो सिरिधम्मदेव'त्ति-श्रीमुनिशेखरसूरिपट्टप्रभावको गुरुश्रीधर्मदेवसूरिः । आरासनतीर्थप्रतिष्ठाकृद् । तत्र प्रशस्तौ-

तस्मात् श्रीदेवधर्मसूरिः क्लृप्तारासनतीर्थसत्प्रतिष्ठः ।

'नाणससी'त्ति-श्रीधर्मदेवसूरिपट्टे श्रीज्ञानचन्द्रसूरिरिति प्रशस्तौ, क्वचिद् ज्ञानचन्द्राचार्य इति । तथा च श्रीधर्मदेवसूरिसंस्थापिताचार्याः श्रीसिंहदत्तसूरयः । ते च चिरं मेदपाट-खड्ग-वागडदेशेषु विहरिताः । तत्र तेषां प्रतिष्ठितप्रासादप्रतिमाबाहुल्यमद्यापि दृश्यत इति । इह प्रशस्त्यनुसारेण श्रीज्ञानचन्द्रसूरिपट्टे श्रीअभयसिंहसूरिः । पट्टावल्यनुसारेण तु श्रीधर्मदेवसूरिपट्टे श्रीअभयसिंहसूरिः । स च महावीरतपोविहितनियमः । तदुक्तम्-

अभूच्चरमतीर्थकृत्कृतसमस्तभास्वत्तपाः, ततस्तपमहोदयस्त्वभयसिंहसूरिर्गुरुः ।

यैः श्रीगुरुभिराचार्यपदवीं प्राप्य षड्विकृतयः परिहृताः । पुनश्च पंचपंचाशता चाचाम्लतपो निरन्तरं वारत्रिकं कृतवान् । दुःसाधमङ्गविद्यापुस्तकं सार्थकं परिवाचितवान् । अन्यच्च-

आबू तारणगढ गिरिहिं छट्ठ किया इगवीस । १
विमलाचलि सित्तरि किया रेवइगिरि अडवीस ॥
सिवकुमारना छट्ठ किया दोसय एगुणतीस ।
दसम दुवालस विविधतप सोसिअ तणु निसिदीस ॥ २
तवसिंगारअलंकियदेह, निम्मलचरणकरणवरगेह ।
अभयसिंहसूरीसरि हरिसियं, करिअ सुतप छम्मासीवरसिय ॥ ३
पट्टपद वरसीतप सिरि मुगट वेउ छम्मासी कुंडल,
चउमासी दोमासी हार अधहार सुनिम्मल ।
भद्र महाभद्र वेउ बाहिरखा वखाणुं,
प्रतिमा सर्वतोभद्र हृदय सिरिवत्स जाणु ।
अबिल निरंतर पचसइ महारयणमय हार खप ।
सिरिअभयसिंहसूरीदगुरु किद्ध देहसिणगार तप ॥ ४

तथा च-श्रीअभयसिंहसूरिप्रस्थापिताचार्याः श्रीहेमचन्द्रगुरवः, कुमारपालनृपतिप्रतिबोधकश्रीहेमचन्द्रसूरिसंस्मारकाः । उक्तं च-

ततो नृपतिबोधिदो मुनिपहेमचन्द्रप्रभुः । कुमारनृपबोधकः किमिह हेमचन्द्रो ह्यसौ ॥ ७५

अभयसिंहसूरिपट्टे श्रीजयतिलकसूरिः । स च कीदृशः-

ततस्तत्पट्टे श्रीहरिरतिशयोद्दामभुवनं क्षमाभृत्सेव्यः श्रीजयतिलकसूरिः समजनि ।
कपर्दीयक्षो यं प्रकटमहिमागारमतुलं विधत्ते स्म प्रीत्या जिनमतभृतो विश्वविदितम् ॥ ७६

अनेकविद्यातिशयसंपूर्णकामकुम्भः श्रीजिनशासनमण्डपस्तम्भः, मिथ्यात्वमत्तमतंगजमृगेन्द्रः, समरनिर्जितमन्मथनरेन्द्रः, अनेकाचार्योपाध्यायपडाश (प्रज्ञांश) मुनीश्वर महत्तरा प्रभृति द्विशताधिक द्विसहस्र साधु-साध्वी परिकरयुक्। तथाऽनेकानेकपरिवारपरिवृतैकविंशतिशः शत्रुंजयादितीर्थयात्राकारकः, पंचविंशत्यधिक[illegible]

सघपतितिलकदायक'। एतादृश् श्रीजयतिलकसूरीश्वरगच्छनायकः। तत्सस्थापिता' श्रीधर्मशेखरसूरि–श्रीमाणिक्यसूरि–श्रीरत्नसागरसूरिरिति त्रयोऽप्याचार्या बभूवु.। तथा चतुर्थाचार्याः श्रीसिंघतिलकसूरयः प्रभावकशिरोमणयोऽभूवन्। ये च निर्विकल्पश्रीसूरिमन्त्रकल्पमकार्षुरिति।

'रयणसिंहगुरु'त्ति–श्रीजयतिलकसूरिपट्टाम्बरभास्करगुरुश्रीरत्नसिंहसूरि.। स भगवान् कीदृशः?

आस्ते तत्पट्टमेरुस्थिरतरशिखरावद्धमूलप्रसर्पत्,
चारित्रस्कन्धबन्धोद्धुतमुनिपमुनिप्राज्यशाखोपशाखः।
उत्फुल्लज्ज्ञानपुष्प' प्रकटतममनोऽभीप्सितार्थप्रदाता,
सूरिश्रीरत्नसिंह' सुरतरुरिव सच्छायया व्याप्तविश्वः॥ ७७

जित्वा मोहमहीपतिं त्रिजगतीजैत्र जयश्रीजुषो,
यस्योच्चैर्यतिसार्वभौमपदवीप्राप्त्युत्सवे प्राभृतम्।
गाम्भीर्यं जलधि सुवर्णशिखरी स्थैर्यं महस्तापन,
चातुर्यं धिषणो धुरधरगुण धात्री विधत्ते स्म यम्॥ ७८

प्रासाद विमलार्हदादिसकलश्रीतीर्थकृन्मण्डलीम्,
प्रत्यष्ठादतिशायिलब्धिनिलय श्रीरत्नसिंहप्रभुः।
नन्दाकाशतिथिप्रमेय (१५०९) समये श्रीविक्रमाद् वासरे
पचम्या' सितमाघमासिवसुधाधीशार्चिताह्रिद्वय'॥ ७९

तत्पाणिपङ्कजरजःसुरभीकृताङ्गा. शिष्यास्त्रय. श्रुतधरा प्रथमस्तु तेषु।
श्रीहेमसुन्दरगुरुर्गरिमाम्बुराशिरासीज्जिनप्रवचनस्फुटसौधदीप'॥ ८०

उदितभाग्यविधुतप्रस्तुतोत्तमद्युतिजितान्तरवैरितमस्तति'।
उदयवल्लभसूरिरथापरः परमसयमवान् जयते क्षितौ॥ ८१

केनोपमीयत इहाथ तृतीयसूरि' श्रीज्ञानसागर उदारगुणैकराशिः।
वार्द्धेः सर' श्रयतु जातु किलोपमान वार्द्धि' कथ तु सरसस्ततयापि लक्ष्म्या॥ ८२

इह प्रस्तावात् गिरिनारगिरौ साधुश्रीशाणराजनिर्मापितविमलार्हत' प्रसादोत्पत्तिप्रशस्तिर्लिख्यते। तथा हि–

अस्ति स्वस्ति निधि श्रियो निरवधिप्रेमास्पद सनिधि
श्रीधर्माधिपतेर्द्धराप्रणयिनीमौलिस्फुरन्मण्डनम्।
वापीकूपतडागकाननजिनप्रासादशैवालय–
प्राकारादिगुणैरनन्यसदृश श्रीस्तम्भतीर्थं पुरम्॥ ६

तस्मिन् पुरे चतुरशीतिजनान्वयैकस्थाने मुनेरपि गुणैरभिवर्ण्णनीये।
श्रीस्तम्भनाभिधजगत्प्रभुपार्श्वनाथ कल्पद्रुम. प्रथितसर्वसमीहितार्थः॥ ७

लक्ष्मीलीलोत्तमगृहमसद्दोपरेणुर्गभीरो राजप्रासोदयविभवभूरच्युतस्थित्यपारः।
पुरत्नाना निधिरमलसत्कीर्त्तिडिण्डीरपिण्ड. श्रीश्रीमालीत्यभिध उदधिः किंतु वशो विभाति॥ ८

वशे तस्मिन् विविधसुकुलोल्हासि भास्वत्प्रशसे श्रीपूनाख्य. क्षितिपतिसदःपद्मनिच्छद्महसः।
आसीद्दासीकृतसुरतरु प्रार्थितार्थप्रदानात् सचैतन्यादनुपमभवत सन्ततेर्भूभवत्वात्॥ ९

तन्नन्दनोऽथ जगदे जगदेकवीरः सद्भिः सतां धुरि गुणैर्जगदेभिधान ।
तत्सूनुरूर्जिततमोगरिमानिधानः श्रीवाघणः पृथुगुणः प्रथितः पृथिव्याम् ॥ १०

तत्पुत्रः सच्चरित्रस्त्रिभुवनविदितो विक्रमादित्यनामा,
यो निर्म्मातिं स्म हर्पादिह तिमिरपुरे पर्व्वतोत्तुङ्गश्टङ्गम् ।
प्रासादं पार्श्वनाथ परिकरसहित स्थापयामास तत्र
प्रेंखत्प्रौढप्रतिष्ठार्जितशुचियशसा द्योतयन् मर्त्यलोकम् ॥ ११

श्रीमालदेवस्तनयस्तदीयः सम्प्राप्य संघेशपद त्रिकृत्वाः ।
शत्रुंजये रैवतके च यात्रामसूत्रयद् धर्मधुराधुरीणः ॥ १२

अभवदथ तदीयः सूनुरन्यूनधामा जगति वयरसिंहः शत्रुमातङ्गसिंहः ।
गुणजलनिधिमत्स्यो वासलक्ष्मीविभुःस्राग् विशदसुकृतराशिर्भासिताशेपविश्वः ॥ १३

तस्यार्द्धाङ्गविभूषयद् धवलदे नाम्नीति शुद्धाशया
शीलालकृतिधारिणी किल हरेर्लक्ष्मीरिव प्रेमभूः ।
पुत्राः पच तयो॰ पवित्रचरिता मर्यादया मेरवः
कल्याणैकनिकेतनोन्नतिपदं सन्नन्दनानन्ददाः ॥ १४

व्यवहरपतिराद्यः सत्तु सर्वात्मनाऽऽद्यस्तदनुजवयजाख्य कर्मसिंहस्तृतीयः ।
अभवदथ च रामः स्फारलीलाभिरामः कृतकलिबलिकम्पश्चम्पकः पचमस्तु ॥ १५

पंचैते कल्पवृक्षा इव भुवनतले रेजिरे पुत्रपौत्र-
श्रीशाखाढ्यप्रशाखासुमनसउदितोदर्कदानैकदक्षाः ।
कश्चैतेपा महान्ति क्षम इह गदितुं धर्मकर्म्माणि साक्षा-
दाद्यस्यैव ब्रुवेऽह जिनमतमधिसत्कृत्यमत्यल्पमेधाः ॥ १६

हेमादे नामलदे प्रेयस्यौ हरपतेः प्रियम्नेहे । चन्द्रोज्ज्वलशीलकले पंचेपोरिव रति-प्रीती ॥ १७

तत्तनया स्फीतनया ऋतव इवासन् सदोदयाः पडथ ।
सज्जनसिंहछक्कुरसिंहाख्यः पाप करिसिंह ॥ १८

डूगरसिंहस्तुर्यो धन्यः पाशाभिधस्तुपंचमकः । पष्ठो नारदनामा बभूव सम्यक्त्वगुणधामा ॥ १९

सततिसततिमेपामाख्यातु कस्तु पुण्यपुण्यकृताम् ।
इह सह उदित्वरश्रीप्रसृत्वरस्फूर्त्तिनिलयानाम् ॥ २०

वर्षे विक्रमतो द्विवेदमनुभृत् (१४४२) संख्येऽतिदुःखाकुलान्
दुर्भिक्षेण जगज्जनानुपमैर्वस्त्रान्नदानादिकैः ।
श्रीणन् यः स्तनयितुलोऽप्यतितरां लेभे जगद्विश्रुतां
ख्यातिं दानकलामलैकवसतिः श्रीवज्रसिंहात्मजः ॥ २१

यः पिप्पलद्रुपुरवासिनमाशुनष्टसंपत्पदं जनमनेकवर्णम् ।
बन्दीकृत दुरधिपेन विमोचयन् स्राक् स्रष्टेव तस्य जगदेऽभिनवः प्रजाभिः ॥ २२

श्रीगूर्जराधिपमदाफरपातशाहि: प्रेखत्प्रतापपटलीजितहव्यवाह: ।
श्रीकारमाख्यदतिधामधुरिप्रतीत यस्यावनीशशतसख्यसमक्षमत्र ॥　　२३

प्रबोध प्राप्य श्रीजयतिलकसूरिप्रभुगुरो:
　　व्यधात् प्रासादस्योद्धृतिमतिकला रैवतगिरौ (१४४९) ।
विभोर्नेमे: सर्वाद्भुतविरचितोत्तुङ्गशिखरा
　　स्ववासायैवेन्द्रभुवनमिह यो विश्वविदितम् ॥　　२४

प्राप्तश्रीपातशाहिस्फुरदुरुगरिमस्फूर्त्तिकीर्त्तिप्रतान
　　समील्याशेषसघ नयविनयमति. सप्तदेवालयैर्युग् ।
सिद्धाद्रौ रैवते च प्रथमजिनपतिं नेमिनाथ ववन्दे
　　सर्वर्द्ध्या जैनमेक कुमरनृप इव द्योतयन् शासन य ॥　　२५

चक्षुर्बाणमनु (१४५२) प्रमेयसमये श्रीस्तभतीर्थे पुरे
　　येन श्रीजयपुण्ड्सूरिगुरुणा विश्वप्रसिद्धोत्सवम् ।
श्रीमत्सूरिपद गणोदयपद श्रीरत्नसिंहप्रभो-
　　रप्यापि प्रसरत्प्रतापयशस' सविज्ञिधे कारितम् ॥　　२६

लक्ष्मीकल्पलतानिदानविकसद्दानप्ररोहत्फलै
　　सप्रीणन् जगतीगताखिलजनानन्दप्रदीप्यन्मना ।
तत्रैवोल्लसदार्हदोक्तिचतुरा श्रीरत्नचूलाभिधा
　　साध्वीं साधुगुणा महत्तरपदे य: स्थापयामासिवान् ॥　　२७

तस्माद् विस्मयकृद्गुणाद् हरपतेरुच्चैर्यशशालिनो
　　हेमादेऽङ्कुतकुक्षिमत्कमलिनीहसावतसो नृणाम् ।
आसीत् सज्जनसिंहक शकपतिर्य प्रेमत' पुत्रवन्
　　मेने मानमहोदय जनमनोऽम्भोजव्रजाहर्म्मणिम् ॥　　२८

कउतिगदे-कर्मादे दयिते अस्य प्रशस्यरूपनिधी ।
धर्मस्य मिथ'स्नेहासक्ते इव गी श्रियावास्ताम् ॥　　२९

अथ सज्जनसिंहरोहणाद्रे श्रीशाणाभिधमुत्तम नृरत्नम् ।
कउतिगदेकुक्षिभूरपूर्वास्फुरदुर्भानुना समानम् ॥　　३०

अनुपमदेहद्युतिविराजन्निस्त्रास शुभवृत्ततागुणाढ्य' ।
स जयति भूभामिनीशिर.श्रीमुकुटमणिस्फुटमत्र शाणराज ॥　　३१

नाभेयस्याद्भुतपरिकर श्रीमहीशानपुर्यां कर्मादेव्या रचितमतुल वीक्ष्य दक्षिर्विशके ।
किं पीयूषद्युतिकरभरै किं सुधाशुद्धसारै स्रष्ट किं वा विमलयशसा सौवसद्भाजन (?) ॥ ३२

वेधा दुष्टकृतातिदु स्वमखिल विश्व विलोक्य ध्रुव
　　छन्न स्वर्गिपते प्रतार्य मरुनश्चिन्तामणिं नीतवान् ।

पुंवेषेण जगत्सुखैकरसिकं शाणाभिधं निर्ममे
तन्मन्ये निमिषास्तदीक्षणपरा नाद्यापि त लेभिरे ॥ ३३

मोढेरापुरवासिनी द्विजवणिग्जालिं महाकष्टकृत्
वन्दित्वा[त्] किल मोचयन् निजधनैः शाणाभिधानः सुधी।
मोक्षादित्यगतांस्तथैव चतुरो वर्णान् सुधांशुज्ज्वल
श्रीजीमूतनरेश्वरस्य विरुद जात लसत्कीर्त्तितः ॥ ३४

दुर्वारोद्धतदु'समीरगविषव्यासंगतो मूर्च्छितान्
नानाजातिजनानपत्यदयितात्यागैकचित्तान् क्षुधा।
पैत्राम्नायपविञ्जितः सुहृदयः शाल्यौषधीभिर्मुहुः
शाणो गारुडिकः प्रसिद्धमहिमा सजीवयामासिवान् ॥ ३५

तीर्थभ्रशसुसाधुपीडनपरोद्दण्डप्रचण्डासुरा-
धीशैर्विश्वमिद पराभवपद जात निरीक्ष्य क्षणात्।
सर्वांगीणगुणः स्फुरत्तरमहा स्वां निर्मितिं रक्षितु
धात्रा सत्तु दयालुनात्मवदय शाणाभिधो निर्ममे ॥ ३६

श्रीमद्गूर्जरमण्डलाधिपतयः श्रीपातशाहा अमी
चत्वारो यदहम्मदप्रभृतयः ससत्समक्ष सदा।
श्लाघन्ते स्म यदीयभाग्य-यशसे सर्वोत्तमा यं स्फुटं
कस्यासौ न नमस्य आस्यजितसचन्द्रोऽस्तु शाणाभिधः ॥ ३७

इति किं बहुक्त्या। श्रीरत्नसिंहसूरीश्वरसद्गुरूपदेशमासाद्याय साधुश्रीशाणराद् सप्तक्षेत्र्या यद् यद् धनव्ययम-कार्षीत् तत् सर्वं निगदितु क' क्षमस्तेनालमिति प्रसगेनेति।

तथा यो भगवान् गिरिपुरनगरे श्रीवीआविहारनाम्नि श्रीवृषभदेवप्रासादे पचविंशत्यधिकैकशतमणप्रमितपित्त-लमयसपरिकरश्रीऋषभदेवबिम्ब चैत्यप्रतिष्ठाकृत्। तत्र चैत्येऽद्यापि सेर मितरूप्यमयमारात्रिकं मगलप्रदीपं चामरद्वयं च तत्सामयिकं दृश्यते। तथा कोटनगरे पित्तलमयश्रीसभवजिनबिम्बस्य प्रासादस्य च प्रतिष्ठामकार्षीत्। एव मालव-मेदपाट-खडग-वागड-गूर्जर-सौराष्ट्र-कुकण-दक्षिणापथप्रभृतिदेशेषु स्थाने स्थाने श्रीरत्नसिंहसूरिप्र-तिष्ठितानि चैत्य बिम्बानि दृश्यन्ते। उक्तं च-

तत्पट्टे सूरयः शश्वद् रत्नसिंहा दिदीपिरे। सद्भ्यः स्वेष्टप्रदानेन यैर्लब्ध्या गौतमायितम् ॥ १
जातोऽत्राऽहम्मदावादाधिपः शाहिरहिम्मदः। त प्रबोध्य महीपीठे चक्रिरे शासनोन्नतिम् ॥ २

तथा हि-श्रीरत्नसिंहसूरयः षोडशवर्षीयाः, भव्यपद्मानि विबोधयन्तः पृथिव्या रविरिव विचरन्ति स्म। तत्समये अहिम्मदसुरत्राणोऽहिम्मदनगर वासयामास। तत्र पाषाणदुर्गो विहितः। तस्मिन् दुर्गे चतुःषष्टिकोष्ठका जाताः। तत्र चतुःषष्टियोगिन्यो निवेशिताः। रात्रौ ताः सुरत्राण पल्यङ्काद्भूमौ पातयन्ति स्म। इतश्च मुल्लाणिकवचसा सुरत्राणेन जैन-दर्शनिनः सर्वेऽपि स्वप्रदेशान्निष्कासिताः। ते च साधवः सर्वे हिन्दुस्थाने स्थिताः सन्ति स्म। इतश्च राजनगरश्री-अहिम्मदावादनिवासिनगरश्रेष्ठि-श्रीश्रीमालीवशविभूषण-व्यवहारिवर्य्यरत्ना-फतानामानौ श्रीरत्नसिंहसूरीश्वरचरणा-रविन्दभ्रमरौस्तः। तत्समये सुरत्राणेन सर्वेऽन्यदर्शनिनः समाकार्य पृष्टाः-'भवत्सु योगिन्युपद्रववारकः कोऽप्यस्ति ?'

तैरपि सुरत्राणसमक्षमनेकोपाया विहिता', पर तदुपद्रवो न शशाम। इतश्च, सुरत्राणपुर केनचित् प्रोक्तम्–'राजनगराधिकारिरत्ना–फताख्यव्यवहारिगुरवः श्रीरत्नसिंहाभिधाना सर्वत्राधीतिन' श्रूयन्ते। यदि साधु· फताख्य' तेषामाकारणार्थं याति, तदा ते आयान्ति। यदि ते प्रसन्ना भविष्यन्ति, तदा सर्वोपद्रव वारयिष्यन्ति इति श्रुत्वा, राजनगरात् साधुफताख्यमाकार्य्य श्रीशाहि· स्वसचिवैः सह श्रीगुर्वाकारणार्थं साधुफताख्यमप्रेषीत्। तत्र गत्वा सविनयमत्यर्थमभ्यर्थिता गुरवः शाहिसविधं समागता'। अथ गुरूणामाकृतिं दृष्ट्वा सुरत्राणोऽपि विस्मयचेता स्थगित इव बभूव। पृष्टा' श्रीगुरव.–'रत्नसिंहाभिधाना भवन्तः ?' श्रीगुरुभिरुक्तम्–'जना एव वदन्ति'। पुनः पृष्टाः–'कथ भवन्तः प्रथमवयसि त्यागिनो बभूवु· ?' श्रीगुरुराह–'ससारासारता दृष्ट्वा'। श्रीशाहि' पुनर्बभाषे–'केषु केषु शास्त्रेष्वधीतिनः ?' शिष्यैरुक्तम्–'सर्वेषु'। तर्हि किंचिज्जानीथ ?, कथ न ज्ञायते ? । एत च तर्हि वक्तव्यम्–'श्वः किमह कर्त्ता ?'श्रीगुरुणोक्तम्–'पत्र लिखित्वा दास्यामः उत्तरेद्युर्वाचनीयम्'। श्रीशाहिनोक्तमेवमस्तु। श्रीगुरुभिरपि तत्र स्थित्वा श्वःकृत्य निखिल लिखित्वा शाहेः प्रदत्तम्। श्रीशाहिना कस्यचित् करे दत्त्वा उत्तरेद्युर्वाचितम्। तदेव सर्वं सजातम्। सुरत्राणस्तु अत्यन्त चमत्कृतः। श्रीगुरूणां पादयोः पतित'। उक्त च–'यथेप्सित मार्गयध्वम्'। गुरुभिरुक्तम्–'वय निर्ग्रन्थाः, अस्माक किमपि द्रव्यादिक ग्रहीतु नो कल्पते। पर भवदाज्ञया अस्मद्दर्शनिन श्रीमद्देशेषु विचरन्तु। श्रीशाहिनोक्तमेवमस्तु। श्रीशाहिना तत्काल नामाङ्कित फुरमान कृत्वा श्रीगुरुभ्य प्रदत्तम्। कतिचिद्दिनानि जीवदयाया· फुरमान च। ततश्च साधव' सर्वे स्व स्व स्थान समागता·। इतश्च श्रीशाहिना प्रोक्तम्–'स्वामिन् ! रात्रौ योगिन्यो मामुपद्रवन्ति, भवत्प्रसादात्तदुपद्रवनाशो भवतु'। श्रीगुरुभिरपि चतुःषष्टियोगिन्युपद्रवोपरि सर्वतोभद्र पचषष्टियन्त्रमुत्पाद्य "आदौ नेमिजिन नौमी"ति स्तोत्ररत्नमकारि। तद्यन्त्र शाहिना शिरसि रक्षितम्, स्तोत्र च पठितम्। गत उपद्रव.; श्रीशाहिकुले शान्तिश्चाभूत्। तत्समये श्रीगुरो' श्रीजैनशासनस्यापि महती सुषमा समजनि। तथा श्रीरत्नसिंहसूरीणां पण्डितप्रकाण्डपण्डितश्रीशिवसुन्दरगणिप्रभृतय शिष्या अपि सप्रभावका बभूवु। येषा पण्डितशिवसुन्दरगणिपादाना करस्पर्शादेव दाक्षिणात्यसुरत्राणशरीरे महारोगोपशान्तिर्जाता। तथा महोपाध्यायश्रीमदुदयधर्मगणयो 'वाक्यप्रकाश'ग्रन्थ निहितवन्तः। तथाऽन्येऽपि श्रीचारित्रसुन्दरसूरिप्रमुखा' शिष्याः। ये च 'महीपाल–कुमारपाला'दिसस्कृतचरितानि तेनिरे। इति षोडशगाथार्थ ॥१६॥

सिरिउदयवल्लहा पुण सच्चत्था नाणसायरा गुरुणो ।
सिरिउदयसायरा विय लद्धिवरा लद्धिसायरया ॥१७॥

'सिरिउदय'त्ति–श्रीरत्नसिंहसूरीणा शिष्यास्त्रयोऽप्याचार्य्या। तत्र 'समस्याशकृत्कार' बिरुदधर ज्ञानविज्ञानरत्नाकर श्रीहेमसुन्दरसूरिप्रवर। स चाचार्य'। पुन श्रीरत्नसिंहसूरीश्वरपट्टधरस्तु श्रीउदयवल्लभसूरि। सोऽप्या बाल्यादष्टावधानविधानबिरुदभृत्। पुनरष्टादशलिपिलिखन-वाचनत्वेन कविप्रतिष्ठित। अष्टादशवर्षे सूरिपद प्राप्तवान्।

'सच्चत्थे'त्ति–श्रीउदयवल्लभसूरीश्वरपट्टे श्रीज्ञानसागरसूरिगुरव'। कथभूता–सत्यार्था। श्रीविमलनाथ-चरित्र' प्रमुखानेकनव्यग्रन्थलहरिप्रकटनात् सान्वयाह्वा·। येषा श्रीज्ञानसागरसूरीणा मुखात् मडपदुर्गनिवासिव्यवहारिवर्य्य–पातशाहि श्रीखिलची महिम्मदग्यासदीन सुरत्राणप्रदत्त 'नगदलमलिक' बिरुदधर साधुश्रीसग्राम सौवर्णिक नामा सङ्घचिक श्रीपचमाङ्ग श्रुत्वा "गोयमे"ति प्रतिपद सौवर्णटङ्कममोचीत्। षट्त्रिंसत्सहस्रप्रमाणाः सुवर्णटङ्काः सजाता'। यदुपदेशात् तद्द्रविणव्ययेन मालवके मडपदुर्गप्रभृतिप्रतिनगर गूर्जरधरायामणहिल्लपुरपत्तन–राजनगर–स्तम्भतीर्थ–भृगुकच्छप्रमुख प्रतिपुर चित्कोशमकार्षीत्। पुनर्यदुपदेशात् सम्यक्त्वस्वदारसन्तोषमतत्त्वासितान्त करणेन वन्ध्याम्रतरु सफली चक्रे। तथा हि–एकस्मिन् समये सुरत्राणो वनक्रीडार्थमुद्यान जगाम।

तत्रैको महाम्रतरुर्दृष्टः। श्रीशाहिस्तत्र गन्तुमारब्धः। तदा केनचित् प्रोक्तम्–'महाराज ! नात्र गन्तव्यम्, अयं वन्ध्यवृक्षः'। तदा शाहिना प्रोक्तम्–एवं चेत्तर्हि मूलादुच्छेदयध्वम्। तदा संग्रामसौवर्णिकेनोक्तम्–'स्वामिन् ! अयं वृक्षो विज्ञपयति, यद्ययमागामिकवर्षे न फलिष्यति, तदा स्वामिने यद्रोचते तत् कर्तव्यमिति'। पुनः शाहिना प्रोक्तम्–'अत्राधिकारे कः प्रतिभूः ?'। संग्रामसौवर्णिकेनोक्तम्–'अहमेव'। शाहिनोक्तम्–'त्वं प्रतिभूः,पर यद्ययं न फलिष्यति तदा तत्र किं कर्तव्यम् ?' साधुनोक्तम्–'यदस्य वृक्षस्य क्रियते तन्मम'; इति श्रुत्वा श्रीशाहिना आत्मीयास्तत्र पच नराः स्थापिताः। तेषामुक्तम्–'नित्यं विलोक्यम्, अयमाम्रस्य किं करोति'। अथ सग्रामसौवर्णिकस्तत्र नित्यमागत्य स्वपरिधानवस्त्राञ्चलप्रक्षालनजलेन तमाम्रं सिंचति स्म। वक्ति च–'अहो आम्रतरो ! यद्यहं स्वदारसन्तोषव्रते दृढचित्तोऽस्मि, तदा त्वयाऽन्याम्रेभ्यः प्रथमं फलितव्यम्, नान्यथेति'। एवं षण्मासं यावत् सिंचितः। इतश्च वसन्तर्तुरायातः। तदा पूर्वमयमाम्रः पुष्पितः फलितश्च। तत्फलानि सौवर्णिकसंग्रामेन श्रीशाहेः पुरो ढौकितानि। श्रीसाहिनोक्तम्–'कानीमानि फलानि ?' श्रीसाधुनोक्तम्–'तद्वन्ध्याम्रस्य'। इति श्रुत्वा श्रीशाहिना भृशं नराः पृष्टाः, तैर्यथावृत्तं सर्वं निगदितम्। तच्छ्रुत्वा परमचमत्कारप्राप्तेन श्रीशाहिना अनेकनररत्नभूषिताया सभाया सर्वजनसमक्षं भृशं संग्रामसौवर्णिकः प्रशंसितः, सत्कृतः परिधापितश्च। अत्युत्सवपुरःसरं गृहे प्रेषितः। ततः सर्वत्र सग्रामसौवर्णिकस्य यशः प्रससार।

असौ सग्रामसौवर्णिकः षड्दर्शनकल्पतरुर्बभूव। तद्यथा–गूर्जरधरानिवासी कश्चिदाजन्मदरिद्रो विप्रः संग्रामसौवर्णिकं दानशौण्डं श्रुत्वा मडपदुर्गमाजगाम। तत्र व्यवहारिसभाया स्थितस्य संग्रामसौवर्णिकस्य सन्निधमियाय। दत्ताशीर्वादस्तत्र स्थितः। सौवर्णिकेनोक्तम्–'द्विजराज ! कुतः समागतः ?'। तेनोक्तम्–'क्षीरनीरधेर्भृत्योऽस्मि, तेन भवन्नामाङ्कितं लेखं दत्त्वा प्रेषितोऽस्मि'। व्यवहारिभिरुक्तम्–'देहि लेखं, वाचयस्व'। तेनोक्तम्–तद्यथा–

> स्वस्ति प्राचीदिगतात् प्रचुरमणिगणैर्भूषितः क्षारसिन्धुः
>
> क्षोण्यां सग्रामरामं सुखयति सततं वाग्भिराशीर्युताभिः।
>
> लक्ष्मीरस्मत्तनूजा प्रवरगुणयुता रूपनारायणस्त्वं
>
> कीर्त्तेरासक्तभावात् तृणमिव भवता मन्यसे किं वदामः॥ १

इति श्रुत्वा सग्रामसौवर्णिकः सर्वाङ्गाभरणयुतं लक्षदानं ददौ। ततो विप्र इतस्ततो विलोकितुं लग्नः। तदा व्यवहारिभिरुक्तम्–'किं विलोक्यसे ?' तेनोक्तम्–'आजन्ममित्रं दरिद्रं विलोकयामि, हा मित्र ! क्व गतोऽसीति' कृत्वा पूत्कार। पुनरुक्तम्–'हुं ज्ञातं, सभ्याः श्रूयताम्'–

> यो गगामतरत् तथैव यमुनां यो नर्म्मदां शर्म्मदां
>
> का वार्त्ता सरिदम्बुलघनविधेर्यश्चार्णवं तीर्णवान्
>
> सोऽस्माकं चिरसंचितोऽपि सहसा श्रीरूपनारायण !
>
> त्वद्दानाम्बुनिधिप्रवाहलहरीमग्नो न संभाव्यते॥

इति श्रुत्वाऽपि श्रीसौवर्णिकः पुनर्लक्षं दापितवान् इति।

एवं श्रीज्ञानसागरसूरीणामुपदेशाद् बहवः श्रद्धालवोऽनेकपुण्यकृत्यानि वितेनिरे।

श्रीज्ञानसागरसूरीणां पदे, अपि च, श्रीउदयसागरसूरिः। तेनापि भगवता पचाचार्याः स्थापिताः। ते च श्रीलब्धिसागरसूरिः, श्रीशीलसागरसूरिः, श्रीचारित्रसागरसूरिः श्रीधनसागरसूरिः, श्रीधनरत्नसूरिश्च। एषां श्रीउदयसागरसूरीणां पट्टधरः श्रीलब्धिसागरसूरिः। सोऽपि भगवान् पुरुषसरस्वतीति विरुदं जनमुखाल्लेभे। स च प्राकृतचतुर्विंशतिजिनस्तव–रत्नकोश–पृथ्वीचन्द्रचरित्र–यशोधरचरित्रादिनव्यग्रन्थविधाता। इति सप्तदशगाथार्थः॥१७॥

सिरिधणरयणगणाहिवअमराओ रयणतेअओ रयणा।
गुरुभायरा गुणन्नू सूरिवरो देवरयणो य ॥१८॥

'सिरि'त्ति–श्रीलब्धिमागरसूरीणा पट्टधर' श्री धनरत्नसूरिः। कथभूतः ? गणाधिपः, गच्छेश इत्यर्थः। श्रीश्रीमालिज्ञातिमण्डन–कर्णानतीशोभाकर साधुसमधरपुत्रमन्त्रिरापा भार्याअधकूकुक्षिप्राचीरविः। सोऽपि भगवान् रूपश्रीविजितमन्मथः 'एकसथा' इति विरुद प्राप्तवान्। तथा च लघुशालीयगच्छाधिराजश्रीपूज्यश्रीहेमविमलसूरीश्वरपादारविन्द-मधुकरपद्दर्शनप्रमिद्धशतार्थीविरुदधरः, पातशाहिश्रीबहादूरशाहिप्रदत्तसहस्रार्थीविरुदभृत्, सकलपडितोत्तमपडित-श्रीहर्पकुलगणिः श्रीधनरत्नसूरीश्वर दृष्ट्वा हर्षोत्कर्पभरो नव्यपचदशभिर्वरवृत्तैः श्रीगुरो· स्तुतिं चक्रे। तथा हि–

गाभीर्यं जलधेर्जयश्रियमपि श्रीचक्रिणः सपद
सर्वां' सेवधित· प्रसत्तिमधिका पूर्णेन्दुतः श्रीविधिम्।
लब्धि गौतमत' श्रिय धनदतो वाक्स्वादुतां सौधतो
लात्वा श्रीधनरत्नसूरिसुगुरुर्निर्मायहृन्निर्ममे ॥

सौभाग्य कृतपुण्यतः शुभमतिं श्रीदेवसूरेस्तथा
रूप मन्मथतश्च कीर्त्तिमतुला श्रीरामभूमीश्वरात्।
चाणिक्याचतुरत्वमाश्रितजने दान च कल्पद्रुमात्
लात्वा श्रीधनरत्नसूरिसुगुरुः श्रीवेधसा निर्ममे ॥

ये सर्वकायस्थितजन्तुततया', प्रणम्रशिष्यव्रजशास्त्रददयाः।
स्वसेवकादीनवम तु ममवा·, स्वविद्यया भूपतिसौधशशावाः॥

अनुपमयकत्प्रताप' पापतम'प्रकरसहरणकरणे।
सवितरति वित्तरतिवरः (?) तरति रतिप्रियपयोधिमपि॥

शिष्य· कुशिष्ययाद्वान् येषा दुर्वादिन पराजयति।
राजयति स्वीयगण जयति यतिव्रातमौलिमणि· ॥

येषा मुख सुरावा वपुष सुपमा च सुभगता का वा।
जयति त्रिभुवनगा वा श्लोकभरः शशधरश्रावा ॥

सभाजनप्रीतिकर स्वरूप तल्लोचनाशेचनक च रूपम्।
वचश्च च सत्पुण्यकृत प्ररूप येषा च सौजन्यमिहासरूपम्॥

तावन्नरस्यैप कषायवह्नि· सर्वंकप सन् प्रणिपापचीति।
यावन्न येषा पदपद्मसेवारेवाप्रवाह प्रणिवा भजीति॥

उत्सर्गत सतक्रियतामुपासते सप्राप्य डिद्धातुरिवात्मनेपदम्।
सद्भक्तिको यत्परिवारक स्वय साधुप्रयोग प्रवदन्ति त बुधा ।

येपामशेपागमपडितानामपि बोधकानाम्।
शरीरकान्त्या विजित सुवर्ण सकोचित स्वर्णमितिर्यतेर्यत् ॥

स्फुट गुणवति (?) प्रतिपादितानां श्रीहेमचन्द्रगुरुणा निजलक्षणान्तः ।
येषामहो गुणवतामपि दृश्यते सा चित्रं तथापि नहि याति सलक्षणत्वम् ॥ ११

द्वात्रिंशदक्षरोऽपि श्लोकः शास्त्रैकदेशसंस्थाता ।
यच्छ्लोकश्चित्रमहो नहि माति द्व्यक्षरोऽपि भुवनेऽस्मिन् ॥ १२

सतां दर्शनमात्रेण धनरत्नप्रदोऽसि यत् ।
इतीव विश्वविख्यात धनरत्नेति नाम ते ॥ १३

पादाब्जद्युतिमन्मणिप्रभनखश्रेणीमिपात्प्राभृत
सद्गाम्भीर्यर्यजितोऽर्णवो वितनुते शंकेऽत्र येषां सदा ।
स श्रीधनरत्नसूरिरतुलप्रौढप्रतापोदयो
गांगेयद्युतिमांश्चिर विजयताद् भूम्यङ्गनामण्डनः ॥ १४

एव विनु भक्त्या हर्षकुलेनामलेन ।
सत्काव्यैः श्रीशशिगणनाथा धनरत्नसूरीशाः ॥ १५

इति श्रीपूज्यश्रीधनरत्नसूरीश्वरस्तुतिः पण्डितप्रवरश्रीहर्षकुलगणिकृतेति । तथा श्रीधनरत्नसूरिसंस्थापिताचार्याः सौभाग्यैकनिधिश्रीसौभाग्यसागरसूरयः । तेषां शिष्यः पं० श्रीउदयसौभाग्यगणिः श्रीहैमप्राकृतढुंढिका चक्रे ।

'अमराउ'त्ति–श्रीधनरत्नसूरीणां पट्टधरः, अमरात्–अमरशब्दात्, रत्न इति–श्रीअमररत्नसूरिः । पत्तननगरनिवासि निशितिप्राग्वाटज्ञातीयसाधुअचलागनाचन्द्रानल्युदरमरालावतारः । सोऽपि श्रीगुरुः सपादलक्षश्रीहैमशब्दानुशासन-निर्णयदायकः । ते च श्रीअमररत्नसूरयोऽप्याचार्यचतुष्कं स्थापितवन्तः । ते चाचार्याः–श्रीतेजरत्नसूरिः, श्रीदेवरत्नसूरिः, श्रीकल्याणरत्नसूरिः, श्रीसौभाग्यरत्नसूरिश्च । एभ्यः शाखात्रिकं जातम् । तत्र 'तेअओरयणा' इति–तेजसशब्दाद् रत्नाः, तेजरत्नाः । यद्यपि तेजस् शब्दः सकारान्तस्ततः तेजोरत्ना इति युक्तम् । तथापि ग्राम नाम्नोर्न संस्कारः, तेनाविरुद्धमिति ।

'गुरुभायरा गुणन्नू' इति–अमररत्नसूरिः श्रीतेजरत्नसूरिश्च उभावपि गुरुभ्रातरौ कथंभूतौ ? गुणज्ञौ । गुरुभ्रात्रा च श्रीधनरत्नसूरि[णा] पदप्रदानेन महूपकारितम् । श्रीतेजरत्नसूरिभिरपि तदुपकारमामन्य, तस्मिन्नेव गुरुत्वं प्रतिपद्या-ऽऽत्मनस्तत्पट्ट एव प्रख्यापितमिति तेन गुणज्ञाविति ।

श्रीतेजरत्नसूरिव्यतिकरस्त्वेवम्–स्तम्भतीर्थपुरनिवासि साधुवीपक भार्या हर्षाइ कुक्षिमानसमरालावताराः श्रीशारदाकण्ठपीठोरुहाराः । यदुपदेशाद् वागडदेशान्यवतमगिरिपुरनगरनिवासि व्यवहारिनर्य्यधुर्य्य हुंबडज्ञातिश्रेष्ठ-साधुनाकः सागवाटकपुरे निमानप्रतिमान शिखरबद्धश्रीपार्श्वनाथचैत्यमकारयत् । तत्र श्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथप्रभृति-जिनबिम्बकदम्बकं प्रौढप्रतिष्ठोत्सवं श्रीतेजरत्नसूरिभिः प्रस्थापयामासिवांश्च । पुनर्यदुपदेशादन्येऽपि श्रद्धालवः प्रतिष्ठा-संघपतितिलकाद्यनेकधर्मकृत्यानि कारयाञ्चक्रिरे । एकेयं शाखा ।

'सूरिवरो देवरयणो' त्ति–सूरीणां वरः प्रधानः सूरिवरः, स च श्रीदेवरत्नसूरिः । असावपि अमररत्नसूरीणां शिष्यः तेन तत्पट्ट एव प्रख्यापयन्ति । अत इयं द्वितीया शाखा ।

व्यतिकरस्त्वयम्–सीरोहीनगर्यां साधु गोपक प्रियाचगादे कुक्षिप्राचीप्रभाकरः । यदुपदेशाद् अहमदावाद–राजनगरनिवासि साधु देपचद श्राद्धी श्रीमलदे नाम्नी च प्रौढप्रतिष्ठोत्सवं चक्राते । इति श्रीपट्टावली समाप्ता ॥

॥ परिशिष्टात्मका गाथाः ॥

सिरिदेवसुंदराहा विहरंता विजयसुंदरा गुरुणो ।
चिरजीविणो हवंतु जिणसासणभूसणा परमा ॥१९॥

धणरयणसूरिसीसा विबुहवरा भाणुमेरुगणिपवरा ।
माणिक्करयणवायगसीसा लहुभायरा तेसिं ॥२०॥

नयसुंदराभिहाणा उवज्झाया सुगुरुचरणकमलाइं ।
पणमंति भत्तिजुत्ता गुरुपरिवारिं पयासंता ॥२१॥

॥ इति श्रीबृहत्तपोगणगुर्व्वावलीस्वाध्यायः समाप्तः ॥

लघुपोसालिक पट्टावली।

१ श्रीवर्द्धमानस्वामी।

२ श्रीसुधर्म्मस्वामी–श्रीवीरनिर्वाणात् २० वर्षैः पंचमो गणधरः श्रीसुधर्म्मास्वामी यस्याधुना साधुसंततिः।

३ जंबूस्वामी–निर्वृतो वीरात् ६४ वर्षैः।

मण १ परमोहि २ पुलाए ३,
आहारग ४ खवग ५ उवसमे कप्पे ७।
संयमतिय ८ केवलि ९,
सिज्झयणा १० जंबुमि वुच्छिन्ना ॥१॥

मत्कृते जंबुना त्यक्ता नवोढा नव कन्यकाः।
तन्मन्ये मुक्तिवध्वाऽन्यो न वृतो भारतो नरः ॥२॥

चित्तं न नीतं वनिताविकारैः
वित्तं न नीतं चतुरैश्च चौरैः।
यद्देहगेहे द्वितयं निशीथे
जंबूकुमाराय नमोस्तु तस्मै ॥३॥

श्रीवीरात् ७० वर्षे ऊकेशे श्रीवीरप्रतिष्ठा। सत्यपुरे श्रीरत्नप्रभसूरिभिः श्रीवीरप्रतिष्ठा कृता। गृहवास १६, व्रत २०, केवलि ४४, सर्वायुः ८०।

४ श्रीप्रभवस्वामी–श्रीवीरात् ७५ वर्षैर्बभूव। गृहे ३०, व्रते ४४, युगप्रधानत्वे ११, सर्वायुः ८५ वर्ष।

५ श्रीशय्यंभवसूरिः–श्रीवीरात् ९८ वर्षैः। गृहे २८, व्रतें ११, युगप्रधाने २२, सर्वायुः ६२ वर्ष।

६ श्रीयशोभद्रसूरिः–वीरात् १४८ वर्षैः पट्ट आप्तः। तच्छिष्यौ–

७ संभूतिविजय-भद्रबाहू–१७० वर्षैः। वीरात् ६० वर्षैः नवनंदराज्यं, ११८ वर्षं यावत्। श्रीवीरात् १५५ वर्षैः चंद्रगुप्तः।

८ संभूतिशिष्यश्रीस्थूलभद्रः–श्रीवीरात् २१५ वर्षैः स्वर्गं गतः। ४ पूर्व, २ संयम, २ संस्थानादिव्यवच्छेदः। सूक्ष्मध्यानं येन पूर्वपरावर्त्तनशक्तिर्भवति, महाप्राणध्यानं येन १४ पूर्वाणि घटिका २ मध्ये गणयति तावपि व्युच्छिन्नौ। पाश्चात्य ४ पूर्वव्याख्या व्युच्छिन्ना।

श्रीनेमितोऽपि सगडालसुतं विचार्य,
मन्यामहे वयममुं भटमेवमेकम्।
देवोऽद्रिदुर्गमधिरुह्य जिगाय मोहं
यन्मोहमालयमयं तु वशी प्रविश्य॥

वीरात् २२० बौद्धाः। वीरात् १७८ मोरियरज्जं च।

९ तच्छिष्यौ महागिरि–सुहस्ती–श्रीवीरात् २९१ वर्षैः स्वर्गः। स्थिवरावल्यां महागिरि-सुहस्तिशिष्यौ बहुलसदृग्वयाः। तत् शिष्यः स्वातिः, तत्कृतास्तत्त्वार्थादयः संभवंति। तच्छिष्यः श्यामाचार्यः प्रज्ञापनाकृत्। श्रीआर्यमहागिरिणा गतोऽपि जिनकल्प आचीर्णः। श्रीआर्यसुहस्तिना संप्रतिः प्रतिबोधितः। तेन ३६ सहस्रमिताः प्रासादाः कारिताः। सपादलक्षबिंबानि कारितानि। ३६ सहस्रजीर्णोद्धाराः कारिताः।

श्रीवीरात् ३७६ वर्षे कालिकसूरिनामा।

१० सुहस्तिशिष्यौ सुस्थित-सुप्रतिबद्धौ- कोटिक-काकदकौ। ज्ञानचतुष्टयात् सूरिमन्त्रः प्रकटी कृतः।

११ श्रीइन्द्रदिन्नसूरिः-कोटिवार सूरिमन्त्र आराधितः, तस्मात् कोटिकगच्छः।

१२ श्रीदिन्नसूरि.-श्रीवीरात् ४५३ वर्षे गर्दभिल्लोच्छेदी कालिकसूरिः।

१३ श्रीसिहगिरिसूरि'-वीरात् ५५३ भृगुकच्छे खपटाचार्य', वृद्धवादी, पादलिप्तश्च। प्रभावकचरित्रे त्विदम् ४८४ आर्यखपट। वी० ४६९ आर्यमगुः। वी० ४७० विक्रमादित्यराज्यम्। श्रीसिद्धसेनदिवाकरः, येन उज्जयिन्या महाकालप्रासादे महाकाललिगस्फोट कृत्वा स्तुत्या श्रीपार्श्वनाथबिंब प्रकटीकृतमिति।

१४ वज्रस्वामी-वीरात् ४९६ श्रावस्त्या वज्र स्वामिजन्म। वी० ५८४ स्वर्ग। वी० ५३३ भद्रगुप्त' आर्यरक्षितसूरिणा निर्यामित'। वी० ५८४ श्रीगुप्तत्तैरासिक समभवत्। वी० ५२५ शत्रुजयोच्छेद'। वी० ५७० जावड्युद्धार'। वी० ५९७ आर्यरक्षितसूरि.।

१५ वज्रसेनसूरि -वी० ६२० वर्ष. स्वर्गः।
चतुःकुलमुत्पत्तिपितामहमह निभु।
दशपूर्वनिधि वदे वज्रस्वामि मुनीश्वरम्।
६०५ शाकराज्यम्। ६०९ दिगवरा.। वी० ६१६ दुर्बलिकाचार्य'। विक्रमात् गिरिनारतीर्थे जावडोद्धार.।

१६ श्रीचन्द्रसूरि.-श्रीवीरात् ६७० सत्यपुरे जा-(ना?)हडनिर्मापितप्रासादे श्रीजज्जगसूरिणा श्रीवीरप्रतिमा स्थापिता।

१७ तच्छिष्यश्रीसामन्तभद्रसूरि.-
पूर्वश्रुताम्नाय.। अत्र तृतीयाऽभिधारण्यका इति।
सामन्तभद्रसूरि, लोकैर्वनवासी तस्मात् चतुर्थ-
नाम च वनवासी।

१८ श्रीदेवसूरि.-वृद्धो देवसूरिरिति ख्यातः। वी० ६९५ वर्षे कोरटके नाहडमन्त्रिचैत्ये शकुप्रतिष्ठाकृत्। श्री वि० ७२५ वर्षः। श्रीसिद्धसेनदिवाकरसूरिर्विक्रमप्रतिबोधदाता (?)।

१९ श्रीप्रद्योतनसूरिः-
सर्वदेवसूरिणोपाध्याय' सन् चैत्य त्याजितः।

२० श्रीमानदेवसूरि -पद्मा १ जया २ विजया ३ अपराजिता ४ [सेविताः]। तक्षशिलायामशिवोपशान्त्यै शान्तिस्तवन नड्डूलपुरात् प्रैषीत्। प्रभावकचरित्रे पूर्वं मानतुगचरित्र उक्तम्। पश्चात् देवसूरिशिष्यप्रद्योतनशिष्यमानदेवस्य प्रबन्धोऽस्तीति।

२१ श्रीमानतुगसूरि -मानतुगसूरिर्भक्तामर-भयहर-भत्तिब्भर-अमरस्तवादिकृत्।
भक्तामर च भयहर च विधापनेन
नम्रीकृत' क्षितिपतिर्भुजगाधिपश्च।
मालवके तदा वृद्धभोजराजसभाया मान प्राप्त भक्तामरत'।

२२ श्रीवीराचार्य.-
नागपुरे नमिभवनप्रतिष्ठया महितपाणिसौभाग्यः।
अभवत् वीराचार्यस्त्रिभि शतै. साधिकं राज्ञ.।
वि० ३०० वर्ष'। अतीव भाग्यसारा।

२३ श्रीजयदेवसूरिः-वी० ८२६ ब्रह्मदीपिकाः। वि० ३५० चतुर्दशी वदति। पर चतुर्मासिक तत्रेति।

२४ श्रीदेवानन्दसूरि.-वी० ८४५=वि० ३७५ वलभीभग। क्वचिद्देव वि० ९०४ गन्धर्ववादिवेतालशान्तिना वलभीभगे श्रीसघरक्षा।

२५ श्रीविक्रमसूरि -वी० ८८२=वि० ४१२ चैत्यस्थिति'। वी० ९९३=वि० ५२३ कालिकेन ४ पर्युषणा, ९९४ तस्य स्वर्ग.।

२६ श्रीनरसिंहसूरि.-
नरसिंहसूरिरासीदतोऽखिलग्रथपारगो येन।
यक्षो नरसिंहपुरे मासरतिस्त्याजित' स्वगिरा॥

२७ श्रीसमुद्रसूरि.-
खोमाणराजकुलजोऽथ समुद्रसूरि-
र्गच्छ शशास किल य. प्रवरः प्रमाणी।
जित्वा तदा क्षपणकान् स्ववश वितेने
नागह्रदे भुजगनाथनमस्यतीर्थे॥

वी०१०१५=वि०५४५ सत्यमित्रात् पूर्वव्यवच्छेदः ।

२८ श्रीमानदेवसूरिः—

विद्यासमुद्र-हरिभद्रमुनीन्द्रमित्रं
सूरिर्बभूव पुनरेव हि मानदेवः ।
मान्द्यात् प्रयातमपि योऽनघसूरिमंत्र
लेभेऽम्बिकामुखगिरा तपसोज्जयते ॥

वी० १०५५=वि० ५८५ याकिनीसूनुहरिभद्रस्वर्गः ।

२९ श्रीविबुधप्रभसूरिः—वी० १११५ जिनभद्रगणिर्युगप्रधानः । जिनभद्रीयध्यानशतकादेर्हरिभद्रसूरिभिर्वृत्तिकरणादयमन्यः ।

३० श्रीजयानदसूरिः ।

३१ श्रीरविप्रभसूरिः—नड्डूलपुरे नेमिप्रासादकृत् । वी० ११७०=वि० ७०० ।

- ३२ श्रीयशोदेवसूरिः—वी०११९० उमास्वातिवाचकः युगप्रधानः । जिनभद्रीयध्यानशतक-श्रावकप्रज्ञप्त्यादेर्हरिभद्रवृत्तिकरणादयमन्य उमास्वातिः । तथा मल्लवादी[य] सम्मतिवृत्तौ—'अयं उमास्वातिवाचकाभिप्राय इत्युक्तम्' पत्र २१, तेन चायमन्यः । वी० १२७० =वि० ८०० भाद्रवाशु० ३ जन्म बप्पभट्टिगुरोः । वि० ८९५ मा० शु० ८ स्वर्गः, इति प्रभावकचरित्रे ।

वि० ८९४ वटे सूरिपदकृते वृद्धगच्छस्य वडगच्छ इति संज्ञा ।

३३ श्रीविमलचन्द्रसूरिः ।

३४ श्रीउद्योतनसूरिः ।

३५ श्रीसर्वदेवसूरिः—वि० १०१० रामशयने ऋषभप्रासादे श्रीचन्द्रप्रभप्रतिष्ठा कृता । चन्द्रावतीशविमलमंत्रिस्त्रीश्रीमतीना(?) दीक्षा मन्त्रिदीक्षाप्रद' (प्रत्यं० 'पदः') वि० १००८ पौषवशालास्थितिः । वी० १४९१ तक्षशिलाया गाजणकेति नाम जातम् ।

३६ श्रीअजितदेवसूरिः—वी० १४९९=वि० १०२९ धनपालेन देशीनाममाला कृता ।

३७ श्रीविजयसिंहसूरिः—वि० १०८८ वर्षे अर्बुदे श्रीविमलेन श्रीऋषभदेवप्रासादप्रतिष्ठा कृता । श्री वि० १०९६ श्रा० व० ९ दिने वादिवेतालेन उत्तराध्ययनवृत्तिः कृता । थिरापद्रगच्छे श्रीशांतिसूरेः स्वर्गः । प्रभावकचरित्रे येन तिलकमजरी शोधिता सुनाच्या कृता ।

३८ श्रीसोमप्रभसूरिः—शतार्थी (?)वी० १५५१ सत्यपुरे वीरो न चलितः ।

३९ श्रीमुनिचन्द्रसूरिः—येषा शिष्यो वादिदेवसूरिः । वि० ११३४ जन्म, ११५२ दीक्षा, ११७४ सूरिपदम्, १२२६ श्रा० व० गुरौ स्वर्गः । एकोनपञ्च्यधिकैकादशशत ११५९ वर्षे पौर्णमीयकमतोत्पत्तिः । तत्प्रतिबोधाय च मुनिचन्द्रसूरिभिः ।

श्रीदेवचन्द्रसूरिशिष्याः श्रीहेमचन्द्रसूरयः—स० ११४४ का० शु० १५ निशि जन्म, ११५० व्रतम्, ११६६ सूरिपदम्, १२२९ स्वर्गः ।

स० १२१३ वर्षे मंत्रिवाहडेन श्रीशत्रुंजयोद्धारः कारापितः श्रीहेमाचार्यवारके ।

४० श्रीअजितसिंहसूरिः—भृगुकच्छे देवसूरिपार्श्वे कान्हडउयोगी विवादार्थं १८४ सर्पकरडकान्यादायागतः । आसन उपविष्टः प्रभुभिः । तन्मुक्तसर्पै रेखा उल्लंघिता न केनापि पश्चात् (?) तदा कोपात्तेन वलिकामध्यस्थः सर्परूढसिंदूरे त्याज्यो (प्र० 'जो') मुक्तः । स प्रभुपादासन्ने चटकान्तरे शकुनिकारूपेण कुरुकुल्लया गृहीतः, स च प्रतिबुद्धः । इति श्रीदेवसूरिप्रबंधः ।

४१ श्रीविजयसेनसूरिः—वि० १२०१ चामुंडिकः । वि० १२०४ खरतरगच्छमतोत्पत्तिः । वी० १६७४=वि० १२१४, पाठांतरे १२१३ आचलिकमतोत्पत्तिः । वि० १२३६ साधुपूनिमीआ । वी० १६७२ जाव(वाह)डोद्वारः । वि०१२५० आगमिकमतोत्पत्तिः ।

४२ श्रीमणिरत्नसूरिः ।

४३ श्रीजगचन्द्रसूरिः—वी० १७५५=वि० १२८५ तपाश्रीजगचन्द्रसूरीणा जावज्जीवमाचाम्लाभिग्रहस्तेन गच्छस्य तपानामेति प्रसिद्धम् । आघाटे शारदावरेण

३२ क्षपणकजयेन भूपालदत्तहीरलाजगच्चन्द्रविरुद'। वड-गच्छाधीशश्रीजगच्चन्द्रसूरिं प्रति चित्रावालगच्छीयउपाध्यायदेवभद्रेण प्रोक्त–श्रीमता साहाय्यदायी भविष्यामि, क्रियोद्धार' क्रियते। कृत उद्धार'। देवभद्रउपाध्यायशिष्य-निजचन्द्रः। उपाध्यायेन विज्ञप्तिः कृता–शिष्यविजयचन्द्राय अनुचानपदवी दीयते। न दत्ता। पट्टे श्रीदेवेन्द्रसूरयः स्थापिताः। भद्रकभाविदेवेन्द्रसूरिणा विजयचन्द्राय आचार्यपद दत्तम्। पश्चात् पृथग् जातः।

४४ श्रीदेवेन्द्रसूरि'–श्रीदेवेन्द्रसूरिकृतग्रन्थास्त्वेते दिनकृत्यसूत्र वृत्ती, नव्यकर्मग्रथपचक-वृत्ती, धर्मरत्न वृत्तिः, सुदर्शनाचरित्र, भाष्याणि त्रीणि, सिरिउसहस्त-वादयश्च। चतुर्देववदणा (प्रत्य० चतुर्देवन्दणा ?) देवेन्द्र-सूरीणा श्रीस्तभतीर्थचतुष्पथस्थितकुमारविहारदेशनाया १८ शतमुखवस्त्रिका.। नौवित्त ब्राह्मणादय. सभ्याः। मन्त्रिवस्तुपालादयश्च क्रियानहुमान गाढ वहति। १३०२ वर्षे श्रीविद्यानन्दसूरीणा सूरिपदम्। तदा तन्मडपात् कुकुमवृष्टिः। तदा पाल्हणविहारे नित्य ५०० वीसलपुरी-भोग'। ३७ (प्रत्य० ३२) वर्षे श्रीदेवेन्द्रसूरयो मालवे-स्थिताः। कार्मणविसृतसूरिमत्रविद्यापुरस्थविद्यानन्द-सूरय। पूर्वं विजयचन्द्रसूरिणा श्रीदेवेन्द्रसूरिपु मालवकगतेपु गच्छावर्जननिमित्त समस्तगीतार्थपृथग् २ वस्त्र-पुट्टलिकाप्रदान, नित्य विकृतिअनुज्ञा २, चीवरक्षालन ३, फलशाकग्रहण ४, साधुसाध्वीना निर्विकृतिकप्रत्या-ख्याने निर्विकृतिकग्रहण ५, सनेपा प्रत्यह द्विविधप्रत्या-ख्यान ६, आर्यकामोगसाधूना ७, गृहस्थावर्जननिमित्त प्रतिक्रमणकरणअनुज्ञा ८, सविभागदिने गीतार्थेन तद् गृहे गमन ९, लेपसनिध्यभाव १०, तत्कालेनोष्णोद-कग्रहण ११–इति वृद्धशालासामाचारी।

४५ श्रीधर्मघोपसूरि –चातुर्दशिकआचार्य-पार्श्वात् श्रीसूरिमत्रो गृहीत। १८ वर्ष. श्रीविद्यानन्द ध-र्मकीर्त्ति–अपरनाम–श्रीधर्मघोपसूरीणामुपाध्यायाना सूरि-पदम्। वैराग्यातिशयाद् योग्यतामवधार्य सा० पेथड. परिग्रहपरिमाण सक्षिपन्, नियमभगसभवतया नानुज्ञातः। तेन कोशाः लिखापिताः। २१ घटीस्वर्णेन ८४ प्रासादाः कारिताः। साधर्मिकवेपागमने .....३२वर्षो ब्रह्मचारी यो अभूत्। तत्सुतेन झाझणेन तीर्थद्वये एका रक्तश्वस्रध्वजा दत्ता। राजामारगदेव(च ?) कर्पूरकृते येन हस्तयोजना (योजित ?)मकारयत्।

श्रीधर्मघोपसूरीणा देवकपत्तनेऽब्धिना रत्न दर्शितम्। स्वभात् प्रयाणकमेक चलिता सोमनाथ' कायोत्सर्गाद् गोमुखयक्षप्रभावैर्मि थ्यालमुत्तमर्पयन्निषेधितः। जघराला्या विद्यापुरे वटकानि पापाणा', कठे केशगुल्मकरणाद् दुष्टा ज्ञात्वा श्राविकाया' पुतद्वये पट्टको लग्नः। श्राद्धैः प्रष्ट तत्स्वरूप सा मोचिता। उज्जयिन्या योगिभयात् साधवोऽस्थितौ श्रीगुरव आगता। योगिना साधवः प्रोक्ताः–अत्रागते स्थिरं स्थेयम्। साधुभिः प्रोचे स्थि-ताः स्म, किं करिष्यसि। तेन साधूना दन्ता दर्शिताः। साधुभिस्तस्य कफोणिर्दर्शिता। साधुभिर्गुरूणा निवेदम्। तेन निशि शालायामुन्दरवृन्द विकुर्वितम्। साधवो भीताः। श्रीगुरुभिर्घटमुख वस्त्रेणाच्छाद्य तथा जप्त यथा आरार्टि कुर्वन् योगी आगत्य पादयोर्लग्नः। क्वचन पुरे अभिमन्त्रि-तद्वारदान निशि एकदा अनभिमन्त्रितद्वारदाने शाकि-नीभि' पट्टिरुत्पाटिता, स्तभिता, पादपतने मुक्ताः। सर्प दष्टे काष्ठभारिकमारामध्ये विपापहारिणी वल्ली ग्राहिता। तद्ग्रथा –सघाचारनव्यभाष्यवृत्ति, जयवृषभ २८स्तुतय.। एकेन मन्त्रिणा अष्टयमक काव्यमेक दर्शयित्वा प्रोचे–ईदृक् केनाप्यधुना कर्तु न शक्यते। गुरुभिः प्रोचे नास्ति इति नास्ति। मन्त्रिणोक्त तर्हि तत् काव्य दर्शय। गुरु-भिरुक्त ज्ञास्यते। ततो 'जयवृषभे' स्तुतयः २८ अष्ट यमका निःशेषा निष्पाद्य भित्तौ लिखिताः। स चम-त्कृतः। तैः १३५७ दिव गता।

४६ श्रीसोमप्रभसूरि'–१३१० सोमप्रभसूरीणा जन्म, २१ सूरिपदम्। श्रीगुरुदत्ता मत्रपुस्तिका। चारित्र मे प्रयच्छतु, मत्रपुस्तिका चेत्युक्त्वा न गृहीता। अप-रस्य योग्यताभावात् गुरुभिर्जले बोलिता सा। श्रीसोमप्र-भसूरीणामेकादशागीसूत्राथा कठस्थौ। भीमपल्लया चतु-

र्गासीमनस्थिताः । एकादशेऽन्पराचार्येषु वारयत्स्वपि कार्त्तिकद्वये प्रथमे कार्त्तिकपक्षे प्रतिक्रम्य निहृताः । पश्चात् ग्रामभंगोऽभूत् । तैः पश्चात् वलित्वा कोडीनारे समागत्याचार्याः कायोत्सर्गः कृतः । ग्रंथास्तु–यतिजीतकल्पविस्तरः, यत्राखिलेत्यादि ५० स्तुतयः,'जनेन येन' २७ स्तुतयः । १३५७ धर्मघोषसूरेरनन्तर श्रीसोमप्रभसूरिभिः श्रीश्रीविमलप्रभसूरीणा पद ददे । ते च स्तोकं जीविताः । ततः स्वायुर्ज्ञात्वा ७३ वर्षे श्रीपरमानन्दसूरि–श्रीसोमतिलकसूरीणा द्वयेषां सूरिपदं दत्त्वा मासत्रयेण श्रीसोमसूरयो दिव गताः । अन्यत्र क्वापि पुरे तद्दिने पत्रावतीर्णे देवतावचः–तपाचार्यः प्रथमे सौधर्मे उत्पन्न इति प्रवादो अधुना मेरौ मया देवमुखात् श्रुतः । परमानन्दसूरयो वर्षचतुष्क जीविताः ।

४७ **श्रीसोमतिलकसूरिः**–१३५५ वर्षे माघे श्रीसोमतिलकसूरीणा जन्म, ६९ दीक्षा, ७३ सूरिपदं, १४२४ दिव गताः । महाभाग्यवराः । सर्वायुः ६९ । तद्ग्रन्थाः–बृहत्नव्यक्षेत्रसमाससूत्र, सत्तरिसयठाण, यत्राखिल २८ स्वकृतचतुरर्थराजस्तुतिः, शस्ताशर्म'-वृत्तयः, तत्वादयः स्तुतयः, शुभभावनशिवशिरासि, श्रीनाभिसभव–श्रीशैवेयादिबहुस्तवानि । श्रीसोमतिलकसूरिभिः क्रमेण श्रीपद्मतिलकसूरि–चन्द्रशेखरसूरि–जयाणन्दसूरीणा पद दत्तम् । तेषु श्रीपद्मतिलकसूरयः श्रीसोमतिलकसूरिभ्यः पर्यायज्येष्ठाः । एक वर्षं जीविताः । येषा वचनायनातिगाः (?) । श्रीचन्द्रशेखरसूरीणा १३७३ जन्म, ८५ दीक्षा, ९२ सूरिपद, १४२३ स्वर्गः । उषितभोजनकथा–श्रीस्तंभनकहारबन्धस्तवादीनि तत्कृतानि । धूलिक्षेपे स्मृतौ च व्याघ्रगेहरिकटलनम् ।

४८ **श्रीजयानन्दसूरिः**–श्रीजयानन्दसूरीणा १३८० जन्म, ९२ दीक्षा, साजणाख्यभ्राताऽमाने यत् देवतया निशि चपेटया दीक्षाग्रहणमनुमेने, १४२० वर्षे । वैशाख शु० अणहिल्लपुरे १४४१ दिवगताः । तत्कृतग्रंथाः–श्रीस्थूलिभद्रचरित्र, जीवकयास्तवानि ।

४९ **श्रीदेवसुन्दरसूरिः**–

येषा १३९६ जन्म, १४०४ दीक्षा, महेश्वरे १४२० सूरिपद, गुंगुडीसरसि कणयरीपा शिष्येण उदयीप्पा योगिना सभक्तिना नमस्कृतः । सं० नरीयादिष्टः स जगौ कणयरीपा दुर्गादेशाद् युगोत्तमत्वे नताः । इति नित्यनिरपायवैराग्यकराः श्रीदेवसुन्दरसूरयः ।

५० **श्रीज्ञानसागरसूरिः**–येषा सं० १४०४ जन्म, १४१७ दीक्षा, १४४१ सूरिपदं, ६० दिवंगताः । तदैव कर्पूरोद्धारुकखरतरसंघे स० गोवालेन वयं तुर्ये कल्पे स्म इति स्वमोऽप्युपलेभे । श्रीमदावश्यकौघनिर्युक्त्याद्यनेकग्रन्थावचूर्णयः, श्रीमुनिसुव्रतस्वामिस्तव घोघानवखडस्तव–तत्कृताः ग्रन्थाः ।

५१ **श्रीकुलमण्डनसूरिः**–येषा १४०९ जन्म, १७ दीक्षा, ४२ सूरिपद, १४५५ दिवगताः । सिद्धान्तआलापकोद्धार , विश्वश्रीधरेत्यष्टादशारचक्रबन्धस्तव इत्यादि कृतानि ।

५२ **श्रीसोमसुन्दरसूरिः**–१४३० माघ व०..शुक्रे जन्म, ३७ दीक्षा, ९९ स्वर्गः । श्रीसोमसुन्दरसूरिवचनात् साहश्रीधरणेन राणपुरे चतुर्मुखधरणविहारः प्रतिष्ठितः । ९९ लाखपीरोजी वइठां । सवालाख मिथ्यात्वीकुलानि प्रतिबोधितानि । सवालाख प्रतिमा प्रतिष्ठिता । सवत् १४०५ वर्षे धरणविहारस्य प्रतिष्ठा कृता । चत्वारि मुहूर्त्तानि–दानशाला, गृह, प्रासाद, सत्रुकार कारापितानि । योगशास्त्र-उपदेशमाला–षष्टिशतक–नवतत्त्वसूत्राणा बालावबोधाः, भाष्यावचूरि–कल्याणकस्तुतिस्तोत्रप्रमुखा ग्रन्थाः । १५०० शिष्याः । तेषु शान्तिचन्द्रगणिप्रमुखाः क्षमाख्यादिकारिणः ।

५३ **श्रीमुनिसुन्दरसूरिः**–१४२६ जन्म, ४३ दीक्षा, ६५ वाचकपद, ७० सूरिपदं, ३ वर्षयुगप्रधानपदवी, १५०३ वर्षे का०शु० १ स्वर्गः । बाल्येऽपि १००० अवधानानि; १०८ वर्तुलिकानादोपलक्षिताः । १०८ हस्तश्रीपर्वलेखविधायकाः । ३२ सहस्रटंकव्ययेन वृद्धनगरीय स० देवराजेन सूरिपदं कारितम् । सतिकरस्तवकरणेन मार्युपद्रवो टालितः । २४ वार विधिना सूरिमं-

आराधनम्। तेषु १४ वार चपक राजा देपा(?) धाराधिराजभिर्यदुपदेशतो निज २ देशेषु अमारिः कारिता। श्रीसहस्रमल्लराज्ञो वचनात् सीरोहीपरिसरे मारिनिकारो निराकृत' शांतिकरस्तवकरणात्। टीडभयोऽपि निवारितः।

५४ श्रीजयचन्द्रसूरिः–कालीसरस्वती निरुदः, सर्वग्रंथनिशारद.।

५५ श्रीरत्नशेखरसूरि'–१४५७ जन्म, ६३ दीक्षा, ८३ पडितपद, १५१७ वर्षे पोष व० ६ दिने स्वर्ग। स्तभतीर्थे वानीनाम्ना भट्टेन बाल्ये 'बालसरस्वती'ति नाम दत्त। तद्ग्रथाः–श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति–श्राद्धविधिवृत्ति–आचारप्रदीपादयः। ११ वर्ष युगप्रधानपदवी।

५६ श्रीलक्ष्मीसागरसूरिः–पेथापुरे पदस्थापना। विद्यापुर–लाटापल्ली० पदानि। साह नगराजेन पदमहोत्सवो निहित। सवत् १५१८ वर्षे युगप्रधानपदवी। लाटापल्लीयसघवी माहादेवेनोपाध्यायपदद्वय, एकादशा चार्यपदमहोत्सवो निहितः। गिरिपुरे साहश्रीसाल्हाकेन ५५ अगुलरीरीमयप्रतिमात्रय काराप्य प्रतिष्ठित श्रीगुरुभिः। मडपे स० चादाकेन ७२ देवालय ३६ पूजोपकाराल्य २४ पट्टप्रतिष्ठाः कृता। श्रीसुमतिसाधुसूरिपद मडपीय स० सूरा–वीराभ्या। उनरहट्टे २४ पट्टप्रतिष्ठा। श्रीशुभरत्नसूरिपद पत्तने। देवगिरीय सघवी नगराज–धनराजाभ्या श्रीसूरिपद–वाचकपद। अहमदावादिय श्रीसघमुख्य सघवी गदाकेन अर्बुदे सपरिकरा ४० अगुलरीरीमयार्चा निर्मापिता। श्रीसूरिपदानि। सीरोह्या स० सीमाकेन सूरिपद। पेथापुरे वाचकपदचतुष्टय। येषां शिष्या पडितश्रीचरणप्रमोदगणि० शिष्यप्रमुख २४ पडितपदानि। येन श्रीचरणप्रमोदगणिना अष्टादश शत साधुपरिवाराणा द्विक् २ कल्पप्रदान प्रत्येक। षट्त्रिंशत् शत कल्पप्रदानपूर्व गणपरिधापनिका विहिता। विबुधपदमहत्तराप्रवर्तिन्यादिपदानि।

पचशतसाधूनां दीक्षा दत्ता। महाभाग्यसारा बभूवुः।

५७ श्रीसुमतिसाधुसूरिः–पत्तने सं० शिवाकारितविबुधपदः। कोठारी श्रीश्रीपाल–सहिजपालकारितः श्रीसूरिपदः। मडपाचलकारणेन स० जाऊजीव्ययित एकलक्षचतुष्कटिकद्रव्यप्रवेशमहः। ८४ चुरासी जोटक नफेर्यादिबहुवाद्याडम्बरपुरस्सर। तदनसरे सघस्य मडिप्रदानम्। तदनु तेनैव ११ सेर स्वर्ण–२२ सेर रुप्यमयप्रतिमाप्रतिष्ठा कृता। तदवसरे ११ लक्षानुमितरुप्यटकव्ययश्च तेनैव चक्रे। पचपर्व्याचाम्लानि जावज्जीवम्। वटपल्लीनगरे मासत्रयेण विधिना श्रीसूरिमत्राराधनमेकश्वेता नैराचाम्लम्। तदधिष्ठातृ प्रत्यक्षीभवन च। सीणउरक–सारगपुरादौ सौवर्णटकप्रभावनापूर्वकसुभगप्रवेशमहोत्सवाश्चेति कियत् स्मार्यते। श्रीसुमतिसाधुसूरिभि' वट्टपल्या विशेषविधिना श्रीसूरिमत्रसमाराधिता मत्राधिष्ठायका' प्रत्यक्षी बभूवु.। तै' प्रोक्त श्रीपूज्यायु सार्द्ध द्वयवर्षमित वर्तते, तेनास्माभि' प्रत्यक्षीभूतै किम्। तदा गुरुभिः प्रोक्त–केषा शिष्याणां दीयते सूरिपदम्। पश्चात् चदनलिप्तपट्टिकाया वर्णा देवैर्दर्शिता। तपागच्छाधिराज–श्रीहेमविमलसूरयः स्थाप्या'। श्रीगुरुभिर्हृदये स्थाप्य समये ते स्थापिता'। श्रीगुरुभि' पूर्वं द्विकआचार्या स्थापिता'–श्रीइद्रनदिसूरिः, श्रीकमलकलससूरिः। पर श्रीपूज्यश्रीसुमतिसाधुसूरीणा सूरिमत्राधिष्ठायकेन प्रोक्तम्–एतेषां गणभारो न दातव्य। कस्मात्? गणभेद करिष्यति। तस्मात् कारणात् युगप्रधानपदवी न दत्ता। पट्शतसाधूना दीक्षा दत्ता। अष्टादशशतसाधुमानम्।

[स० १५०७ वर्षे लेखकलुकात् लुकामतप्रवृत्तिः। स० १५३३ वर्षे प्रथमवेषधारी रुपिभाणाख्यो अभूत्।]

५८ श्रीहेमविमलसूरिः–श्रीतप्पागच्छाधीश श्री हेमविमलसूरीश्वराणा स० १५२० वर्षे कार्त्तिक शु० १५ दिने जन्म, स० १५२८ वर्षे श्रीलक्ष्मीसागरसूरीणा हस्ते दीक्षा, स० १५४८ वर्षे पचलासाग्रामे श्रीसुमतिसाधुसूरिभिः श्रीसूरिपद दत्तम्। साह पाताकेन महोत्सवः कृत'। तदनु इलप्राकारे कोठारी सायर श्रीपालेन गच्छनायकपदमहोत्सवो निहितः। तस्मिन् समये श्रीइन्द्रनन्दि-

सूरि-श्रीकमलकलससूरिभ्यां गणद्वयः कृतः। कुतबपुरा, कमलकलसा। मूलशाखा तु पाल्हणपुरा एतत् निशाखा, हेमशाखादीनिर्जाता। सं० १५५० वर्षे श्रीदेवदत्तस्मात् स्थंभतीर्थीयश्रीसंघसार्द्धं श्रीशत्रुंजयतीर्थयात्रा महामहोत्सवपूर्वकं कृता। सं० १५५२ वर्षे सोनी जीवा जागाकृत प्रतिष्ठामहे श्रीदानधीरसूरीणा सूरिपद दत्तम्। परं स्तोकायुष्काः। ते च षण्मासमध्ये दिवंगताः। तदनु गुरवो लालपुरे क्षेत्रे चतुर्मासीं स्थिताः। तत्र सं० थिरासान्निध्यात् श्रीसूरिमंत्रः साधितः। सूरिमंत्राधिष्ठायकैर्वरो दत्तः। सं० १५७० वर्षे डाभिलाग्रामे स्थंभतीर्थीय सोनी जीवा जागैरागत्य महामहोत्सवेन श्रीआणंदविमलसूरीणा सूरिपदम्, तथा श्रीदानशेखरगणि-श्रीमाणिक्यशेखरगणिवाचकपदद्वयम्। तथा महत्तरापद दत्तम्। सं० १५७२ वर्षे श्रीस्तंभतीर्थे समागमनाय इलप्राकाराच्चलिताः। कर्पटवाणिज्ये श्रीपूज्यपादावधारणसमये दो० आणदेन नगरे सर्वत्र सुरत्राणागमनसमयवत् तलीआ तोरण ध्वजारोपणादिकोत्सवयुतः प्रवेशमहोत्सवः कृतः। तज्ज्ञात्वा पिशुनेन पातशाह मुदाफरस्याग्रे प्रोक्तम्-एवंविधः प्रवेशोत्सवः कृतः। ततः कर्पटवाणिज्ये बंदाः प्रेषिताः। गुरवः पूर्वमेव चलिताः। चूणेलग्रामे प्राप्ताः। रजन्यां श्रीपूज्यैः श्राद्धाग्रे प्रोक्तम्-विघ्नमस्ति, वयं चलिष्यामः। निशायां चलिताः। मोशीत्राग्रामे प्राप्ताः। प्रभाते चूणेलग्रामे प्राप्ता बंदाः-क्व गुरवः? ग्रामाधीशेन प्रोक्तम्-न, जानीमः, अत्रतः क्व चलितास्ते। पश्चात् वलिताः। स्थंभतीर्थे पादावधारिताः। श्रीसंघेनोत्सवः कृतः। पिशुनैश्चाटिका कृता। पोजकीभिः श्रीगुरवः बंदीस्थानके रक्षिताः। टकाः सहस्रद्वादशमिताः जीर्णनाणकाः सघपार्श्वे गृहीताः। श्रीगुरुभिर्मनसि चिंतितमेव सर्वत्रापि भविष्यति तदा अतीव दुःखकर जायते। इति विचार्य आचाम्लतपः कृत्वा श्रीसूरिमंत्र आराधिते सति अधिष्ठायकवचन बभूव। आक्षेप कुरुध्वं, द्रव्यो वलिष्यति। पश्चात् शतार्थी पं० हर्षकुलगणि-पं० संघहर्षगणि-पं० कुशलसंयमगणि-शीघ्रकवि पं० शुभशीलगणिप्रभृति गीतार्थाश्चत्वारश्चंपकदुर्गे प्रहितास्तैस्तत्र गत्वा सुरत्राणस्य स्वकाव्यरंजनकला दर्शयित्वा द्रव्यं वालयित्वा च श्रीगुरु ववदुः। सं० १५७८ वर्षे श्रीपूज्याः पत्तने चतुर्मासीं स्थिताः। प्रवेशमहोत्सवसमये ऊकेशज्ञातीय दो० नाकर पंचाननेन तुर्यव्रतोच्चारसयुक्तअष्टादशशत मंडिः प्रदत्ता श्रीसंघस्य। श्रीस्तंभतीर्थे मा० लाखाकेन ६५ मणमितरीरीमयाः पट्टाः कारापिताः, तेऽपि प्रतिष्ठिताः श्रीहेमविमलसूरिभिः। पुनः पत्तने दो० गोपाकेन ६१ एकषष्टि मणमित रीरीमयीजिनपट्टिकाः कारापितास्ता अपि श्री पूज्यैः प्रतिष्ठिताः। विजानगरे कोठारी सायर श्रीपाल कारित-प्रासाद-प्रतिमाप्रतिष्ठा महामहेन श्रीपूज्यैर्विहिता। एवं कियदवदाताः लिख्यंते। पंचशतसाधवः दीक्षिताः। महाभाग्यसारा बभूवुः। तद्वर्षे पूज्यादेशेन श्रीआणंदविमल (प्रत्यंतरे-आणंदसोम)सूरयः कुमरगिरौ चतुर्मासी स्थिताः। श्रीपूज्यानामाज्ञा विना मानी (प्र० माहवी) साध्वी दीक्षिता, वयेन लघीयसी। श्रीपूज्यैरेव प्रोक्तम्-ममाज्ञा विना त्वया कथं दीक्षिता? यदि दीक्षिता तदा सर्वथैव मोचनीया। एवं कथिते सति न मोचिता। पश्चात् सिद्धपुरे सीरोद्या चतुर्मासकचतुष्टयं कृत्वा श्रीआणंदविमलसूरयः गूर्जरधरित्र्या समागत्य, श्रीहेमविमलसूरिपादानामनापृच्छ्य सं० १५८२ वर्षे वैशाख शु० ३ दिने पृथगुपाश्रये स्थिताः। तत्र तैलधूसकयोगेन मलिनाशुकानि कृतानि। ऋषिमतीनामेवंविधा प्रवृत्तिर्जाता।

अथ श्रीपूज्य सं० १५८३ वर्षे विश्वलनगरे ज्येष्ठस्थितौ स्थिते सति अश्विनमासे श्रीपूज्यशरीरे असमाधिर्जाता। वटपल्लीतः चतुर्मासकमध्ये श्रीआणंदविमलाचार्याः समाकारिताः। तेषां गुरुभिः प्रोक्तम्-त्वं गणभारं गृहाण। तैरुक्तम्-गणभारे मम क्षमा नास्ति। पश्चात् गीतार्थसंघैः संभूय श्रीआणंदविमलाचार्यसमक्षं श्रीहेमविमलसूरिभिः स्वहस्तेन श्रीसौभाग्यहर्षसूरयो निजपट्टे स्थापिताः। सं० १५८३ वर्षे अश्विन शु० १३ दिने दिवं प्राप्ताः सौभाग्यनिधानाः। सं० १५८३ वर्षे ऋषिमतोत्पत्तिर्जाता। ऋषिमतात् विवंदनीकगच्छागतराज-

स्थिताः। भाद्रपद शु० अष्टम्या अभिग्रहो गृहीत.। सा० हीराख्यो द्विप्रहरानन्तर पर्पटकपर्पटिका गुडपर्पटिका पोलिका पूपकयुता स्वकरेण दास्यति तदा पारणक करिष्ये। नवमदिने अभिग्रहः पूर्णः ॥१०॥

आश्विनमासे शुक्लप्रतिपदादिनेऽभिग्रहो जगृहे–पत्तनीय स० अमरा मंत्रि गोरा समागत्य गृहे आकार्य करबो दास्यति तदा पारणक करिष्ये। नवमदिनेऽभिग्रहः पूर्ण.॥११॥

तस्मिन् वर्षे वागडदेशे गोलनगरमध्ये चैत्रशुक्ल चतुर्दशीदिनेऽभिग्रहः कृतः। पाश्चात्यप्रहरे ग्रामाधिकारी मत्री कमलाख्यो वदित्वा वदिष्यति उत्सर्गं पारयध्व। तृतीयोपवासे पड्भिः प्रहरैरभिग्रहः पूर्ण.॥१२॥

ततश्चलमाने सति इलादुर्गे प्राप्तः। वैशाखसुदि पूर्णिमादिने षष्ठतपःकृते सति पाश्चात्यप्रहरे सूर्यगुफा यामुत्सर्गो विहित। दो० तेजा सा० सालिग सहागत्य द्वितीय प्रहरसमये वदितोऽभिग्रह' पूर्णः॥१३॥

स० १६०५ वर्षे स्तभतीर्थे चतुर्मासीं स्थिता। तत्र पारपि वाघा मेघा कृतमहोत्सवपुरस्सर गच्छनयपरिधापनिकापूर्वं दर्शनपरिधान–बहुसघमीलन–बहुद्रव्यव्य यकरण–सुभग गच्छाधीशपदस्थापना स० १६०५ वर्षे माघ शुक्ल ५ दिने विहिता।

स० १६०८ वर्षे राजपुरे चतुर्मासीं स्थिता। चतुर्मासकानन्तर हविदपुरे मासकल्पो विहितः। तत्राभिग्रहो गृहित। मौन शयनाहारवर्जन च। सघवी रूपचद गृहे समाकार्य प्रथमसेवतिकामोदकैकमन्ये चत्वारि मोदका विभिन्नजातीया दास्यति तदा पारणकम्। षष्ठे दिने पूर्णोऽजनि॥१४॥

स० १६१० वर्षे पुन' पत्तने चातुर्मासकानन्तर वैशाख शुक्ल ३ दिने प्रतिष्ठा कृता। चीठीआ श्रीश्रीअमीपालेन स्फाटिकमयीप्रतिमाद्विक–रीरीमयी–शैलमयी २५ प्रतिमा प्रतिष्ठिता' श्रीसोमविमलसूरिभिः। टकाद्य पचलक्ष द्रव्यव्यय' कृत सा० श्रीअमीपालेन। स० १६१७ वर्षे अर्व्यदुर्गे चतुर्मासी स्थिता'। अश्विनमासे शुक्लचतुर्दशीदिने अशुभसूचक दृष्ट्वा सघस्याग्रे प्रोक्त श्रीगुरुभि –दुर्गभगो भविष्यति। तत्तु सप्तम्यामजनि। गुरवो हाथिलग्रामे प्राप्ता'। तस्मिन् समये हुडपद्रग्रामे मरकोत्पत्तिर्जाता। बहवो मनुजाः पशवश्च मृताः। तस्मिन् समये हाथिलग्रामे श्रीपूज्यानामागमन श्रुतम्। तत्रागत्य श्रीसघैर्विज्ञप्ति कृता–तत्र पूज्यै. पादावधार्य मरकनिवारण क्रियताम्। पश्चात्तत्र पादावधार्य मारिर्निवारिता॥१५॥

स० १६१९ वर्षे श्रीस्तभतीर्थे चतुर्मासीं स्थिताः। चतुर्मासकमध्ये आश्विनशुक्लप्रतिपदादिने सा०धनराज–पा० वाघाभ्या हस्ते कृत्वा अखडदधिगोरस दास्यति तदा पारणक, नोचेत्तदा पचदशोपवासः करिष्ये। पचमोपवासेऽभिग्रहः पूर्ण.॥१६॥

चतुर्मासकानन्तर नदुरवारे प्राप्ता', सघाग्रहाच्चतुर्मासीं स्थिता.। स० १६२० वर्षे भाद्रपदवदिचतुर्दशीदिनेऽभिग्रहो जगृहे–वैष्णवभक्तीयदेशाधिकारी मत्री श्रीभाई समागत्य गृहे आकार्य खडायुत दुग्ध ददाति तदा पारणकम्। पचमदिनेऽभिग्रह पूर्ण॥१७॥

स० १६२३ वर्षे अहम्मदावादे पोषमासेऽभिग्रहः प्रपन्न. पड्विकृतित्यागरूप। यदा कोऽपि श्राद्धः कासीरपुरी आगत्य घृत-गुड ददाति तदा पारणक, अन्यथा षण्मास यावत्सर्वविकृतित्याग.। त्रयस्त्रिंशद्दिने सा० भवानेनाभिग्रहः पूरित.। अन्येऽपि बहवः प्रभावास्सति॥१९॥

अष्टावधानपूर्वका, इच्छालिपिवाचकाः, श्रीवर्द्धमानविद्यासूरिमत्रसाधका', अभिधानसरणप्रभावात् चौर्यादिभयनिवारका, सदेशकथनात् वदनाच्च एकाहिक–द्व्यहिक–त्र्यहिकज्वरादिरोगापहारका', पादजलानुभावात् सुखप्रसव तथा कुष्ठादिदुष्टरोगापहारका., अधःशीर्षकादि पादवदनात् प्रयाति। एवमनेकमहिमाकराः। श्रीकल्पसूत्रटबार्थादिबहुसुगमग्रन्थकारका। शतार्थी विरुदधारकाः। स० १५९६ वर्षे कार्तिकसु० १५ दिने जन्म। स० १६०१ वर्षे कार्त्तिक सु० १५ दिने दीक्षिताः,

पा० सांडाकृतमहामहेन। स० १६११ वर्षे का० वदि ५ दिने पा० साडाकृतमहामहोत्सवपूर्वकपंडितपदं दापितम्। स० १६२५ वर्षे वैशाख शुक्ल पंचम्या पत्तने सं० पंचायण-भार्या वरबाई-पुत्ररत्न स० देवजीकृत महामहेन श्रीसोमविमलसूरिणा आणदसोमसूरीणा आचार्यपद दत्तम्। तत्समये गणपरिधापनिका विहिता। सं० १६३० वर्षे अहम्मदावादे माघ शु० पचम्या श्रीआणदसोमाचार्याणा वदनदापनमहोत्सवः कृतः। तस्मिन् समये उ० हससोमगणि-उ० देवसोमगणिवराणां वाचकपदद्वय दत्तम्। तस्मिन् अवसरे संघाधिपविरुदधारी-वृद्धनगरीय-स० लखमण पुत्र-नानजी-सघजी-मेघजी-सूरजीकेन समस्तविबुधपरिधापनिका-निशाजागर-साधर्मिकवात्सल्यादिर्बहुद्रव्यव्ययेन उत्सवः कृतः श्रीपूज्यविद्यमाने सति। स० १६३६ वर्षे भाद्रपद वदि ५ दिने दिव प्राप्ताः। पश्चात् श्रीहेमसोमसूरीणां सूरिपद दत्तम्। स० १६३७ वर्षे मार्गशिर्षदिनोदये श्रीसोमविमलसूरयः स्वर्जग्मुः। द्विशती साधूना दीक्षिता।

६१ तत्पट्टे श्रीहेमसोमसूरिः-विजयमाना वर्त्तते। तेपा कियद् अवदाताः लिख्यंते। सं० १६२३ वर्षे धाणधारदेशमध्ये जन्म। तत्र निवासी प्राग्वाटज्ञातीय वृद्धसज्जनीय सा० जोधराज-तत्पत्नी रूडीनाम्नी, तयोः पुत्रः सुखमहूचितः। स० १६२३ वर्षे जन्म क्रमेणाष्टवर्षीयोऽजनि। तस्मिन् समये भुवि विचरन् सन् श्रीसोमविमलसूरिः वडगामे प्राप्तः। सर्वश्रीसघयुत साह जोधराजकुमार हर्षराज वदनार्थं गतः। धर्मदेशना श्रुता। प्रबुद्धः श्रीहर्षकुमारः। श्रीपूज्यपार्श्वे दीक्षा जग्राह। क्रमेण सर्वशास्त्रपारीणोऽजनि। स० १६३० वर्षे दीक्षा गृहीता। उपस्थापनानदिमहोत्सवो विहितः, सं० पुण्यपाल-वर्द्धमानेन। मु० श्रीहेमसोम अभिधान स्थापितम्। स० १६३५ वर्षे स० लखमणकृतमहोत्सवपूर्वकं पडितपद कारितं श्रीपूज्यैः। स० १६३६ वर्षे वैशाखवदि द्वितीयादिने वृद्धनगरीय स० लखमण चतुरशीति गणसाधुमीलनबहुग्रामागतसघसमुदायमिलनसर्वेपा मडिप्रदानपूर्वं शर्करापुट प्रदानपूर्वं, नमस्कारो यः पठति तेपां भोजनप्रदानपूर्वं श्रीसोमविमलसूरिभिः स्वहस्तेन सूरिपद दत्तम्। स्वगच्छ-चतुरशीतिगच्छपरिधापनिका कृता। जाता गच्छाधीशाः।

श्रीहेमसोमसूरयो विजयमानाः सति इति॥

卐

॥ इति श्रीपट्टावली ज्ञेया। शुभं भवतु॥

卐

[अन्यान्यहस्ताक्षरैरङ्कितानि निम्नलिखितसूरिनामानि कैश्चित् पाश्चात्यैः पूरितानि समुपलभ्यन्ते एकस्मिन् आदर्शपुस्तके]

६२ तत्पट्टे श्रीविमलसोमसूरि
६३ तत्पट्टे सप्रति विजयमान श्रीविशालसोमसूरि
६४ तत्पट्टे श्रीउदयविमलसूरि
६५ तत्पट्टे श्रीगजसोमसूरि
६६ तत्पट्टे श्रीमुनींद्रसोमसूरि
६७ तत्पट्टे श्रीसोमसूरि
६८ तत्पट्टे श्रीआणदसोमसूरि
६९ तत्पट्टे श्रीदेवेन्द्रविमलसोमसूरि
७० तत्पट्टे श्रीतत्त्वविमलसोमसूरि
७१ तत्पट्टे श्रीपुन्यविमलसोमसूरि विजयराज्यते

नागपुरीयतपोगच्छपट्टावली।

१ श्रीवीर-वर्द्धमानस्वामी।

२ सुधर्मस्वामी-अग्निवेसायन गोत्रीय कोल्लाक सनिवेसवासी धम्मिल्लब्राह्मण भद्दिला ब्राह्मणीना पुत्र, गृहस्थवास वर्ष ५०, दीक्षा वर्ष ३०, युगप्रधान वर्ष २०, एह माहि वरस ८ केवलपर्याय पाली राजगृहनगरे मास १ नो अणसणकरी सर्व आयु वर्ष १०० नौ पूरौ करी श्रीवीरात् २० वर्षे मोक्षः। जबूप्रतिबोधकः पचमो गणधरः। श्रीसुधर्मस्वामिनै पाटै-

३ श्रीजबूस्वामी-राजगृहनगरवासी काश्यपगोत्रीय ऋषभदत्तश्रेष्ठिनी भार्या धारणीनौ पुत्र पाचमै देवलोकहुती चवीनै ऊपनौ जबूवृक्षनी वर्णनानौ अधिकार सुधर्मस्वामियै विद्याधरप्रतै कह्यौ, विद्याधरइ माता पिता प्रति कह्यौ तिवारै पुत्रप्राप्तिनी आश्या थई तिवारै अनुक्रमै पुत्र हुयौ नाम जबू दीधौ। अनुक्रमि १६ वर्ष गृहवास वसी वैराग्यनैं वसे ब्रह्मचर्य लेइ पछै पितानै आग्रहै आठ कन्यानौ पाणिग्रहण करी रात्रिनै समै प्रतिबोधी प्रभातनै समै निवाणु ९९ कोडि कचण छोडी दीक्षा लीधी। आठ कन्या अनै तेहना मातापितादिक प्रभवादिक ५०१ चोरनै प्रतिबोधी छद्मस्थपणै वर्ष २०, केवल पर्याय वर्ष ४४, सर्व आयु. वर्ष ६० पाली, श्रीवीरात् ६४ वर्षे सिद्ध। अपश्चिम केवली, १० थाना विच्छेद गया-मनपर्यव १ परमावधि २ ३ आहार ४ खवग ५ उवसमे ६ कप्पे ७ सयम तिअ ३-कहता सूक्ष्मसपराय १ यथाख्यात २ परिहारविशुद्धि ३ केवल सिज्झणमणा य जबूम्मि विच्छिन्ना॥ श्रीवीरात् ६० वर्षे पालकराज्य। तदनु १०८ वर्षाणि यावन्नवनद राज्य। श्रीजबूस्वामीनै पाटै-

४ प्रभवस्वामी-राजपुत्र कात्यायनगोत्रीय गृहस्थवास वर्ष ३०, व्रत वर्ष ४४, युगप्रधान वर्ष ११, सर्वायु वर्ष ८५। चौर ५०० सहितदीक्षा। १४ पूर्वधर श्रीवीरात् ७० वरसे उपकेसग्रामे श्रीप्रतिष्ठा वीरस्य कृता। श्रीवीरात् ७५ वर्षे श्रीप्रभवस्वामि सिद्ध। प्रभवनै पाटै-

५ श्रीसिज्जभवसूरि-श्रीवीरात् ९८ वर्षे स्वर्गः। गृहस्थ वर्ष २८, व्रतवर्ष ११, युगप्रधान वर्ष २३, सर्वायु वर्ष ६२। यज्ञयूपा[ध.स्थित] जिनप्रतिमादर्शनात् प्रतिबुद्धः। मनकपिता दशवैकालिक ७०० कर्ता। श्रीसिज्जभवसूरिनै पाटै-

६ यशोभद्रसूरि-श्रीवीरात् १०० वर्षे स्वर्ग। गृहस्थे वर्ष २२, व्रत वर्ष १४, युगप्रधान वर्ष ५०, सर्वायु वर्ष ९६। वीरनिर्वाणात् १५५ वर्षे चन्द्रगुप्तो नृप.। परिशिष्टपर्वणि। श्रीयशोभद्रसूरिनै पाटै-

७ श्रीसभूतिविजय-श्रीवीरात् १४८ वर्षे सिद्ध.। गृहस्थै वर्ष ४२, दीक्षा ४८, युगप्रधान वर्ष ८, सर्वायु वर्ष ९०। श्रीसभूतिविजयनै पाटइ-

८ श्रीभद्रबाहुस्वामी—श्रीवीरात् १७० वर्षे स्वर्ग'। गृहस्थै वर्ष ४२, व्रतवर्ष १७, युगप्रधाने वर्ष १४, सर्वायु वर्ष ७३। अपश्चिम पूर्वधर, श्रीउपसर्गहर जयविजय दशनिर्युक्ति कर्त्ता, श्रीसघरक्षाकारी। श्रीभद्रबाहुनै पाटिइ-

९ श्रीस्थूलभद्र-श्रीसभूतिविजयना शिष्य, श्रीवीरात् २१५ वर्षे स्वर्ग। शकडालमत्री पिता माता लाछलदे तत्सुतः, गृहस्थे वर्ष ४५, व्रतवर्ष २४, युगप्रधान वर्ष ४५, सर्वायु वर्ष पूर्व ४, सयम १, प्रथमसस्थान २,

प्रथमसंघयणादिविच्छेदः। भगीनी ७–

जक्खा य जक्खदिन्ना भूया तह चेव भूयदिन्ना य।
सेणा वेणा रेणा भयणीओ थूलभद्दस्स ॥१॥

पाठतः १४ पूर्वधरः, अर्थतः १०। श्रुतकेवली। सूक्ष्मध्यान येन १४ पूर्वाणि परावर्त्तनशक्तिः स्यात्, महाप्राणध्यानं येन १४ चतुर्दशान्यपि पूर्वाणि घटिकाद्वयेन गणयति, ते अपि द्वे व्यवच्छिन्ने। श्रीस्थूलिभद्रे पूर्वे व्याख्यानं च (?) चतुरशीतिचतुर्विंशतिका यावद्यस्य नाम ज्ञास्यते जगत्त्रयमध्ये। श्रीवीरात् २२० वर्षे बौद्धाः। श्रीवीरात् २७८ वर्षे मोरिअराज। १०८ वर्षाणि स्थूल०।

१० श्रीमहागिरिसूरि–श्रीवीरात् २९१ वर्षे स्वर्ग। गृहस्थे वर्ष ३०, व्रतवर्ष ४०, युगप्रधानवर्ष ३०, सर्वायु वर्ष १००। थविरावल्या श्रीमहागिरिसूरि-श्रीसुहस्तिसूरी द्वौ शिष्यौ बहुलसदृशवयौ। शिष्याः श्रीउमास्वातिपादास्तत्कृतास्तत्त्वार्थादयः संति। तच्छिष्यः श्रीवीरात् ३२० वर्षे कालिकाचार्यो द्वितीय नाम श्यामाचार्यः,श्रीप्रज्ञापना उद्धारिता यैः। श्रीआर्यमहागिरिणा गतोऽपि श्रीजिनकल्पः समाचीर्णः। एतलड जिनकल्पाभ्यासी। श्रीमहागिरिसूरिनै पाटैं इग्यारमैं पाटि–

११ श्रीआर्यसुहस्तिसूरि–श्रीवीरात् ३३५ वर्षे स्वर्गः। गृहस्थे वर्ष ३०, व्रतवर्ष ३२, युगप्रधानवर्ष ३८, सर्वायु वर्ष १००। सम्प्रतिराजाप्रतिबोधकः। अत्र सम्प्रतिराजासंबंधः–श्रीवीरात्.....वर्षे उज्जयिन्या सम्प्रतिराजा। सवाकोडि जिनप्रतिमा कारिता, सवालाख जैनप्रासादाः कारिता'।९५ पित्तलमयप्रतिमाः कारिताः। सिंधुदेशमध्ये सोरठग्रामेऽद्यापि संति। ७०० दानशाला। येन धर्मप्रवृत्त्यर्थं स्वकीय वा साधुसमाचारिं शिष्य(क्ष)यित्वा साधुवेषेण प्रथम प्रेषिताः पश्चात् साधवः प्रेषिताः। ३६ हजारजीर्णोद्धारा'। बहुविस्तरेण तीर्थरथयात्राश्च इति सम्प्रतिराजान्वयस्वरूपम्। श्रीवीरात् ३०० वर्षे साचौरे जिनभुवन जातं। श्रीवीरात् ३११वर्षे तुरकेन न चालितम्। श्रीआर्यसुहस्तिसूरिनै पाटै–

१२ श्रीआर्यसुस्थितसूरि–गृहस्थे वर्ष ३०, व्रतवर्ष २४, युगप्रधानवर्ष ४६, सर्वायु वर्ष १००। कोटिक गणस्थापना।

१३ इंद्रदिन्नसूरि–गृहस्थे वर्ष ३०, व्रतवर्ष ३२, युगप्रधानवर्ष ४६। श्रीवीरात् ४५३ वर्षे भृगुकच्छे महानगरे श्रीखपुटाचार्य वृद्धवादी पादलिप्तश्च। श्रीप्रभावकचरित्रे त्वेवम्। श्रीवीरात् ४६९ वर्षे श्रीआर्यमगुनामाचार्य। श्रीवीरात् ४७०वर्षे श्रीविक्रमादित्यराजाराज्यम्। श्रीवृद्धवादी आचार्यः। तत्पट्टे श्रीसिद्धसेनदिवाकरः, येन उज्जयिन्या श्मशाने महाकालप्रासादे महादेवलिंगस्फोटन कृत्वा स्तुत्वा श्रीपार्श्वनाथबिंब प्रगटीकृत। श्रीवीरात् ४८४ आचार्यपद सिद्धसेननैं। विक्रमादित्यराज्यानंतरे त्रयोदशवर्षे संवत्सरोत्पत्तिः। श्रीइंद्रदिन्नैं पाटि–

१४ श्रीदिन्नसूरि।

१५ श्रीसीहगिरिसूरि।

१६ श्रीवइरस्वामी–श्रीवीरात् ४९६ वर्षे जन्म, सावत्तीनगर्या धनगिरि पिता, सुनंदा माता, श्रीवज्रस्वामिनो जन्म। नभोगमनविद्याकृतसंघरक्षा वज्रशाखोत्पत्तिमूल बालो जातिस्मृतिधरः।

मोहेन मातुः किल वीरनाथो
ऽप्यस्थाद्गृहस्थाश्रम एव तावत्।
बालोऽप्यहो वज्रकुमार एष
मोह जगद्द्रोहकर विजिग्ये ॥१॥

वइराचार्यः दशपूर्वधरः। श्रीवीरात् ५८४ वर्षे श्रीवयरस्वामिस्वर्गः। अर्द्धकीलिकासहननव्यवच्छेदः। श्रीवीरात् ५३३ वर्षे श्रीभद्रगुप्ताचार्यः श्रीआर्यरक्षितसूरिणा निर्यामितः। श्रीवीरात् ५७० वर्षे जावडकृतोद्धारः। श्रीवीरात् ५९५ मंत्रिवाहडचैत्ये शंकुप्रतिष्ठा कृता कोरटकनगरे। श्रीवीरात् ५९५ वर्षे समवी (?) श्रीआर्यरक्षित स्वर्ग'। गृहस्थे वर्ष ८, व्रतवर्ष ४०,-युगप्रधानवर्ष १३, सर्वायु वर्ष ६१। श्रीवीरात् ६०५वर्षे शाकराज्यम्। श्रीवीरात् ६०९ दिगबर हुआ। श्रीवीरात् ६१६ वर्षे दुर्बलि-

कापुष्यमित्राचार्य। श्रीवीरात् ५८५ वर्षे हरिभद्रसूरि याकिनीमाता। श्रीवइरस्वामिनै पाटिइ–

१७ श्रीवज्रसेनसूरि–श्रीवीरात् ६२० वर्षे स्वर्गः। गृहस्थे वर्ष ९, व्रतवर्ष २८, युगप्रधाने वर्ष १९, सर्वायु वर्ष ५६। सोपारके ईश्वरी श्रेष्ठीनी, पुत्र ४, चंद्र १, नागेंद्र २, निर्वृति ३, विद्याधर ४। चतु'कुलसमुत्पत्तिः।

१८ श्रीचंद्रसूरि–इतो चंद्रकुल वैरीशाखा।

१९ श्रीसामंतसूरि–श्रीवीरात् ६७० वर्षे स्वर्गः।

२० श्रीवृद्धदेवसूरि–श्रीवीरात् ६९५ वर्षे ८४ शिष्यनैं वटतलै आचार्यपद दीधो, तिहाथी वडगच्छानें वैसणा थया, पछै जे जिहा रह्या ते तेहा गामनै नामे कहिवराणा। तिहाथी ८४ गच्छ थया।

२१ श्रीप्रद्योतनसूरि।

२२ श्रीमानदेवसूरि–नड्डुलपुरस्थ शाकिनीभय श्राद्धाभ्यर्थनया शांतिस्तव ,मारि हृतवान्। प्रभावकचरित्रे पूर्वं मानतुङ्गचरित्रमुक्त पश्चादेवसूरिशिष्यश्रीप्रद्योतनसूरितच्छिष्यश्रीमानदेवसूरिप्रबन्धोऽस्ति। श्रीवीरात् ८६४ वर्षे श्रीमल्लवादिसूरिणा बौद्धाः पराजिता'। श्रीमानदेवसूरिनैं पाटिइ–

२३ श्रीमानतुंगसूरि–भक्तामरकर्त्ता, भक्तिभरअमरेति स्तवादि कर्त्ता, वृद्धभोजराज्यावसरे।

२४ श्रीवीराचार्य–श्रीवीरात् ८०२ वर्षे स्वर्गः। गृहस्थे वर्ष. नागपुरे नेमिभवनप्रतिष्ठा०।

२५ श्रीजयदेवसूरि–विक्रमात् ३५० वर्षे–वीरात् '८२० चतुर्दशी चतुर्मासीति तत्त्वम्।

२६ श्रीदेवाणंदसूरि–श्रीवीरात् ८४५ वर्षे–विक्रमात् ३७५ वर्षे अत्र वल्लभीनगरभंग। क्वचिदेव वीरात् ९०४ गंधर्वादिवेतालोपद्रवे श्रीशांतिसूरिणा वल्लभीभंगे श्रीसंघरक्षा कृता। श्रीवीरात् ८८२ वर्षे–विक्रमात् ४१२ वर्षे चैत्यस्थिति'।

२७ श्रीविक्रमसूरि–श्रीवीरात् ९६२ वर्षे बीजो हरिभद्रसूरि हुओ। वीरात् ९९३ वर्षे कालिकाचार्य हुओ त्रीजौ। चतुर्थीइ पर्युषणा कर्त्ता। श्रीवीरात् १००० सत्यमित्रे १० पूर्वाणि सर्वथा व्यवच्छेद। श्रीवीरात् १००८ वर्षे पोसाली मडाणी।

२८ श्रीनरसिंहसूरि–श्रीवीरात् १०५५ वर्षे।

२९ श्रीसमुद्रसूरि–विक्रमात् ३९४ वर्षे अर्बुदगिरिकारितप्रौढचैत्य०।

३० श्रीमानदेवसूरि–श्रीवीरात् १११५ वर्षे–विक्रमात् ६४५ वर्षे जिनभद्रगणियुगप्रधान.।

३१ श्रीविबुधप्रभसूरि–श्रीवीरात् ११९० वर्षे श्रीउमास्वाति युगप्रधान। श्रावकप्रज्ञप्त्यादेर्हरिभद्रसूरिणा वृत्तिकरणा[द्]यमन्य उमास्वाति'। तथा श्रीमल्लवादिसूरिणा सम्मतिवृत्तौ ..। श्रीवीरात् १२७० वर्षे–विक्रमात् ८०० वर्षे भाद्रपदसुदि ३ दिने बप्पभट्टिगुरोर्जन्म, विक्रमात् ८९५ वर्षे भाद्रवा शुदि ५ स्वर्ग। श्रीवीरात् १२७२ वर्षे पत्तनस्थापना वनराज चाहुडेन, विक्रमात् ८०२ वर्षे पत्तनवासो जात.।

३२ श्रीजयानंदसूरि।

३३ श्रीरविप्रभसूरि–नाडूले नेमिचैत्यप्रतिष्ठा।

३४ श्रीयशोदेवसूरि–वीरात् १४९१ वर्षे तक्षशिलाया गाजणेति नाम जातम्। विक्रमात् १००८ वर्षे पौषधशालास्थिति।

३५ श्रीप्रद्युम्नसूरि।

३६ श्रीमानदेवसूरि–उपधानविध्युद्धारक।

३७ श्रीविमलचंद्रसूरि–श्रीवीरात् १५६६ वर्षे उत्तराध्ययनवृत्तिकृता. । वीरात् १६०० वर्षे–विक्रमात् ११३ (? ११३०) वर्षे नागेंद्रगच्छे श्रीदेवेंद्रसूरिरभवत्, येनैकरात्रिमध्ये व्यंतरै' कृत्वा सेरीसके श्रीपार्श्वचैत्य कारितम्। अत्र मुनिचंद्रसूरिरभूत्। वीरात् १६२९ पूनमीया, १६७४ खरतरगच्छस्थापना।

३८ श्रीउद्योतनसूरि–वीरात् १६०८ वर्षे–विक्रमात् १२१ (? ११३८)

३९ श्री सर्वदेवसूरि–वीरात् १४८० वर्षे रायसेण प्रतिष्ठा।

४० श्री रूपदेवसूरि–अर्बुदाधिपप्रतिबोधकः।

४१ श्री सर्वदेवसूरि।

४२ श्री यशोभद्रसूरि।

४३ श्री नेमिचंद्रसूरि।

४४ श्री मुनिचंद्रसूरि—उपाध्यायशिष्यः, अविकृताहारी नागोरीतपा।

४५ श्री वादिदेवसूरि—वीरात् १६४४ वर्षे—विक्रमात् ११७४ वर्षे, ८४ वाद जेता, ३५००० श्रावक गृह प्रतिबोध्या।

४६ श्री पद्मप्रभसूरि—भुवनदीपक ग्रंथ कर्त्ता।

४७ श्री प्रसन्नचंद्रसूरि—विक्रमात् ११७४ वर्षे, इतो नागपुरीयतपाशाखा जाता। ते किम इहांथी नागपुरीतपाविरुद, तिवार पछी तिहा १२ वरसी दुकाल पड्यौ, तेणे सघलौ आचार प्रवर्त्त्यो, सिद्धात सर्व ओरडा माहि घालीने राख्या, कोइ वांचे नहिं। सवत् १५० (?)वरस लगै कोई आचार्य हुओ नहीं, पछै ते सघलौ आचार देखी श्रीजयसेषरसूरि गुरुनैं पूछी ओरडा उघाड्या, सिद्धात वान्या, पछै क्रिया करवा उपरि मन थयौ, पछै नागोर आवी तप किरिया कीधी, तिहा थकि लोकमाहि नागोरी तपा विरुद।

४८ गुणसमुद्रसूरि।

४९ जयशेखर—१३०१ वर्षे थया। १२ गोत्र प्रतिबोध्या।

५० श्री वज्रसेनसूरि—१३४२ वर्षे आचार्य पद। लोढा गोत्रीय, गूजरदेसे १००० हजार घर प्रतिबोध्या।

५१ श्री हेमतिलकसूरि—१३९९ वर्षे पेरोजसाहेन परिधापितः दिल्ल्या। लोढा.......।

५२ श्री रत्नशेखरसूरि—पेरोजसाह पातिसाह प्रतिबोधक।

५३ श्री हेमचद्राचार्य।

५४ श्री पूर्णचद्रसूरि—हींगडगोत्रीय १४२४ वर्षे

५५ श्री हेमहंससूरि—१४५३ वर्षे पढेलवाल ज्ञातीय।

५६ श्रीलक्ष्मीनिवास पंण्यांस—सवत् १४५३ वर्षे हुआ।

५७ श्री पुण्यरतन पंण्यां[स]—सर्वविद्याविशारद स० १४९९ वर्षे।

५८ श्री साधुरतन पण्यांस।

५९ तत्शिष्य श्री पार्श्वचंद्रसूरि—भट्टारक पद प्राप्त हुआ। सलपणपुरमध्ये विजैदेवसूरि सूरिमंत्र ल्याया दक्षिणथी। अर्बुदाचलपार्श्वे हमीरपुरनगरे प्राग्वशे सा० वेलाभार्या विमलादे तत्सुत पासाभिधान, सवत् १५३७ जन्म, १५४७ दीक्षा साधुरत्न गुरुपार्श्वे, श्रीसेत्रुंजययात्रा गया हुता सवत् १५५४ उपाध्याय पद, सवत् १५६५ क्रियाउद्धार, सिद्धांतोक्त क्रिया, पाचम सवत्सरी, चतुर्मासी १५, देवदेवीना काउसग मिथ्यात्वक्रिया उत्थापक, विधिवादादि ११ बोल प्रगटकरण, आचाराग १ सूयडाग २ प्रश्नव्याकरण ३ ठाणाग ४ तदुलवेयालीपइन्नादि ५ एहना बालावबोध कीधा, श्रीभगवतीसूत्रना टवाग्रथ ५०००० हजार कठिनना कीधा, श्री षेत्रसमासना टवा कीधा, सघयणीना टवा, नवतत्त्वना बालावबोध, चोसरणबालावबोध, आवश्यकना टवा, आराधना वडी गाथा ७०० प्रमाण कीधी, जबूदीपपन्नत्ती वृत्ति १६ हजार शुद्ध कर्त्ता। योधपुरे राठोडवशे रायमालदे प्रतिबोधक, शुद्धप्ररूपक, कडुकमती प्रतिबोधक, वचनसिद्धि। सवत् १६१२ मागशिर सुदि ३ दिने अणसणसहितेन निर्वाण प्राप्त श्रीयोधपुरमध्ये।

तच्छिष्य श्री विजयदेवसूरि—वस शाषा.. ..... रुणनगरे उसवसे सा० चाहड भार्या चापलदे तत्सुत वरदराज, नववर्षे दीक्षा, दक्षिणदेशात् सवालाख चिंतामणि त्रिभिर्वर्षे. पठित्वा विद्यापुरे राजसभाया वाद जीता, दिन १५ यावत्। तत्र आचार्यपद प्राप्त। श्री विजयदेवसूरि नामस्थापना कृता। पासचद्रसूरि छता देवगत हुआ।

६० श्री समरचंद्रसूरि—अणहिल्लपत्तने श्रीश्रीमालीज्ञातीय दोसी भीमा वाल्हादे तत्सुत। सवत् १५८२ जन्म, सवत् १५९५ दीक्षा, आबालब्रह्मचारी, महासिद्धांती, बहुरागागी(?) संवत् १५९९ उपाध्याय पद, सं० १६०५ आचार्यपद, स० १६२६ वर्षे वैशाख वदि १ दिने

निर्वाण प्राप्तः।

६१ **श्री रायचद्रसूरि**–श्रीजालूग्रामे श्रीश्रीमाली-ज्ञातीय दोसी जावड भार्या कमलादे तत्सुत राजकुमार। स० १६२६ दीक्षा।

६२ **श्री विमलचद्रसूरि**–५वर्ष पर्यंत आचार्यपद।

६३ **श्री जयचद्रसूरि**–श्रीबीकानेर वास्तव्य ओ-सवालज्ञातौ राकागोत्रे....।

६४ **श्री पद्मचद्रसूरि**–राजनगर वास्तव्य, श्री-श्रीमालीज्ञातीय सघवी शिवजीसुत, स० १६८८ वर्षे श्री जयचद्रसूरि पार्श्वे दीक्षा, सवत् १७४४ वर्षे आसोज वदी ११ वीरमगाम मध्ये स्वर्ग पधार्या। श्री पद्मचद्रसूरिनें पाटे–

६५ **श्री मुनिचद्रसूरि**–ओसवसे सोनी गोत्रे रोहीठना वासी सा० धना भार्या धारलदेनाम मनोहर। सवत् १७२२ आचार्यपद स्वमतीर्थमध्ये, स० १७४४ भट्टारक पद श्री विक्रमपुरे, स० १७५० आसोज वदि १० दिने दिवगत थया वीरमगाममा।

६६ तत्पट्टे **श्री नेमिचद्रसूरि** थया–ओसवसे नाहरगोत्रे सा० भारमल्ल भार्या भगतादे पुत्र नाम नेतसी। स० १७५० भट्टारक पद थयो वीरमगाम मध्ये।

॥ इति शम् ॥

बृहद्गच्छ गुर्वावली।

[इय गुर्वावली अर्धसस्कृत–अर्धदेश्यभाषामिश्रितकल्पान्तर्वाच्यग्रन्थस्यान्ते अस्तव्यस्तस्वरूपा अपभ्रष्टभाषामयी यादृशी लिखिता लब्धा तादृशी अत्र प्रकटी क्रियते–सम्पादकः।]

श्रीमहावीरे निर्वृते, तत' केवलिषु, श्रुतकेवलिषु, दश-पूर्वधरेषु, युगप्रधानेषु एकादशागवेदिषु समतिक्रान्तेषु दुर्भिक्षात् सुविहितपक्षे समुच्छिन्ने, वाराणसीपरतो गगातट-वास्तव्या अरण्यका' श्रीसमतभद्रसूरयो वृद्धाः सिद्धिक्षेत्रे कालकरणाय चलिता'। तैर्मार्गे कोरण्टाग्रामे चेइहर–चैत्य निवासिपडितदेवचन्द्रो अतीव विद्वान् सविग्न उत्त गिको निजोपसपदानुग्राह्य स्वे पदे स्थापित'। स वृद्धदे-वसूरि'। तत्र नाहडामात्येन देवकुल कारितम्। श्रीऋष-भदेवबिम्ब प्रतिष्ठित वै, स० १२५ विक्रमार्कात्। तथा मेदपाटदेशे आघाटनगरे नाहडराजान प्रतिभा[ति]शयेन प्रतिबोध्य तत्र नाहडवसही देवकुल प्रतिष्ठित स०१५०।

ततउ(प्र?)द्योतनसूरि। तैः परिवार पचशत शाकभरी सरक सघकृते नड्डलस्थै' शान्तिस्तवः कृत'। पद्मावती १ जया२ विजया३ अपराजिताख्या४ देव्यो नित्य वन्दन्ति। तेषा सत्का प्रतिष्ठा रामसयने श्रीऋषभदेवचैत्ये महावी-रस्य स० २२२।

ततो देवेन्द्रसूरि।

ततो मालवेश्वर चौलुक्य वयरसिंह देवामात्यो मान-तुगसूरि। भक्तामर–भयहर स्तोत्रकर्त्ता।

यो वैधर्मिकलोकभूपतिपुरस्तुत्रोट जैनस्तवात्,
सर्वं शृखललोहबन्धनमय सघप्रभावोद्यतः।
यस्यादेशविधायिनी समभवत् देव्यम्बिका सर्वदा,
पायाद् वः स सदा सुनिर्मलगुणः श्रीमानतुगप्रभुः॥

१ नवसय चउणउएहिं ९९४ वडगच्छो मंडियले विक्खाओ। आबू सिहरे' ठविओ सामंतभद्देहिं ॥१॥

२३ ततो वीरसूरि–नागपुरे नेमिनाथः प्रतिष्ठितः संवत् ३४०।

२६ ततो जयदेवसूरि।

२७ ततो देवाणदसूरि।

२८ ततो विक्रमसूरि।

२६ ततो नरसिंहसूरि–यैः मेदपाटे नरसिंहपुरे मिथ्यादृष्टि नारसिंहयक्षो बलात्कारेण मांसमद्यादिविषये उपशमितः।

२७ ततः समुद्रसूरि–यैर्नागद्रहे श्रीपार्श्वनाथतीर्थे दिगम्बरानुच्छिद्य श्वेताम्बरायत्त कृतम्। पुनरपि गगनकीर्तिना दिगम्बरेण पद्मावतीप्रसादात् अद्धोऽर्द्धीकृत स० ५८२ वर्षे।

२८ ततो श्रीमानदेवसूरि–विद्यागुरुभ्राताश्रीहरिभद्रसूरिसहितैः सूरिमंत्रो विस्मृतः। ततः षोडशतमे उपवासे रैवतके अम्बादेव्या श्रीसीमधरस्वामिपार्श्वात् मन्त्र आनीतः। तैर्देवपत्तने अनरशिरनामा जटिलो वैशेषिकः वादेन निर्जितः।

२८ ततो विबुधप्रभसूरि।

३ ततो जयानदसूरि।

३१ ततो रविप्रभसूरि–यैर्नड्डूले नेमिनाथस्य प्रतिष्ठा कृता। सं० ७१०।

३२ ततो यशोदेवसूरि।

३४ ततो विमलचन्द्रसूरि–यैः स्वर्णसिद्धिलब्धिधरैः अनेकशासकाणा उपकार कृत्वा देवकुलानि कारितानि। चित्रकूटे देवगृह २४ प्रतिष्ठा। ८२० गोपगिरौ राज्ञा रञ्जितेन एकलवङ्ग बिरुद दत्तम्। वादनिर्जि- नैर्घटिका त्रोटयित्वा व्यापादितः।

-परिवारव्रती ३००, नादिया ले लउकडिया वटाधो जा- धात् सर्वशास्त्रसिद्धान्तपार- नामान परिवार नीतैः (?)स० सरे आचार्यपदस्थापना कृता।

सर्वदेवसूरि प्रथम प्राग्वाटः, वडगच्छ इतिख्यातोऽभवदवनौ, यस्मात् श्रीबृहद्गच्छ एष तस्मादात्मद्वितीया चडावल्या समायाता। तत्र कुकुणाभिधानामात्येन स्वज्ञातिपक्षपातेन अद्भुतषट्त्रिंशत्सूरिगुणरञ्जितेन सम्यक्त्व गृहीत देवकुल च कारित कुकुणावसही। कुंकुण भाग्नेयो नेऊया गच्छे आमदेवसूरिस्तस्यायत्तं कृतं आमदेवायरिय इति प्रसिद्धः। तस्मिन् देवकुले एकस्मिन् लग्ने कृताः शिष्या ८४। कुकुणेन प्रव्रज्या ग्रहिता। अतो बृहद्गच्छ इति प्रसिद्धः। तेभ्यः क्रमेण ८४ शाखा जाताः। साचोरा १ झेरडिया २ आनापुरा ३ गूंदाउआ ४ ओढविआ ५ डेकाउआ ६ घोषवाडा ७ सावडउला ८ महुडासिया ९ भयरुच्छा १० दासरुया ११ जीरावला १२ मगउडिया १३ ब्रह्माणिया १४ मड्डाहडा १५ पिप्पलिया १६ तपा १७ भीनमाला १८ जालउरा १९ रामसेणा २० वोकडिया २१ चित्तउडा २२ गंगेसरा २३ कूचडिया २४ सिद्धान्ती २५ इत्यादि शाखा बृहद्गच्छे ख्याताः। तैः सर्वदेवसूरिभिः रामसैन्ये प्रतिष्ठितश्चन्द्रप्रभस्वामी सं० १०१० वर्षे। तैरेव नड्डूले स्थापिताः सूरयः ४ प्रथम देवसूरि १, धर्मसूरि २, पद्मसूरि ३, उद्योतनसूरि ४।

३६ श्रीउद्योतनसूरिणा अर्बुदगिरिसमीपे अष्ट सूरयः स्थापिताः।

३८ श्रीरूपदेवसूरि।

पुन श्रीसर्वदेवसूरि।

३८ यशोभद्रसूरि।

४२ श्रीमुनिचन्द्रसूरि। स च नेमिचन्द्रसूरिगुरुबान्धवश्रीविनयचन्द्रोपाध्यायशिष्यः।

गुरुबन्धुविनयचन्द्राध्यापकशिष्यं स नेमिचन्द्रगुरुः।
यं गणनाथमकार्षीत् स जयतु मुनिचन्द्रसूरिगुरुः॥

आरनालपरिवर्जितनीर
सर्वथापि सकला विकृतीश्च।
यो ऽत्यजत् स मुनिचन्द्रमुनीन्द्रः
कस्य कस्य न बुधस्य नमस्यः॥२॥

द्वादशवर्षानन्तर यावज्जीवं आचाम्लतपः कर्त्ता।

टेलियगामम्मि अब्बुओ हेट्ठे।
वडगच्छो सधुओ पुव्विं॥१॥

१५ ततो वादि श्रीदेवसूरि-स० ११७४ वर्षे स्थापितः, तद्बन्धु श्रीविमलचन्द्रोपाध्याय, २४ सूरि माणिक्यादयः शिष्याः। यैर्वादिदेवसूरिभिः ८४ वादा जिताः। अन्यदा कुमुदचन्द्रो दिगम्बर ईदृश्या ऋद्ध्या सह अणहिल्लपुरपत्तने समायातः।

कुमुदचन्द्र दक्षिणि पयड छ दरसण सतावइ।
अणहिल्लपुर सपत्त पडह मुल्लह बजावइ।
बभण भट्ट बहुत्त सब्ब सक्सह खड्ड घल्लइ।
कोइ न तासु समत्थ जासु सम्मुहउ जु बुल्लइ।
निरखत सयल गुज्जर धरणि देवसूरि ज वसि पडयउ।
बुल्लायउ बुल्ल न उचरइ जिम मक्कड डालह चडयउ॥
चारि जोड नीसाण हयह सय पच पच्यासी,
इग्गारह सय सुहड सीस सय दुन्नि छियासी।
वलदह सह तिचियारि कम्मकर पच छिहत्तरि,
अत्थ लेख पणवीस दम्म दुइ लक्ख बहुत्तरि।
तह छत्त चमर टोडर विरुद सुक्खासण वाहण लियउ।
वडगच्छतिलय पहु देवसूरि नग्गउ वलि नग्गउ कियउ॥

एवविध त वीक्ष्य वादिदेवसूरेर्भगिनी महासती वाहडदे मत्रीश्वरु जाहडसाहादिभिर्गुरव विज्ञप्ता -स्वामिन् अय दिगम्बर भवत्सु सत्सु जैनमुनीनामपि एव कदर्थना करोति। गुरुभिस्तु कथचिद्वादार्थमाहूतो दिगम्बर'। वाहड-जाहडाभ्या कुमुदचन्द्रस्याग्रे इत्युक्त-यदि अस्मद्गुरुर्हारयति तदा चारि जोडनिसाणादिक तव वस्तु नियते तावद्द्विगुण वस्तु आवा दद्व, यदि त्व हारयसि तदा तव वस्तु आवा गृण्हीमस्त्व चास्मद्गुरूणा शिष्यो भवेति प्रतिज्ञा कृत्वा राजसभासमक्ष द्वौ विवाद कुरुत। षण्मासा गता.। तदा सूरिभि सरस्वती साधिता, तयोक्तम्-कुमुदचन्द्रपार्श्वे मद्दत्ता गुटिका वर्त्तते, यावत् सा मुखे तस्यास्ति तावद्वैरप्यनेयस्तथाइरु यथा मुखप्रक्षालनक्षणे स शिष्य पार्श्वात् गुटिका मुखात् ग्राह्येति कथयित्वा देवी स्थान प्राप्ता। प्रभाते तथैव कृते स जित।

यदि नाम कुमुदचन्द्र न जिग्ये देवसूरिरहिमरुचिः।
कटिपरिधानमधास्यत् कतम श्वेताम्बरो जगति॥१॥
वस्त्रप्रतिष्ठाचार्याय नमः श्रीदेवसूरये।
यत्प्रसादमिवाख्याति सुखप्रश्नेषु दर्शनम्॥२॥

तदा प्रभृति भगिनीकृतसयमपालनादिधर्मकृत्यापहारात् श्रीदेवसूरिभिर्बृहद्गच्छे महासत्यो निषिद्धाः।

तत्पट्टे विमलचन्द्रोपाध्यायः-ततः प्रभृति उपाध्यायपदवी च निषिद्धा।

४८ तत्पट्टे मानदेवसूरि।

४९ तदनु हरिभद्रसूरि।

तत्पट्टे पूर्णप्रभसूरि।

५० तत्पट्टे नेमिचन्द्रसूरि।

५१ तत्पट्टे नयचन्द्रसूरि।

५२ तत्पट्टे मुनिरत्नसूरि।

५३ तत्पट्टे श्रीमुनिशेखरसूरि।

येषा युगप्रधानाना अद्यापि कायोत्सर्गो विधीयते।
यैः पूज्यैर्भट्टीद्रङ्गस्थैर्व्याख्यानावसरे मुदा।
श्रीशत्रुञ्जयगिरेरग्निर्हस्ताभ्यामुपशामितः॥१॥

५४ तत्पट्टे श्रीतिलकसूरि।

तत्पट्टे श्रीभद्रेश्वरसूरि दूगड गोत्री। अत्राचार्य पदस्थापना पूर्वं भट्टारका एव आसन्।

तत्पट्टे मुनीश्वरसूरि-लोढावशशृङ्गार, येषा मस्तकमणिरद्यापि देहुरासर अवसरे पूज्यते वरैः। पेरोजसाह सुलतानेन वादिगजाङ्कुशो बिरुदो दत्त[१]।

---

१ बभ न वेदु धरहि छद छद न उट्टिहि,
दरशन मडि न सक्कह भट्ट वहत्ति न राघट्टहि।
अचल आगमि तपिय सहय दिगबर डबर
थक्कइ ते विहरंत लोयसुदर सेयम्बर॥
इम निरवि सयल गुज्जरधरह सिधु सवालख आइयउ।
वादीन्द्रगच्छ मुनिस्सरह सूरिहिं धनु मनावियउ॥१॥
अग्गइ वादि देवसूरि पुहविहि परसिद्धउ,
कुमुदचद निज्जिणवि सुयसु महिमडलि लिद्धउ।
तिम भोजपुरह मझारि राय नायदे विदित्तउ।
अद्धति वादि ज्ञानसागरु जिण हेला जित्तउ।
जिणि कृष्णभट्ट हारावियउ खिमघरु जपइ उज्झकरु।
वडगच्छ मुनीश्वरसूरि गुरु कोडिजुग जयवन्तु चिरु॥२॥

तत्पट्टे रत्नप्रभसूरि।

तत्पट्टे महेन्द्रसूरि।

तदनु मुनिनिधानसूरि—यैर्वाणारस्या सर्वे पण्डिता वादार्थं समायाता दण्डकफेरणेन मुखस्थंभनं कृत्वा जिताः।

तत्पट्टे मेरुप्रभसूरि।

तत्पट्टे राजरत्नसूरि।

तत्पट्टे मुनिदेवसूरि।

तत्पट्टे रत्नशेखरसूरि।

तत्पट्टे पुण्यप्रभसूरयः।

तत्पट्टे सयमरत्नसूरि—येषा १५६९वर्षे पदस्थापना।

तत्पट्टे पिराइया गोत्रे लक्ष्मणागजा लक्ष्मीकुक्षिभवाः, कलिकाल वर्त्तमान शास्त्राधार वृहद्गच्छाब्धिकुमुदबान्धवतुल्याः, यशःपूताष्टककुभः श्रीभावदेवसूरिसूरीन्द्राः। तेषा गुणवर्णना एकजिह्वया कथ कर्त्तु शक्यते। विद्यमानगणधारकाः सप्रति वर्त्तमानाश्चिर जयन्तु। येषा पदस्थापना १६०४ वर्षे।

[कल्पान्तर्वाच्यप्रशस्तिः ।]

श्रीदेवसूरिसन्ताने सर्वशास्त्रविशारदाः।
श्रीपुण्यप्रभसूरीन्द्रा यशोमण्डितभूतलाः ॥१॥
तत्पादपद्ममधुपाः विज्ञाः श्रीमानदेवसूरीशाः।
श्रीकालिकाचरित पुनः कृतं यैः स्वगीःपूर्त्यैं ॥२॥

तत् शिष्यो हि युगैकपट्कहिमगौवर्षेषु शास्त्रान्तराद्
विज्ञायाथ गुरूपदेशवचनैः किञ्चिच्च किंचित् स्वतः।
अन्तर्वाच्यरहस्यमेतल्लिख.........मल्लदेवो मुनिः
गींतार्थैः सुविचार्य सारममलं ग्रन्थो विशोध्यो ह्ययम् ॥

ग्रन्थाग्रं०७६५०। सवत् १६२० वर्षे, शाके १४८५ कार्त्तिक सुदि ८ दिने रविदिने श्रवणनक्षत्रे सिद्धिनामयोगे श्रीसरस्वतीपत्तने पातसाह अकब्बर विजयराज्ये श्रीबृहद्गच्छे भट्टारकश्री ६ पुण्यप्रभसूरि तत्पट्टेभ० श्री ७ मानदेवसूरि तत्शिष्य पं० पुण्यरत्न लिखितम्।

(बीकानेरराजकीयग्रन्थसग्रहस्थितकल्पान्तर्वाच्यग्रन्थाद् इयं गुर्वावली समुद्धताऽस्ति)

---

१ येषां मुनीश्वरसूरीणा १३८८ माघ सुदि दशम्या पल्हवणगोत्रे सा० गुणधर भावदे वघेलइ नदिकारित्ते पदस्थापना।

२ येषां रत्नप्रभुसूरीणा १४५५ वर्षे चैत्र सुदि त्रयोदश्या सरस्वती पत्तने पदस्थापना।

वृहद्गच्छीय शाखान्तरसत्का अन्या गुर्वावली

गुर्वावली वर्णवियइ–

पूर्विहिं आरण्यक गच्छु, किसी परइ–

यः पूर्वं पूर्वदेशेऽभवदुदितगुणग्रामकोऽरण्यवासी
सूरि सामन्तभद्रान्वयजलधिशशी सर्वदेवो मुनीन्द्रः।
ज्ञानात्तेनार्बुदाद्रौ वटविटपितले स्थापितो वृद्धगच्छो
वादीन्द्रैदेवसूरिप्रभृतिगुरुशतैर्भूषितो व पुनातु ॥१॥

श्रीसामन्तभद्रसूरिश्वर युगप्रधानु, समस्त सूरिवर माहि प्रधानु, अनइ धर्म तणउ निधानु। पाचमइ तपोधन तणइ परिवारि परिकलितु पूर्वदेशि आरण्यकवासी हुवउ। तिहनइ क्रमि श्रीसर्वदेवसूरि। तिहुसइ तपोधन तणइ परिवार परिकलितु अर्बुदाचल यात्रानइ विपइ गमनु करइ। तिणि श्रीसर्वदेवसूरिइ टेलीतणी पाजइ वट वृक्षु सविस्तारु दीठउ। तिहतणी छाया वइसीयनइ इसउ मनमाहि विचारइ। किमइ मुहूर्तिं इहनउ वीजु भूमिमाहि पडयउ, तेह हूतउ वटवृक्षु सत सहस्र शाखा वध्यउ। ते मुहूर्त्तु ज्योतिप वली करियनइ तेउ समउ तत्क्षणि जाणियनइ, नवमय चाणूय सवत्सरि – वटवृक्ष हेठिलइ गमइ आठ आचार्य कीधा। तेह हुतउ वडगच्छ नामु जगतीतलि विख्यात नीपनउ।

तेहनइ अनुक्रमि श्रीमुनिचन्द्रसूरि नीपनउ, जिणि पुनिवति छहइ विगय परिहरि, अनइ पाणीनउ कीधउ परिहारु। काजिक तणउ आहारु नीपजावइ। इसउ एकु श्रीमुनिचन्द्रसूरि नीपनउ।

तेह तणइ पाटि वादी श्रीदेवसूरि नीपना।

तेह तणउ पट्टालकारु श्रीवीरभद्र सूरि नीपनउ।

श्रीवीरभद्रसूरि नइ पाटि, दूगडकुल मडनु श्रीपद्मप्रभसूरि नीपना।

श्रीपद्मप्रभसूरि तणइ पाटि श्रीप्रसन्नचन्द्रसूरिवर नीपना।

श्री प्रसन्नचन्द्रसूरितणइ पाटि श्री गुणसमुद्रसूरि नीपना।

श्रीगुणसमुद्रसूरि तणइ पाटि हेमप्रभसूरि युगप्रधानु, अतिही क्लानिधानु हुवउ।

एतला सर्वे सूरिश्वर दूगडकुल उद्योतकारक हूआ।

श्रीहेमप्रभसूरि तणइ पाटि नक्षत्रकुल मडनु श्रीपूर्णभद्रसूरि, पाच लक्ष आगम सिद्धान्त तणउ जाणणहारु महासिद्धान्ती नीपना।

तेहनइ पाटि खड्ग गोत्र मडनु श्रीदेवसेनसूरि विख्यतकीर्ति नीपना।

तेहनइ पाटि श्रीपद्मप्रभसूरि सूरिवर नीपना।

श्रीपद्मप्रभसूरि तणइ पाटि श्रीअमरप्रभसूरि नीपना।

श्रीअमरप्रभसूरि तणइ पाटि श्रीसागरचन्द्रसूरि विजयवन्त प्रवर्त्तइ। तेहनइ प्रसादि श्रीसघ आगिलइ मइ कल्पाध्ययन वाच्यउ। एहु कल्प तणइ प्रसादि अनेक शुभमाला नीपजउ। अनइ जिनशासन प्रभावक शुभ भावना प्रोल्लासक इसा सुश्रावक तेहि कल्पतणी प्रभावना नीपजावियइ। पहिली प्रभावना पुण्यवन्तिहि निपजावियइ। इसीपरि सुश्रावकह तणा नाम लीजइ। एह कल्पवाचना निर्विघ्न नीपनी। एह कल्प तणा प्रसाद हुतउ, भगवत श्रीमहावीर तणा प्रसाद हुतउ, श्रीसघ रहइ उत्तरोत्तर ऋद्धि वृद्धि अभ्युदय नीपजउ। एउ अर्थु होउ। छः॥ श्री। श्री। छः॥

राजगच्छ पट्टावलि ।

सर्वो जनः सुखार्थी सुख च तद् धर्मतः स च ज्ञानात् ।
ज्ञान शास्त्राधिगमात् शास्त्राधिगमश्च सद्गुरोर्भवति ॥ १

इह हि संसारे सर्वो जनः देव-नारकिक-तिर्यङ्-मनुष्यरूपो लोकः सुखार्थी सुखाभिलाषी मवर्त्तते । पर तत् सुख धर्म्मतः, तत् सौख्य धर्म्मतः श्रीजिनोक्तजीवदयामूलपुण्याद् भवति । यत उक्तम्—

धर्मसिद्धौ ध्रुवा सिद्धिर्द्युम्न प्रद्युम्नयोरपि । दुग्धोपलम्भे सुलभा सम्पत्तिर्दधि-सर्प्पिषोः ॥ २

स च ज्ञानात्, स च धर्म्मः ज्ञानात् जीवाजीव पुण्य-पापास्रव-सवर-निर्जरा-बन्ध मोक्षलक्षणाना श्रीवीतरागोक्ताना नवतत्त्वानामवबोधाद् भवति । ज्ञान शास्त्राधिगमात् । तत् ज्ञान नवतत्त्वावबोधः शास्त्राणामधिगमाद् भणन-गुणन-अर्थ-चिन्तन व्याख्यान-श्रवणाद्यभ्यासात् सजायते । यत उक्त दशवैकालिके—

सुच्चा जाणइ कल्लाण सुच्चा जाणइ पावग । उभय पि जाणइ सुच्चा ज सेय त समायरे ॥ ३

तच्छास्त्र चतुःप्रकार यथा—

कामार्थ धर्म मोक्षाणा भेदात् शास्त्र चतुर्विधम् । कामार्थावित्त लोकाय धर्म-मोक्षौ ह्यपाय च ॥ ४

तत्र कामशास्त्राणि कोक-वात्स्यायन शुकसप्ततिकाप्रमुखाणि सासारिकविषयसुखहेतूनि ज्ञातव्यानि । अर्थशास्त्राणि व्याकरण छन्दो-ऽलङ्कार-नाटक साहित्य प्रमाणग्रन्थ-कला उपकला बुद्धिशास्त्रमुख्यानि अर्थोपार्जनादिहेतूनि ज्ञेयानि । तथा धर्मशास्त्राणि श्रीयुगादीश्वरादि-चतुर्विंशतिजिनचरित्राणि । श्रीगौतमस्वाम्यादिगणधराणा प्रबन्धाः, तथा धर्मोपदेशगुम्फित— उपदेमाला-पुष्पमाला-शीलोपदेशमाला भवभावना सम्यक्त्वसप्ततिका-कर्मग्रन्थप्रभृतिविचारग्रन्थमुख्यानि प्रकरणानि धर्म्मोपार्जनहेतूनि बोधव्यानि । मोक्षशास्त्राणि तु चतुर्दशपूर्वाणि, तथा प्रवर्तमानानि आचाराङ्ग-सूत्रकृताङ्ग-स्थानाङ्ग-समवायाङ्ग भगवतीपञ्चमाङ्ग ज्ञाताधर्मकथाङ्ग-उपासकदशाङ्ग-अन्तकृद्दशाङ्ग प्रज्ञा(?)व्याकरणाङ्ग-विपाकश्रुताङ्ग—दृष्टिवादाङ्ग इत्येकादशाङ्गानि ॥ तथा औपपातिकउपाङ्ग-राजप्रसेनोपाङ्गप्रमुखानि द्वादशोपाङ्गानि । श्रीआवश्यक-जीतकल्प-दशवैकालिक-उत्तराध्ययन-निशीथ महानिशीथ - ओघनिर्युक्ति - जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति - सूर्यप्रज्ञप्ति-निरयावलिकाश्रुत-स्कन्ध-दशाश्रुतस्कन्धमुख्यानि श्रीगौतमादिगणधरविरचितानि । प्रासङ्गिकफलस्वर्गादिदायकानि । तत्त्वतो मुख्यफल-मोक्षसाधनहेतूनि मन्तव्यानि ।

पर च — शास्त्राधिगमश्च सद्गुरोर्भवति । तत्र इहलोक-परलोकसुखहेतूना तत्त्वतो मोक्षमार्गसाधकाना धर्मशास्त्र-मोक्षशास्त्राणामधिगमो भणन-गुणन-व्याख्यान-श्रवणाभ्यास सद्गुरोः प्रजायते । ते च गुरवोऽष्टकल्पव्यवहारक्रम कृत्वा जीवयतनार्थ वर्षाचतुर्मासके एकत्र तिष्ठन्ति । यत उक्तम् —

ग्रैष्म-हैमन्तिकान् मासानष्टौ भिक्षुस्तु सचरेत् । दयार्थं सर्वभूतानां वर्षास्वेकत्र सवसेत् ॥ ५

यथा दशवैकालिकेऽप्युक्तमस्ति–

आया वयंति गिम्हेसु हेमंतेसु अवाउडा। वासासु पडिसंलीणा संजया सुसमाहिया॥ ६

तथा जीवन्यायाख्ने परसमयेऽप्युक्तम् –

पश्यन् परिहरन् जन्तून् मार्जन्या मृदुसूक्ष्मया। एकाहं विचरेद् यस्तु चान्द्रायणफलं लभेत्॥ ७

तत्र च यतीश्वरा ईदृशे वर्षाकाले विशेषतो जीवयतनां कुर्वन्ति। कीदृशो वर्षाकाल.?–

मज्जंति घणा नच्चंति सिहिगणा लवइ विज्जुला गयणं।
कल कसायकलुसं – – – – वरिसंति वारिधरा॥ ८

यद्वा – दिशा हाराकारा, शमितमदभारा अपि मुने-
रसूचीसञ्चारा कृतमदनिकारास्तशिखिनाम्।
गताध्वव्यापारास्तुहिनकणभारा विरहिणी
मन कीर्णागाराः किरति जलधारा जलधरः॥ ९

अथवा कलिकालवद् विषमे वर्षाकाले ये भव्या, साधु साध्वी श्रावक श्राविका विशेषतो जीवयतनापूर्वकं ध्यान कुर्वन्ति त एव धन्या। कीदृशो वर्षाकाल कलिकालश्च तद् यथा–

सर्वत्रोद्गतकन्दला वसुमती वृद्धिर्जडाना परा
जात नि कमलं जगत् सुमलिनैर्लब्धा घनैस्त्वति।
सर्पन्ति प्रतिमन्दिरं छिरसना मत्यक्तमार्गो जनो
वर्षाणा च कलेश्च संप्रति जयत्येकेव राज्यस्थिति॥ १०

एवंभूते दुष्षमाकाले वर्षाकाले च समागते श्रीजिनोदितधर्मं सम्यक् तदा विधीयते यदा सुश्रावकैः सुक्षेत्रे गुरवो बहुमानपूर्वकं स्थाप्यन्ते। सुक्षेत्रगुणास्तु त्रयोदश सिद्धान्तोक्ता। यथा–

चिक्खिल्ल पाण थंडिल वसही गोरस जणाउले विज्जे।
ओसह विचयाहिवई पासंडा भिक्ख सज्झाए॥ ११

एवं गुणोपेत क्षेत्रे गुरुतराग्रहेण गुरून् संस्थाप्य श्रमणोपासकैः पुस्तकारम्भमहोत्सवपुरस्सरं निरन्तरं सद्गुरूणा समीपे आलस्यादिप्रमादान् मुक्त्वा शुद्धभावेन व्याख्यानं श्रूयते। उक्तं च–

आलस्स तह निद्दा विगहाऽकरणं च खुद्दभावं च। पल्हत्थियं मुइत्ता रम्मं निसुणेइ एगमणो॥१२

तथा उत्तमा श्रोतार श्रावका सविनया सन्त अपशब्दाद्यवगुणान् मुक्त्वा व्याख्यातुर्गुरोर्गुणान् एव गृह्णन्ति। यत –

पर्यस्तिकादिपरिवर्ज्जनसावधाना ये गृह्णते गुणगणं गुरुदोषजालात्।
क्षीरं यथैव सलिलात् किल राजहंसा सभ्यास्त एव कतिचिच्च श्रुतेन लभ्या.॥ १३

अथ च अमुं धर्मशास्त्रं वाचयितुमारम्भयिष्याम, परं तस्य पूर्वऋषिप्रणीतस्य शास्त्रस्य अस्मादृशेन मन्दबुद्धिना कथं सम्यग् व्याख्या विधीयते ? । यतः–

मेरुमङ्गुलिभिर्मातु चुलुकैः पातुमम्बुधिम् । पद्भ्यां गन्तु नभः शक्त सिद्धान्ते स विचारयेत् ॥१४

पर तथापि यः कश्चिन्महाशास्त्रगुरुतराचार्यव्याख्यानमहशा सम्यक्शास्त्रव्याख्याः कर्तुं न शक्नोति सोऽस्मादृशः स्वबुद्ध्यनुसारेण किञ्चिद् व्याख्यानलवलेश किं न करोतु । यतः–

जइ जलनिहि जलभरिओ गुहिर गज्जेइ लहरिसम्पुन्नो ।
ता किं गामतलाओ जलभरिओ लहरि मा लेओ ॥ १५

जइ भमइ पक्खिराओ गरुडो पक्खेहि छन्नगयणयलो ।
ता किं इयरचिडेहिं नहगमण नेय कायव्व ॥ १६

जइ दुद्ध० । जइ भरह० । किं च तथा च एवविधा अपि मम मूर्खालापाः पञ्चभिर्जनैर्मानिताः शोभा लभन्ते । यदुक्तम्–

वद्धी प्रतिष्ठामाप्नोति पञ्चभिः स्वीकृतो नरः । उत्तमाङ्ग शिरः प्राहुः पञ्चेन्द्रियनिषेवितम् ॥ १७

यद्वा–शकुनानामतमनोल्लापा रेखामात्रा सरस्वती । पूर्ण चाभीष्टमसिद्ध्यै तथाहमपि मानितः ॥१८

अथवा–भाग्याली व्यवसायतः सुपयसो बीजाङ्कुरः सूर्यतो
नेत्रालोकनशक्तिरध्ययनतः प्रज्ञा परात्मालयात् । १९

चन्द्राच्चन्द्रदृपत्सुधा परिमलो वाताद विपश्चीस्खगाः
कोणाद् याति यथास्थितो मम गुण, सघप्रमादात तथा ॥ २०

जडोऽपि सघमानेन यद्वा शक्नोमि जरिपतुम् । अनूरुर्लङ्घते व्योम यदर्केण पुरष्कृ(स्कृ)तः ॥ २१

अथ च शास्त्रारम्भे विघ्नोपशान्तये मङ्गलाय च देवेभ्यो नमस्कारः क्रियते । यतः–

दधि-चन्दन दूर्वादि क्रियते द्रव्यमङ्गलम् । शास्त्रारम्भे पुनर्भावमङ्गल देवतास्तुतिः ॥ २२

ऋषभ अजितादीना चतुर्विंशतिजिनाना नामोच्चारेण नमस्कारः, तदनु महता गणधरादीनामाचार्याणा नामोच्चारो मङ्गलाय कर्तव्य । यत.–

सर्वत्र महतां नामोच्चाराद् भवति मङ्गलम् ।
लभते भव्यभोज्यानि शुको राम इति ब्रुवन् ॥ २३

पूर्वमादिमतीर्थङ्करस्य प्रथमगणधरश्रीपुण्डरीक नौमि । यथा–

वाग्देवताकरविभूषणपुण्डरीक दुष्टाष्टकर्मगजसूदनपुण्डरीकम् ।
विघ्नोपतापतपनातपपुण्डरीक वन्दामहे गणधरोत्तमपुण्डरीकम् ॥ २४

अपश्चिमतीर्थकृत एकादशगणधराः । इन्द्रभूतिरग्निभूति-वायुभूतिश्च गौतमाः ॥ २५

व्यक्त सुधर्मा मण्डित-मौर्यपुत्रावकम्पितः । अचलभ्राता मेतार्यः प्रभासश्च पृथक्कुलाः ॥ २६

तत्र इन्द्रभूतिः श्रीगौतमस्वामी श्रीवीरस्य मुख्यगणधर. ।

श्रीगौतमो मङ्गलमातनोतु श्रीवीरनाथस्य गणाधिपो यः ।
यस्याभिधान प्रथमाक्षरेऽपि गौर्दुह्यते कामदुघा जनेन ॥ २७

निर्वृतिगच्छे पासडसूरिः, स च गच्छो व्युच्छित्तिं जगौ ॥

तथा विद्याधरगच्छे श्रीवीरात् १३१२ वर्षे श्रीबप्पभट्टिसूरय' सरस्वतीवरलब्धा गोपगिरौ आमराज प्रतिबोधक श्रीवीरप्रासादकारकाः। यैराचार्यैर्गिरिनारितीर्थयात्रायां चलितेन आमराज्ञा श्रीनेमिवन्दनाय अर्द्धमार्गेऽप्यशनाभिग्रहे गृहीते – – – – यैनगरे राज्ञि व्याकुले जाते श्रीउज्जयन्ततीर्थे अम्बिकासान्निध्येन रात्रा यात्रा कारिता। श्रीसङ्घलोकस्य प्रत्ययार्थं अपापामठस्था नेमिप्रतिमा तत्रानीता। राज्ञोऽभिग्रह' पूरित'। तदनु तत्र तीर्थे गतैस्तैराचार्यैः पूर्वदिगम्बरैर्बलाद् गृहीत श्रीगिरनारतीर्थे अम्बिकामुखेन ' इक्को वि नमुक्कारो 'इति गाथया आत्मायत्त कृतम्।

श्रीपादलिप्ताचार्या' यैर्नागार्जुनयोगिनस्तथापात्र स्वनिरोधलेपाग्नियोगकारापणेन स्वर्णसिद्धिर्दर्शिता। तेन तच्चरणक्षालनादाकाशगामिलेपचूर्णादिगानि १०७ ज्ञातानि तन्दुलोदकोपदेशः इत्यादि–स्तम्भनरससिद्धि। ये पञ्चमहातीर्थेषु आकाशगामिनीविद्यया शिष्येषु गोचरचर्यां गतेषु यात्रां प्रत्यह कुर्वन्ति। यथा–

'अट्ठावय सम्मेए पावा चपाइ उज्जयनमि। निच देवे वदइ पाडविलेवेण पालित्तो ॥ ४०

ये च बालक्रीडारसिका विप्रान् दृष्ट्वा कुटाचरणान्यत्र समेक्ष्य आसनमुक्ता., देशान्तरायातै कुक्कुटमार्जारादिशब्दकरणच्छलितैर्विप्रैः समस्या पृष्टा, यथा–'पालित्तयक०'। 'प्रत्युत्तर –'अट्टसाभिओग०'। तदनु विप्रा. स्तुतिं विधाय गताः। अन्यच्च, व्याख्याविद्यागुणात् चमत्कृतसकलनागरिकास्ते 'तरङ्गलोलाख्या'स्कार्षुः। यथा–

श्रीपादलिप्तकगुरोस्तुहिनाचलस्य यस्याप्यहो सुमहिमा न हि माति लोके।
भागीरथीव भुवनं परिपावयन्ती यस्मादजायत तरङ्गवती कथाऽपि ॥ ४१

तथा वृद्धवाद्याचार्या, तेषा वादकरणे एषा प्रतिज्ञा–

मुद्गगो शृङ्ग ग्रामयष्टिप्रमाण शीनो वह्निर्मारुतो निष्प्रकम्प.।
यद्वा यस्मै रोचते तन्न किञ्चिद् वृद्धो वादी भाषते तत् तथैव ॥ ४२

तैराचार्यैः महावादी सिद्धसेनब्राह्मणो गोपसभोचितदण्डकादिवादेन निर्जित। स च शिष्य कृत. स्वपदे स्थापित। वीरात् १३१२ सिद्धसेन। तेन सिद्धसेनदिवाकरेण सस्कृतभाषया सिद्धान्तकरणागतपाराञ्चिकपापक्षपणार्थं गुरूक्तालोचनापूरणाय 'द्वात्रिंशतिका.', तदनु 'कल्याणमन्दिरस्तव' विधाय शिवलिङ्ग भेदयित्वा श्रीपार्श्वप्रतिमा प्रकटीकृता। तथा तस्य राज्ञोऽग्रतो भाविजैनप्रभावकः श्रीकुमारपालराजा कथित। यथा–

पुन्ने वाससहस्से सयमि वरिससमि नवनवइ अहिए (११९९)।
होही कुमरनरिंदो तुह विक्कमरायसारिच्छो ॥ ४३

एव विद्याधरगच्छेऽन्येऽपि प्रभावकाचार्यप्रमुखा बभूवु ॥३॥

अथ चन्द्रगच्छे प्रभावकाचार्या श्रीहरिभद्रसूरय। वीरात् १०५५ वर्षेऽस्त [गतो] हरिभद्रसूरि.। यैर्बौद्धशास्त्रागमार्थं दक्षिणस्या गतयोर्निजभागिनेयहंसपरमहंसशिष्ययोर्बौद्धकृतोपद्रव श्रुत्वा सञ्जातकोपै., आकृष्टिविद्यया बौद्धहोमादागतस्य पापस्य फाटनाय गुरुदत्तालोचनया १४४४ प्रकरणानि विहितानि। तदनु तेषा सूरीणा क्रोधाहङ्कारस्वपा रोगो गत.। यथा–

यस्यामयो गतमयो व्यगलत् क्षणेन दोषोज्झितोऽधिगतसुश्रुतयोगयोगात्।
सर्वज्ञता कलियुगे कलयन् नितान्तमेनः स सहरतु वो हरिभद्रसूरि ॥ ४४

पूर्वं हि आरण्यका श्रीसामन्तभद्रसूरयः आसन्, तत्सन्ताने श्रीमानदेवसूरिणा नड्डूलनगरात् श्रीसंघोपरोधेन शाकम्भर्यां गत्वा मरकीउपद्रवोपशान्त्यर्थं 'शान्तिस्तव'श्चक्रे। तत्पट्टधारी श्रीमानतुङ्गसूरिः। येन वाणारस्यां बाण-मयूर-पण्डिताभ्यां स्वोपज्ञसूर्य-चण्डीस्तुतितः कुष्ठरोगस्फेटयद्भ्यां चैत्यद्वारपरावर्तनेन च लब्धयशःप्रसराभ्यां कृतायां जैनावहेलनायां निराकरणार्थं श्रीपेणराज्ञः पुरतो 'भक्तामर०' इति युगादिदेवस्तवश्चक्रे। यथा—

यो वैधर्मिकलोकभूपतिपुरस्तुत्रोट जैनस्तवात्
कुर्वं शृङ्खललोहबन्धनमय सञ्ज्ञयाबोधतः।
यस्यादेशविधायिनी समभवद् देव्यम्बिका सर्वदा
पायाद् वः स सदा सुनिर्म्मलगुणः श्रीमानतुङ्गः प्रभुः॥ ४५

तदन्वये—श्रीउद्योतनसूरिणा टेलीग्रामे लउकडीयावटस्याधः संवत् ९९४ वत्सरे सुमुहूर्तसाधनाय श्रीसर्वदेव-सूरिप्रमुखा आचार्याः स्थापिताः। ततः क्रमेण बृहद्गच्छसंज्ञकाः शाखाः ९४ संजाताः। तेषां सन्ताने वादी श्रीदेवसूरिः। येन भृगुकच्छे संघादेशोभवने कानडायोगीन्द्रेण गारुडिना 'इत्र वादविरुदं मुञ्च, नोचेन्मया सह सर्पवादं कुरु' इत्युक्ते देवसूरिणा वादो गृहीतः। तेन 'नमिऊण०' मन्त्राम्नायेन भूरेखाकरणतः सप्तवारं अधिकाधिकदर्प्पधराः सर्पा निवारिताः स्वदशनायागच्छन्तः। ततो योगिना सिन्दूरिकासर्प्पो वितस्तमानो गुरुं प्रकोपाय मुक्तः। स आकाशे भूत्वा मस्तके डङ्कदायी। ततः सूरिणा 'मणवहदि यदीय०' स्तोत्रं कृत्वा कुरुकुल्ला शकुनिकारूपा प्रकटीकृत्य सोऽहिः गृहीतः। खिन्नो योगी चरणलग्नो 'मम निर्वाहमर्प्पं देही'ति विज्ञपयति। ततो देवगृहजगती-मुक्तोऽहिर्दत्तः। तस्य जीवहिंसानिषेधं दत्त्वा, सोऽहीनां दुग्धादिपानेन निर्वाहयति। श्रीजिनं नमति योगीति नियमः। प्रथमो येन जयसिंहदेवराज्ये दिगम्बरेण कुमुदचन्द्रेण सह षण्मासान् दिनानि १९ यावद् वादं विजित्य जयपत्रं जगृहे। यतः—

यदि नाम कुमुदचन्द्रं नाजेष्यद् देवसूरिरहिमरुचिः।
कटिपरिधानमधास्यत् कतमः श्वेताम्बरो जगति॥ ४६

तथा पूर्णतल्ल(तल्ल)गच्छे प्रभावकाः राजगुरवः प्रभुश्रीहेमसूरयः। यैः कुमारपालदेवं राजानं प्रतिबोध्य चतुर्दशशतानि श्रीजिनेन्द्रप्रासादाः कारिताः। अष्टादशवर्षाणि यावत् चतुर्दशदेशेषु जल-स्थलचराणामभयदानं दापितम्। यदुक्तम्—

ससर्पयोऽपि सततं गगने चरन्तो रक्षुं क्षमा न हि मृगी मृगयोः सकाशात्।
जीयाच्चिरं कलियुगे प्रभुहेमसूरिरेकेन येन भुवि जीववधो निषिद्धः॥ ४७

इत्याद्यनेकप्रकारैर्जैनधर्मप्रभावकाः 'हैमव्याकरणा'दिनानाशास्त्रकारकाः कलिकालसर्वज्ञविरुदास्ते बभूवुः।

तथा आरण्यका श्रीउद्योतनसूरयस्तदन्वये श्रीअभयदेवसूरयः, यैः स्वीयकुष्ठरोगस्फेटनाय 'जय तिहुअण०' स्तवेन श्रीस्तम्भनकपार्श्वनाथं स्तुत्वा धरणेन्द्रं प्रकटीकृतं। रोगो निर्गमितः। तथा नवानामङ्गसूत्राणां वृत्तयः कृताः। यथा—

स्तुवेऽहमेवाभयदेवसूरिं विनिर्मिता येन नवाङ्गवृत्तिः।
श्रुतश्रियं प्रोद्वहतो महर्षेर्बभौ नवाङ्गा वरवेदिकेव॥ ४८

तच्छिष्याः 'पिण्डविशुद्धयादि 'प्रकरणकारकाः श्रीजिनवल्लभसूरय'। तेषा शिष्यौ द्वौ। आद्यो जिनशेखरसूरिः रुद्रपल्लीस्थाने मिथ्यात्विमतिबोधकर्ता। तदन्वयस्य रुद्रपल्लीयखरतरगच्छसंज्ञा। द्वितीयो जिनदत्तसूरिः श्रीचामुण्डाप्रतिबोधकः। तदन्वयस्य खरतरगच्छसंज्ञा। तत्र गच्छे श्रीजिनप्रभसूरयः पद्मावतीसान्निध्ययुक्ता' परमसिद्धान्तविदुराः ढिल्या यवनाधिपमहम्मदसाहिरञ्जकाः नानाविधचमत्कारदर्शनेन च जिनशासनोन्नतिकारका बभूवुः॥

तथा स. चैत्यवासिन. पूर्वं रत्नप्रभसूरयः। यैरुपकेशिनगरे कोरण्टनगरे च एकमुहूर्ते देवसानि याद् द्विरूपधारिभिः श्रीवीरप्रतिष्ठा कृता। यथा–

> ससत्या वत्सराणा चरमजिनपतेर्मुक्तियातस्य माघे
> पञ्चम्या शुक्लपक्षे सुरगुरुदिवसे ब्रह्मण' सन्मुहूर्ते।
> रत्नाचार्यैरिहार्यै. प्रतिभगुणयुतै. सर्वसघानुयातै.
> श्रीमद्वीरस्य बिम्बे भवशतमथने निर्मिता सत्प्रतिष्ठा॥ ४९

तत्पट्टे यक्षदेवसूरिणा यक्ष. प्रतिबोधितो जिनभक्त' कृत.। तत' कक्कसूरिसताने ओसिवालगच्छसंज्ञा। नन्नसूर्यन्वये कोरण्टवालगच्छसंज्ञा।

थारापद्रगच्छे वादिवेताल: श्रीशान्तिसूरि'।

नाणावालगच्छे मौनी श्रीशान्तिसूरि.। यै' श्रावकपृष्टसिद्धान्तविचारोत्तरदानाऽशक्तै. सत्रपैः श्रुतदेवताराधनार्थं द्वादशवर्षाणि मौन धृतम्। तदनु नाणाग्रामे सरस्वती सन्तुष्टा विद्या ददौ। शास्त्रज्ञा बभुवुस्ते। ततो विप्रैस्तत्परीक्षार्थं वेदार्थे पृष्टे, तैश्चत्वारोऽपि वेदा व्याख्याता। १८००० ब्राह्मणा. प्रबुद्धा', आचार्यभक्त्या मरुस्थलीवस्तै. सघार्चां चक्रुः। तैरतिबहुलैर्वस्त्रैर्जिनभवने पाषाणमण्डपो निष्पन्नो लोकप्रसिद्ध॥

तथा पण्डेरकीयगच्छे श्रीयशोभद्रसूरय। सघस्य तृषोपशमनायाऽकाले मेघवृष्टिकारकाः, अनेकप्रभावनाप्रसिद्धा.। यथा–

> येषामाबाल्यकालाद् विकृतिपरिहृतिर्मान्यता मूलराजे
> सघे मेघाम्बुवृष्टि. सकललिपिवचो वाचने वा निषेव्य।
> पण्डेरे पल्लिकाया नयनमथनतो याति मिथ्यादिकाना
> श्रुत्वा नानाऽद्भुतानि त्रिभुवनगतिनो धूनयन्ते शिरासि॥ ५०

वोहड पमरिसि०। बोडाको दुस्थित श्राद्धो भगिनीधनेन घृतकूपिकाव्यवसाय करोति। चौरैर्लुण्टितः 'कुतो भग्नीधन दास्ये' इति वैराग्यान्महाव्रती बभूव तपस्वी। अन्यदा अरण्यावग्रहमनुज्ञाप्य वृद्धनीतिं कुर्वतो देवतया स्वर्णनिधान प्रकटीकृतम्। मुनिना निरीहेण जीवरक्षार्थं तत्रैव मलोत्सर्गः कृत'। तद् गोपैर्दृष्टम्। भोजनृपस्योक्तम्। नृपपुम्भिस्त दृष्ट्वाऽचिन्ति 'निरीहोऽय तपस्वी वन्द्य.' प्रसिद्धिस्तत्र। अन्यदा गजाना रोगोत्पत्तौ नृपेण ऋषिचरणनीरमानायितम्। स न दत्ते। तन्मुक्तपादरेणुप्रक्षालनाजलसेकाद् गजमारिरोगनाश'॥इत्यादि वोहाऋपि प्रबन्ध.॥ तद्गच्छे पूर्वं बलिभद्रमुनिजात। तेन देवशक्त्या बौद्धैर्गृहीत श्रीगिरनारतीर्थं वालितम्॥

प्रश्नवाहनकुले हर्षपुरीयगच्छे मलधारीविरदा. श्रीहेमचन्द्रसूरयो 'भवभावना पुष्पमाला 'दिप्रकरणकर्तारः। तदनु नरचन्द्रसूरि, श्रीचन्द्रसूरिप्रमुखा विविधग्रन्थकारका', तथा वादिगजगन्धिहस्तिनो राजशेखरसूरयः।

कृष्णर्षिगच्छे महाभिग्रहनिबद्धोग्रतपःकारकाः कृष्णर्षिसूरयः कालीकम्बलधराः। तद्वंशे वादीन्द्रश्रीजयसिंघसूरयः।

पल्लीवालगच्छे माकृतविविधछन्दोऽभिरामश्रीशान्तिसूरिः।

श्रीकालिकाचार्यसंताने खडिल्लगणे भावडारगच्छे श्रीवीरसूरिणा कल्याणकटकनगराधिपपरमार्डि राजानं रञ्जयित्वा पञ्चगजघटा आनीता। तद्द्रव्यं प्रासादे व्ययिता। तेषां वाक्यम्–

आकाश प्रसर प्रसर्प्पत दिशः [त्वं ?] पृथ्वि पृथ्वी भव
प्रत्यक्षीकृतमादिराजयशसो युष्माभिरजृम्भितम्।
प्रेक्षध्वं परमर्द्धिपार्थिवयशोराशेर्विकासोदयाद्
बीजोद्भासितपक्वदाडिमतुलं ब्रह्माण्डमारोहते॥ ५१

तेषामनुक्रमे शास्त्रसिद्धान्तवेत्तारो भावदेवसूरयः।

कासहृद्गच्छे उज्जोयणसूरिः।

हुवडशाखाया आर्यखपुटाचार्या विद्यासिद्धा वडकरयक्षप्रबोधकाः।

एवं गच्छे गच्छे अनेके प्रभावका बभूवुः। ते च वक्तुं तदा पार्यन्ते यदि मुखे जिह्वासहस्राणि भवन्ति। तथा श्रीवीरनिर्वाणात् ९९३ वर्षेषु गतेषु श्रीकालकाचार्यैश्चतुर्दश्या पाक्षिकप्रतिक्रमणं संघादेशात् स्थापितम्। यथा–

सालाहणेण रन्ना संघाएसेण कारिओ भयवं। पज्जूसवणचउत्थी तह चउमासं चउद्दसीए॥ ५२

तथा श्रीवीरनिर्वाणात् त्रयोदशशतवर्षेषु यातेषु मुख्यगच्छेभ्यो मतान्तराणि जातानि। यतः कालचक्रे उक्तम्–

तेरससएहिँ वीराओ होहिंति अणेगमयविभेया। बंधंति जेणि जीवा बहुहा कम्माइ मोहणियं॥ ५३

पक्षान्तराणि यथा–

हु नन्देन्द्रियरुद्रकालजनितः (११५९) पक्षोऽस्ति राकाङ्कितो
वेदाभ्रारुणकाल (१२०४) औष्ट्रिकभवो विश्वार्ककालेऽञ्चलः (१२१४)।
षट्त्र्यर्केषु (१२३६) च सार्द्धपूर्णिम इति व्योमेन्द्रियार्केषु (१२५०) च
वर्षे त्रिस्तुतिकोऽक्षमङ्गलरवौ (१२८५) गाढग्रहस्तापसः॥ ५४

विक्रम ११५९ वर्षे बृहद्गच्छाचार्याः (०र्यात्) शाखा ४ (?) पूर्णिमापक्षः। तत्र श्रीसुमतिसूरिः, श्रीतिलकाचार्यः 'सुगमसिद्धान्तवृत्त्या'दिकर्ता।

वेदाभ्रारुण[काले] १२०४ औष्ट्रिकपक्षः।

विश्वार्ककाले अञ्चलपक्षः। पूर्णिमापक्षात् उपाध्यायात् १२१४ वर्षे नाढश्रावकोपरोधाद् अञ्चलपक्षः। तत्र मेरुतुङ्गसूरिर्ध्यानगुणोपेतः। षट्त्र्यर्केषु च १२३६ वर्षे पूर्णिमापक्षीयाचार्यात् आगमपक्षः त्रिस्तुतिकः।

अक्षमङ्गलरवौ १२८५ मन्त्रिवस्तुपालाधिकारिमन्त्रिकजसवीरेण बृहद्गच्छपण्डितापराभीतेन बृहद्गच्छपण्डित-पार्श्वे दीक्षा गृहीता। १२८५ वर्षे चैत्रगच्छीयदेवउ(भद्र)मुनिस्तेषां मिलितः। तेन वस्तुपालतर्जितेन महत्तपं आरब्धमिति तपासंज्ञा। तत्र चैत्रगच्छे मतान्तरे विजयचन्द्र रत्नाकरसूरी। बृहद्गच्छे मतान्तरे सोमतिलकसूरिः। तेषु मतान्तरेष्वपि प्रतिमतान्तराण्यनेकानीति दुःषमकालविलसितम्॥

एवं श्रीपुण्डरीकगणधर श्रीगौतमादिगणधराणां प्रभावकसूरीणां च नामग्रहणं मङ्गलाय कृतम् ॥

अथ स्वगच्छप्रभावकाणां श्रीगुरूणां नामानि गृह्यन्ते । अतः स्वगुर्वावली लिख्यते । तद् यथा–

पूर्वं हि तलवाडदेशस्वामी क्षमापालो नन्नराजः आखेटके व्यापादितसगर्भहरिणीबालकं तडफडन्तं वीक्ष्य स्वयं वैराग्यमापन्नः राज्यं विहायारण्यकसूरिसाधुसमीपे दीक्षां जग्राह । स च राजर्षिराचार्यपदस्थः श्रीनन्नसूरि प्रसिद्धः समजनि । तदन्वये अजितयशोवादिसूरिप्रमुखाः सप्त आचार्या वादिजेतारो लक्षणप्रमाणग्रन्थकर्त्तारो अभूवन् । अतो राजगच्छसंज्ञा प्रसिद्धा । तदनु षट्त्रिंशल्लक्षकन्यकुब्जदेशाधिपतेः कर्दमराजस्य पुत्रो धनेश्वरकुमारः अन्यदा आखेटके एकाकी अष्टापदसरभं दृष्ट्वा वृक्षारूढोऽधःस्थम्भायमाणं सरभं भल्लेन मुखे जघान । ततोऽतीवरुष्ट दुष्टसरभेण निजनिरोधमिश्रमृत्तिकाशुण्डादण्डेनोल्लालिता । यत्र यत्र कुमरदेहे लग्ना तत्र तत्र स्फोटका उत्पन्नाः । पश्चादायातैरनुचरैर्गृहं नीतः कुमारः । विविधोपचारैरशान्तं तद्दाघं मन्त्र्यानीतेन राजर्षिश्रीअभयदेवसूरिचरणनीरेण उपशान्तं वीक्ष्य तस्योपकारिणो गुरोः समीपे पित्रा निषिद्धोऽपि व्रतं प्रतिपन्नः । स च श्रीधनेश्वरसूरिर्बभूव । तेन चैत्राभिधमहास्थाने सर्पदष्टद्विजकुमारस्य करपानीयेन जीवदानं दत्त्वा अष्टादशसहस्राणि ब्राह्मणकुटुम्बानि प्रतिबोध्य श्रीवीरप्रासादः कारितः । अष्टादशसूरयः स्थापिताः । द्वादशवर्षत्रयोऽनन्तरं यावज्जीवं षड्विकृतित्यागिनो नामस्मरणेऽपि निर्नाशितक्षुद्रोपद्रवा अक्षीणलब्धिकारकाः श्रीशीलभद्रसूरयः । तेषां शिष्याः ११५६ वर्षे सूरिमन्त्रप्राप्ता अम्बिकासानिध्यतो भूपत्रयबोधका वारद्वयं गुणचन्द्रवादिजेतारः श्रीधर्मघोषसूरयोऽभूवन् । यथा–

> आसीत् श्रीराजगच्छे सदसि नरपतेरह्लणाख्यस्य सांख्य-
> ग्रन्थव्याख्याविधाताऽनलनृपतिपुरो वादिगर्वापहर्त्ता ।
> जैनावज्ञाप्रसक्तं जिनमतसुदृढं विग्रहेशं विधाय
> श्रीमज्जैनेन्द्रधर्मोन्नतिकरणपटुर्धर्मसूरिर्मुनीन्द्रः ॥ ५५

तथा यदुपदेशात् शाकम्भरीदेशाधिपेन राज्ञा वीसलदेवेन अजयमेरुदुर्गे राजविहारः कारितः । मूलनायक-श्रीशान्तिदेवस्य प्रतिष्ठामहोत्सवोऽकारि । तस्य भूपतेर्मात्रा सुहवदेव्या सुहवपुरे श्रीपार्श्वप्रासादः कारितः । एवं पैराचार्यैः श्रीफलवर्द्धिपुरमण्डनश्रीपार्श्वदेवप्रभृतिजिनानां पञ्चोत्तरशत १०५ प्रासादेषु प्रतिष्ठा विहिता । तथा च ब्राह्मण क्षत्रिय-माहेश्वरीयवैश्यान् प्रतिबोध्य ओसवालानां पञ्चोत्तरशतं १०५ गोत्राणि श्रीमालानां च पञ्चत्रिंशद्-गोत्राणि श्रावकव्रतधारीणि विहितानि ॥

तेभ्यः श्रीधर्मघोषसूरिभ्यो राजगच्छस्य धर्मघोषगणसंज्ञा प्रसिद्धा । तेषामन्वयेऽमृतोपमनिजदेशनाप्रतिबोधि-तानेकमिथ्यात्विनः प्रभावकाः श्रीसागरचन्द्रसूरयो बभूवुः । यथा–

> वन्दामि तं सुगुरुसागरचन्द्रसूरिं यस्यामृतोपमवचांसि निशम्य सद्यः ।
> के के न केल्हणनृपप्रमुखा बभूवुर्जैनेन्द्रधर्मरुचयो द्विजराजिपुत्राः ॥ ५६

तत्पट्टधारिणोऽनेकविद्याकलाचमत्कारैर्विश्रुताः श्रीमलयचन्द्रसूरयः ।

तथा श्रीचित्रवालशाखायां श्रीभद्रेश्वरसूरिभिः श्रीगिरनारतीर्थे मुख्यप्रासादस्य प्रतिष्ठा चक्रे । यतः–

> श्रीमन्नेमेरुज्जयन्ताद्रिशृङ्गे प्रासादं यो वीक्ष्य जीर्णं विशीर्णम् ।
> दण्डाधीशं सज्जनं बोधयित्वा नव्यं दिव्यं कारयामासुराशु ॥ ५७

तथा श्रीचैत्रगच्छ एव श्रीवीरगणयः कुम्बोड्याशाखाया सजाताः। यैस्तपःप्रीणितत्रालीनाहक्षेत्रपालसानिध्येन श्रीअष्टापदतीर्थे यात्रा विहिता। तस्या शाखाया अष्टापदशाखेयमिति प्रसिद्धिः। -

अथ अमुकगोत्रीयाऽमुकान्वयमण्डनामुकश्रावकाभ्यर्थनयाऽमुकधर्म्मशास्त्रवाचना करिष्यामः। अथास्मादृशो मूर्खो यत्किञ्चिदस्य गम्भीरार्थस्य शास्त्रस्य व्याख्या वाचना वा करिष्यति स अमुकसूरेर्गुरोः प्रभावः। यतः-

यद्वेणुर्विकलीकरोति तरणिं तन्मारुतस्फूर्जित
भेकश्चुम्बति यद्भुजङ्गवदन तन्मन्त्रित मन्त्रिणः।
चैत्रे कूजति कोकिलः कलरव तत्सारसालद्रुमः
स्फूर्त्या जल्पति मादृशः किमपि यन्माहात्म्यमेतद् गुरोः॥ ५८

तत्र येन अमुकगुरुणा मम हृदयलोचन विकासित तस्य नमोऽस्तु। यथा-

अज्ञानतिमिरान्धानां ज्ञानाञ्जनशलाकया। नेत्रमुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥ ५९

अथ अमुकधर्मशास्त्रस्य पञ्चमङ्गलमहाश्रुतस्कन्धनमस्कारमन्त्रमणनपूर्व[क]प्रथमः श्लोको वाच्यते। व्याख्येय-ग्रन्थस्य गाथाः, श्लोका वा १, ३, ४, ५, ६, ७ व्याख्येयाः। यथा-

हट्ट पौषधशालिकां नवनव पण्य च दानादयः
शास्त्रार्थी ऋजुधीरह पुनरहो वर्त्तेऽत्र विक्रायके।
यूय भो व्यवहारिणः प्रतिदिन गृह्णीध्वमभ्येत्य त-
न्नैवोद्ग्राहणिका न च त्रुटिभय न ग्रन्थिवित्तव्ययः॥ ६०

अथवा-

वेलाकूलमिद [महा]जलनिधेर्जैनेश्वर शासन
पोतःशास्त्रमिद मणिप्रभृतिसत्पण्यानि तत्त्वाह्वयः।
दातारो गुरवश्च सम्प्रति मम श्रेयस्य लाभार्थिनो
यूय श्रावकमत्तमास्तत इतो गृह्णीत च स्वेच्छया॥ ६१

धर्मशास्त्रव्याख्यारूपा भोज्यवारेय मण्डिताऽस्ति। यथा-

श्रद्धावृद्धिकरः श्रिया कुलगृह सोऽय सभामण्डपः
सोऽय तत्त्वविचारणैकनरणिः सतर्पणीयो जनः।
सेऽय जैनकथाप्रथारसवती सौहित्यहेतु सतां
मादृक्षः परिवेषणे पुनरसौ जातोऽधिकारो जनुः॥ ६२

अथवा-धर्मशास्त्रमारम्भेषु श्रावका साधर्मिकेभ्यस्ताम्बूल ददति। इत्यतोऽस्माभिरपि धर्मताम्बूलमिद दीयते।

यथा-

एला यत्र दया क्षमा वलवली सत्य लवङ्ग पर
दाक्षिण्य क्रमुकीफलानि विदितश्चूर्णस्तु तत्त्वोद्यमः।

कर्पूर मुनिराग उत्तमगुण शील तु पत्रोचयो
गृह्णीध्व गुणकृन्नैर्यदपि तत् ताम्बूलक वीटकम् ॥ ६३

अथवा–

पत्राणि व्रतसम्पदः शुचिगुणाः पूगीफलानि स्फुट
शील चूर्णमनुत्तर शुचि मनः कर्पूरपूरस्त्वयम् ।
श्रीमद्देवगुरुप्रसादविशद कचोलके स्थापित
राग द्वेषकफादिदोषग्रसन ताम्बूलक गृह्यताम् ॥ ६४

अथवा–धर्मशास्त्रव्याख्यानरूपेऽस्मिन् मङ्गलकार्ये श्रीसघायाऽक्षतभाजन समानीयतेऽस्माभिरिति ।

नक्षत्राक्षतपूरित मरकतस्थाल विशाल नभः
पीयूषकृतिनालिकेरकलित चन्द्रप्रभाचन्दनम् ।
यावन्मेरुकरे गभस्तिकटके धत्ते धरित्रीवधू–
स्तावन्नन्दतु पुत्र पौत्रसहित श्रीमघभट्टारकः ॥ ६५

आशीर्वादपुस्तकमारम्भणम्–

श्रीजैनशासनविकाशनपार्वणेन्दु श्रीनन्नसूरिरभवद् भवतापहर्त्ता ।
ये पूज्यसम्पदमपास्य च हेलयैव लीला ललौ करणचारिरमाविलासात् ॥ ६६

तत्शिष्योऽप्यजितयशोऽजितयशोवादिसूरिरप्रतिम' ।
श्रीसर्वदेवसूरिगुरवस्तदद्रिराजीवराजहस ॥ ६७

तत्पट्टार्णवकौस्तुभ. समुदित प्रद्युम्ननामा हि य.

।

तत्शिष्योऽभयदेवसूरिरसमो मिथ्यात्ववादिव्रज–
मादोन्माथकर. प्रसिद्धमहिम स्याद्वादमुद्राङ्कित. ॥ ६८

श्रीचैत्रगच्छे प्रकटप्रभावी धनेश्वरसूरिरभूच्च तस्मात् ।
आसीद् विनेयोऽजिनसिंहसूरि सिंहोपमो वादिमतङ्गजेषु ॥ ६९

श्रीवर्द्धमान इति जैनमनारविन्दप्रद्योतनस्तदनु शाश्वतकीर्त्तिपूर' ।
दु प्रापशीलमणिरोहणपुण्यभूमि श्रीशीलभद्रगुरुराश्रिततत्त्व[श्रेणिः] ॥ ७०

वादिचन्द्र-गुणचन्द्रविजेता भूपतित्रयविबोधविधाता ।
धर्मसूरिरिति नाम पुरासीद् विश्वविश्वविदितो मुनिराज. ॥ ७१

तावत् कविर्नयकवित्वविधानदक्षो वादीश्वरो वदति तावदशेषवादान् ।
वक्ताऽपि तावदमृतोपमशक्ति[रासीद] ज्ञानेन्दुरेति कुशकोटिमतिर्न यावत् ॥ ७२

श्रीराजगच्छतटिनीपतिशीलभानु भव्याम्बुजप्रतिविबोधननव्यभानुम् ।
लोकप्रकाशसततोरुगुणप्रधान श्रीज्ञानचन्द्रसुगुरु प्रणमामि मानम् ॥ ७३

कल्पद्रुपल्लवपवित्रपवित्रहस्त पादप्रसादविधिगम्यसुसिद्धिभावम् ।
भावारिचूरणचरत्तरभावभाव श्रीज्ञानचन्द्रसुगुरुं कवयामि भक्त्या ॥ ७४

मोहप्रगल्भनलल्लुण्टनलम्पटाय सिद्धयङ्गनानयनषट्पदपङ्कजाय ।
लालित्यदिव्यभविकप्रतिबोधकाय श्रीज्ञानचन्द्रगुरवेऽस्तु नमो नमाय ॥ ७५

नित्योपवत्कलुषपङ्किलदेहिदेहगेहप्रसन्नसजलाम्बुधरप्रभाय ।
गीर्वाणचक्रमुकुटप्रकटाश्रिताय श्रीज्ञानचन्द्रसुगुरु भवभेदनाय ॥ ७६

उन्मत्तकोकिलविपश्चिपटेष्टवाच वाचयमप्रचयसेवितपादपद्मम् ।
कन्दर्पदर्पदलनोल्वणशीलखड्ग श्रीज्ञानचन्द्रसुगुरु शरणं भजेऽहम् ॥ ७७

कुन्देन्दुहारहरहासयशःप्रकाशमाकाशवन्निमलबुद्धिचयप्रतीक्ष्यम् ।
ईक्षामहे महिमनीरजधीरहस श्रीज्ञानचन्द्रसुगुरु भवभेदनाय ॥ ७८

कल्याणकल्पलतिकामृतमेघकल्पं कल्पान्तकालसममत्सरमेरुशल्यम् ।
सकल्पकल्पनविकल्पनगुल्मचक्र श्रीज्ञानचन्द्रगुरुचन्द्रमह नमामि ॥ ७९

मार्तण्डमण्डलमिलत्कलकान्तिचक्र चक्रभ्रम भ्रमदिद द्व (तु वि)भाति देहे ।
साम्राज्यमोहकदनस्फुटवारिवाह जाज्वल्यमानमिव चक्रमहो चकास्ति ॥ ८०

चारित्रवाहननिकामनियामकाभ दीप्रारिवारमदडुर्द्धरभासुराभम् ।
खर्जूरपिण्डपटुलच्छविदेहगेह श्रीज्ञानचन्द्रमतिश हृदय वसामि ॥ ८१

श्रीज्ञानचन्द्रगुरुपादपङ्कज सवसामि हृदये मनोहरे ।
अष्टसिद्धिवरकामिनीवशीकर कार्म्मणमिव सुशर्म्मणाम् ॥ ८२

कीर्त्तिगेहमिह सद्गुणावलीवल्लिसज्जलजलाश्रयश्रियम् ।
सौख्यनष्टपदहर्म्यनि चनि ज्ञानचन्द्रसुगुरु गुरूत्तमम् ॥ ८३

सुलभविविधलब्धिर्भाग्यसौभाग्यभूमिर्भवशतकृतपुण्यप्राप्यपादप्रसादः ।
जिनपतिमतचित्रोत्सर्प्पणाकेलिकारो जयति कलियुगेऽस्मिन् गौतमो धर्म्मसूरिः ॥ ८४

प्रणाशयन्तो जडतान्धकार विकासयन्तो भविकैरवाणि ।
श्रीज्ञानचन्द्रोत्तमसूरिराजपादाः प्रकाम जयिनो भवन्तु ॥ ८५

प्रबलवादिमतङ्गजमर्द्दने हरिरिवोन्नतवाक्यनखाङ्कुरे ।
य इह जैनमताभिधकानने सुशिवदः सुगुर्म्मुनिशेखरः ॥ ८६

वन्दामि त सुगुरुसागरचन्द्रसूरिं यस्यामृतोपमवचांसि निशम्य सद्यः ।
के के न केल्हणनृपप्रमुखा बभूवुः जैनेन्द्रधर्म्मरुचयो द्विजराजपुत्राः ॥ ८७

श्रीजैनशासननवनीनववारिवाहाः सद्देशनारसनिरस्तसुधाप्रवाहाः ।
विद्याकलागुणसुलब्धिमहानिधाना' श्रीसागरेन्दुगुरवो गुरवो जयन्तु ॥ ८८
भूपालमालाप्रणतो निरीह' समग्रविद्यागुणलब्धिपात्रम् ।
सर्वत्र सत्कीर्तितपद्महस्तो मुदेऽस्तु नित्य मलयेन्दुसूरिः ॥ ८९
श्रीराजगच्छाम्बुधिपूर्णचन्द्र' समस्तविद्यापदमस्ततन्द्रः ।
प्रज्ञापराभूतसुरेन्द्रसूरिर्जीयाचिर श्रीमलयेन्दुसूरिः ॥ ९०
विश्वोद्योतियशःप्रतापविलसचन्द्रार्कसशोभिनो
गुर्वानन्दनसौमनस्यकलित' सद्भद्रशालावनिः ।
भूयान्मेररिव क्षमाभरधरो विख्यातनामा सतां
पूज्य श्रीप्रभुपद्मशेखरगुरुः कल्याणदः शर्म्मणे ॥ ९१
अभिधानानि गुरूणा निधानानि शिवश्रियः ।
व्याख्यामि पुस्तकन्याख्या प्रारम्भोऽयमापच्छिदे ॥ ९२
इत्येषां पूर्वसूरीणा नाममन्त्रप्रभावतः ।
कल्मष विलय याति कल्याण चोपतिष्ठति ॥ ९३
तेषा पादप्रसादेन स्वल्पबुद्ध्या मयाऽधुना ।
व्याख्या प्रारभ्यते किञ्चित् श्राद्धाना साधुससदि ॥ ९४
नमोऽस्तु गुरुचन्द्राय यत्करस्पृष्टमूर्द्धनि ।
आविर्भवति मन्यद्रमन्यपि वाक्यसुधारस ॥ ९५
शील शालि सुदालिः प्रशमपरिणति स्वच्छमाज्य विवेक'
सन्तोष शालनौघ, समितिसमुदय पञ्चपक्वान्नपाकः ।
रम्यश्रीमार्दवश्री दधि परमदया [म]ण्डका मत्तपासि
द्राक्षापान गुरूणा वचनमनुपम दुर्लभ त्विष्टभोज्यम् ॥ ९६
व्याख्योर्व्वीमित्रशाला जिनवचनकणा, पुस्तकः कोष्ठकश्पो
भोक्तव्य व्यञ्जनाढ्य नवरसकलित स्वादतापापहारि ।
वाम्नव्यागन्तुकैर्वा प्रतिदिवसमिद भोज्यमागत्य लोकै'
सचेनाह परोधात् प्रमुदितमनसा तत्र कार्ये नियुक्तः ॥ ९७
ग्रन्थे यत् किल दुर्गमार्थमहिते गाम्भीर्यदुःसञ्चरे
दुर्वारप्रसरन्निरन्तरतमदिछन्नप्रकाशात्मन' ।
यज्ञान स्खलित मम प्रतिदिन किञ्चिद्विचाराध्वनि
क्षन्तव्य तद्दोषमेषपुरत सघस्य बद्धाञ्जलिः ॥ ९८
किन्तु गरुपहि पुरओ धरिया इयरावि जुग्गय जति ।
पसु वि भमइ भवण अरुणो रविणा कओ पुरओ ॥ ९९

श्रीमहावीर १।
श्रीगौतमस्वामी २।
श्रीसुधर्म्मस्वामी ३।
श्रीजम्बूस्वामी ४।
श्रीप्रभवस्वामी ५।
श्रीशय्यंभवस्वामी ६।
श्रीयशोभद्रस्वामी ७।
श्रीसंभूतिविजय ८।
श्रीभद्रबाहुस्वामी ९।
श्रीस्थूलिभद्र १०।
श्रीआर्यसुहस्ति ११।
श्रीवयरस्वामी १२।
श्रीवयरसेन १३।
श्रीनागेन्द्र-चन्द्र-
निर्वृति-उद्देहो (?) १४।

श्रीराजगच्छे ॥
श्रीनन्नसूरि १।
श्रीअजितयशोवादी २।
श्रीसर्वदेवसूरि ३।
श्रीप्रद्युम्नसूरि ४।
श्रीअभयदेवसूरि ५।
श्रीधनेश्वरसूरि ६।
श्रीअजितसिंहसूरि ७।
श्रीवर्द्धमानसूरि ८।
श्रीशीलभद्रसूरि ९।

श्रीधर्म्मसूरि १।
श्रीसागरचन्द्रसूरि २।
श्रीमलयचन्द्रसूरि ३।
श्रीज्ञानचन्द्रसूरि ४।
श्रीमुनिशेखरसूरि ५।
श्रीपद्मशेखरसूरि ६।
श्रीपद्मानन्दसूरि ७।
श्रीनन्दिवर्द्धनसूरि ८।
जयवन्ता
श्रीनयचन्द्रसूरि ९।

श्रीरत्नसिंघसूरि १।
श्रीदेवेन्द्रसूरि २।
श्रीरत्नप्रभसूरि ३।
श्रीआनन्दसूरि ४।
श्रीअमरप्रभसूरि ५।

पाडिवालगच्छ पट्टावलि।

पाडिवालगच्छपट्टावली लिख्यते–

तेण कालेण तेण समएण इमीसे ओसप्पिणीए दुसमसुसमाए समाए एगसागरोवमकोडाकोडीए तिवासअद्धनवमासऊणाए वइक्कंते समणे भगव महावीरे कासवगोत्ते कालगए।

तयणतर च समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी सुहम्मनामगणहरे अग्गिवेसायणगोत्ते सजुस्सेहे सो पट्टहरो जाओ। अन्ने गणहरा णिरवच्चा सिद्धा, अओ पर सुहम्मस्स गच्छस्स मेरा जाव दुप्पसहसूरी वट्टिस्सइ। अह सुहम्मगणहरो विहरमाणो रायगिहे समोसरिओ। तत्थ रिसहपुत्तो धारणिअत्तओ जबूणामा, सो देसणां सुणिऊण पडिबुद्धो, सावगधम्म पडिवन्नो। मायाग्गहेण अट्ठकन्ना परिणीआ, रयणीए पडिबोहिया, जणगाइ सह दिक्खिओ। वीराओ वारसे वरिसे सुहम्मो केवली। वीरपच्छा वीसइमे वरिसे मुक्खं।

जबू केवलित्तणेण सुहम्मपट्टे ठिओ, तस्स सोलस वरिसा गिहवासे गया। वीसवरिसा छउमत्थे। सेसा केवलित्तणे। सव्वाउ असिइ वरिसस्स सिद्धो।

तओ पर–मण–परमोहि–पुलाग आहारगखवगउवसमे कप्पे।
सजमतियकेवलसिज्झणाय जबुम्मि वुच्छिन्ना॥

तस्स पट्टे पभवसामी कच्चायणगुत्तिओ। सो वि उवओगेण गणहरपयजोगो पिक्खइ। रायगिहे सेज्जभवभट्ट णाऊण जिणपडिमा दरिसिआ, पडिबुद्धो, सगब्भिणिभज्जा चिच्चा सजमे पट्ठिओ। त पट्टे ठवित्ता वीराओ पणहत्तरिमे वरिसे देवलोय गओ।

सो वि मणगट्ठे 'दसवियालिय'सुत्त रइऊण, वीराओ नवाणुवरिसे देवलोय पत्तो।

तप्पट्टे जसोभद्दो ठिओ चउदसपुव्वी। तेण दो सीसा कया–सभूइविजओ माढरगुत्तो, वीओ भद्दवाहू पाइण-सगुत्तो। तेसु भद्दवाहू वराहमिहिरस्स वितरस्स उवसग्गस्स वज्जणट्ठे उवसग्गहरो विहिओ। ताहे सवे पढमाणो सव्वाणि उवसग्गाणि हरइ। अन्नाणि वि णिज्जुत्तिसुत्ताणि च रइयाणि। तम्मि वारसवरिसिओ दुकालो पडिओ। पिसयथर अप्पट्ठिआ, पुव्वपट्ठिओ णत्थि।

तत्थ णदरायमतिपुत्तो थूलिभद्दो तायमरणसोगेण वइरग्गभावणाभाविअप्पो सभूइविजयस्स सीसो जाओ, सो बुद्धिवल्लिओ भद्दवाहुसमीवे दसपुव्वाणि सत्थेण गहियाणि। पुढ्वाल्लणत्तणेण विज्जा पयडीकया। भद्दवाहुणा अजुग्ग त्ति काऊण णिन्छूढो। सवेण विण्णविओ, चउपुव्वाणि पाठेण गहियाणि। अओ पर दसपुव्वाणि। भद्दवाहू वीराओ सत्तरिसयवरिसे देवलोय गया।

तप्पट्टे थूलिभद्दो ठिओ सो वीराओ दोसयपणरसाहियवरिसे सग्ग गओ।

इत्थ णिण्हवाइपउरवत्तव्वस्साण वुड्ढपट्टावलीए अत्थि। तओ णेय, इत्थ सखेव।

तस्स पट्टे महागिरी, सुहत्थी दो आयरिया। तेसु महागिरी उग्गविहारी। एगया उज्जेणीए सपइरण्णो पुव्वभवियपमगेण लद्धमम्मत्तो सावगगिहे रायदव्वेण असणाई पडिलाभेइ। सुट्ठु असण दट्ठूण णाओ, सुहत्थिस्स

कहिअ रायपिंडो त्ति। सो भणइ — सव्वत्थवि अत्थि त्ति एव णिच्छयवयण सुचा निब्भत्थिओ कहिओ, अओ पर णत्थि समोओ। अण्णत्थ विहरिओ, सुहत्थी वीराओ २९१ वरिसे देवलोयं पत्तो।

अज्जमहागिरिणा वीराओ २९३ वरिसे सग्ग साहिअ। तस्स सीसो बहुलसरिओ दसपुव्वी विहरमाणो साइणामा वेयपारं विप्प पडिबोहित्ता दिक्खिओ। वीराओ ३२५ वरिसे देवलोय गओ।

तस्स पट्टे साईसूरी रायसभाए उमापक्ख गहिऊण विप्पाण वाय हणिअ। तेण लोए उमासाई पसिद्धो। 'दसज्झाओ' तत्तत्थ-भासो कओ। अण्णे वि गथा रइया। वीराओ ३६१ वरिसे सग्ग गओ।

तप्पट्टे सामा आयरिओ। तेण 'पण्णवणा'उवंगो अगाओ उद्धरिओ। वीररायपुत्तो सडिल्लसुद्धो दिक्खिओ। तेण बहवे खत्तिआ पडिबोहिआ। वीराओ ३७६ वरिसे साईसूरि (सामारियो ?) दिव पत्तो।

तओ सडिल्लसूरी गणहरो जाओ। तेण सुभोजरायपुत्तो गुत्तो पडिबोहित्ता दिक्खिओ। सो पडिओ परं सरलो त्ति। तेण अज्जगुत्तो त्ति पसिद्धो। सडिल्लो वि अज्जगुत्त पट्टे ठवित्ता, वीराओ ३९९ वरिसे देवलोय गया।

अज्जगुत्तेण वुड्ढसिट्ठि दिक्खिओ। सो वायरण सिक्खइ। तओ लोया चिट्ठं भणति-'एसो वुड्ढवाई' सोऊण लज्जो ओधारेइ — जाव मम विज्जा णागमिस्सति ताव आयविल होज्जा। एव दढाभिग्गहो णवयार गुणइ। तप्पभावेण अक्खलियवायसत्ती समुप्पन्ना। पर अप्पसीसो भरुअच्छे ठिओ।

तम्मी(म्मि) काले उज्जयणीए सिद्धसेणदिवायरभट्टो गव्वपव्वए चढिओ। वायत्थं भरुअच्छमग्गे मिलिओ। वुड्ढवाइणा जिओ, सीसो कओ। तेण विक्कमादित्तरण्णो पडिबोहिओ, कल्लाणमदिरथवेण महाकालचेइए ठिया ईसरलिंगी फोडिया, पासपडिमा पयडीकया। अणेगरायपुत्ताण बोहो दत्तो।

तस्स पुत्तो नागदिण्णो अइचवलो। सो एगया उज्जाणे आगओ सूरिण अवमन्नइ भणइ — किमट्ठे कट्ठ ? सूरिणा पडिबोहिओ, दिक्खिओ। पचपुव्वी जाओ। सूरीपयट्ठिओ। सो सूरी वीराओ ५०७ वरिसे सग्ग गओ।

तओ णागदिण्णसूरी सोरट्ठे विहरमाणो बारवईए धरावइरायसुओ कण्णसेणो, त पडिबोहिऊण दिक्खिओ। तेण बहवे रायपुत्ता पडिबोहिआ। तस्स माउलो णरदेवो, सि(सो)वि सीसत्तण पत्तो पचपुव्वी। तेण गद्दजिण(ण्ण)रायं पडिबोहिओ। नागदिन्नसूरी विक्कमसंवच्छराओ ८७ वरिसे देवलोय।

तप्पट्टे णरदेवसूरी विहरमाणो हत्थिणाउरे गओ। तत्थ सिट्ठी तस्स चउपुत्ता। जिट्ठो पुत्तो सुरसेणो। संसार अणिच्छतो सूरिणा दिक्खिओ। तत्थ रट्ठे मिच्छा पडिबोहिया। णरदेवसूरी वि उग्गविहारेण मेयणीपुरे पाओवगमणसरिसो सथारो कओ। तत्थ धिज्जातीयेण तज्जिओ ण चलिओ। विक्कमओ १२५ वरिसे देवलोय पत्तो। नियडवत्तीहिं देवेहिं महिमा कया।

तप्पट्टे सूरसेणसूरी विहरमाणो चित्तकूडे ठिओ। तत्थ चडि[या] पडिबोहिया, हिंसा वज्जिआ। तओ [म]दसोरवासी कण्णसेट्ठी, तस्स तणुओ धम्मकित्ती, सो सूरीण पिक्खिऊण सम्मत्त पडिवन्नो। तेण विन्नविओ चउमास ठिओ। सूरसेणसूरिणा चित्तकूडे अणसण कय। विक्कमओ १६७ वरिसे सुरलोअ।

तओ धम्मकित्ती सूरी पए ठिओ, विहरमाणो उज्जयणीए गओ।

तत्थ सुरप्पियविप्पो चउदहविज्जापारगओ पसिद्धो, सूरीण भणइ-' केणाणुट्ठाणेण मुक्ख साहिज्जइ ? किं धम्मस्स मूल ? '।

सूरिणा कहिय-' निरवज्जज्झवसाणाणुट्ठाणेण जीवो सिव साहिज्जइ। अहिंसा धम्मस्स मूल। सव्वे धम्मा तम्मि पइट्ठिआ।' केवलिणा एव वुत्त।

पाडिवालगच्छ पट्टावलि।

पाडिवालगच्छपट्टावली लिख्यते—

तेण कालेण तेण समएण इमीसे ओसप्पिणीए दुसमसुसमाए समाए एगसागरोवमकोडाकोडीए तिवासअद्धनवमासऊणाए वइक्कते समणे भगव महावीरे कासवगोत्ते कालगए।

तयणतर च समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी सुहम्मनामगणहरे अग्गिवेसायणगोत्ते सत्तुस्सेहे सो पट्टहरो जाओ। अन्ने गणहरा णिरवच्चा सिद्धा, अओ पर सुहम्मस्स गच्छस्स मेरा जाव दुप्पसहसूरी वट्टिस्सइ। अह सुहम्मगणहरो विहरमाणो रायगिहे समोसरिओ। तत्थ रिसहपुत्तो धारणिअत्तओ जबूणामा, सो देसणा सुणिऊण पडिबुद्धो, सावगधम्म पडिवन्नो। मायाग्गहेण अट्ठकन्ना परिणीआ, रयणीए पडिबोहिया, जणगाइ सह दिक्खिओ। वीराओ वारसे वरिसे सुहम्मो केवली। वीरपच्छा वीसइमे वरिसे मुक्ख।

जबू केवलित्तणेण सुहम्मपट्टे ठिओ, तस्स सोलस वरिसा गिहवासे गया। वीसवरिसा छउमत्थे। सेसा केवलित्तणे। सव्वाउ असिइ वरिसस्स सिद्धो।

तओ पर-मण-परमोहिपुलाए आहारगखवगउवसमे कप्पे।
सजमतियकेवलसिज्झणाय जबुम्मि वुच्छिन्ना॥

तस्स पट्टे पभवसामी कच्चायणगुत्तिओ। सो वि उवओगेण गणहरपयजोगो पिक्खइ। रायगिहे सेज्जभवभट्ट नाऊण जिणपडिमा दरिसिआ, पडिबुद्धो, सगब्भिणिभज्जा चिच्चा सजमे पट्ठिओ। त पट्टे ठवित्ता वीराओ पणहत्तरिमे वरिसे देवलोय गओ।

सो वि मणगट्ठे 'दसवियालिय'सुत्त रइऊण, वीराओ नवाणुवरिसे देवलोय पत्तो।

तप्पट्टे जसोभद्दो ठिओ चउदसपुव्वी। तेण दो सीसा कया—सभूइविजओ माढरगुत्तो, बीओ भद्दवाहू पाइणसगुत्तो। तेसु भद्दबाहू वराहमिहिरस्स वितरस्स उवसग्गस्स वज्जणट्ठे उवसग्गहरो विहिओ। ताहे सवे पढमाणो सव्वाणि उवसग्गाणि हरइ। अन्नाणि वि णिज्जुत्तिसुत्ताणि च रइयाणि। तम्मि वारसवरिसिओ दुकालो पडिओ। णिग्गया अप्पठिआ, पुव्वपढिओ णत्थि।

तत्थ णदरायमतिपुत्तो थूलिभद्दो तायमरणसोगेण वइरग्गभावणाभाविअप्पो सभूइविजयस्स सीसो जाओ, सो बुद्धिबलिओ भद्दबाहुसमीवे दसपुव्वाणि सत्थेण गहियाणि। पुट्ठाल्मणत्तणेण विज्जा पयडीकया। भद्दबाहुणा अजुग्ग त्ति काऊण णिच्छूढो। सघेण विण्णविओ, चउपुव्वाणि पाठेण गहियाणि। अओ पर दसपुव्वाणि। भद्दबाहू वीराओ सत्तरिसयवरिसे देवलोय गया।

तत्पट्टे थूलिभद्दो ठिओ सो वीराओ दोसयपणरसाहियवरिसे सग्ग गओ।

इत्थ णिण्हवाइपउरवक्खाण वुड्ढपट्टावलीए अत्थि। तओ णेय, इत्थ सखेव।

तस्स पट्टे महागिरी, सुहत्थी दो आयरिया। तेसु महागिरी उग्गविहारी। एगया उज्जेणीए सपइरण्णो सुहत्थिपसगेण लद्धसम्मत्तो सावगगिहे रायदव्वेण असणाई पडिलाभेइ। सुट्ठु असण दट्ठूण णाओ, सुहत्थिस्स

कहिअ रायपिंडो त्ति । सो भणइ – सव्वत्थवि अत्थि त्ति एव णिसुयवयणं मुच्चा निम्मत्थिओ कहिओ, अओ पर णत्थि समोओ । अण्णत्थ विहरिओ, सुहत्थी वीराओ २९१ वरिसे देवलोयं पत्तो ।

अज्जमहागिरिणा वीराओ २९३ वरिसे सग्ग साहिअ । तस्स सीसो वहुलसरिओ दसपुव्वी विहरमाणो साईणामा वेयपारं विप्प पडिनोहिचा दिक्खिओ । वीराओ ३२५ वरिसे देवलोय गओ ।

तस्स पट्टे साईसूरी रायसभाए उमापवक्ख गहिऊण विप्पाण वाय हणिअ । तेण लोए उमासाई पसिद्धो । 'दसज्झाओ' तत्तत्थ भासो कओ । अण्णे वि गथा रइया । वीराओ ३६१ वरिसे सग्ग गओ ।

तप्पट्टे सामा आयरिओ । तेण 'पण्णवणा'उवगो अगाओ उद्धरिओ । वीररायपुत्तो सडिल्लबुद्धो दिक्खिओ । तेण वहवे खत्तिआ पडिवोहिआ । वीराओ ३७६ वरिसे साईसूरि (सामारियो ?) दिव पत्तो ।

तओ सडिल्लसूरी गणहरो जाओ । तेण सुभोजरायपुत्तो गुत्तो पडिवोहित्ता दिक्खिओ । सो पडिओ पर सरलो त्ति । तेण अज्जगुत्तो त्ति पसिद्धो । सडिल्लो वि अज्जगुत्त पट्टे ठवित्ता, वीराओ ३९९ वरिसे देवलोय गया ।

अज्जगुत्तेण वुड्ढसिट्ठि दिक्खिओ । सो वायरण सिक्खइ । तओ लोया चिट्ठ भणति–'एसो वुड्ढवाई' सोऊण लज्जो ओधारेइ – जाव मम विज्जा णागमिस्सति ताव आयविल होज्जा । एव दढाभिग्गहो णवयार गुणइ । तप्पभावेण अक्खलियवायसत्ती समुप्पन्ना । पर अप्पसीसो भरुअच्छे ठिओ ।

तम्मी(म्मि) काले उज्जयणीए सिद्धसेणदिवायरभट्टो गव्वपव्वए चढिओ । वायत्थ भरुअच्छमग्गे मिलिओ । वुड्ढवाइणा जिओ, सीसो कओ । तेण विक्कमादित्तरण्णो पडिवोहिओ, कल्लाणमदिरथवेण महाकालचेइए ठिया ईसरलिंगी फोडिया, पासपडिमा पयडीकया । अणेगरायपुत्ताण वोहो दत्तो ।

तस्स पुत्तो नागदिण्णो अइचवलो । सो एगया उज्जाणे आगओ सूरिण अवमन्नइ भणइ – किमट्टे कट्ठ ? सूरिणा पडिवोहिओ, दिक्खिओ । पचपुव्वी जाओ । सूरीपयट्ठिओ । सो सूरी वीराओ ५०७ वरिसे सग्ग गओ ।

तओ णागदिण्णसूरी सोरट्ठे विहरमाणो वारवईए धरावइरायसुओ कण्णसेणो, त पडिवोहिऊण दिक्खिओ । तेण वहवे रायपुत्ता पडिवोहिआ । तस्स माउलो णरदेवो, सि(सो)वि सीसत्तण पत्तो पचपुव्वी । तेण गढजिण(ण्ण)राय पडिनोहिओ । नागदिन्नसूरी विक्कमसवच्छराओ ८७ वरिसे देवलोय ।

तप्पट्टे णरदेवसूरी विहरमाणो हत्थिणाउरे गओ । तत्थ सिट्ठी तस्स चउपुत्ता । जिट्ठो पुत्तो सुरसेणो । ससार भणिच्छतो सूरिणा दिक्खिओ । तत्थ रट्ठे मिच्छा पडिवोहिया । णरदेवसूरी वि उग्गविहारेण मेयणीपुरे पाओवगमणसरिसो सथारो कओ । तत्थ धिज्जातीयेण तज्जिओ ण चलिओ । विक्कमओ १२५ वरिसे देवलोय पत्तो । नियडवत्तीहिं देवेहिं महिमा कया ।

तप्पट्टे सूरसेणसूरी विहरमाणो चित्तकूडे ठिओ । तत्थ चडि[या] पडिवोहिया, हिंसा वज्जिआ । तओ [म]दसोरवासी कण्णसेट्ठी, तस्स तणुओ धम्मकित्ती, सो सूरीण पिक्खिऊण सम्मत्त पडिवन्नो । तेण विन्नविओ चउमास ठिओ । सूरसेणसूरिणा चित्तकूडे अणसण कय । विक्कमओ १६७ वरिसे सुरलोअ ।

तओ धम्मकित्ती सूरी पए ठिओ, विहरमाणो उज्जयणीए गओ ।

तत्थ सुरप्पियविप्पो चउदहविज्जापारगओ पसिद्धो, सूरीण भणइ–'केणाणुट्ठाणेण मुक्ख साहिज्जइ ? किं धम्मस्स मूल ? ' ।

सूरिणा कहिय–'निरवज्जज्झवसाणाणुट्ठाणेण जीवो सिव साहिज्जइ । अहिंसा धम्मस्स मूल । सव्वे धम्मा तम्मि पइट्ठिआ ।' केवलिणा एव वुत्त ।

सो भणइ–'को जाणइ केरिसो केवली ?।'

सूरी भणइ–'अहुणा केवली इह खित्ते णत्थि, तहवि तण्णत्थित्त(?) परिक्खिज्जइ। अण्णस्थ कत्थ विसवाओ ण गओ(?)। सव्वण्णुवयणे णत्थि सव्वहा।'

एवं सुत्तालावगा कहिआ, पडिबुद्धो दिक्खिओ। तओ धम्मकित्तिसूरी विक्कमओ २१० वरिसे देवलोयं पत्तो। सूरप्पिय सूरिपए ठिओ।

तप्पट्टे धम्मघोससूरी। धम्मघोसस्स पट्टे निव्वुदसूरी। तस्स पट्टे उदितसूरी। तप्पट्टे चंदसेहरसूरी। चउरो वि दिक्खावण्णत्तो वुड्ढपट्टावलीए णत्थि।

चंदसेहरसूरिस्स पट्टे सुघोससूरी। तेण अजयगढे णरसेहररातिसुओ महिहरो पडिबोहिओ, दिक्खिओ। रट्ठेण रण्णा देसणिव्विसो कओ। सुघोससूरी विक्कमओ ३९७ वरिसे देवलोयं पत्तो।

तओ महिहरसूरी विहरमाणो अजयगढे कणयसिंहरायं पडिबोहित्ता, मरुभूमिं पत्तो। तत्थ बहवो सावगा कया। तओ उडणयरवासी कोल्लगसिट्ठिपुत्तो दाणपिओ पडिबुद्धो दिक्खिओ। किंची ऊण पुव्वधरो अचट्ठिते पट्टे णिवेसिऊण, महिहरसूरी विक्कमओ ४२५ वरिसे परलोयं पत्तो।

दाणपियसूरिपट्टे सुणिचंदसूरी।

तस्स पट्टे दयाणंदसूरिणा रायगिहे णयरे देवदत्तक्खित्तिपुत्त धणमित्त दिक्खिय। दयाणंदसूरिणा विक्कमओ ४७० वरिसे देवलोयं साहिअ।

तओ धणमित्तसूरी महुराए पत्तो। तत्थ णरवम्मपुरोहिअस्स पुत्तो सोमदेवो दिक्खिओ। दसभागाव[से]सपुव्वी धणमित्तसूरी। विक्कमओ ५१२ वरिसे देवत्त पत्तो।

तओ सोमदेवसूरी विहरमाणो महुराए गओ। तत्थ अण्णोवि पचसयवरिसगो मिलिओ। तम्मि देवड्ढिगणी किंचि ऊण पुव्वधरो समभाविअप्पा भणइ–'अप्पविज्जा अहुणा वि पच्छा किं भविस्सइ? तम्हा तुम्हाण अणुण्णा होज्जा, तो पुत्थे लिहामो।' सव्वे वि तं पणि(डि)वन्न। सुत्ताणि पुत्थे लिहियाणि। अओ परं पुत्थे ठिआ विज्जा होहु त्ति काऊण भंडायारे ठाविया। तओ सोमदेवसूरी विक्कमओ ५२५ देवलोयं गओ। पुव्वा वुच्छिन्ना।

तप्पट्टे गुणधरसूरी। तप्पट्टे मदाणंदसूरी। तेण दिगंबरविज्जाणंदो जिओ वाएण। सो दक्खिणे गओ। तेण 'तक्कमंजरीगंथो' कओ। विक्कमओ ६०५ वरिसे दिवं गओ।

तप्पट्टे समंदसूरी। तम्मि समए आयरियाण मइभेओ अणेगविहो उब्भवो। सामायारी वि विसमा। अणेग गंथा णिम्मिआ। अज्जसुहत्थिपरंपराए साहुणो सिथिलायार चेइयवासिणो पउरव्व, सुहम्मपरंपरापालगा अप्पयरा। समदसूरी विहरमाणो भिन्नमालणयरे गओ। तत्थ सोमदेवबंभिपुत्तो इंददेवो पडिबुद्धो संजमिओ विज्जापारगओ। समइसूरी विक्कमओ ६७० वरिसे देवलोयं पत्तो।

तप्पट्टे इंददेवसूरी। तप्पट्टे भद्दसामी। तप्पट्टे जिनपहो आयरिओ। तेण कोर(र)टगामे महावीरचेइए पइट्ठा कया, तओ देवापुरे चेइए। विक्कमओ ७५० वरिसे परलोयं।

तप्पट्टे मानदेवायरिओ उग्गविहारेण विहरमाणो नड्डुलपत्तने [ग]ओ णिव्वुइमग्ग विसेसेण परूवेइ। तम्हा लोए,

णिव्वुइआयरिओ । एसो जत्थ विहरइ तत्थ रोगाई ण पभवंइ । तेण लोया भणति–'जुगप्पहाणो एसो ।' सि[रि]मालविप्पो[ण] जिनधम्म भणई सड्ढा जाया । एगो पल्लिवालविप्पो सरवणणामो वेयपारगो आयरियमहिमं नाऊण पवज्जा पडिवन्नो । तेण समइ[ए] तक्कसत्थो णिम्मिओ । णिव्वुइआयरिओ विक्कमओ ७८० वरिसे देवलोयं [पत्तो] । सरवणायरिओ णिव्वुइसिस्सत्तणेण पसिद्धो । णिव्वुइकुलो अप्पसाहुवग्गेण विहरइ । एगया रयणीए सूलरोगेण कालगओ । अवसेसा सीसा आयरियमिच्छंति को पट्टजो[ग्गो] विसण्णा अच्छन्ति । तत्थ कोडिगणो जसा(या ?)णंदसूरी सो तत्थागओ । तेण तेसिं सासण कय–'तुम्हाण मज्झे सूरो जुग्गो ।'

ते भणति–'तुम्हे ठावेह ।'

तेण ठविओ सूरायरिओ । तओ साहुणा मन्निओ गच्छवुड्ढी जाया । दोवि आयरिया सगया विहरति परमपीइमणा । एगया दुक्कालो पडिओ । तेण दोवि मालवदेसे भिन्नसंघाडिया विहरति । सूरायरिओ महिंदणयरे चउमासठिओ । जयाणदसूरी उज्जयणीए कालगओ सोच्चा, सूरायरिओ सोपा(गा)उलो जाओ । तस्स सीसो देल्ल-महत्तरो भणइ–'ण जुत्त ।' एवं आयरिएणावि देल्लमहत्तर पट्टे ठविऊण अट्ठम-अट्ठमपारणते आयविलमाढत्तो सव्वमणिच्च झायमाणो उज्जयणीए अणसण किच्चा देवलोय गओ ।

तओ देल्लमहत्तरायरिओ विहरमाणो भिन्नमालपुरे आगओ । तत्थ सुप्पभो णाम विप्पो वेयपारगो । तस्स पुत्तो दुग्गो, सो लोयायतिओ परलोय ण पमाणेइ । आयरिएण बोहिओ दिक्खिओ, निम्मलचरित्तो विहरइ । पुणो साणपुरे एगो सुहडवखत्तिओ । तस्स पुत्तो गहिलो । तेण आयरियाण भणिअ–'पुत्तस्स गहिलत्त फेडेह तस्स सासण देमि ।' आयरिएण भणिअ–'पुत्त दिक्खेमि' । तेण पडिवन्न । तओ विज्जापओगेण सुद्धो बुद्धो दिक्खिओ, सत्थपारगओ । देल्लमहत्तरेण दोवि आयरियपए ठविआ । पच्छा कालगओ ।

दुग्गसामी गग्गायरिओ य एकया सिरिमालपुरे गया । तत्थ धनी नाम सिट्ठी जिणसावओ । तस्स गिहे सिद्धो णाम रायपुत्तो । सो गग्गरिसिआयरिएण दिक्खिओ अईवतक्कबुद्धीओ । अण्णया भणइ–'अओ पर तक्क अत्थि ण वा ?' दुग्गायरिएण कहिय–'बुद्धमए अत्थि ।' गतुमाढत्तो । गग्गरिसिणा कहिअ–'मा गच्छ, सद्धाभगो भावी ।' तेण कहिअ–'तत्थ आगमिस्सामि ।' गओ, समत्तहीणो आगओ । दुग्गायरिएण बोहिओ । पुणो गओ । एव पुणो पुणो गमणागमणं । तदा गग्गायरिएण वि जयाणदसूरिपरपरासीसो हरिभद्दायरिओ महत्तरो बोहमयजाणगो बुद्धिमतो विण्णविओ–'सिद्धो ण ठाति ।' हरिभद्देण कहिय–'को वि उवाओ करिस्सामि ?' सो आगओ, बोहिओ, ण ठाति । ताहे हरिभद्देण बोधणट्ठ 'ललिअवित्थराविति' रइया तक्कमथरा । हरिभद्दो णियकाल णच्चा गग्गायरियस्स समप्पिया । अणसणेण देवलोय पत्तो । तओ कालतरेण आगओ, गग्गेण दिण्णा । सो वि लद्धट्ठो 'अहो ! उवइपडिओ हरिभद्दगुरू ।' सम्मत्त पडिवन्नो । जिणवयणे भावियप्पा उग्गतव चरमाणो विहरइ । अह दुग्गसामी विक्कमओ ९०२ वरिसे देवलोय गतो । तस्स सीसो सिरिसेणो आयरियपए ठिओ । गग्गायरिया वि विक्कमओ ९१२ वरिसे काल गया ।

तप्पट्टे सिद्धायरिओ । एव दो आयरिया विहरति । सिरिसेणो मालव पत्तो । तत्थ नोलाईए नम्मदाससिट्ठि-सुओ दिक्खिओ । णयरसवकारियचेइयपइट्ठा कया । सिद्धरिसी आयरिओ विक्कमओ ९६८ वरिसे देवलोय पत्तो । तप्पट्टे धम्ममई आयरिओ । तप्पट्टे नेमसूरी । तप्पट्टे सुवरसूरी । तम्मि समए नवो गणभेया । आयरियाण विवाओ

समुट्ठिओ, णियणियसावयसावियावि सगहिआ। सुवइसीसा [महि]यलविहारिणो, तम्मि एगो दिणसेहरो सो अईवपडिओ। सुवइसूरी विक्कमओ ११०१ वरिसे देवलोय गओ। तप्पट्टे दिणेसरसूरी उग्गविहारी महप्पा विहर माणो पट्टणे गओ। तत्थ महेसरजातीया वणिया पडिबोहिया।

तप्पट्टे महेसरसूरी नड्डलाइ गओ। तत्थ पल्लिवालविप्पा सड्ढा पत्ता, सावगा कया। लोएण 'पल्लिवालगच्छ' त्ति णाम कओ। महेसरसूरी विक्कमओ ११५० वरिसे देवलोय गया।

तप्पट्टे देवसूरी तेण सुवण्णगढे पासणाहचेइय त पइट्ठिय। पुणो महावि(वी)रे सुवण्णकलस ठविअ। तम्मि अवसरे पुण्णमियाइ गच्छा पयडिया। देवसूरी विक्कमओ १२२५ वरिसे देवलोय गया।

तप्पट्टे जिणदेवसूरी जोइससत्था णिम्मिआ। तेण सोणगरा पडिबोहिआ। जालधरतडाकसमीवे चेइय पइट्ठिय। विक्कमओ १२७२ वरिसे कालगओ।

तप्पट्टे रुण्णसूरी। तप्पट्टे विण्हुसूरी। तप्पट्टे आमदेवसूरिणा 'कहाकोसा'दि गथा रइया।

तप्पट्टे सोमतिलकसूरी। तप्पट्टे भीमदेवसूरी, कोर(र)टगामे चेइए पइट्ठा कया विक्कमओ १४०२ वरिसे।

तप्पट्टे विमलसूरी मेदपाटदेसे उदयसायरपालिचेइयजिणबिंब ठविअ।

तप्पट्टे नरोत्तमसूरी विक्कमओ १४९१ देवलोय। तप्पट्टे साइसूरी।

तप्पट्टे हेमसूरी चिंतामणिपासणाहसमरणकरणेण 'चिंतामणिय' इति णामए पसिद्धे १५१५ विक्कमओ।

तप्पट्टे हरससूरी पोसाले ठिआ।

तप्पट्टे भट्टारकरुमलचदो। तप्पट्टे गुणमालि(णि?)क। तप्पट्टे भ० सुन्दरचदो वि० १६७५। तप्पट्टे भ० प्रभुचदो विद्यमानो वर्त्तते।

॥ इति गुरुपट्टावली चिन्तामणीया पाडिवालगच्छीयस्य। श्रीरस्तु ॥ जाइडानगरे ॥

✿

रघुनाथर्षि रचित
नागपुरीयलुङ्कागच्छपट्टावलीप्रबन्ध ।

——*※——

॥ ॐ नमः ॥ श्रीसर्व्वकलाय(यै) न[मः] ॥

अर्हदनन्ताचार्योपाध्यायमुनीन्द्ररूपशिष्टाय ।
इष्टाय पञ्चपरमेष्ठिनेऽस्तु नित्य नमस्तस्मै ॥ १ ॥

प्रणिपत्य सत्यमनसा जिनप वीर गिर गुरुश्चापि ।
पट्टावलीप्रबन्धो विलिख्यते निजगणज्ञप्त्यै ॥ २ ॥

१. इह किलावसर्पिण्या श्रीऋषभाजित-सभवाभिनन्दन-सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ-सुविधि-शीतल-श्रेयास-वासु-पूज्य विमलानन्त धर्म्म शान्ति-कुन्थु अर मल्लि मुनिसुव्रत-नमि-नेमि पार्श्वेषु सार्व्वेषु त्रिलोकीदीपकेषु परिनिर्वृतेषु नन्दननृपजीवो दशमदेवलोकतश्च्युतो द्विजवरऋषभदत्तगृहिणी-देवानन्दोदरेऽवतीर्णः पुत्रत्वेन । तदैव देवराजेन शक्रेणावधिविज्ञातभगवदवतारेण विधिवद् विहितहितकृत्यप्रस्तवेन विमृष्टम्—'अहो ! कर्म्मणा विपाको यच्चरमतनुरपि चतुर्विंशतितमस्तीर्थकृन्महावीरनामा द्विजातिकुलेऽवातारीद्' इत्यादि सकल यस्य चरित्र परमपवित्र सुवाचितमेव । तस्योत्पन्नकेवलस्य भगवतः श्रीइन्द्रभूति १-अग्निभूति २-वायुभूति ३-व्यक्त ४-सुधर्म्म ५-मण्डित ६-मौर्यपुत्र ७-अकम्पित ८-अचलभ्रातृ ९-मेतार्य १०-प्रभास ११ नामान एकादश गणधरा जाताः । तेषु प्रथमः श्रीइन्द्रभूतिर्गौतमगोत्रीयः गुव्वरग्रामनिवासिद्विजवरवसुभूतिसुतः समग्रोत्तमार्थपृथ्वीमातृकुक्षिशुक्तिमुक्तिसमः सप्तकरोन्नततनुः पद्मगर्भगौर-वर्णः समधीतसकलहृद्यविद्योऽन्तिमजिनवचनामृतपानान्तरमेव समुपात्तदीक्षश्चतुर्दशपूर्वरचनाकरणप्रथितज्ञान(वित्त ?)-विभवः सकलसकलसाधुमण्डलाग्रणी[ः] पञ्चाशदब्दान् गार्हस्थ्यस्थितिभाक् त्रिंशत्समा(मा)श्छद्मस्था[ऽवस्था]भृत् । तदनु समुत्पन्नकेवलज्ञानः प्रतिबोधितानेकभव्यजननिकरः श्रीवीरनिर्वाणाद् द्वादशवर्षे सिद्धः । एव पूर्णद्वानवतिसमायुः प्रथमपट्टोदयाचलभानुः ॥ १ ॥

२. तत्पट्टे पञ्चमगणभृत् सुधर्म्मस्वामी, श्रीवीरात् सिद्धो विंशतितमेऽब्दे ॥ २ ॥

३. तत्पट्टे श्रीजम्बूस्वामी श्रीवीरात् चतुःषष्टिमितेऽब्दे मुक्तः । श्रीवीरे बुद्धे चतुःषष्टिसमा यावत् केवलज्ञान-प्रदीपि । अथ श्रीजम्बूस्वामिनि मोक्षं गते मनःपर्य्यवज्ञानम् १, परमावधि २-पुलाकलब्धि ३-आहारकतनु ४-उपशम-श्रेणि ५-क्षपकश्रेणि ६-जिनकल्पित्वम् ७, परिहारविशुद्धि ८-सूक्ष्मसपराय ९-यथाख्यातनामक चेति चारित्रत्रितयम् १०—एतेऽर्थाः व्युच्छिन्नाः ॥ ३ ॥

४. तत्पट्टे श्रीप्रभवप्रभुः श्रीवीरात् ७४तमेऽब्दे स्वर्गतः ॥४॥

५. तत्पट्टे श्रीशय्यम्भवसूरिः श्रीवीरात् ९८तमेऽब्दे देवत्व प्राप ॥५॥

६. तत्पट्टे श्रीयशोभद्रसूरिः श्रीवीरात् शत १०० तमे वर्षे देवत्व गतः ॥६॥

७. तत्पट्टे श्रीसम्भूतिविजयस्वामी श्रीवीरात् १४८ तमेऽब्दे स्वरियाय ॥७॥

८. तत्पट्टे श्रीभद्रबाहुस्वामी निर्युक्तिकृत् श्रीवीरात् १७० तमे वर्षे स्वर्गं गतः। श्रीवीरात् २१४ वर्षेऽव्यक्तवादी तृतीयनिह्नवोऽभवत् ॥८॥

९ तत्पट्टे श्रीस्थूलभद्रस्वामी २१५ वर्षे स्वर्जगाम ॥९॥
१० तत्पट्टे श्रीमहागिरिर्जिनकल्पाभ्यासकृत् ॥१०॥

श्रीवीरात् २२० वर्षे शून्यवादी तुर्यो निह्नवोऽभूत्। श्रीवीरात् २२८ वर्षे क्रियावादी पञ्चमो निह्नवोऽजनि। एकस्मिन् समये क्रियाद्वय ये मन्यन्ते ते क्रियावादिनः ॥

११. अथ श्रीमहागिरिपट्टे श्रीसुहस्तिसूरि.। येन सम्प्रतिनामा नृप. प्रतिबोधित[ः] ॥११॥

१२. तत्पट्टे श्रीसुस्थितसूरि कोटिकगणस्थापयिता ॥१२॥

१३ तत्पट्टे श्रीइन्द्रदिन्नसूरिः ॥१३॥
१४ तत्पट्टे श्रीआर्यदिन्नसूरिः ॥१४॥
१५. तत्पट्टे श्रीसिंहगिरि[ ] ॥१५॥

१६ तत्पट्टे दशपूर्वधरः श्रीवयरस्वामी। यतो वयरीशाखा प्रवृत्ता ॥१६॥

१७. तत्पट्टे श्रीवज्रसेनाचार्य[ः] श्रीवीरात् ४७० वर्षे स्वर्गं गत.। अस्मिन्नेव समये विक्रमादित्यो नृपोऽभूत्। कीदृशः ? श्रीजिनधर्मपालक., पुन परदु खापनोदक, पुन वर्णादिव्यक्ति सम्यग् विधाय पृथक् पृथक् स्वस्वकुलमर्यादारक्षको जात ॥१७॥

१८ तत्पट्टे श्रीआर्यरोहस्वामी ॥१८॥
१९ तत्पट्टे श्रीपुष्यगिरिस्वामी ॥१९॥
२० तत्पट्टे श्रीफल्गुमित्रस्वामी ॥२०॥
२१ तत्पट्टे श्रीधरणगिरिस्वामी ॥२१॥
२२ तत्पट्टे श्रीशिवभूतिस्वामी ॥२२॥
२३. तत्पट्टे आर्यभद्रस्वामी ॥२३॥
२४ तत्पट्टे आर्यनक्षत्रस्वामी ॥२४॥
२५ तत्पट्टे श्रीआर्यरक्षितस्वामी ॥२५॥
२६ तत्पट्टे श्रीनागेन्द्रसूरि[ः] ॥२६॥

२७ तत्पट्टे श्रीदेवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणाद्या. सूरिपाटा बभूवु.। ते च कीदृशा ? तदाह गाथया—

सुत्तत्थरयणभरिए खम दम-मद्दवगुणेहिं संपन्ने।
देवड्ढिखमासमणे कासवगुत्ते पणिवयामि ॥ १

एव सप्तविंशतिपट्टा जाता। श्रीवीरात् ९८० वर्षेषु गतेषु आगमा पुस्तके लिखितास्तत्कारण कथयन् प्रथम गाथामाह—

वल्लहिपुरम्मि नयरे देवड्ढिपमुहेण समणसंघेण ।
पुत्थे आगम लिहिया नवसयअसीयाउ वीराओ ॥ २

एकदा प्रस्तावे देवर्द्धिक्षमाश्रमणे[न] कफोपशमाय गृहस्थगृहादेकः शुण्ठीग्रन्थिरानीतो याचनया । स चाहारसमये विस्मृतिदोषान्न जग्ध । अथ प्रतिक्रमणावसरे प्रतिलेखनाया क्रियमाणाया धरातले स शुण्ठीग्रन्थिः कर्णात् पतितस्तच्छब्दं श्रुत्वा ज्ञातमहो ! शुण्ठीग्रन्थिर्विस्मृतः । समयानुभावो ह्ययम्, यन्मतिहीना जाताः । अधुना आगमाः कथं मुखे स्थास्यन्तीति विमृश्य वल्लभीपुरे सकलाचार्यसमुदाय मेलयित्वाऽऽगमाः पुस्तकारूढाः कृताः । पूर्वं मुखपाठः श्रुत आसीत् । पुनः आचाराङ्गीय महापरिज्ञानामक सप्तममध्ययन साधूना पठ्यमानमासीत् । तस्य षोडशाप्युद्देशा किञ्चित् कारण विज्ञाय देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणैर्न लेखिता अतस्ते विच्छिन्नाः ॥२७॥

२८. तत्पट्टे श्रीचन्द्रसूरिः, येन संग्रहणीप्रकरण रचितम् । स मलधारगच्छेऽभूत् । अतोऽग्रे चतस्रः शाखा अभूवन्; चन्द्रशाखा १, नागेन्द्रशाखा २, निर्वृतिशाखा ३, विद्याधरशाखा ४ चेति ॥२८॥

२९. तत्पट्टे विद्याधरशाखाया श्रीसमन्तभद्रसूरिर्निर्ग्रन्थचूडामणिरिति यस्य विरुदोऽभूत् ॥२९॥

३०. तत्पट्टे श्रीधर्मघोषसूरिः पञ्चशतयतिपरिवृतो नानादेशेषु विहरन् क्रमादुज्जयिनीपार्श्ववर्तिधाराया पुरि पु(पर)मारवशमुकुटमणिश्रीजगद्देवमहाराजपुत्ररत्न श्रीसूरदेवेश्वर नानाप्रत्ययदर्शनपूर्वकं प्रतिबोध्य श्रीजैनधर्मे स्थिरीचकार । पुनः सप्तकुव्यसनपरिहार कारितवान् । तत एव श्रीधर्मघोषगच्छ[ः] सर्वत्र विश्रुतो जातः । तदैव च श्रीसूरदेवलघुभ्राता सापलनामा, सोऽपि प्रतिबुद्धः । त्रिंशत्तमोऽय पट्टः श्रीवीरशासनेऽजनि ॥३०॥

३१. तत्पट्टे श्रीजयदेवसूरि[ः] ॥३१॥

३२. तत्पट्टे श्रीविक्रमसूरि[ः] दुष्टकुष्ठादिरोगदूरीकरणेनानेकोपकारकृत् ॥३२॥

३३. तत्पट्टे श्रीदेवानन्दसूरिः । एतस्मिन् गणाधीशे श्रीसूरदेवापत्यत. सूरवशः प्रतीतो जगति जातः, तथैव सापलावशोऽपि । राज्य तु म्लेच्छैरपहृतम् । ततो धनदसमसपत्त्या शत्रुञ्जयादितीर्थयात्राविधानेन सघपतिपद प्रोत्तुङ्गयवनाधीशसाहिशिरोमणिभिः प्रदत्तम्, सकलजैनसङ्घेनापि ॥३३॥

३४. तत्पट्टे श्रीविद्याप्रभसूरिः ॥३४॥

३५. तत्पट्टे श्रीनरसिंहसूरिः ॥३५॥

३६. तत्पट्टे श्रीसमुद्रसूरिः ॥३६॥

३७. तत्पट्टे श्रीविबुधप्रभसूरिः । सर्वेऽप्येते सूरयो जाग्रत्तरप्रत्यया बभूवुः ॥३७॥

३८. तत्पट्टे सवत् ११२३ श्रीपरमानन्दसूरिस्थितिः । तस्मिन् गुरौ जाग्रति ११३२ वर्षे सूरवशः कुतश्चित् कर्मदोषात् दुःखी प्राप्तः परिकरेण । ततो गुरुणाऽऽज्ञा(ज्ञ)प्तम्—'भो ! यूय नागोरनगरे वसत । तत्र स्थिताना भवता महानुदयो भावी'ति श्रुत्वा सूरवशजो वामदेवसघपतिः सकलत्र एव नागोरनगरे उषितः, सवत् १२१० वर्षे सुखेन । तत्र प्रतिवर्षं महती कुलवृद्धि[ः] जाता । १२२१ वर्षे सूरवशीयसघपतिसतीदासगृहे ससाणीनाम्नी माता जाता । १२२९ वर्षे नागोरपुरादुत्थिता मोरप्याणानामग्रामेऽन्तर्हिता, १२३२ वर्षे ससाणीमाता प्रकटिता । मोलासूरवशीयस्य स्वप्ने दर्शन दत्त्वा पुत्तलिका प्रकटीभूता । मोलाकेन देवालय[ः] कारित[ः] ॥३८॥

६१. तत्पट्टे श्रीदेपागरसूरयो बभूवुस्ते परीक्षकवंशीयाः कोटडानिगमे पेतसीनामा जनकः, धनवती जननी, नागोरपुरे चारित्रं, पदमपि तत्रैवाप्तम्। संवत् १६१६ चित्रकूटमहादुर्गे कावडियान्वयो भारमल्लो धनी तपागणीयोऽभूत्। तेन श्रीदेपागरसूरीणामभिधानं शुद्धक्रियाधारकत्वं च श्रुतम्। तदादित एव तद्गुणरञ्जितचेतस्कोऽवदत् श्लोकः–

धन्यो देपागरस्वामी प्रदीपो जैनशासने।
एष एव गुरुर्मेऽस्ति धन्योऽहं तन्निदेशकृत्॥ ८

इति भावनया शुद्धात्माऽभूद् भारमल्लः। तस्मिन्नवसरे तत्रत्यो भामानामा नाहटोऽस्ति। तद्गृहे पुण्ययोगाद् दक्षिणावर्त्तः शङ्खः प्रादुरभूत्। तत्सान्निध्याद् गृहेऽष्टादश कोटयो धनस्य प्रकटीभवन्ति। अथ षण्मासीमान्ते शङ्खदेवेन भामाकस्य स्वप्ने दर्शनं दत्वा निवेदितं च–'भो भामासाह! त्वं शृणु, तव भार्याया उदरे पुत्रीत्वेन कश्चिज्जीवः समेतोऽस्ति। कावडियाभारमल्लभार्योदरे सुकृती प्रथमं जीवः सुतोऽवतीर्णोऽस्ति। ततस्तत्पुण्यप्रेरितो भारमल्लकावडियागारे गमिष्यामि' इत्याकर्ण्य भामाकोऽवदत्–'एवं मा याहि, यथाऽहं करोमि तथा गच्छ' इत्युक्ते तेन 'आम' इति भणितम्। अथाहर्मुखे जाते सर्वैः स्वजनसहितः शङ्खस्वनजागरूकीकृतानेकलोकः स्वर्णस्थाले दक्षिणावर्त्तशङ्खं निधायातिमहर्घ्यवस्त्रेणाच्छाद्य भामाको भारमल्लभवनाभिमुखसमागतः। तमायान्तमालोक्य सानन्दं सादरं भारमल्लोऽभिमुखः मिलितः, पृष्टं च–'किमागमनप्रयोजनं, प्रोच्यताम्' इत्युदिते भामाकोऽवक्–'वर्येभ्य! सभ्यसनन्धिन्! मम पुत्री तव च पुत्रो भविष्यति, तयोः संबन्धं कर्त्तुं श्रीफलस्थाने इममद्भुतमाहात्म्यं शङ्खं ददामि' इति निशम्य समुत्पन्नपरमामोदो बहुमानमानपूर्वकमग्रहीत्। भारमल्लः गृहकोष्ठकान्तः समभ्यर्च्य सम्यक् चन्दनचतुष्किकोपरि संस्थाप्य संस्मृतो देवस्तेनाष्टादशकोटिधनं तत्र प्रकटितम्। अत्र महती कीर्त्तिर्विस्तृता।

एकदा तत्र वनान्तरुच्चैर्मण्डपाधो धर्मध्यानं विदधत् साधुगुणग्रामाभिरामः श्रीदेपागरस्वामी शुद्धतपोधनो भारमल्लेन दृष्टो विधिवद् वन्दितश्च। शुद्धधर्मोपदेशामृतं पीतं श्रवणाभ्याम्। अतिप्रसन्नेन भारमल्लेन विमृष्टमहो! महान् भाग्योदयो मे प्रकटितो यदीदृग्गुणगौरवो दृष्टः। सर्वेऽर्था मे सेत्स्यन्ति। तदा भारमल्लोऽन्ये च बहवः श्रावका जाता नागोरीलुङ्कागणीयाः। अथ भारमल्लस्य भामानामकः सुतोऽजनि। महान् महः कृतः। सर्वत्र दानादिनाऽर्थिजनमनोरथाः पूरिताः। अन्येऽपि ताराचन्द्रादयः पुत्रा अभूवन्। तत्र भामासाह ताराचन्द्रौ विश्रुतौ जातौ। स्वगच्छरागेण बहवो जनाः स्वगणे समानीताः। पुनः श्रीराणाजीतोऽमात्यपदं लात्वा बलिनौ जातौ। ताराचन्द्रेण सादडीनाम नगरं स्थापितम्। सर्वत्र पौषधशालादिकानि स्थानानि कारितानि। स्थाने स्थाने, पुरे पुरे, ग्रामे ग्रामे बहुजनेभ्यो धनं दायं दायं स्वगणीयाः कृताः। श्रीनागोरीलुङ्कागणोऽतिख्यातिमाप। पुनर्भामासाहेन दिगम्बरमतगा नरसिंघपोराः स्वगणे समानीताः। बहु स्वं दत्त्वा १७०० गृहाणि तेषामात्मीयानि कृतानि। भिण्डरकादिपुरेषु तदा च जातं श्रावकगृहाणां चतुरशीतिसहस्राधिकं लक्षमेकम्। पुनः देपागरसूरेर्विजयराज्ये लुदिहानानिगमनिवासी श्रीचन्द्रनामा वम्भश्चतुरशीतिकोटिवित्तेश्वरोऽभूत्। तस्य सोदरः सुरीभूतः प्रत्यहं वणिक्पुत्राणां लेखानितस्ततो दत्ते, येन बहुधनोत्पत्तिर्भवति। स चैकदा नायातस्तदा श्रीचन्द्रेण पृष्टम्, 'भ्रातः! ह्यः कथं नागतः?' तदा सुरेणोक्तम्–'भ्रातः! ह्यो महाविदेहे प्राचि श्रीसीमन्धरजिनं नन्तुमिन्द्रोऽगात्,

तेन सहाष्टमपि गतोऽसुरम्। व्याख्यानान्ते शक्रेणोक्तम्–'प्रभो! भरतक्षेत्रेऽपि कश्चित् सत्यः साधुर्वर्तते नवा' इति पृष्टे प्रभुणाऽभाणि–'हरे! अस्मिन् समये देपागरनामा मुनिपोऽस्ति, स चतुर्थारकमुनिसमसयमभृत्।' इमा प्रवृत्तिमाकर्ण्य श्रीचन्देनोक्तम्, 'स क्व साम्प्रतमस्ति?' देवः प्राह–'सन्मानकपुरे तपस्यति' इत्याकर्ण्य हृष्टचेतसा श्रीचन्देन स्वमानुषः प्रेषितस्तत्रत्यश्राद्धानामिति कथापित च–'भवद्भिर्देपागरस्वामिन नत्वा मदीयाऽऽगमनप्रार्थना कार्या। ततस्तैः पुराद् बहिर्देवमण्डपे स्थिता दृष्टाः प्रणताश्च भक्त्या विज्ञप्ताः। तदा श्रीसूरिभिरुक्तम्–'ज्ञास्यते साधुधर्मोऽस्ति।' ततो द्वि-त्रिष्वब्देषु गतेषु श्रीश्रीपूज्या लुदिहानानाद्योद्याने निरवद्यप्रदेशे तपस्यन्तः स्थिताः।' तदा प्रागुज्ञापितेनाऽऽरामिकेण वर्द्धापनिका श्रीचन्द्राय दत्ता। सोऽपि सत्वर नग्नपद एवागत्य ववन्दे, तुष्टाव च–'धन्योऽसि स्वामिन्! भवादृशः सयमी कोऽपि साम्प्रत नास्ति।' तत्र श्रीसूरिभिरुपदेशामृतपानेन तच्छ्रवसी तोषिते। तस्मिन्नेवावसरे श्रीचन्दसुतया धर्मकुमरीत्याख्यया त्यक्तश्वशूरादिसवन्धया ज्ञाततत्त्वया गृहे स्थितयैव श्रावकाचारपालनपरया सर्वागमश्रवणावगतपरमार्थया तत्राऽऽगत्य विधिवद् गुरवोऽभिवन्दिताः। गुरुवचनसुधारससुहितया दीक्षाकरणाय चेतो विशो य स्वयमेव तत्साक्षिक चरणमात्तम्। तिसृभिः धर्मसखीभिः सार्द्धं लोके महान् धर्मप्रकाशोऽजनि यशश्च। अस्मिन् गणे सैव प्रवर्त्तिनी प्रथमाऽभूत्। तयापि द्वादशक्रोशीपरिमण्डलविहारः कृतो नाधिकः। एव श्रीदेपागरस्वामिना धर्मोद्द्योत विधायाऽऽचार्य पद नक्षमित २७ समाः परिभुज्य मेडतानगरेऽनशन कृत्वा २१ दिनान्ते स्वर्गतिः प्राप्ताः॥ ६१॥

६२. तत्पट्टे श्रीवैरागरस्वामी दिदीपे श्रीमालीज्ञातिः, भल्लराजः पिता, रत्नवती जननी, नागोरपुरे जन्म, चारित्र पद च तत्रैव, एकोनविंशति १९ समाः पदवीभोगः। मेडतानगरे ११ दिनान्यनशन कृत्वा देवत्व प्राप॥ ६२॥

६३. तत्पट्ट श्रीवस्तुपालोऽलञ्चक्रे। कडवाणीयागोत्रे महाराजः पिता, हर्षानाम्नी माता, नागोरपुरे जन्म, चरण पद च नागोरपुरे, वर्षसप्तक पदवी भुक्ता। सप्तविंशति २७ दिनान्यनशन कृत्वा मेडतानगरे स्वर्जगाम॥ ६३॥

६४. तदीयपट्टपरिष्कर्त्ता श्रीकल्याणसूरिर्जातः। शिवदासः पिता सुराणागोत्रीयः, कुशलानाम प्रसूः, राजलदेसरनिगमे जन्म, बीकानेरे चारित्र पद च नागोरपुरे जातम्। चतुर्विंशतिसमाः भुक्तम्, लवपुर्यां दिनाष्टकमनशन देवलोकालङ्कारतामियायाय सूरिर्महाप्रतापः, शत शिष्याणा हस्तदीक्षितानामजनि जागरूकप्रत्ययो गच्छवृद्धिकृत्॥ ६४॥

६५. तत्पट्टे भैरवाचार्यो दिदीपे सूरवशजः।
तेजसीजी पिता तस्य लक्ष्मीनाम्नी प्रसूरभूत्॥ ९

जन्मचारित्रपट्टश्री कृत्य नागोरपूर्वरे।
द्वादशाब्दी तु सूरित्वे दिग्दिनानशन कृतम्॥ १०

सोजताख्यपुरे प्राप देवत्वं शुद्धसयमः।
पञ्चषष्टितमः सूरिः क्रियाद् वृद्धिं गणे पराम्॥ ११

यस्य धर्मराज्येऽनेके व्यतिकराः शुभा जाताः। नागोरपुरे गहिलडागोत्रीया हीरानन्दप्रमृतयो निःस्वीभूय मेडतापुरे श्रीगुरुवन्दनाय गता। निशीथे भैरवविहितसानिध्यतः श्रीश्रीपूज्यैरेतेषामृद्धि-वृद्धिवचो दत्तम्। तेऽपि तस्य गुरोः कृपया पूर्वाशानगरेषु महेभ्या भूता। तदनु तदपत्यैः ढिल्लीश्वरराजगच्छेष्ठिपदं महाराजपदं च प्राप्तम्। फर्कसेरतो वितीर्णकोटिधनैरिदं तु प्रसिद्धतरमाख्यानम्, ततो न विस्तृत्य लिखितम्॥ ६५॥

६६. तत्पट्टे श्रीनेमिदासस्वरिरभवद् विजयी सूरवंश्यः, रायचन्द्रः पिता, राजना जननी, जन्म-चारित्रे वीकानेरपुरे, पदमहिपुरे गृहीतम्। तत् १७ समा भुक्तम्। दिनसप्तकानशनेन उदयपुरे स्वरिताः॥ ६६॥

६७ तत्पट्टं शोभयामास श्रीआसकरणाचार्यः। सूरवंशीयः ऊधमल्लः पिता, ताराजीति मातृनाम, मेडतापुरे जन्म, चारित्रं पदं च नागोरपुरे। एकदा श्रीश्रीपूज्या नागोरनगरे स्थिताः सन्ति। तस्मिन्नवसरे भागचन्दनामा सूरवंश्यः स्वपितृ पितृव्य भ्रातृ भ्रातृज-पुत्रादिपरिवृतो व्याख्यानं शृण्वन्नुपाश्रये स्वस्थाने उपविष्टोऽस्ति। तदानीं यशोदाकुक्षिजास्तस्य पञ्चापि पुत्रास्तत्र स्थिताः सन्ति। चत्वारस्तु सुता अग्रजाः स्वोचितस्थाने निषण्णाः। पञ्चमोऽङ्गजः सदारङ्गनामा निजपितृव्याङ्के उपविष्टः। महत्या श्रीसङ्घपर्षदि व्याख्याने जायमाने बालस्वभावत्वात् सदारङ्गः पितृव्याङ्कादुत्थायोपपट्टं 'वृद्धमुनिसमुपवेशनभूः' इयमिति भणिते-'अहं यतिरेव भूत्वा निषेत्स्यामि अत्र' इत्युक्तं सदारङ्गेण सर्वेषु मौनमाधाय स्थितेषु। श्रीश्रीपूज्यास्ततो विहृत्य मेडतापुरे गतास्तदनु तेन सदारङ्गेण गृहे मात्रादीनां पुरतो निजसंयमग्रहणाशयः प्रोक्तः, अत्याग्रहेण तदाज्ञामादाय श्रीसूरीनाकार्य च कृतसुमतिसङ्गेन सदारङ्गेणामितवसु त्यक्त्वा महामहपूर्वकं दीक्षाऽङ्गीचक्रे। नवमवर्षे तत्प्रभृत्येवाऽध्येतुं लग्नः, वर्षपञ्चकं एवानुचानो जातः। ततः पञ्चदशाब्दिकेन षष्ठतपोभिग्रहो गृहीतः, महान् तपस्वी विकृति-त्यागी शुद्धाशयो विज्ञश्चेति मत्वाऽऽचार्यैरन्त्यसमये श्रीवर्द्धमाननाम्नोऽन्तेवासिनो गणभृत्पददानावसरे प्रोक्तम्-'भवताऽऽत्मीयपट्टं सदारङ्गाय देयम्' इति। १८ समाः पदं भुक्तम्। दिननवकानशनकरणेन श्रीश्रीपूज्यैर्द्यौः प्राप्ता सं० १७२४ फाल्गुने॥ ६७॥

६८ तदीयपट्टे वर्द्धमानाचार्याः। वैद्यवंश्यः सूरमल्लपिता, जननी लाडमदेजीति, जापासरे जन्म, चारित्र-महिपुरे, पदमपि तत्रैव संवत् १७२५ माघशुक्लपञ्चम्याम्। तदनन्तरं संवत् १७३० वर्षे वैशाखशुक्लदशम्यां श्रीवीकानेरे पादा अवधारिताः श्रीश्रीपूज्यैः। तत्र महान् महः संजातः, श्रीफतै प्रभावना कृता। श्रीदेव गुर्वाज्ञाचिन्तामणिविभूषितमस्तकैः श्रावकैः महती प्रतिष्ठा व्यधायि। ततोऽनेकक्षेत्रेषु विहृत्य पुनर्वीकानेरे समेत्य स्वान्त्यसमयवेदिभिर्दिनसप्तकानशनमाश्रित्य त्रिदिवोऽलञ्चक्रे तपाष्टकपदभोगिभिः श्रीश्रीपूज्यैः॥ ६८॥

६९ श्रीवर्द्धमानाचार्यैर्गुरुदेववचःस्मरद्भिः श्रीसदारङ्गसूरयो निजपट्टे स्थापिताः। तत्र महति महे विधीयमाने श्रावकैरनेकधा मिलिते स्व-परगणीये श्रीसंघे महान् प्रमोदः सर्वेषां भवन्नस्ति। तस्मिन्नवसरे सुचियायदेवीयात्रा गतैर्निजसंपद्भरावगणितधनि[नि]वहैः हिंसारकोटनिवासिभिः ब्रह्मेचागोत्रीयैः कुहाडापरपर्यायैः शालिभद्रोत्तम चन्द्रादिभिः सभ्यपरिकरान्वितैः प्रमाणनागोरनगरे समेतैर्विज्ञातपदप्रौढमहैः सुश्रावकैर्गुरुतरगुरुभक्त्या साधर्मिकवात्स ल्यादिसुकृतकृत्यकृतये रजतानां चतुःसहस्री व्ययिता। तत्र तेषां यशो नामकर्मकृतेरुदयो महानजनि। तत्रत्यैः सुरपदस्थैरपि तैः सह स्वसम्बन्धः कृतोऽनाग्रेतनविस्तरस्तु न दृष्टः। ततः सदारङ्गसूरयः किञ्चित् कालं तत्र

स्थित्वाऽन्यदेशेषु विहरन्तः श्रीमत्पातसाहिना मार्गे मिलितेनाऽभिवन्दिताः स्तुताश्च। सत्प्रत्ययदर्शनेन तत्र बीकानेरस्वामिना श्रीअनोपसिंहमहाराजेनापि निजहृद्गतसुतचिन्तानिवर्त्तनपूर्णविस्मितचेतसाऽभ्यर्चिताः सत्कृताः। कथितं च श्रीश्रीपूज्यपादाः—'भवन्त उत्तमपुरुषाः सर्वविद्याविशारदाः श्रेयासो वरीयासोऽखिलजगतः पूज्या अस्माक विशेषतो गुरवः प्रतीक्ष्याश्च' इत्यादिशिष्टाचारपूर्वकम्। ततोऽनोपसिंहात्मजमहाराजसुजाणसिंहेनाऽपि तथैव मानिताः।

श्रीश्रीपूज्या लवपुरीं गताः। तत्रापि, बहवो लोका रञ्जिताः। सवत् १७६० धर्मक्षेत्रे चतुर्मासी कृता। तत्र पातसाहिमान्याऽमात्यमुहता शीतलदासेन शिविराद् द्वितीयचतुर्मासीकरणविज्ञप्तिलेखः प्रहितः, पर न तत्र स्थिताः। ततो विहृत्य पानीपप्रस्थद्रङ्गेऽग्रेतनैः श्रावकैर्बहुविज्ञप्तिकरणपूर्वक स्थापिताः। तत्रामात्यशीतलदासेन खानमहाशयद्वात्रिंशत्या युतेन दर्शनमकारि। जन्तुत्राणोपदेशः सर्वैराकर्णितः, उररीकृतश्च दयाधर्मो बहुलाभः समुपार्जितः। ततो योगिनीपुरे श्राद्धा रञ्जिताः विशदतरसिद्धान्तसदर्थसार्थप्रकाशनेन।

ततोऽर्गलापुरे पातिसाहिदयालकस्य सत्प्रत्ययदर्शनपूर्वक जीवदयोपदेशेन मानस रञ्जितम्। यावत्स्थितिकाल जीवदया महाखानेन प्रवर्त्तिता सर्वत्र नगरे। ततो विहृत्य सवत् १७६६ पुनर्बीकानेरपुरे पूर्वगोपुरे पादा अवधारिताः। तत्र कतिचिद् दिनानि शुक्रास्तादिमलिनदिवसत्वात् श्रावकैः पटमण्डपे रम्यतरे स्थापिताः। तत्र नगरप्रवेशोत्सववार्त्तया जायमानाया श्रावकाः सभूय विचारयन्ति स्म, ईदृशः प्रवेशः कार्यते यादृक् केनापि न कृतः कारितो वा पूर्वम्। इतश्च साहनिमलदासेन गत्वा राज्यद्वारे भणितम्—'महाराज ! भवदीयपूर्वजैर्ये मानिता अर्चिता वन्दितास्तेऽत्र श्रीश्रीपूज्यचरणाः समेताः सन्ति। ततो राजशार्दूलैः सनातनः पन्था ज्ञायते एवास्माकम्। श्रीमद्भदन्तपुङ्गवाः पूर्वगोपुरादेव वादित्रवादनादिकया महत्या विच्छित्या प्रविशन्ति। साम्प्रत केचन यतिपाशाः किञ्चित् काचपिच्च्य विदधति। ततः का वश्चेतसो रुचिस्तदाद्रियताम्' इति भाषिते श्रीमहाराजैरवादि—'एते तु श्रीश्रीपूज्या अस्मदीया एव, ततस्तान् को रुणद्धि ? श्रीश्रीपूज्याना यादृशः प्रवेशमहामहो भवति, तादृश एव विधीयताम्, किमत्रान्यत्, सर्वाऽपि राज्यर्द्धिरादीयताम्। सति राजशासने को निवारयिता ?।' ततो हस्ति-तुरगादि-वाद्य-ध्वज-पटहाऽऽतोद्यादि समादाय राजकीयसचिवः समेतः कथयितु लग्नः—'श्रीमहाराजेनाऽऽज्ञप्तमस्ति, अन्याऽपि या काचिद् भवता मर्यादा भवेत् तदनुरूपमपि क्रियताम्।' ततः प्रतोलीत्रय कारितम्। तत्र चैका सुरवरश्यानाम्, परा चौरचेटिकानाम्, तृतीया समेषा श्रद्धालूनाम्। एव प्रतोलीत्रयपदमण्डनपटोल्किाप्रभृतिसर्वमहत्कृत्य कृतम्। स्वावदातोद्योतितपूर्वसूरयो युगप्रधानश्रीसदारङ्गसूरयः सम्मुखाऽऽगतास्तोकलोकसमुत्कीर्त्यमानविशदतरकुन्दकुमुदवान्धवमयूखसमानानेकप्रवेकशम-दम-सयमप्रकारा निजचरणगतिमृदुतापहसितराजहस-सुरगज-मत्तप्रभा मुनिप्रभाः शनैः शनैः स्थानीये स्थानीये यावताऽनेकयतियुताः प्रविशन्ति तावता खरतर-कमलगणयः सघटन्ते। राटीमन्त्रः प्रारब्धः, पूर्वं परस्पर, पश्चात् सुरलोकाग्रतो भणन्ति—'अस्मदीया एवातोद्यनिवहा अत्र ध्वनन्ति, नेतरेषा' इति। प्राहुः—'एतद् वाद्यादिक राजकीय सुतरा यतय' वादयन्तु, परं शङ्ख झल्लरिका च श्रीचिन्तामणि-श्रीमहावीरयोरेव सप्तविंशति २७ महल्लेषु वादयिष्यन्ति, अन्यस्य न।' नागोरीलुङ्कागणीयान् प्रति परानपि तपागोर्जरादीन् प्राहुः—'भवता शङ्ख न कुत्रापि वादयितु दद्म' तदा श्रीभदन्तपादैरुक्तम्—'अस्मदग्रेऽस्मदीय एव

शङ्खो ध्वनिष्यति। अन्यं वयमपि नेच्छाम।' तदा पुनर्नृपादेशः समेत–'शीघ्रतया प्रवेशो विधीयताम्, यथा तपो न पराभवति पौरान्।' तदाऽमात्येन शङ्खव्यतिकरो निवेदितो नृपाग्रे–'शङ्खस्त्ववश्यमेव युज्यतेऽत्र।' तस्मिन् समये श्रीलक्ष्मीनारायणप्रसादमादाय नयनाख्य' शङ्खमा समेत'। त वीक्ष्य लालाणीव्यासउदयचन्द्र-मुथडाचतुर्भुजाभ्यामुक्तम्–'एष शङ्खविवादो यतिभि' क्रियते, तत' कथ निवर्त्तेत। एते वदन्ति १३ महल्लेषु श्रीचिन्तामणिभगवतः शङ्खो वाद्यतेऽन्येषु १४ महावीरदेवस्य, एतयोस्तु शङ्खादिक श्रीश्रीपूज्या अपि नोरीकुर्वन्ति, अतो श्रीलक्ष्मीनारायणजीकस्य शङ्खो ध्वन्यते, एव विवादो याति।' अन्यथा नेत्याभृश्योपनृप-मागत्य विज्ञप्तम्–'श्रीमहाराज! अधुना तु प्रवेशोत्सवे श्रीलक्ष्मीनारायणजीकस्य शङ्खः प्रदीयते तदा वरम्, अग्रे श्रीमहाराजानामिच्छा।' तदा श्रीमहाराजेन नयनाह्व' शङ्खध्मा दृष्ट, कथितं च–'भो नयन! त्व श्रीठाकुरजीकाना सेवकोऽसि, वय निर्दिशामः श्रीश्रीपूज्यसदारङ्गजीकाना प्रवेशमहे श्रीठाकुरजीकाना शङ्खो ध्वन्यताम्।' ततस्तमादाय स तत्र गतः, महताडम्बरेण प्रवेशमह कारित। नालिकेराणा प्रभावना कृता। श्रीफलाना नवशती लग्ना। तदनु येनाडम्बरेण प्रवेशोत्सवो जातस्तेनैवाडम्बरेण सुराणासुन्दरदासवेश्मनि मासक्षमणानशन गृहीतम्। तत आषाढचतुर्मास्यागमेऽन्ययतिविहितशङ्खविवाद मत्वा पूज्यश्रीस्वामिदासजी रामसिंहजी-प्रेमराजजी-कुशलचन्दजीनामकै प्रवरयतिभि' श्रीराजसमीपे गत्वा भणितम्–'भो महाराजाधिराजा! श्रीश्री-पूज्यैः शुभाशीर्वचासि दत्तानि सन्ति, पुन' शङ्खविवादनिवर्त्तनोदन्तश्च कथापित, सोऽधुना विमृश्य क्रियताम्। किञ्च खरतरकमलगणीयश्रावकै पूर्वं या स्थिति' कृता प्रोक्ता सा पृच्छ्यताम्। केनेय स्थिति' कृताऽ-भूत्, तत् वर्गलादिक चेत् स्यात् तदा दर्श्यताम्।' पुन पूज्यस्वामिदासैरवादि–'महाराजाधिराज! स० १६४० यावत् तु कोऽपि विवादो नासीत्, कोऽपि कस्यापि न वर्जनमकरोत्। ततो विश्वविश्वम्भराभारसमुद्धरणादि-वराहकल्पश्रीरायसिंहजीराज्ये कर्मचन्द्रवत्सापत्येन सीमा स्वीययतीना कृताऽन्येषा शङ्खो झल्लरिका च न वाद्यते। ततः श्रीसुरसिंहजीराज्ये ठाकुरसीनामवैद्येन स्वगणीयशङ्खादिस्थिति' स्थापिताऽधुनाऽऽनय। एष विमृश्य विधेय'।' तत श्रीमहाराजेन द्वावपि समाकार्य पृष्टौ–'भवदीया स्थिति' केन बद्धा कथ चान्येषा शङ्खवादन निरस्तम्।' तैर्भणितम्–'महाराज! अस्माक राज्यद्वारतोऽयमारोप कृत', यत् १३ महल्लेषु खरतरगणीयाना श्रीचिन्तामणि-शङ्ख १४ महल्लेषु श्रीमहावीरदेवस्य शङ्खो झल्लरिका च प्रवर्त्तते।' एवमुक्ते श्रीमहाराजेन भणितम्–'य आरोप कृतोऽस्ति भवतोर्द्वयोस्तत् वर्गलादिक दर्शनीयम्।' तदा तैरुदितम्–'वर्गलादिक तु नास्त्यस्ति किं दर्शयाम?' श्रीमहाराजेनाऽभाणि–'भवता राज्यद्वारवर्गल विना द्वयेषा आरोप' कया रीत्या जात?।' पुन' श्रीमहाराजेन पृष्टम्–'अन्येषा वर्जितो य' शङ्ख तस्य श्रीमहाराजकृत लिखन-पठनादिक भवेत्, तदपि दर्श्यताम्, अन्यथा केन हेतुनाऽमूनन्यगणीयान् वर्जयन्ति यतय?' तदा तैर्व्याहृतम्–'हे श्रीमहाराज! वैद्यवत्साप परावश्रीबीकाजीकस्य सार्धे समेता अभूवन्, तेन हेतुना तैर्निजनिजसीमाऽकारि। अग्रे देवपादाना मनसि यद् भवेत् तथा विधेयम्।' तदा श्रीमहाराजैर्भणितम्–'वय श्रीप्रभुणा यथान्नीतिप्रवर्त्तनार्थं राजान' कृता' स्मः' तद्रीतेरेव प्रवृत्तिर्भविष्यति।' एवमुक्त्वा मनसि विमृष्टम्। एतेषामपि रीतिः प्रस्थापितैव पूर्वजादे-शाधिकारिविहितत्वात्। अथैतेषां श्रीश्रीपूज्याना समधिका वर्त्तुमुचितेति परामृश्योक्तम्–'यूय सप्तविंशतिमहल्लेषु सार्वदिकी स्थिति' क्रियताम्, एतेषां तु अद्यप्रभृत्येव श्रीलक्ष्[illegible] शङ्ख' स[illegible] एतदीयश्राद्धानामपि दर्पदर्शने श्रीठाकुरजीकानामेव शङ्ख[illegible]। नोवि[illegible]।

शङ्खस्यानवकाशः। एन शङ्ख निराकुर्वन् जनः श्रीठाकुरजीकेभ्यो विमुखो भविष्यति पुनः श्रीराज्यद्वारस्यापराधी।' एव भणित्वा शङ्खमा विसृष्ट इति।

अथ श्रीश्रीपूज्यैरष्टत्रिंशद्वर्षपर्यन्त धर्मराज्य कृतम्, तत्र चतुर्विंशतिशिष्याः जाताः। तन्नामानि यथा—श्रीगोपालजीका अटकमहादुर्गे महान्तस्तपस्विनोऽटकजले जन क्षुभ्यन्त पदस्पर्शादपहृत नदीजलेनापि यच्छासनं मानितम् १। श्रीआनन्दरामजीका वनूडनगरे स्थिता अभूवन् २। भागूजीका तोलीयासरे प्रसिद्धाः ३। महेशजीका मालवदेशे प्रसिद्धाः ४। वपतमल्लजीका महान्तो मल्ला अजितसिंहनृपमल्लमानमर्दकाः ५। चत्वारो रामसिंहजीका आसन्। एके तु ऊकेशवश्याः कोचरगोत्रीया उदयसिंहजीकैः सम मिलिताः ६। द्वितीयाश्चहुराणाभिजना मालवदेशे ७। तृतीयाः खत्तिज्ञातीया मालवे ८। तुर्या रामसिंहजीका भीमजी-अमीचन्द्रजीकाना गुरवः ९। श्रीसुखानन्दजीका वीदासरस्थलेषु कृतानशना दिव ययुः, ये ते तपस्विनः १०। श्रीउदयसिंहजीका येर्गणभेदः कृतः ११। श्रीजगजीवनदासजीका मूलपट्टाधिपाः १२। द्वौ शिष्यावादिमौ धर्मचन्द्र-गुणपालाख्यौ सिद्धान्त पठन्तौ देवोपसर्गजनितमहाकष्टौ सम्यगाराधनामाराध्य दिव गतौ १३–१४। प्रेमराजजी-रायसिंहजीकौ भैरवमन्त्राराधकौ भ्रमन्तौ निशि चलितौ, विड्लिप्तपदौ मूकौ जातौ १६। विधिचन्द्रजीका दीक्षातोऽशीतिदिनेष्वेव स्वर्गताः शूलरोगेण १७। वस्तपालजी हीराजी-धनाजीकास्तपसा प्रसिद्धाः १८–१९। सेरजलकृतनियमा ग्रीष्मे उपसर्गसहन कृत्वा स० १७६५ वर्षे पञ्चत्वमापुः २०। वैद्यवश्या ज्ञानजीका आगमज्ञा महान्तो मालवदेशे दुष्टडाकिन्या गृहीताः। कृतानेकोपचारा अपि न पटवो जाताः २१। मालवदेशे मारजीकाः प्रसिद्धाः २२। लक्षजीका आनन्दरामजीसार्थ एव विहृतवन्तः २३। दुर्गदासाह्वास्तु मालवे सार्थाद् भ्रष्टादरिनिपाते न केनापि लक्षिताः २४।

एतेषा मध्यान्तवदेशेषु विद्यमानेषु श्रीश्रीपूज्यै उदयसिंहस्य तपस्विनः शिष्यस्य प्रोक्तम्—'भोः! पद गृहाण' इत्युक्ते उदयसिंहजीकैरभाणि—'मम पदेन कोऽर्थः? सर्वगुणसपन्नाः प्रज्ञाला जीवनदासजीकाः सन्ति, तेभ्यः प्रदीयताम्, अह तन्निदेशकृद् भविष्यामि' इत्युक्ते पुनरप्याग्रहेणोक्तम्—'पद गृहाण, पश्चान्न किञ्चित् कर्तुमुचितम्।' तैः पदादान नोरीकृतम्। तदा श्रीसूरिशार्दूलैरवसर विज्ञाय श्रीसत्रसाक्षिपमन्यगणीयाना च पुरतः श्रीमद्भदन्तपद श्रीजगज्जीवनदासजीकेभ्यो लिखित्वा प्रदत्तम्। स्वयमाराधना दिनदशक यावत् साधयित्वा त्रिदिव मण्डयामासुः स० १७७२ एव पट्टानि ६९ जातानि ॥६९॥

७०. तस्मिन्नब्दे शिक्षापत्राणि नागपुरीयसुराणासहस्समल्लादिभिर्लेख लेख यतिभ्यः प्रदत्तानि। श्रीउदयसिंहजीका यतित्रयान्विता बीकानेरे स्थिता भाविसूरयस्तु बहुमुनिपरिवृताः श्रीनागोरपुरे स्थिताः। तत्र पट्टमुहूर्त्त वर्षद्वय यावच्छुद्ध नागतम्। ततः समीचीने मुहूर्त्ते श्रीश्रीपूज्याचार्याः जगज्जीवनदासकाः पट्ट भूषयामासुः। चोरवेटिकगोत्रीयः वीरपालजी पितृनाम, जनन्या नाम रतनादेवीति, पढिहारानिगमे जनुश्चारित्र मेडतापुरे, पदमहिपुरे।

अथ नागोरनगरे घोडापत्यैः कथञ्चित् किञ्चिन्न्यूनरागैश्चोरवेटिकादियुतैर्भाण्डापत्यसुराणागोत्रीयाणा लेख दत्त्वा कथापितम्, महत्सूदयसिंहेषु स्थितेषु अत्रत्यैः श्राद्धैरेतेऽभिषिक्तास्तन्नामास्माक हृद्य जातम्।

शङ्खो ध्वनिष्यति। अन्य वयमपि नेच्छाम'।' तदा पुनर्नृपादेश समेतः–'शीघ्रतया प्रवेशो विधीयताम्, यथा तपो न परामवति पौरान्।' तदाऽमात्येन शङ्खव्यतिकरो निवेदितो नृपाग्रे–'शङ्खस्त्ववश्यमेव युज्यतेऽत्र।' तस्मिन् समये श्रीलक्ष्मीनारायणप्रसादमादाय नयनाख्य' शङ्खमा समेतः। त वीक्ष्य लालाणीव्यासउदयचन्द्र-मुधडाचतुर्भुजाभ्यामुक्तम्–'एप शङ्खविवादो यतिभिः क्रियते, ततः कथ निवर्त्तेत। एते वदन्ति १३ महल्लेषु श्रीचिन्तामणिभगवत' शङ्खो वाद्यतेऽन्येषु १४ महावीरदेवस्य, एतयोस्तु शङ्खादिक श्रीश्रीपूज्या अपि नोरीकुर्वन्ति, अतो श्रीलक्ष्मीनारायणजीकस्य शङ्खो ध्वन्यते, एव विवादो याति।' अन्यथा नेत्यामृश्योपनृप-मागत्य विज्ञप्तम्–'श्रीमहाराज! अधुना तु प्रवेशोत्सवे श्रीलक्ष्मीनारायणजीकस्य शङ्खः प्रदीयते तदा वरम्, अग्रे श्रीमहाराजानामिच्छा।' तदा श्रीमहाराजेन नयनाह्व शङ्खमा दृष्ट., कथित च–'भो नयन! त्व श्रीठाकुरजीकाना सेवकोऽसि, वय निर्दिशामः श्रीश्रीपूज्यसदारङ्गजीकाना प्रवेशमहे श्रीठाकुरजीकाना शङ्खो ध्वन्यताम्।' ततस्तमादाय स तत्र गत., महताडम्बरेण प्रवेशमह कारितः। नालिकेराणा प्रभावना कृता। श्रीफल्गाना नवशती लग्ना। तदनु येनाडम्बरेण प्रवेशोत्सवो जातस्तेनैवाडम्बरेण सुराणासुन्दरदासवेश्मनि मासक्षमणानशन गृहीतम्। तत आषाढचतुर्मास्यागमेऽन्ययतिविहितशङ्खविवाद मत्वा पूज्यश्रीस्वामिदासजी रामसिंहजी प्रेमराजजी-कुशलचन्दजीनामकैः प्रवरयतिभि श्रीराजसमीपे गत्वा भणितम्–'भो महाराजाधिराजाः! श्रीश्री-पूज्यैर्वः शुभाशीर्वचासि दत्तानि सन्ति, पुन शङ्खविवादनिवर्त्तनोदन्तश्च कथापितः, सोऽधुना विमृश्य क्रियताम्। किञ्च खरतरकमलगणीयश्रावकै. पूर्वं या स्थिति' कृता प्रोक्ता सा पृच्छयताम्। केनेय स्थिति. कृताऽभूत्, तत् कर्गलादिक चेत् स्यात् तदा दर्श्यताम्।' पुन' पूज्यस्वामिदासैरवादि–'महाराजाधिराज! स० १६४० यावत् तु कोऽपि विवादो नासीत्, कोऽपि कस्यापि न वर्जनमकरोत्। ततो विश्वविश्वम्भराभारसमुद्धरणादि-वराहरूपश्रीरायसिंहजीराज्ये कर्मचन्द्रवत्सापत्येन सीमा स्वीययतीना कृताऽन्येषा शङ्खो झल्लरिका च न वाद्यते। तत. श्रीसूरसिंहजीराज्ये ठाकुरसीनामवैद्येन स्वगणीयशङ्खादिस्थिति' स्थापिताऽधुनाऽऽनय। एप विमृश्य विधेय'।' तत श्रीमहाराजेन द्वावपि समाकार्य पृष्टौ–'भवदीया स्थिति. केन बद्धा कथ चान्येषा शङ्खवादन निरस्तम्।' तैर्भणितम्–'महाराज! अस्माक राज्यद्वारतोऽयमारोप. कृत., यत् १३ महल्लेषु खरतरगणीयाना श्रीचिन्तामणि-शङ्ख १४ महल्लेषु श्रीमहावीरदेवस्य शङ्खो झल्लरिका च प्रवर्त्तते।' एवमुक्ते श्रीमहाराजेन भणितम्–'य आरोप. कृतोऽस्ति भवतोर्द्वयोस्तत् कर्गलादिक दर्शनीयम्।' तदा तैरुदितम्–'कर्गलादिक तु तावन्नास्ति किं दर्शयाम.?' श्रीमहाराजेनाऽभाणि–'भवता राज्यद्वारकर्गल विना द्वयेषा आरोप कया रीत्या जात.?।' पुन. श्रीमहाराजेन पृष्टम्–'अन्येषा वर्जितो य शङ्ख' तस्य श्रीमहाराजकृत लिखनपठनादिक भवेत्, तदपि दर्श्यताम्, अन्यथा केन हेतुनाऽमूनन्यगणीयान् वर्जयन्ति यतय'?' तदा तैर्व्याहृतम्–'हे श्रीमहाराज! वैद्यवत्सापत्यरावश्रीवीकाजीकस्य सार्धे समेता अभूवन्, तेन हेतुना तैर्निजनिजसीमाऽकारि। अग्रे देवपादाना मनसि यद् भवेत् तथा विधेयम्।' तदा श्रीमहाराजैर्भणितम्–'वय श्रीप्रभुणा यथावन्नीतिप्रवर्त्तनार्थं राजानः कृता' स्म.' तद्रीतेरेव प्रवृत्तिर्भविष्यति।' एवमुक्त्वा मनसि विमृष्टम्। एतेपामपि रीतिः प्रस्थापितैव पूर्वजादे-शाधिकारिविहितत्वात्। अथैतेपा श्रीश्रीपूज्याना समधिका कर्त्तुमुचितेति परामृश्योक्तम्–'यूय सप्तविंशतिमहल्लेषु सार्वदिकी स्थिति' क्रियताम्, एतेपा तु अद्यप्रभृत्येव श्रीलक्ष्मीनारायणजीकाना शङ्खः सर्वत्र पुरे वादयिष्यति, एतदीयश्राद्धानामपि हर्षवर्द्धापने श्रीठाकुरजीकानामेव शङ्खो वादयिष्यति। श्रीचिन्तामणि-महावीरयो.

शङ्खस्यानवकाशः। एनं शङ्खं निराकुर्वन् जनः श्रीठाकुरजीकेभ्यो विमुखो भविष्यति पुनः श्रीराज्यद्वारस्यापराधी।' एवं भणित्वा शङ्ख्मा विसृष्ट इति।

अथ श्रीश्रीपूज्यैरष्टत्रिंशद्वर्षपर्यन्तं धर्मराज्यं कृतम्, तत्र चतुर्विंशतिशिष्याः जाताः। तन्नामानि यथा— श्रीगोपालजीका अटकमहादुर्गे महान्तस्तपस्विनोऽटकजले जनं क्षुभ्यन्तं पदस्पर्शादपहृत नदीजलेनापि यन्त्रासनं मानितम् १। श्रीआनन्दरामजीका वनूडनगरे स्थिता अभूवन् २। भागूजीका तोलीयासरे प्रसिद्धाः ३। महेशजीका मालवदेशे प्रसिद्धाः ४। वपतमल्लजीका महान्तो मल्ला अजितसिंहनृपमल्लमानमर्दकाः ५। चत्वारो रामसिंहजीका आसन्। एके तु ऊकेशवंश्याः कोचरगोत्रीया उदयसिंहजीकैः समं मिलिताः ६। द्वितीयाश्चहुवाणाभिजना मालवदेशे ७। तृतीयाः खत्रिज्ञातीया मालवे ८। तुर्या रामसिंहजीका भीमजी-अमीचन्द्रजीकाना गुरवः ९। श्रीसुखानन्दजीका वीदासरस्थलेषु कृतानशना दिवं ययुः, ये ते तपस्विनः १०। श्रीउदयसिंहजीका यैर्गणभेदः कृतः ११। श्रीजगजीवनदासजीका मूलपदाधिपाः १२। द्वौ शिष्यावादिमौ धर्मचन्द्र-गुणपालाख्यौ सिद्धान्तं पठन्तौ देवोपसर्गजनितमहाकष्टौ सम्यगाराधनामाराध्य दिवं गतौ १३-१४। प्रेमराजजी रायसिंहजीकौ भैरवमन्त्राराधकौ भ्रमन्तौ निशि चलितौ, विङ्लिप्तपदौ मूकौ जातौ १६। विधिचन्द्रजीका दीक्षातोऽशीतिदिनेष्वेव स्वर्गताः शूलरोगेण १७। वस्तपालजी हीराजी-धनाजीकास्तपसा प्रसिद्धाः १८-१९। सेरजलकृतनियमा ग्रीष्मे उपसर्गसहनं कृत्वा सं० १७६५ वर्षे पञ्चत्वमापुः २०। वैद्यवंश्या ज्ञानजीका आगमज्ञा महान्तो मालवदेशे दुष्टडाकिन्या गृहीताः। कृतानेकोपचारा अपि न पटवो जाताः २१। मालवदेशे भारजीकाः प्रसिद्धाः २२। लक्षजीका आनन्दरामजीसार्थं एव विहृतवन्तः २३। दुर्गदासाह्वास्तु मालवे सार्थाद् भ्रष्टादरिनिपाते न केनापि लक्षिताः २४।

एतेषां मध्यान्तदेशेषु विद्यमानेषु श्रीश्रीपूज्यैः उदयसिंहस्य तपस्विनः शिष्यस्य प्रोक्तम्—'भोः! पदं गृहाण' इत्युक्ते उदयसिंहजीकैरभाणि—'मम पदेन कोऽर्थः? सर्वगुणसपन्नाः महाला जीवनदासजीकाः सन्ति, तेभ्यः प्रदीयताम्, अहं तन्निदेशकृद् भविष्यामि' इत्युक्ते पुनरप्याग्रहेणोक्तम्—'पदं गृहाण, पश्चान्न किञ्चित् कर्तुमुचितम्।' तैः पदादानं नोरीकृतम्। तदा श्रीसूरिशार्दूलैरवसरं विज्ञाय श्रीसत्रसाक्षिप्रमन्यगणीयानां च पुरतः श्रीमद्भदन्तपदं श्रीजगज्जीवनदासजीकेभ्यो लिखित्वा प्रदत्तम्। स्वयमाराधनां दिनदशकं यावत् साधयित्वा त्रिदिवं मण्डयामासुः सं० १७७२ एवं पट्टानि ६९ जातानि ॥६९॥

७०. तस्मिन्नब्दे शिक्षापत्राणि नागपुरीयसुराणासहस्समल्लादिभिर्लेख लेखं यतिभ्यः प्रदत्तानि। श्रीउदयसिंहजीका यतित्रयान्विता वीकानेरे स्थिता भाविसूरयस्तु बहुमुनिपरिष्टिताः श्रीनागोरपुरे स्थिताः। तत्र पट्टमुहूर्त्तं वर्षद्वयं यावच्छुद्धं नागतम्। ततः समीचीने मुहूर्त्ते श्रीश्रीपूज्याचार्याः जगज्जीवनदासकाः पट्टं भूषयामासुः। चोरवेटिगोत्रीयः वीरपालजी पितृनाम, जनन्या नाम रतनादेवीति, पडिहारानिगमे जनुश्चारित्रं मेडतापुरे, पदमहिपुरे।

अथ नागोरनगरे घोडापत्यैः कथञ्चित् किञ्चिन्न्यूनरागैश्चोरवेटिकादियुतैर्भाण्डापत्यसुराणागोत्रीयाणां लेखं दत्त्वा कथापितम्, महत्सूदयसिंहेषु स्थितेषु अत्रत्यैः श्राद्धैरेतेऽभिषिक्तास्तन्नामास्माकं हृद्यं जातम्।

अथ बीकानेरे स्थिता अपि उदयसिंहजीका. पट्टे स्थाप्या इति मुहुर्मुहुः समाचारे प्रवर्त्तमाने श्रीश्रीपूज्यैः कथापितम्-'अद्यापि किमपि गत नास्ति। अत्राऽऽगत्य पदमादीयताम्, यूय महान्तः।' तदोदयसिंहजी-कैरभाणि-'मम पदादानेच्छा न हि।' ततस्तत्रत्यैर्भाण्डापत्यादिभिरत्याग्रहेण प्रसह्य पदे स्थापिताः बीकानेरे एव। एव गणस्फोटे जातेऽपि श्रीमूलपट्टेश्वरसानिध्याद् बहुयतिव्रतिपरिवृताः श्रीजगज्जीवनदासजी-नामधेया वरभागधेयाः सर्वत्र देशे देशे क्षेत्रे क्षेत्रे श्राद्धैरन्यगणीयाः सघेनाऽपि सम्मानिताः पूजिताश्च, नागोरपुराद् विहृत्य भट्टनेरकोट्टे पादा अवधारिताः। तत्र लघीयानपि चाघासाहः प्रभावना महतीं कृतवान्। ग्रन्थगौरवभयान्नात्र विस्तरतो लिख्यते सर्वसवन्धः।

ततः सरस्वतीपत्तने हिंसारकोटे बुढलाडानिगमे टोहणा-सुनाम-सन्मानर रोपड वजवाडा-राहों-जालन्धर गुजरात रावलपिण्डीप्रभृतिषु क्षेत्रेषु विहृत्य सम्यग् लवपुर्यां प्रवेशोत्सवे जायमाने मुगलयवनः कश्चिद् युवा तत्रत्यस्यायुक्तसुतोऽस्मात् समूर्च्छितो लोकैर्मृत इति सभावितः। सशोकेषु लोकेषु जातेषु नमस्कृति-जलेन सर्वलब्धिवितानसस्मारिते पूर्वगणधरैः श्रीश्रीपूज्यपादैः सिक्तः, प्रत्यागतचेतनः सन् परमभक्तो महामहिमानमस्तरोत् १॥ ततो अनेकेषु क्षेत्रेषु विहरद्भि. श्रीश्रीपूज्यचरणैर्ये प्रत्याया दर्शितास्तान् को लिखितु शक्नोति? न वा चक्षुःमलम्। पुनरटकधुनी पतिता। समर्थनामसाहकस्य बहुपण्यभृता नौस्तारिता। तत्रत्यैर्हिन्दूयवनैः प्रभावनाऽधिका चक्रे २॥ ततो निवृत्य समागच्छद्भि' सूरिपादै रोपडनगरे वृद्धश्राविकाया गलत्कुष्ठमपहृतम् ३॥ पुन. सरस्वतीपत्तने विषमदु'कालभीतैर्यवनैर्महम्मदहुसेनस्योक्तम्-'वणिग् जनैरेते यतयो रौरवनिवन्धन द्रव्यभावार्थं रक्षिता अत्र' इत्याकर्ण्य दुर्मतिना तेन लोकाना पुरतः प्रोक्तम्-'एतेनातश्चेद् गमिष्यन्ति तदाह कचग्राहमेनान् निष्कासयिष्यामि' इति वार्त्तां कस्यापि मुखाच्छ्रुत्वा नि'प्रतिमपुण्यपण्यशालिभिर्लोकोत्तरातिशयधरै श्रीश्रीपूज्यैर्भणितम्-'भो यतय! अत शीघ्रतया विहर्त्तव्यम्, अत स्थानाद् द्वित्र्यहस्सु यदत्र भावि तत् स एव दुर्धी ईक्षिष्यति' इत्युक्त्वा विहर्त्तुं लग्ना'। तदा श्राद्धैरुक्तम्-'स्वामिन्! वयमपि भवत्पदयुगमाश्रिताश्चलाम.। एव कथनेन श्रीसूरयस्तत्रैव स्थापिता।

अथ तृतीये दिवसे झोरडयवनैः प्रातरेवागत्य बहिर्निर्गतो महम्मदहुसेन' शिर श्मश्रुकचग्राह भुवि निपात्य भृश कुट्टित., श्वसन्मुक्त.। ततो ज्ञातवृत्तान्तेन तत्पित्रा हसनपामहाशयेनातीवनिर्भर्त्सित.-'रेपुत्रपाश! त्वादृशोऽधमो मत्कुले कथ जात'? अस्मत्पूज्यपूज्यानामविनयो वाचाऽपि कृतो दुःखायैव, केवलमस्मत्प्राणास्तुदन्ति ४॥ तत एव किमधिकलपितेन। तत्र हसनपानवावेन बहुभक्तिपूर्वकमाराधिता। तदुक्तम्-

> दर्शितप्रत्यय को हि नाराधयति सत्तमम्।
> ध्वस्तध्वान्त प्रगे दीप्त रविं को न निषेवते?॥ १२

इति ५॥ ततो भटनेरमार्गेऽतितृषाकुला करभवाहकाः सद्गुरुचरणस्मरणपरायणास्तत्क्षणमदृष्टचरममृतोपम पानीयमपिबन् ६॥ तत. सवत् १७८४ वर्षे श्रीबीकानेरनगरे पादा अवधारिता.। तत्र प्रत्यर्थिद्विपपञ्चाननेन श्रीसुजाणसिंहमहाराजेन विशेषत सन्मानिताः, दृष्टप्रत्ययैः तत्रत्यैः सर्वैरपि राजकीयपुरुषैः समेत्य स्व-पर पक्षाभिमतजनमनोहारी महान् प्रवेशोत्सवोऽकारि। एका प्रतोली चोरवेटिकैः कृता, अपरा सूरवशीयानामिति

प्रतोलीद्वयमण्डनं चित्रकृदेव जातम्। श्रीफलैः प्रभावना व्यधायि हर्षावेगात् परवशैरिव श्राद्धैः। सुराणा-मुकुन्ददासजीकाना गृहे क्षमाश्रमणैः विहरण कृतम्। द्वितीयदिवसे आचार्यप्राणनाथजीकैरागत्य श्रीमहाराज-कृतदण्डवन्नमस्कृतिनिवेदनमकारि तदा श्रीश्रीपूज्यचरणैरपि यानि कानिचिद् वचनानि विहितानि तानि श्रीमन्महाराजकुञ्जरैः प्रतीतानि साहष्टिकृतया वृत्तानि ७॥

तत्र पुरे श्रीश्रीपूज्यपादैश्चतुर्मासद्वितयी कृता। ततो मालवादिजनपदेषु विहृत्य सिंहाद् धेनुमोचन, निर्धन-श्राद्धस्य सुतस्य धनप्रदान, देवलीयानगरे कीटिकामत्कोटकभूयस्त्वनिराकरण, भटेवराशिशुकस्य नगरमुख्यताप्रति-पादनप्रभृतयोऽनेकेऽवदातनिकरा जाताः। पुनर्मन्दसोरनगरेऽतीवनिःस्वताविदितसततसद्भक्तिभावितचेतस्कखञ्जभूत आदलवेगकस्य शुद्धवचोऽमृतपानानन्तरमुक्तम्–'त्व याहीतः, सकलमालवानामाधिपत्यभृद् भविष्यसि' इत्याकर्ण्योज्ज-यिन्यभिमुख चलतस्तस्यानेके महाराष्ट्रिकाश्वारोहा मिलिताः। त प्रति गदितम्–'त्वमस्मत्पुरोगमो भूत्वा ग्राम पुरादीनि दर्शय, यथाऽस्मन्नवीनराज्यसस्था समीचीना जायेत।' तदा तेन 'आम' इति भणित्वा तदुक्त कृतम्। पश्चान्नान्हासाहिवकस्य दाक्षिणात्यानामधिपस्य मिलितः, तेनोज्जयिनी मन्दसोरेन्दोरनाम्ना बृहत्पुराणामा-धिपत्य प्रददे। ततः सोऽतिबलवान् प्रतापी यवनोऽपि हिन्दूकवत् परमभक्तो जातः। विकृतित्यागरूपया तपःश्रिया शरीरमपि सखेद जातम्। वर्षद्वय तत्र स्थित्वा, ततो यथाकथञ्चिद् वीकानेरपुरे समेताः। तनुशस्तेरभावेन प्रवेशनमहोऽपि न कृतः। चतुर्मासचतुष्कमकारि। ततो विहितानशनैः सवत् १८१६ आश्विनकृष्णसप्तम्याः प्रातर्दिनपञ्चकानन्तर स्वर्गो मण्डितः ४४ समाः पदभोगः॥ ७०॥

७१. तत्पट्टे श्रीभोजराजसूरयो बोहित्थान्वयाः, जीवराजः पिता, कुशलाजी जननी, रहासरे जन्म, फतेपुरे चारित्रम्, पद तु श्रीनागोरपुरे सवत् १८१६ फाल्गुनमासे। मालवानीवृति पञ्चाशद्यतिपरिवृताश्चिर विहृत्य मेडतापुरे दिनत्रिकानशनप्राप्तस्वर्गा अभूवन्। वर्षषट्क पदभुक्तिः। एषा सप्तगुरुभ्रातरोऽभवन्। श्रीलालजी १– जयसिंहजी २– जयराजजी ३– श्रीभोजराजजी ४– श्रीलद्धराजजी ५– श्रीदूदाजी ६– श्रीरामचन्द्रजी ७– क्षेमचन्द्रजी८ नामधेया अष्टौ शिष्याः श्रीमज्जगज्जीवनदाससूरीणा दिग्गजा इव [आसन्]॥ ७१॥

७२. तत्पट्टोदयकारिणः श्रीहर्षचन्द्रसूरयः। नवलपागोत्रे पिता भोपतनजीनामा, माता भक्तादेवीति, करणुग्रामे जनुः, सोजतपुरे चारित्रम्, श्रीनागोरपुरे पदमापुः सवत् १८२३ वैशाखशुक्ल ६ दिने। पदे वर्ष १९ भुक्तम्, श्रीहर्षचन्द्रसूरेर्विजयति धर्मराज्ये महान्तोऽमी यतयः सुघाटकवराः तथाहि, अभयराजजी-अमीचन्द्रजी-लद्धराजजी-उदयचन्द्रजी गुलाबचन्द्रजी-मेघराजजी हीरानन्दजी-आनन्दरामजीप्रभृतयो मरुधरदेशसमीपवासिनो मालवदेशे मनसा-रामजी नैणसीजीप्रमुखा २७। उदीच्या सेढूजी जयराजजी-हरजीजी मगूजी-हरसहायजी-हरचन्दजीप्रमुखाः ११। एषा वैदुष्य यादृश जात तादृशमत्र युगे न कस्यापि भूतम्। विस्तरस्तु मत्कृतपद्यबन्धपट्टावलीतो ज्ञेयः। सपाद-जयपुरे विहितानशना दिनत्रय दिव भूषयामासुः॥ ७२॥

७३ तत्पट्टे श्रीश्रीपूज्याचार्याः श्रीश्रीलक्ष्मीचन्द्रजीनामानः। कोठारीगोत्रे जीवराजजीनामा पिता, जयरङ्गदेवी जननी, नवहरनिगमे जन्म, चारित्रमहिपुरे, स्वहस्तेन पदमपि तत्रैव। स० १८४२ अषाढकृष्ण २ दिने तत्र चतुर्मासद्वयी कृता। व्याख्यान प्रत्याख्यानादि सम्यग् धर्मकर्म प्रवर्तितम्। श्रीसङ्घमनोरथाः सफलीकृताः। ततो वेनातटनिगमे श्रीसङ्घेन महोत्सवेन चतुर्मासी कारिता। ततो जोजावरनगरे पञ्चविंशतियतिसमन्विता वर्षद्वयं

स्थिताः। ततोऽन्यानेकक्षेत्राणि निजचरणन्यासेन पूतानि विहितानि। ततो बीकानेरनगरादिषु प्रभूतशुद्धभाव भावितान्तःकरणश्रद्धालूना मनासि प्रमोदमेदुराणि विधाय श्रीसुनाम पटयाला ऽम्बाला धर्मक्षेत्र रोपड-हुसयारपुरा-जेजों-जगद्रूप्य-कृष्णपुरा पडेलश्रावकमण्डिततयतिप्रमुखानेकच्छेकजनमनस्सु अमन्दानन्दमुत्पादयन्तोऽमृतसरोल्लपुरी शालिकोद्यदभ्रक्षेत्रेषु विहरन्तः श्रीश्रीपूज्याः पुनः सर्वर्द्धिचारुचूरुनिगमादिषु चतुर्मास्यनेकशो विधाय हितकृद्धर्मप्ररूपणा दिल्ली-लक्ष्मणपुरी-काशी-पाटलीपुत्र मखदावादादिस्थानेषु सस्थित्य च पुनर्दिल्लीनगरे चतुर्मासीद्वयमकार्षुः। ततो भूरिपरिकरान्विताः सुश्रावकप्राभृतीकृतशिबिकोत्तमारूढा भरतपुरगोदनिगमादिषु विहृत्य कोटानगरादिषु विहृत्य च दाक्षिणात्यमहिता माल्वादि जनपदेषु च बहुशो शेषश्रीसघमनोविनोदाय सस्थितास्ततः श्रीनागोर नगरमभिप्राय (?) जालोर जेसल्मेरु श्रीसघेन बहुविज्ञप्तिपत्राणि समेप्याऽऽहूता. श्रीमद्भदन्तपुङ्गवाः सुखेन शुद्धसुकृतोपदेशकादम्बिन्याऽस्तोकलोकहृद्गतरौरवतामपनीतवन्त.। ततो विहृत्य फलवर्द्धिपुरीप्रभृतिक्षेत्रेषु चिर चतुरचेतश्चमत्कारकारिविहारकरणेन झुञ्झुरिग्रामे समेता। राजाधिराजमहाराजश्रीरत्नसिंहदेवै मङ्गालप्रवर्ह-मुनिवशाभरण श्रीगुरुचरणवनजभजनाऽवाप्तपरमानन्दमहर्षिरचनातिशयप्रीणितचित्तै रजतयष्टिशुद्धलेखन प्रेषणपूर्वक बहु विज्ञप्य श्रीबीकानेरपुरे पुरातनपृथ्वीराजकारितप्रवेशोत्सवानुकारिणा महामहेन प्रवेशिताः, विशेषतो भक्तियुक्तिः कृता कारिता च, एकविंशतियतिमधुपार्चितचरणाः सुखेनाब्दत्रयमस्थुः। इतश्चोदीच्ययावत्क्षेत्र श्रीसघेन सुनामस्थपतिरघुपर्ति प्रति कथापितम्—'बहुवत्सरवृन्दमतीत श्रीश्रीपूज्यपाददर्शनामृतसतृष्णमस्मदीय मानम सर्वर्षि, तेनाशु विज्ञप्तिपत्राणि समेप्य श्रीसूरयः समाकार्याः।' तदा तेनापि बहुशञ्छदा विसृष्टाः सदेशहराश्च। अस्मिन्नवसरे स्थैर्यौदार्य गाम्भीर्यादिगुणावलीसमुपार्जितहीराट्टहासराकासङ्काशकरनिकरसोदरयशःस्तोमैः श्रीश्रीपूज्यचरणैः सद्यः प्रसद्य समागमदलद्वारा ज्ञापितमागमनम्। ततो बीकानेरान्महतो महेन विहृत्य नवहरनिगम पुनानै राजपुरारोहीबुढलाडादिषु समागत्य सुनामनगरे चतुर्मासी कृता। तत्र लब्दराजजीकाना प्रपौत्रशिष्यो रघु-नाथर्षिः शिष्यचतुष्टययुत, अपरेऽपि विंशतिसाधवस्तैः परिवृता श्रीमद्भदन्तपुङ्गवा. सदागमावलीं सम्यग् व्याख्यान-वन्तः। ततो विहृत्य सन्मानक धर्मक्षेत्र सढौराम्बला-चनूड रोपड-नालागढ-लुदिहाणाप्रमुखक्षेत्राणि स्पर्शनापूतानि विधाय च सवत् १८९० वर्षे श्रीमत्पटयालानामनि पूटभेदने श्रावकैश्चतुर्मासी कारिताऽस्ति। तत्र सुखेन धर्मकर्म प्रवर्त्तयन्तः विराजन्ते ते, सर्वजनपदेषु पूर्ववद् विजयमानाश्चिर जीयासु. कोटिदीपालिका'। एतदाज्ञया श्रीसघ. प्रवर्त्तताम्।

पट्टावल्या प्रबन्धोऽय रघुनाथर्षिणा कृतम्।
लिखित. सुगम. शोध्यो विशेषज्ञैः पुनर्मुदा॥ १६

इति श्रीमद्विबुधचक्रशक्रश्रीमुनिराजसिंहचरणाब्जचञ्चरीकरघुनाथर्षिणा
पट्टावलीप्रबन्धो रचितः॥

स० १९८९ असाढ सुदि २ श्री॥

अञ्चलगच्छ-अपरनाम विधिपक्षगच्छ-पट्टावली।

(विस्तृतवर्णनरूपा)

❀

१. श्रीमहावीरपाटें श्रीगौतमस्वामी थया। - - - - - - - तेहनें पुठइ कोई शिष्य नहीं, तिवारें गुरुभाई श्रीसुधर्मास्वामिनें पाट आपीउ। वर्ष १०० आयु भोगव्यो, ते प्रथम पाट जाणवो।

२. बीजे पाटें जंबुस्वामी जाणवा। ते मोक्ष गया तिवारें केवलज्ञान आदे दश बोल विच्छेद गया, ते कहे छे-मनःपर्यवज्ञान १, परमावधिज्ञान २, पुलाकनामालब्धि ३, आहारकलब्धि ४, क्षायिक समकित ५, उपशान्तमोह-इग्यारमु गुणठाणु ६, जिनकल्पिविहार ७, परिहारविशुद्धिचारित्र सूक्ष्मसपरायचारित्र-यथाख्यातचारित्र ८, केवलज्ञान ९, मोक्षमार्ग १०। ए बीजो पाट।

३. त्रीजे पाटे प्रभवस्वामी थया।

४. चउथे पाटे सिज्जभवसूरि थया।

५. पाचमे पाटे यशोभद्रसूरि थया।

६. छठें पाटें सभूतिविजय थया।

७. सातमे पाटे श्रीभद्रबाहु थया।

८. आठमे पाटे श्रीथुलभद्रस्वामी थया।

९. नवमे पाटे श्रीमहागिरिसूरि थया।

१०. दशमें पाटे श्रीसुहस्थितसूरि थया।

११. इग्यारमें पाटे श्रीइन्द्रदिन्नसूरि थया। कोटिगण। वली बीजु बीरूद। कोटिवार सूरिमन्त्रनो जाप कीधो तेणे 'कोटिकगण' कहेवाणो। ए इग्यारमो पाट जाणवो।

१२. बारमे पाटे श्रीदिन्नसूरि थया।

१३. तेरमे पाटे श्रीसिंहगिरि थया।

१४. चैउदमे पाटे श्रीवज्रसूरि थया; 'वयरीशाखा' थइ।

१५. पदरमे पाटे श्रीवयरसेण थया।

१६. सोलमे पाटे श्रीचन्द्रसूरि थया, चद्र समान तेहथी 'चन्द्रकुल' थयु।

१७. सत्तरमे पाटे श्रीसामंतभद्रसूरि थया।

१८. अढारमे पाटे श्रीवृद्धसूरि थया।

१९. ओगणीसमे पाटे श्रीप्रद्योतनसूरि थया।

२०. वीसमे पाटे श्रीमानदेवसूरि थया।

२१. एकवीसमे पाटे श्रीमानतुंगसूरि थया। 'नमिऊण' जोडी शासननी उन्नति वधारी।

२२. बावीसमे पाटे वीरसूरि थया।

२३. त्रेवीसमे पाटे श्रीजयदेवसूरि थया।

२४. चउवीसमे पाटे श्रीदेवाणंदसूरि थया।

२५. पचवीसमे पाटे श्रीविक्रमसूरि थया।

२६ छवीसमे पाटे श्रीनरसिंहसूरि थया।

२७. सत्यावीसमे पाटे श्रीसमुद्रसूरि थया।

२८. अठावीसमे पाटे श्रीमानदेवसूरि थया।

२९. ओगणत्रीसमें पाटे श्रीहरिभद्रसूरि थया।

३० त्रीसमे पाटे श्रीविबुधप्रभसूरि थया।

३१. एकत्रीसमे पाटे श्रीजयानंदसूरि थया।

३२. बत्रीसमे पाटे श्रीवीरभद्रसूरि थया।

३३. तेत्रीसमे पाटे श्रीयशोदेवसूरि थया।

३४. चोत्रीसमे पाटे श्रीविमलचन्द्रसूरि थया।

३५ पात्रीसमे पाटे श्रीउद्द्योतनसूरि थया।

३६. छत्रीसमे पाटे श्रीसर्वदेवसूरि थया। तेणे वटतले सूरिपद आपीउ। 'वडगच्छ' श्रीजु नाम।

३७ साडत्रीसमे पाटे पद्मदेवसूरि थया।

३८ आडत्रीसमे पाटे श्रीउदयप्रभसूरि थया।

३९. ओगणचालिसमे पाटे श्रीप्रभाणंदसूरि थया, जेहने सघे प्रतिष्टाइ नाणा घणा खरच्या, 'नाणावालगच्छ' पाचमु नाम थयु।

४० चालिसमे पाटे श्रीधर्मचन्द्रसूरि थया।

४१. एकतालिसमे पाटे श्रीसुमणचन्द्रसूरि थया।

४२ बेतालिसमे पाटे श्रीगुणचन्द्रसूरि थया।

४३ त्रेतालिसमे पाटे श्रीविजयप्रभसूरि थया।

४४. चम्मालिसमे पाटे श्रीनरसिंहसूरि थया।

४५. पसतालिसमे पाटे श्रीवीरचन्द्रसूरि थया।

४६. छइतालीसमे पाटे श्रीमुनितिलकसूरि थया।

४७. सडतालिसमे पाटे श्रीजयसिंहसूरि थया।

४८. अडतालिसमें पाटे श्रीआर्यरक्षितसूरि थया।

हवइ अचलगच्छनी उत्पत्ति कहीइ छे, जिसिं कलिकालें तेणें योगिं करी जैनदर्शनमाहिं मायो वाहुल्यइ क्रिया टली, आपणी स्वेच्छाइ नवनवी वात आदरी तिसिं अवसरिं श्रीजयसिंहसूरि दताणिग्रामें आव्या, तिहा द्रोण व्यवहारीओ रहे छइ तेहनें गोदओ एहवें नामें पुत्र छे। इग्यारछत्रीसें (स० ११३६) जन्म, सवत् ११४२ इग्यारवेतालें दीक्षा लीधी। ते सकल शास्त्र भणता थका 'दसवैकालिक' सिद्धान्त भणवा लागा, तेहमाहे एक गाथा दीठी, यतः—'सिउदग न सेविज्जा सिलावुट्ठो हिमाणिय।'

ते शिष्य गाथानो अर्थ विचारवा जोवा लागो, सीतोदक सचित्त पाणी न सेवीइ शिलावृष्टि ते हेमना पाणी वधनसें। उष्नोदक तातो पाणी, माहात्मा जे साधु तेणे लेवु। गुरुकनें आवो प्रश्न पूछिओ—'भगवन्! 'अन्नहावाई अन्नहाकिरिया' कहीइ अनेरु कहीइ।' गुरु आगलि गाथा भणी, तिवारें गुरुइ वात कही—'वच्छ! ए क्रिया हवणा न चाले।' तिवारें तेणें शिष्यें कहीउ—'जे चलावे प्रतिलाभ अथवा नहीं?।' गुरुइ कहिउ—'ते भाग्यवत।' तदनतर तेणें शिष्ये समग्र सिद्धान्त वाची क्रिया समग्र ओलखी साची, गुरुइ तेहनइ उपाध्यायपद दीधु, विजयचन्द्र नाम दीधु, तेणे च्यार यति सहित विहार कीधो। लोकनें साचो धर्मनो उपदेश दीधा, पणि ते कोई अगीकार करे नहिं, ते क्रिया न चाले। पछें पावें पर्वतइ आवी भगवतने वादी त्रीस उपवासनु पचक्खाण कर्यु। हवे तेणें समयें श्रीमहाविदेह क्षेत्रनें विषे श्रीसीमधरस्वामिं पासें वखाणें वखाण साभलवा श्रीचक्रेश्वरी गया हता, तिहा श्री[सी]मधरस्वामिइ श्रीविजयचन्द्र उपाध्यायनी क्रिया गुणनी प्रससा कीधी, पूर्वक वंदना करी, आगल हाथ जोडी उभी रही, ने गुरुनें कहै—'वालागी प्रभु तुम्हे 'विधिपक्ष' नामा गच्छ थापो। लोकमर्ति सुधर्म तणो मार्ग प्रगट करी आपो।' एहवु वचन देवीतणु हीइ धरी, पावापर्वतइथी हेठा उतरी देवीइ कह्यु हतु जे भाल्जनगरे जाजो, तिहा शुद्धमान आहार मिलसै। तिहा पारणु करजो, ते वचनें भालजनगरे आव्या, तिहा शुद्धमान आहार वुहरि पारणु करीउ तिहा यशोधन भणसालीने प्रतिवोध्यो। पछै तेहनें नवीन मासादें भरतेश्वर चक्रवर्त्तितणी युक्ति प्रतिष्ठा थाते थकें आकासिं देववाणी एहवी थई—'अहो लोको विधिपसगच्छ आसरो, जिम ससार तरो।' एहवु देवीवचन साभलि श्रावक लक्षो गमें आदर्युं। राजा विक्रमादित्य थकी इगारसै ओगणोतेरइ (स० ११६९) वरसइ श्रीविधिपक्ष गच्छनो महिमा विस्तर्यो। हवे विहार करता श्रीविजयचन्द्र उपाध्याय वइणपनगरें पहोता। तिहा कोडि व्यवहारीयो छे, ते सिद्धराओ जेसगनो भडारी छे, तेहने प्रतिबोध्यो। यतः—

तस्स सुआ समयसिरि एक्ककोटिटका मूलअलगारा।
परिहरीय गहिय दिक्खा पणवीससहि य परिवरिया॥

चापलदे कलत्र। सवत तेर पसताले जन्म, सवत् तेर बावनइ दीक्षा, सवत् तेर पचाणुइ स्थभतीर्थे निर्वाण। एव पचास वर्ष सर्वायु ॥

५७. सत्तावनमें पाटे महिन्द्रप्रभसूरि। वडग्रामि श्रेष्ठि आसा, भार्या जीवणि, तेहनो पुत्र। सवत् तेर त्रेसठि जन्मं, तेर पचोतरें बीजापुरें दीक्षा, सवत् तेर त्राणुइ अणहल्लपुरपाटणि आचार्यपद थयु, तेर अठाणुइ स्थभतीर्थे गच्छनायकपद थयु, मरुमडलिइ नाणीग्रामि चोमास रह्या, चोमासामध्ये चमालीसमें दिवसे मध्यरात्रीनी वेला काल्दर सर्प्प आवी गुरुनें डसो, पणि मत्र जत्र तत्र जागुलीना औषधीतणा भ्रम छाडी एकाति श्रीपार्श्वनाथनु ध्यान धर्युं। दशमि पुहरी लहिर वाजी पणि ध्यान तणिं बले लहिर तणु वल भाजींउ। समग्र विषधा टल्यो जयजयारव ओछल्या। समग्र लोक आणद्या। सवत् १४४४ निर्वाण। एव ८० वर्ष सर्वायु ॥

५८ अठावनमें पाटें इणि कलिकाले अद्भुत भाग्य सौभाग्य विद्यानिधान गुणे करी प्रधान मिथ्यात्वकन्दकुदाल श्रीमेरुतुगसूरि थया। नाणीग्रामि वुहरो वयरसाह, नाल्हु कलत्र, तेह तणो पुत्र वस्तपाल। चउद त्रीडोत्तरे जन्म, चउद डाहोत्तरे दीक्षा, चउद वत्रीसें आचार्यपद, चउद पीस्तालीस १४४५ गच्छनायकपद, जेहने वारे शाखाचार्य श्रीजयसेखर थया। वार सहस्र 'उपदेशचिंतामणी' ग्रथतणा करणहार श्रीमेरुतुगसूरि पासैं रात्रे चक्रेश्वरी आवता ते रात्रे कोईक श्रावके दीठा। तेज रात्रे कोईक वाईडीओ उपाश्रयमा आवे छइ ते श्रावक रीसाणो उपाश्रय आवे नहि, ते सर्व गुरुइ जाणु। पछे गुरु तेहनें मनावी तेडी लाव्या, वली बीजै दिवसै वखाणें आव्यो छैं, तिवारे पाटला ओधा मुकाव्या छे, हवे चक्रेश्वरी नित्य वखाणें आवे छे। ते आव्या एटले पाटला ऊभा हता, ते समा थया। श्रावक जोइ रह्यो, गुरुइ कहिओ रात्रे एहु आवे छे। पछे श्रावकना मननो सदेह भाग्यो, पछे गुरुइ कहिउ चक्रेश्वरीने-'हवे आवस्यो म।' ते दिवसथी आवता ते रह्या। मेरुतुगसूरी १४७१ निर्वाण। एव वर्ष अडसठ सर्वायु ॥

५९. ओगणसाठमि पाटे श्रीजयकीर्तिसूरि। तिमिरपुरनगरि भुपाल सेठ, भरमादे भार्या, पुत्र वीत्रा। चउद त्रेत्रीमें जन्म, सवत् चउद त्रेताले दीक्षा, सवत् ओगणोतेरें आचार्यपद स्तभतीर्थे, चउद त्रीहोत्तेरे गच्छनायकपद पाटणनगरि, १५०० निर्वाण। एव सर्वायु वर्ष ६०॥

६०. साठिमें पाटें श्रीजयकेसरसूरि। पचालदेशे स्थान महानगर श्रेष्ठि देवसी, भार्या लाखणदे, पुत्र धनराज। चउद ओगणोतेरे जन्म, चउद पचोतर दीक्षा, चौद चोराणुइ आचार्यपद, पनरसें एके चापानेर नगरे गच्छनायकपद, पनरसें एकतालें स्वर्ग पहोता। एव सर्वायु वर्ष बिहुत्तर॥

६१ एकसठमें पाटे श्रीसिद्धान्तसागरसूरी, तेणइ चक्रेश्वरीनु आराधन कर्यु। तिवारें चक्रेश्वरीइ कहिउ- 'अह्मे आवीइ पणि तुम्हे ओलखस्यो नहीं।' तिवारे गुरुइ कहिउ-'माताजी तुमेंनें ओलखीइ नहीं किम?' पछे श्रीसिद्धान्तसागरसूरि वुहरवा उठया छैं, सर्वे घर पगला करे छैं, तेहवा समयने चक्रेश्वरीइ नवु घर रचना करी गरडी वाईडीनु रूप करी मार्गे आडी ऊभी रहिने गुरनें कहैं-'स्वामि माहरें घर पगला करो।' गुरु तिहा

गया पछैं ते डोसीइ सोनईयानी थाल भरी वुहरावा माड्या, ते गुरुइ सोनईया वुहर्या नहीं, पछी चोखानी थाली भरी ते मध्ये छुटक एक नि सोनईया घालि वुहरावा माड्या। पछै गुरुइ तेहनो भाव जाणि चोखा अचित्त जाणी वुहरा। पछैं गुरु उपाश्रय आव्या। पछैं चोखामांहिथी सोनईया नीकल्या ते गुरु चेला साथैं ते डोसीने मोकल्या पणि ते ठेकाणे घर तथा डोसी मिले नहि। पछै गुरुइ फिर चक्रेश्वरीनु आराधन कर्या। चक्रेश्वरी आव्या। चक्रेश्वरीइ कहिउ—'अमें आवीइ पणि तुमें ओलखो नहीं।' तिवारें गुरुइ कहिउ—'माजी किवारे आव्या, अमे ओलख्या नहीं।' तिवारे चक्रेश्वरी कहै—'मैं सोनानो थाल भरि वुहराववा माड्यो, तिवारे तुमे मुझने ओळख्या नही, इम न जाण्यु जे सोनईया ते कुण वुहरावतु हसें? ते वुहरा होत तो भलु अनें पछें चोखानी थाली वुहरी ते मध्ये छटक एक नि सोनईया हता। ते वती तुम्हारे गामो गाम एक नि सोनइया सरिखा गृहस्थ होस्यें।' इम कही चक्रेश्वरी गया, ते हवें प्रगटपणइ तो आवता नथी सुहणे स्वप्नातरि आवे छैं। ते श्रीसिद्धान्तगरसूरि अणहलपुरपाटण नगरइ सोनी जावड, भार्या पुरलदे पुत्र सोनपाल। १५०६ पनर छीडोत्तरे जन्म, पनर बारोत्तरे दीक्षा, एकतालें गच्छनायकपद, पनर साठे स्वर्गगमन ॥

६२. वासठिमें पाटें श्रीभावसागरसूरि। नगर तरसिंणि सा सागा, भार्या शृगारदे, पुत्र भावउ। पनर सोलोतेरे जन्म, पनर वीमइ दीक्षा स्थभतीर्थे श्रीजयकेसरसूरिहस्ते, सवत् पनर साठि माडल गच्छनायकपद, सवत पनर चउरासीइ निर्वाण। सर्वायु वर्ष ६८ अडसठ ॥

६३. त्रइसठमें पाटे श्रीगुणनिधानसूरी। श्रीअणहिलपुरपाटणी श्रीमाली ज्ञाति शेठ नगराज, भार्या लीलादे, पुत्र सोनपाल। पनर अडतालें जन्म, सवत् पनर वावनमइ श्रीसिद्धान्तसागरसूरिहस्ते दीक्षा, सवत् पनर पासठि स्थभतीर्थे आचार्यपद, सवत् पनर चउरासीइ गच्छनायकपद, सवत् सोल बीडोत्तरे निर्वाण। सर्वायु वर्ष ५३ त्रइपन ॥

६४. चउसठिमइ पाटे श्रीधर्ममूर्त्तिसूरि। श्रीस्थमतीर्थे सा हासा, भार्या हासलदे, पुत्र धर्मदास। संवत पनर पच्यासीइ जन्म, सवत् पनर नवाणुइ दीक्षा, सवत् सोल विडोत्तरे अहमदा[वाद]नगरि गच्छनायकपद, संवत् सोल ओगणोतरे श्रीपाटणि निर्वाण। एव सर्वायु वर्ष पच्यासी ॥

६५. पांसठमे पाटे श्रीकल्याणसागरसूरि। लोलपाटकनगरि कोठारी नानिग, भार्या नामलदे, पुत्र कोडण। सवत् सोल तेत्रीसें जन्म, सोल वेताले दीक्षा, सोल ओगणपचासें आचार्यपद, सोल ओगणोतेरे गच्छनायकपद, सवत् सत्तरे अढारोत्तरें निर्वाण। सर्वायु वर्ष पच्यासी ॥

६६. छासठमें पाटें श्रीअमरसागरसूरी। मेवाडे देशें श्रीउदयपुरनगरिं श्रीमालि ज्ञाति चउधरी जोधा, सोनवाई भार्या, पुत्र अमरसिंघ। सवत् सोल छन्नुइ जन्म, सवत् सत्तरें पचोत्तरे दीक्षा, सवत् पनरोत्तरे आचार्यपद, सतर अढारोत्तरें भटारकपद, सत्तर वासठि निर्वाण। सर्वायु वर्ष ७० सितेर ॥

६७. सडसठमें पाटे श्रीविद्यासागरसूरि। श्रीकच्छदेशे खीरसरा विंदर, ओशवस ज्ञाति साह कर्मसी, भार्या कमलादे, पुत्र विद्याधर। सवत १७४७ सतर सडतालें जन्म, संवत १७५८ अठावनें दीक्षा, सतर वासठ १७६२ आचार्यपद, नयराटनगरिं ॥ — — — — — — — — — — (— — — — — ॥

श्रीअचलगच्छ (विधिपक्षगच्छ) पट्टावलीयन्त्र। श्रीकल्याणसागरसूरिपर्यन्त सं० १६७०।

	श्रीगच्छनायक नाम	जन्मदेश	जन्मनगर	वंशनाम	पितानाम	मातानाम	जन्मवर्ष	दीक्षा वर्ष	सूरिपद वर्ष	गच्छ पदवर्ष	निर्वाण वर्ष	सर्वायु
१	श्रीआर्यरक्षितसूरि	आबूगोढि	दंताणीग्राम	प्राग्वंश	व्यवहारिद्रोण	देदी	सवत् ११३६	११४२	११६९	११६९	१२३६	१००
२	श्रीजयसिंहसूरि	कुकणदेश	सोपारनगर	ओशवंश	श्रेष्ठि दाहड	नेढी	सं० ११७९	११९७	१२०२	१२३६	१२५८	८०
३	श्रीधर्म्मघोषसूरि	मरुदेश	माहवपुर	श्रीमाली	सा०श्रीचंद	राजल्दे	सं० १२०८	१२१६	१२३४	१२५८	१२६८	६१
४	श्रीमहेन्द्रसिंहसूरि	मरुदेश	सरनगर	श्रीमाली	सा०देवप्रसाद	थिरदेवी	सं० १२२८	१२३७	१२६३	१२७१	१३०९	८२
५	श्रीसिंहप्रभसूरि	छहुत्तरि	बीजापुर	श्रीमाली	म०अरसी	प्रीतिमती	सं० १२८३	१२९१	१३०९	१३०९	१३१३	३०
६	श्रीअजितसिंहसूरि	मरुदेश	डोडग्राम	श्रीमाली	म०जिनदेव	जिनमती	सं० १२८३	१२९१	१३१४	१३१६	१३३९	५६
७	श्रीदेवेन्द्रसिंहसूरि	मरुदेश	पाल्हणपुर	श्रीमाली	व्य०सातू	सतोपश्री	सं० १२९९	१३०६	१३२३	१३३९	१३७१	७२
८	श्रीधर्म्मप्रभसूरि	मरुदेश	भीनमाल	श्रीमाली	श्रेष्ठिलीवा	बीजलदे	सं० १३३१	१३४१	१३५९	१३७१	१३९३	६२
९	श्रीसिंहतिलकसूरि	मरुदेश	आइचवाड	श्रीमाली	सा०आसधर	चापल्दे	सं० १३४५	१३५२	१३७१	१३९३	१३९५	५०
१०	श्रीमहेन्द्रप्रभसूरि	जीरीउलिया	वडग्राम	ओशवंश	शाह आभा	वींवणि	सं० १३६३	१३७५	१३९३	१३९५	१४४४	८१
११	श्रीमेरुतुगसूरि	मरुदेश	नाणीग्राम	प्राग्वंश	व्य०वयरसी	नालहणदे	सं० १४०३	१४१०	१४२६	१४४४	१४७१	६८
१२	श्रीजयकीर्तिसूरि	मरुदेश	तिमरपुर	श्रीमाली	व्य०भूपाल	भरमादे	सं० १४३१	१४४४	१४६७	१४७१	१५००	६९
१३	श्रीजयकेसरसूरि	पचालदेश	थाननयर	श्रीमाली	श्रे०देवसी	लाखणदे	सं० १४७१	१४७५	१४९४	१५००	१५४२	७१
१४	श्रीसिद्धान्तसागर सूरि	गुज्जरदेश	अणहलपुर	ओशवंश	सोनी जावड	पूरलदे	सं० १५०६	१५१२	१५४१	१५४२	१५६०	५४
१५	श्रीभावसागरसूरि	मरुदेश	नरसाणुनगर	श्रीमाली	वुहरा सागा	शृंगारदे	सं० १५१६	१५२०	१५६०	१५६०	१५८४	७४
१६	श्रीगुणनिधानसूरि	गुज्जरदेश	श्रीपत्तने	श्रीमाली	सा०नागराज	लीलादे	सं० १५४८	१५५२	१५६५	१५८४	१६०२	५४
१७	श्रीधर्म्ममूर्त्तिसूरि	गुज्जरदेश	स्तंभतीर्थे	श्रीमाली	सा०हसराज	हासलदे	सं० १५८५	१५९९	१६०२	१६०२	१६७०	८५
१८	श्रीकल्याणसागर-सूरि	वढीयार देश	लोलपाटके	श्रीमाली	को०नानिग	नामलदे	सं० १६३३	१६४२	१६४९	१६७०	—	—

श्रीवीरवंशपट्टावली-अपरनाम विधिपक्षगच्छपट्टावली ।

॥ श्रीवीतरागाय नम ॥

पणमियमयलसुरा-ऽसुर-नरवरमहिय जिणाण पयकमलं ।
भवियणवछियपूरणसुरतरुसममणगुणनिलय ॥ १

समरिय नियगुरुवयण उवभइसोहग्गमन्निहाणमिण ।
श्रीवीररायवस सुयाणुसारेण वुच्छामि ॥ २

अत्थऽत्थि भरहवासे ओसप्पिणीए चउत्थए अरए ।
तेवीस तित्थयरा समइक्कता तओ पच्छा ॥ ३

खत्तियकुडग्गामे सिद्धत्थनिवस्स नारितिसलाए ।
सिरिवीरो जिणराओ चउवीसइमो समुप्पण्णो ॥ ४

तीसयवरिसे चरण नवविहलोगतिगेहि विण्णविओ ।
पणयालीससएहिं पनरसदिवसेहि जिणधम्मो ॥ ५

वइसाहसुद्धदसमी हत्थुत्तरजोगि वद्धमाणस्स ।
रिजुवालानइतीरे उप्पन्न केवल नाण ॥ ६

भवणवइ-वाणमतर-जोइसवासी विमाणवासी य ।
सव्वड्ढीए सपरिसा कासी नाणुप्पयामहिम ॥ ७

मुणिणो चउदससहसा छत्तीस अज्जियासहस्साइ ।
इक्कारस गणहारा एव सा सपया तस्स ॥ ८

भवियजणे पडिबोहिय बावत्तरि पालिऊण वरिसाइ ।
सोहम्मगणहरस्स य पट्ट दाउ सिव पत्तो ॥ ९

पढमो सुहम्मसामी गणहारो केवली सिव पत्तो ।
तत्तो जम्बूसामी केवलजुत्तो गओ मुक्ख ॥ १०

मण परमोहि पुलाए आहारग खवग उवसमे कप्पे ।
सजमतिय केवल सिज्झणा य जम्बूम्मि वोच्छिन्ना ॥ ११

भव्वो गणहरतिलओ सूरी सिज्जभवो य गणहारो ।
सूरिजसोभद्दगुरू पट्टे सभूयविजओ य ॥ १२

सिरिभद्दबाहुगुरुणा चउदसपुव्वाइं भाणिऊण लट्ठ ।
सिरिथूलभद्दसूरी सभूइपए य संठविओ ॥ १३

पुव्वाण अणुओगो संघयण पढमय च सठाण ।
सुहुममहापाणाणि य वोच्छिन्ना थूलिभद्दम्मि ॥ १४

तस्स य दुन्नि य सीसा ते वि य साहाण नायगा दो वि ।
पढमो अज्जमहागिरि सूरी तस्स उ इमे कमसो ॥ १५

सूरिबलिस्सहनामा साई सुगुरू तओ य सामज्जो ।
जेण निगोयवियारो सोहम्मवइस्स परिकहिओ ॥ १६

संडिल्लो जीयधरो अज्जसमुद्दो सुसूरिमगू य ।
नंदिल्ल नागहत्थि य रेवइ-सिरिसिंह खंदिल्ला ॥ १७

हिमवंसिरि नागज्जुणसूरी सिरिभूइदिन्न-लोहिच्चा ।
दूसगणिसूरिराओ देवड्ढिखमासमणनाहो ॥ १८

दुस्सहदूसमवसओ साह पसाहाहिं कुलगणाईहिं ।
विज्जा किरिया भट्ठा सासणमिह सुत्तरहिय च ॥ १९

उवयार समरिय मेलीए चउसघे वलयपुरमज्झे ।
देवड्ढिखमासमणेण पुत्थए रोविय सुत्त ॥ २०

वीरस्स सत्तवीसे पट्टेसु तत्थ रयणसिंगार ।
देवड्ढिखमासमण पणमामि य वुड्ढसाहाए ॥ २१

अह थूलिभद्दसीसो अज्जसुहत्थी य विइयगणहारी ।
संपइनरिंदराओ पडिबोहिय जेण वयणेण ॥ २२

तप्पय सुट्ठियसूरी सुप्पडिबद्धे य इददिण्णे य ।
सिरिअज्जदिण्णसूरी सीहगिरी सासणाहारो ॥ २३

तस्स य सोहग्गनिही अइसयगहिरिमगुणाण भडारो ।
दसपुव्वधरो सामी सिरिवयरमहामुणी जयउ ॥ २४

दसपुव्वा वुच्छिन्ना सपुन्ना सुरभवम्मि सपत्ते ।
वयरम्मि महाभागे संघयण अद्धनाराय ॥ २५

तस्सति अज्जरक्खिय भणिऊण जाव सड्ढनवपुव्वी ।
जाओ जुगप्पहाणो अणुओगो रक्खिओ जेण ॥ २६

आरेण अज्जरक्खिय कालाणुन्ना उ नत्थि अज्जाण ।
पव्वज्जाविहिमुट्ठावण च पच्छित्तदाण च ॥ २७

सिरिवयरसामिसीसो सुवयरसेणो य तस्स चत्तारि ।
सिरिचंदसूरि-नागिंद-निव्वुइ-विज्जाहरा सीसा ॥ २८

पढमो चंदो सूरी तत्तो सामंतभद्दओ कमसो ।
सिरिदेवसूरि पज्जोयणो य सिरिमाणदेवमुणी ॥ २९

सिरिमाणतुंगसूरी 'भत्तामर'करणविस्सविक्खाओ ।
सिरिवीरो जयचंदो देवाणंदो य विक्कमओ ॥ ३०

नरसिंहो य समुद्दो हरिभद्दो सूरिरायगणतिलओ ।
बहुगंधकरणकुसलो तस सीसो माणदिन्नो य ॥ ३१

विबुहपहो जयनंदो रविपहसूरीसरो जसोदेवो ।
सिरिविमलचंदसूरी तत्तो उज्जोयणो सुगुरू ॥ ३२

जेण य टेलग्गामासन्ने वडरुक्खहिट्ठिमे भाए ।
गोगोरचुण्णजोण्ण सुद्धसुमुहुत्तवेलाए ॥ ३३

नियसव्वदेवसीसोत्तमस्स सूरीसरपय दिण्ण ।
वडगच्छनाम जाय तत्थाइमसव्वदेवगुरू ॥ ३४

तह पउमदेवसूरी उदयप्पहसूरिचंड पद्दाणंदो ।
सूरीसधम्मचंदो सुविणयचंदो गुणसमुद्दो ॥ ३५

सिरिविजयप्पहसूरी नरचंदो वीरचंदमुणितिलओ ।
तत्तो सिरिजयसिंहो वडगणपट्टे य सूरिधरो ॥ ३६

अब्बूगिरिचरपासे दताणीनामगाममज्झम्मि ।
पागयवसाभरणो निवसइ दोणाभिहो मंती ॥ ३७

देढी तस्स य भज्जा दोन्नि य पुत्ताय तत्थ संजाया ।
वयजा सोल्हा नामा बाला ते सुगुणगणगेहा ॥ ३८

जयसिंहसूरिपासे विजण्ण रसेण संजममगिण्ह ।
नामेण विजयचंदो भणइ सुय तिक्खबुद्धीए ॥ ३९

दुस्सहकालवसेण य अणेसणिज्जेण असणपाणेण ।
सावज्जकुणताण साहूण कुब्बरा किरिया ॥ ४०

त दट्ठु सो पभणइ समहिज्जतो चि सुत्तमायार ।
भयव ! किं विवरीय दीसइ उम्मग्गकरणाओ ॥ ४१

तत्तो सूरी भणणइ किं किज्जइ जइ पमायबहुलतमो ।
कालो वट्टइ एव तत्तो सो भणइ सव्वसुय ॥ ४२

एव तवो जहसत्ति पणहुत्तरि पव्वसुत्तकहियम्मि ।
पोसहिओ तह पावारभाईय विवज्जेइ ॥ ७३

अन्ने तवस्स भेया चउवीसा सेणि-पयरमाईया ।
एएसु चेव निरओ तवकरणे उज्जमाउत्तो ॥ ७४

जिणभवणबिंबपइट्ठचउविहसघस्स सत्तिभत्तिरओ ।
सिद्धतपुत्थलेहण सुतित्थजत्ता उ नवखित्ते ॥ ७५

जिणबिंनपइट्ठाण करावेऊण बभधारेहिं ।
सिद्धतवयणमग्गेण पढम पूएइ तिक्काल ॥ ७६

फल पत्त-भत्तवज्जण तह तदुलअट्ठमगलभरेण ।
आसायणाइरहिओ सक्कथएण नमसेइ ॥ ७७

बहुलारभविवज्जणकिरिय ववहारसुद्धिसहिय च ।
धणअज्जण कुणतो माया-मय-कोहरहिओ य ॥ ७८

किंच–

पासडिदेवतच्चणधणेण खरकम्म नीयकम्मेहिं ।
जूएण धाउवाएण वा वि अत्थ न अत्थेइ ॥ ७९

सज्झासमए पुणरवि छव्विहमावस्सय कुणतस्स ।
[1] दिवस निसा सइढस्स हु सयला सहला भवइ एव ॥ ८०

एव गुरुवयणरस आसाएऊण जायरोमचो ।
पडिवज्जइ दढचित्तो जसोहणो सुद्धधम्म त ॥ ८१

तत्तो जत्त काउ गहिऊण गुरु जसोहणो चलिओ ।
भालिज्जपुरे एओ काराविय रम्मजिणभवण ॥ ८२

विहिपुव्व सुपइट्ठा बभव्वयसावएहि कारविया ।
ठविय च रिसहबिंब महामहा सहरिसा जाया ॥ ८३

पासडिदरिसणेहिं कओवसग्गा सुनिप्फला जाया ।
चक्केसरिवयणेण वि जाओ विहिपक्खगणतिलओ ॥ ८४

सिरिविजयचदसुगुरु सुसुद्धकिरिय समाचरतो य ।
विहरतो भूमितले विऊणपनयरम्मि सो पत्तो ॥ ८५

तत्थद्वारसवेलाकुलसुविक्खायकउडिववहारी ।
गुरुवयणेण बुद्धो सकुडुबो सावओ जाओ ॥ ८६

तस्स सुया समयसिरी इगकोडीटकमुल्ललकार ।
परिहरिय गहियदिक्खा पणवीससहीहिं परियरिया ॥ ८७

अन्ने वि तत्थ जणया गुरुवयणरसेण लीणपडिबुद्धा ।
के सव्व देसविरई वेरग्गवसेण पडिवन्ना ॥ ८८

गाम-पुर नयर-पट्टण-सदेस परदेसभूयले विहरइ ।
साहू साहुणि सावय सुसाविया बहुयरा जाया ॥ ८९

नवकप्पे विहरंतो थिरपद्दपुर गया समणजुत्ता ।
वासावास तत्थ य सठविया भवियलोएहिं ॥ ९०

अह वरकुंकणदेसे सोपारभिहाणपट्टणपुरम्मि ।
दाहडसिट्ठी नामा नेढीभज्जऽत्थि सीलजुया ॥ ९१

अन्नय निसीहसमये सुमिणे दिट्ठो ससी तया पुण्णो ।
नवमासे पडिपुण्णे जाओ जासिगभिहाणवरो ॥ ९२

वड्ढइ कमेण वालो सुरूव-लावण्णसुगुणमणिहारो ।
बहुसत्थकलाकुसलो मयणसह जुव्वण पत्तो ॥ ९३

अन्नय जबूचरिय सुणिऊण गुरुमुहाउ उब्भडय ।
वेरग्गरगभरिओ वयगहणे उज्जओ जाओ ॥ ९४

पिय माय अणुन्नाविय चलिओ सुहदत्तमित्तसहिओ य ।
अणहिल्लपट्टणम्मि य जयसिंहनरिंदवयणाओ ॥ ९५

थिरपद्दम्मि समेओ गुरुरहियउवस्सए पविट्ठो य ।
सिंहासणम्मि दसकालियस्स पुत्थी पवाएइ ॥ ९६

इगवारेण य वायणपुव्व इगसथि(?)लद्धिवुध्धीए ।
आवडियसयलसुत्त नाणावरणक्खओवसमे ॥ ९७

चेइयवदण काउ समागओ तत्थ सुगुरु वदेइ ।
गणिऊण वयभार गुरुभत्तिरओ भणइ सुत्त ॥ ९८

वागरण तक्क-साहिच्च-छद-ऽलकार आगमाईण ।
सुयसागराण पारो जाओ सो पचवरिसेहिं ॥ ९९

महयाडवरजुत्त सूरिपय तस्स विउणपे जाय ।
जयसिंहसूरिनामो जाओ भूमीय सिंगारो ॥ २००

सूरिपए सठविया नियगुरुसिरिअज्जरक्खियभिहाणा ।
तप्पट्टि उदयगिरिरविसिरिजयसिंहो जयउ सूरी ॥ १०१

बहुभवियण पडिबोहिय वरेग्गरसेण चरण-दाऊण ।
बहुपरिवारेण जुओ सो वि य भूमडले विहरइ ॥ १०२

इगवीससया वीसा साहूण सपया भवे तस्स।
एगारससयतीसा सा सपइ सजईणमिणा॥ १०३

अह बारस आयरिया वीस उवज्झाय वायणायरिया।
सत्तरि तह सयमेग तियअहिय पडियाण च॥ १०४

कवडिसुया समयसिरी महत्तरा पवतणी सवासीया।
एव सपय दो सय अट्ठासीआ उ सठविया॥ १०५

इय अणहिल्लपुरम्मि य जयसिंहनरिंदपट्टलकारो।
सिरिकुमरपालराओ जाओ भूपालमउडमणी॥ १०६

सिरिहेमसूरिगुरुणा पडिबोहिय वयणसुरसदाणेण।
जिणभत्तिजुत्तिरत्तो जाओ सुस्सावओ परमो॥ १०७

अट्ठारदेसमज्झे अमारिउग्घोसण पवट्टेइ।
सो जीवदयातप्पर परिपालइ देसविरइ च॥ १०८

अह अन्नया नरेसो मुहपत्तीए करेइ किइकम्म।
विहिपक्खिकवट्टिसावय उत्तरसगेण त वियरइ॥ १०९

एव किमिइ निवेण य पुट्ठो सिरिहेमसूरी वच्चेइ।
जिणवयणेसा मुद्दा परपरा एस तुम्हाण॥ ११०

तत्तो भण्णइ राया परपरामग्गओ य एगत्थ।
कीरइ सूरी वच्चइ महिमा सिरिविजयचदस्स॥ १११

सीमधरवयणाओ चक्केसरिकहणसुद्धकिरियाए।
सिद्धतसुत्तरत्तो विहिमग्ग सो पगासेइ॥ ११२

पच्छा निवेण तस्स वि अचलगणनाम सिरिपहेण कय।
तिमिरपुरे गतूण वदइ सुगुरु सुभत्तीए॥ ११३

एगारसछत्तीसे जम्मण बायाल चरणसिरि वरिया।
अउणुत्तरिए वरिसे विहिपक्खगणो य सठविओ॥ ११४

बारसछत्तीसम्मि य सयवरिस पालिऊण परिपुण्ण।
सिरि अज्जरक्खियगुरू गओ दिव तिमिरनयरम्मि॥ ११५

तप्पट्टपउमहसो गणाहिवो सूरिरायजयसिंहो।
कत्थ वि गामदुगनर गच्छइ सो परिकरेण जुओ॥ ११६

केहिं पि गुरु घाउ सपेसिय भडसई करे सत्था।
जाव समेया तत्थ वि थभियभूया तया सव्वा॥ ११७

पिय-माय-बंधवेहिं गुरूपासे आगएहिं भत्तीए ।
तइयदिणे पगधोवणछटणओ मुक्कला जाया ॥ ११८

अन्नय पासत्थेण वि गुरूहणणत्थ च पेसिया सुहडा ।
विउणपि वसइदुवारे परुप्पर जुज्झिया वलिया ॥ ११९

तस्स य उयरे वेयण संजाया अइयहुपगारेहिं ।
न समइ तत्तो तप्पयधोयणपाणाउ उवसमिया ॥ १२०

एव जस जसमहिमा पवट्टए भूयलम्मि अणुकमसो ।
माहवपुरम्मि पत्ता तत्थ य सिरिवसमउडमणी ॥ १२१

सिरिचंद वसइ सिट्ठी राजलदेवी इ भारिया तस्स ।
धन्नभिहाण कुमारो गुरुवएसेण गहिअवओ ॥ १२२

थोवदिणे बहुपन्नावसेण बहुसत्थपारओ जाओ ।
जाणिय जुग्ग गुरुणा सूरिपए सो वि सठविओ ॥ १२३

सिरिधम्मघोसनामा सूरी गुरुसन्निहम्मि सो विहरइ ।
सयपइयाइयगथा रइय महाकविविरुदवहो ॥ १२४

विक्कमकालइगारसइगऊणासीइवच्छरे जम्मो ।
सगणउए चरणसिरि वारससइगुत्तरे सूरी ॥ १२५

तत्थेव गच्छनाहो जयसिंहमुणिंद विहरिउ भरहे ।
इगसीइवरिस आउ अडवन्ने परभव पत्तो ॥ १२६

तप्पयकमलाहारो सूरीसरधम्मघोमगणहारो ।
भट्टोहरिनयरम्मि य पयउच्छव कउ य सघेण ॥ १२७

विहरतो सपत्तो सभरिदेसम्मि पढमभूपालो ।
बोहिय जेण जिणालय काराविय्रमनणुदव्वेण ॥ १२८

गुज्जर-सिंधु सवालख-मालव मरहट्ठ मच्छ सोरट्ठे ।
विहरतो सिरिनयरे भवियणपडिवोहणे पत्तो ॥ १२९

सिट्ठी देवपसाओ सिरिवसे तत्थ वसइ ववहारी ।
थिरदेवीरमणीए जाओ मालाभिहो कुमरो ॥ १३०

गुरुवयणे सलीणो वेरग्गभरेण सजम गिण्हइ ।
गुरुपासे बहुसत्थ अवगाहइ बुद्धिपब्भारो ॥ १३१

सूरिपए सठविओ महिंदसिंहो य सूरिरायमणी ।
वादिगयघडासिंहो न चुक्कए तक्कवाए वि ॥ १३२

बारसअट्ठुत्तरए जम्मण सोलुत्तरे य पव्वज्जा।
चउतीसे सूरिपय अडवन्ने गच्छभारजुय॥ १३३

सिरिधम्मघोससूरी सट्ठियवरिस च पालिउ आउ।
अडसट्ठइ तिमिरपुरे सुरभवण अणसणे पत्तो॥ १३४

तप्पय महिंदसिंहो विहरंतो मोलसाहुपरिवरिओ।
चित्तउडगिरिं पत्तो सघकयाडबरो बहुसो॥ १३५

तत्थ य देदगनामा कणयगिरीबहुलदव्ववयहारी।
मुणिऊण गुरुवयण पडिबुद्धो सावओ जाओ॥ १३६

तस्स य भइणी मिच्छत्तवासिणी धम्मरहिय दुट्ठमणा।
नीवीरा कलहपिया साहूण मच्छर वहइ॥ १३७

अन्नय उच्छवसमए निमतिया भोयणे बहू लोया।
विसमिस्स साहुकए अणेसणिज्ज तया रद्ध॥ १३८

साहुनिमतणकरणे देदगहरसेण आगया मुणिणो।
दिन्न तया तमन्न विहिरिय चलिया य गुत्तीए॥ १३९

झाणगया गुरुराया झाण मुत्तूण उट्ठिया जाव।
तियवार खोभविआ दिट्ठ विसमिस्सिय भत्त॥ १४०

तत्तो देदगकहण भइणीए विलसिय च तेणावि।
सव्व बहिं परिठविय उम्मणदुमणो य खामेइ॥ १४१

पुणरवि गुरु झाणगया पयडिय चक्केसरीइ देवीए।
दूरट्ठिया वि सा ह सव्व विग्घ निवारेमि॥ १४२

इय कहिय गया देवी पयडपयावो गुरूण सुपसरिओ।
थेवद्दणम्मि नयरे पत्ता सघायरेणेव॥ १४३

चउमासे मठविया अट्ठोत्तरिगाहिया कया तत्थ।
तित्थयमालभिहाणा सामाइयमज्झि भट्ठाण॥ १४४

सिरिपासभवणमज्झे भीमनरिंदेण कहिय पासथुई।
इगहगकव्वेण कया सोलससाहूहिं भत्तीए॥ १४५

चउविहसघेण जुओ तओ चलतो य बहुलपरिवारो।
तह भीमसेणखमणो सयछत्तो सम्मुहो मिलिओ॥ १४६

कस्सवहारे चलिया पुट्ठ चगेण तेण दप्पेण।
गुरुणो कहति एव नाहि अम्हाण नागविआ॥ १४७

'छ(क)लिओ ह 'मित्ति सीसो जाओ सपरिच्छओ य सुगुरूण ।
विहरंतो कण्णवईनयरम्मि समुच्छवो एओ ॥ १४८

सिरि वक्कपालमंती चलुसीभट्टेहिं सजुओ तत्थ ।
वंदणरसेण आवइ निसुणइ सुगुरूण उवएम ॥ १४९

सव्वेसिं भट्टाण वयण निसुणिय ससया भग्गा ।
गुरुभत्तिरसे लीणा चमक्किया नमिय ते वि गया ॥ १५०

बीजापुरम्मि पत्ता सिरिवसे सिद्धिनाह अरसीहो ।
पीइमई तस भज्जा सीहसुओ कुयरसीहनिहो ॥ १५१

चारित्त गहिऊण गुरुपासे सच्छसत्थअत्थ च ।
सिंहप्पहनामेण य बुद्धीए भट्टया विजिया ॥ १५२

तो डोडगामनयर पत्ता गुरुणो य तत्थ सिरिवसे ।
जिणदेवो वसइ वरो जिणमइ भज्जा सुओ अचलो ॥ १५३

गहिऊण वयभार नाम अजियसिंह खुड्डओ सुमुणी ।
सिरिगुरुणो वि विहरिया थभणनयरम्मि सपत्ता ॥ १५४

बारसअट्ठावीसे जम्मण सातीसए य चारित्त ।
तेसट्ठइ आयरियो उगुणत्तरि गच्छपइभारो ॥ १५५

तेरनवोत्तरवरिसे सिंहपहे सूरि गच्छपइभार ।
ठाविय महिंदसूरी सुहझाणे सो दिव पत्तो ॥ १५६

अह सिंहप्पहसूरी गणनाहो हणियमोह-मय-माणो ।
बारसतिसिए जम्मण एगाणूए य चरणसिरी ॥ १५७

तेरनवोत्तरवरिसे सूरीपयं-गच्छभारसजुत्तो ।
तेरोत्तरि तिमिरपुरे सुरभवणालकिओ सो वि ॥ १५८

तप्पट्टि अजियसिंहो सूरीसररायहसअवयारो ।
सघेण उच्छवेण य सठविओ गच्छपइभारो ॥ १५९

बारसतिसिए जम्मण एगुणणउए य गिण्हए चरण ।
तेरसचउदसवरसें सच्छे सिरिसूरिगणभारो ॥ १६०

ओगणयालावासे अणहिलपुरपट्टणे समोसरिओ ।
सगवण्णवरिसआउ पालिअ सुहझाणि परलोओ ॥ १६१

तप्पयकमलाहारो सूरी देविंदसिंहगणहारो ।
पालहणपुरि सिरिवसे सांत(? तु)सतोमसिरिनाहो ॥ १६२

तस उयरे सपत्तो बारसनवनवइवच्छरे पुत्तो ।
तेरछडुत्तरिवरिसे पव्वज्जारयणगहण च ॥ १६३

तेवीसे तिमिरपुरे वहुच्छवे सुगुणगणाणि सूरिपय ।
ओगुणयाले गणपइ इगहुत्तरि परभव पत्तो ॥ १६४

तस पयकमलविलासो अहिणदहसो वि सुद्धसिरिवसो ।
सूरीस धम्मघोसो सुभिन्नमाले कयावासो ॥ १६५

लींबावीझलउयरे तेरसइगुतीसवरिस धनराओ ।
जाओ तह इगुयाले गिण्हइ चरण सुगुरुचरणे ॥ १६६

गऊणमट्ठि सूरी इगुहत्तरि गणभर च पावेइ ।
तेसट्ठि वरस आउ तिनवइवरिसे दिव पत्तो ॥ १६७

तप्पइ सिरिसिरिवसे सूरीमणि सिंहतिलयगणराओ ।
आइचपुरे सिट्ठी आस(सा)वर चापला[उ]यरे ॥ १६८

तेरसपणयालीसे जम्मण बावन्नए य चरणसिरी ।
इगहुत्तरि सूरिपय तिनवइवरिसे य गच्छेसो ॥ १६९

पणनवए परलोए पत्तो मिच्छत्ततिमिरदरदिवसो ।
सूरीस महिंदप्पहगणाहिवो जयइ जगदीवो ॥ १७०

जीराउल्लिसमीवे वडगामे ओसवससिणगारो ।
आभा निंबिणिउयरे तेरसतेमट्ठए जाओ ॥ १७१

पणहुत्तरि वयभारो धम्मपहसूरिरायकरकमले ।
तिनवइवरिसे सूरी गणभारो अट्ठनवइम्मि ॥ १७२

अह कालविसमईसमवसेण तुट्ट पमायदोसेण ।
तव नियम किरिय विज्जारहिय दट्ठूण नियगच्छ ॥ १७३

चिंतइ सुगुरू कमुवायमित्ति देविवयणमिति उच्छलिय ।
इगचित्त मतराओ एगते झायगो होउ ॥ १७४

अनिलनवविहिपुव्व छम्मास जाव सूरिमतस्म ।
जाओ लक्खपमाणो साहणजोएण तेण कओ ॥ १७५

पयटीभूया देवी नमिऊण गुरु पभासए वयण ।
सयल समीहिय चिय भविस्सई गच्छदित्तिकर ॥ १७६

तत्तो दिवसे दिवसे वड्ढइ सोहग्गउग्गकिरियाए ।
रविपरि धम्मपयाओ अह विहरइ महियले कमसो ॥ १७७

वहुसीसलद्धिवसओ पडिवोहिय देइ भविय चारित्त ।
पचसई परिवारो गणमज्झे भासए वि गुरू ॥ १७८

अह नाणी(ण)नयरमज्झे धणकचणरयणरिद्धिय समिद्धो ।
सिरिवयरसिंहनामो निवसइ सो पोरवाडकुले ॥ १७९

नालूयरसरहसो चउदमतियअहियवच्छरे जम्मो ।
दहउत्तरि चारित्त सुमेरुतुगो मुणी नाम ॥ १८०

गुरुपयपकयलीणो भूओ वहुसच्छसत्थपरिकलिओ ।
छव्वीसे सूरिपय सावयजणविहियउच्छाह ॥ १८१

सिरिगुरु माहिंदसिंहो विहरिय भुयणम्मि पट्टणे पत्तो ।
सवच्छरपणयाले सुहज्झाणो सो दिव पत्तो ॥ १८२

मिच्छत्ततिमिरनासण अहिणवगुरुमेरुतुगदिणराओ ।
जाओ गणवइभारो पणयाले हरिसकल्लोले ॥ १८३

गुज्जर-सिंधु सवालख मरहट्ठ-कच्छपे या वि ।
मरुमडल-मेवाडे मेवाए सभरीदेसे ॥ १८४

सव्वत्थ अप्पमत्तो तह विहरइ भवियबोहणट्ठाए ।
सियमिलियदुद्धरससमदेसणवयणेण महुरेण ॥ १८५

मिच्छत्त उच्छिदिय सम्मत्तारोवणम्मि सठविया ।
सयसहसा सुयविहिणा गुरुणा सुस्सावगा विहिया ॥ १८६

सुहझाणइद्धचित्तो निसीहसमये सया वि उस्सग्गे ।
साहेइ मनराय तहिट्ठिया किंकरा देवा ॥ १८७

ज जं गणस्स कज्ज उप्पज्जइ त तहा वि तक्काल ।
साहति ते वि गुरुभत्तिलीणचित्ता य महिमाए ॥ १८८

सिरिसित्तुजयचेइय मज्झे दीवाउ चडुओ लग्गो ।
जाणिय देसणमज्झे चोलिअ मुहपत्ति उरहविओ ॥ १८९

दूरट्ठियावि चदा गुरुभइणीवदणत्थभिग्गहिया ।
सुरकयपहावबसगा एव वदिय घर पत्ता ॥ १९०

जीराउलिपासम्मि य पेसिय गीयसनीयगब्भ(?) च ।
तयहिट्ठियदेवेहिं सगगुडिया पेसिया गुरुणो ॥ १९१

वाहडमेरे नयरे परचक्कागमणओ जणा भीया ।
गुरुझाणवसदेवेहिं उवसमिया वेरिणो सव्वे ॥

तिमिरपुरे रयणीए लग्गा अग्गी निरग्गला बहुला ।
झाणबले उल्हविया सव्वो लोओ सुही जाओ ॥ १९३
लोलाडगामि गुरुणा काउस्सग्गट्ठियस्स रयणीए ।
कालभुयगम डसिओ झाणे जाओ निरुवसग्गो ॥ १९४
एव पयडियअइसयसयसहसो भूयलम्मि विहरतो ।
पन्नासाहियपणसयभविआण देइ चारित्त ॥ १९५
पणदह सिरिपयठविया सूरि-उवज्झाय महत्तराईया ।
अन्ने वि वायणारियपमुहा य गुरूहिं पणयाला ॥ १९६
एव विहिपहवसियजिणमयदीवो य मेरुतुगगुरू ।
चउदससत्तरिवरिसे गभपुरे परभव पत्तो ॥ १९७
तप्पयधरगुरुराओ जयकित्ति मुणिंदचदगणतिलओ ।
तिमिरपुरे सिरिवसे भूपालो वसइ ववहारी ॥ १९८
भरमादेवी भज्जा उयरे जाओ य तत्थ वरकुमरो ।
चउदसतेतीसइमे, पवड्ढए वीयचदसमो ॥ १९९
इगलेणेव(? गवणे) चरित्त गहिय जयकित्तिनाम सठविय ।
गुरुपयपकयलीणो अवगाहइ सत्थसत्थ च ॥ २००
छासट्ठे सूरिपय इगुहत्तरि गच्छनाहपयमतुल ।
सिरिपोपसववइणा कउच्छवो हरिससपुण्णो ॥ २०१
पनरस सि(सु)रिपयसपय काऊण भूयलम्मि विहरतो ।
पणदहसए य वरिसे पट्टणनयरम्मि सग्गि गओ ॥ २०२
तप्पयउदयाचलवरनवदिणराओ गणाहिवो जयउ ।
सिरिजयकेसरिसूरी नामेण य पाविया पुहवी ॥ २०३
थाणपुरे सिरिवसे देवोपम देवसिंह ववहारी ।
सुररमणीरूवसमा लाखणदेवी य तस्स भज्जा ॥ २०४
अन्नय निसीहसमए सवणे सिंह निरक्खए सा वि ।
को युत्तमजीव सुओ चउदसइगुहुत्तरे जाओ (?) ॥ २०५
नामेण य धनराओ दिणे दिणे सो विवड्ढए बालो ।
पन्नाबहुबुद्धिजुओ किर पुव्वब्भासवसग व्व ॥ २०६
पणहुत्तरि वयभारो जयकेसरि नाम ठविय मुणिराय ।
थोवदिणे सुयसायरमवगाहिय पारओ जाओ ॥ २०७
चउदसचउराणूए राउलसिरिगगदासवयणेण ।
सिरिजयकित्तिगुरूहिं दिण्णो सूरीसपयभारो ॥ २०८

एगाहियपन्नरसे वरसे गणभारधारणसमत्थो ।
सिरिवीरनाहभवणे पावागिरि-चंपयपुरम्मि ॥ २०९
सालावइ संघवई कालागर कुणइ उच्छवो तत्थ ।
सिरिवीरवंसपट्टे ओयणसट्ठम्मि सो ठविओ ॥ २१०
सो नवदीवो दीवइ मिच्छत्तमहंधयारहरणपरो ।
सिरिजिणसासणहारो जयकेसरिसूरिगणहारो ॥ २११
जं किंचि सत्थलेसं चउविहसंघस्स मज्झि वच्चे हं ।
ता नियगुरुपयलग्गयरयस्स फासप्पभावाओ ॥ २१२
जीहा कोडिसहस्सं जइ वि भवइ पुव्वकोडिसमआउ ।
सुरगुरुसमकविराओ तय न थुणइ सुगुरुगुणकित्तिं ॥ २१३
कविकुलकोकिलकेलीकरणाहारेगसारसहिगारो ।
परवाडवियडवारणअहिणववरकेसरिसमाणो ॥ २१४
बहुबुद्धिरिद्धिसिद्धी विणेयलद्धीसमिद्ध गुणवुद्धी ।
जस जसपडहो वज्जइ गज्जइ कियभूयलो मेहो ॥ २१५
जे तक्कवियक्ककला कक्कसमइणो वि के वि कव्वकरा ।
जे सव्वसत्थकुसला ते गुरुपयपंकजे लीणा ॥ २१६
एवं विहरंता वि हु अणहिलवरपट्टणम्मि संपत्ता ।
तत्थत्थि ओसवंसे सोवण्णिय जावडभिहाणो ॥ २१७
पूरलदे वर भज्जा सीलदयाहारधारणे सज्जा ।
तिस उयरे उपन्नो बारसछब्बुत्तरे जाओ ॥ २१८
सोनाभिहाणकुमरो पणातियजणमित्तमज्झि रमलिकरो ।
बारुत्तरि वयभारो गुरुकरकमले य संगहिओ ॥ २१९
सिद्धंतरुई साह्र मणहरमुणिमंडलीमउलिमउडो ।
पभणइ सुगुरुसमीवे थोवदिणे सव्वसत्थाइ ॥ २२०
गच्छवइभारजुग्गं मुणिय उवज्झायसपय पुव्वं ।
दत्तं तत्थ य पिउणा चमक्किओ उच्छवो विहिओ ॥ २२१
सूरिदुग सत्त पाठग महत्तरा दसह सिरिपए दाउं ।
सिरिजयकेसरिसूरी थंभपुरेलंकिओ तत्तो ॥ २२२
पोससुद्धट्ठमीए पालिय बावत्तरिं च वरिसाउं ।
आराहणाइपुव्वं इगयाले सो दिवं पत्तो ॥ २२३
अह चउविहसंघेण वि मिलिय महानंदपूरिएण समं ।
अहमदपुरवरमज्झे फग्गुणसुद्धस्स पंचमिए ॥ २२४

सूरिपयगच्छभारो ठविओ सिद्धतसायरगुरूण ।
सिरिवसाभरणेण य हसेण कओच्छवो तत्थ ॥ २२५
सिद्धतसागरगुरू समग्गसोहग्गरगलीलाए ।
विलसइ सासणमज्झे सज्जणमणरजणवियड्ढो ॥ २२६
विहरइ वसुहापीठे पुर-पट्टण नयर देस-परदेसे ।
धम्मोवएसरविणा बोहइ सो सघपउमाइ ॥ २२७
नियपयडपयावेण य किरियज्झाणेण महुरवयणेण ।
एकग्गभत्तिजुत्ता सेवति चउव्विहा सघा ॥ २२८
अणहिल्लपट्टणम्मि य सट्ठी वरिसे गुरू विमलझाणे ।
प[? णप]ण्णवरिसआउ पालिय सुरमदिर पत्तो ॥ २२९
अज्ज वि तत्तेय कलापहावबसएण अचलगणिंदो ।
दिप्पइ दिवसे दिवसे सविसेसपहाणकिरियाए ॥ २३०
जाव सिरिवीरतित्थ जावय गयणगणम्मि रवि चदा ।
ताव जिणसासणम्मि य विहिपक्खगणा चिर जयउ ॥ २३१

इतिश्रीभावसागरसूरिविरचिता
वीरवशपट्टानुगा गुर्वावली समाप्ता ॥

[भावसागरसूरिपरिचयगाथा]

सिरिभिन्नमालनयरे सिरिवसे सागराजओ साहू । सिंगारदेवि भज्जा तस्स सुओ भावडो आसि ॥ १
विक्कमपन्नरसोलोत्तरम्मि जम्मण महामहोच्छओ । वीसइमे जयकेसरिसूरिकरे सजमो गहिओ ॥ २
सो भावसायरमुणी पढेइ गुणई य वहुलगच्छगणे । थोवदिवसेहिं पत्तो पार सो आगमोहइणो ॥ ३
तो ते मणरगेण चउविहसघेण ठविआ गुरुणो । मडलिनयरे सट्ठियमवच्छरे मासि वयसाहे ॥ ४
पट्टोदयगिरिरविणो गणवइसिद्धतसागरगुरूण । विहरति भावसायरगुरुणो सुरसूरिसमसोहा ॥ ५
अइसइरासिं तेसिं कहमवि मक्को न वण्णिउ सक्को । गूडीपासो जस्स पए पए कुणइ साहज्ज ॥ ६
पच्चुप्पण्णमणागय च समयातीय च जाणति जे, जेहिं झाणवलेण कट्ठपडिया वुज्झाविया साविया ।
जेसिं कित्तिभरो य निज्झरयरो भूमीयले विहरइ, ते वदे गुरुभावसायरवरे सूरीसरे सव्वया ॥ ८
जेसिं झाणवलेण पुत्तपुडल पामति वझा अवि, जेसिं पाणियले वसति सयला लद्धी य सिद्धी सया ।
जेसिं पायरयप्पसायवसओ लच्छीविलासो हवइ, ते वदे वरभावसायरमुणी सूरीण चूडामणी ॥ ८

॥ शुभ भवतु ॥

कडुआमतीगच्छपट्टावली।

परमगुणनिधये एकोनपञ्चाशत्तमयुगप्रधानपदधारिणे श्रीजिनचन्द्रसूरये नम ॥

[श्रीकडुआचरित्र]

कडुआमतीना गच्छनी वार्त्ता पेढीबद्ध यथाश्रुत लिखीइ छइ–

नडोलाईग्रामे नागरज्ञातीय वृद्धशाखाया मह श्री ५ कान्हजी, भार्या बाई कनकादे संवत १४९५ वर्षे पुत्र प्रसूतः। नामतः मह कडूआ, बाल्यतः प्रज्ञावान्। स्तोकदिने माईप्रमुख शास्त्रातणी चतुरपणइ आठमा वर्षथी हरिहरना पदवज करइ। केतलइकि दिनांतरि पल्लविक श्राद्ध मिल्यो। तिणि कहिउ जे–'तुम्हे हरिहरना पदवज करउ छउ तिम काई जैनना मार्गनु जोइ तो रूडु छइ।' पछइ जैन एहवो शब्द सांभली जीव आनंद पाम्यो। कहि जे–'मुझनइ जैनमार्ग्ग साभलावउ छइ।' ते आचलीआनु श्रावक पोतानइ उपाश्रयि तेडी गयो। तिहा तिणि वेषधरि केतलीइक बादर वार्त्तारूप देशना दीधी। ते साभली चित्तनइ विषइ धारी, पछइ ते वार्त्तारूपनी एक सज्झाय कीधी। सा इमा–

> माइ बापनी कीजइ भगति, विनय करतां रूडा युगति।
> जीवदया साची पालीइ, सील धरी कुल अजूआलीइ ॥ १

इत्यादि सज्झाय सर्वत्र सांप्रत प्रसिद्धाऽस्ति। तिहार पछी तेहनइ उपाश्रयि जाता साभलता वार्त्ता हृदयनइ विषइ आवी, जे संसार असार छइ, अनादि काल थयु जीव निगोदि निवसिउ। एक श्वासोश्वासि सतर वार मरी अढारमी वार ऊपनु। एक वि घडीना महुर्त्तनइ विषइ ६५५३६ वार मरइ, ऊपजइ। इम अनंता पुद्गल थया रूल्या तोहु जैनमार्ग टाली पार न पाम्यो। तउ हवइ हु दीक्षा अंगीकरु। एहवु विचारी माता पिता प्रतिं कहि जे–'मइ दीक्षा लेवी।' ते मिथ्यात्वी वार्त्ता सांभलि अशाता पाम्या। मह कडूअइ घणो आग्रह कीधु तोहि पणि आज्ञा नापइ। तिवारइ कहि जे–'मइ विण आज्ञाइ दीक्षा लेवी।' मह कान्हजी ते गाम मध्ये देशाई, शत एक अश्वना धणी, सर्व तेथी बीहइ। मोटाना पुत्र, विण आज्ञाइ को दीक्षा दिइ नही। मह कडूआ अतीव वैराग्यवान्, संसार ऊपरि चित्त आवइ नही। बापि अनेक धन धान्य अश्व प्रमुख अनेक प्रकारि लोभ देखाडउ पणि ते भीरानु चित्त सर्व असार अशाश्वत अध्रुव इम जाणइ। उदासीनपणइ रहइ। माता पिता उभगा थया, कुमरनी रक्षा करवा घणा मनुस्य मुक्या। केतलइक दिनांतरि तेहुनइ छेत्री आर्द्रकुमरनी परि नडोलाईथी अहम्मदावादि संवत १५१४ रइ आव्या। जन्मतः वर्ष १९ ना छइ, पणि तेणि कालि चैत्यवासी मठपती घणी। मह कडूआ चित्तमा विचारइ जे–कहिछइ जूउ, अनइ मार्ग्ग जूओ दीसइ छइ।

इम करता अहमदाबादनु परु रूपपुर एहवइ नामि छइ। तत्र आगमीआनु पन्यास हरिकीर्ति एहवइ नामि। घणा वेषधर जोता, सवेगपक्षी शुद्धपरूपक पोताना गच्छनी निष्ठा मुकी एकाकीपणइ क्रियाकलाप करइ। आहारनी गवेषा(षणा) करइ। वादवा आवइ ते पाइ वदावइ पणि नही। यतीना गुण चित्त धारइ। तेहनी लापमी पोतीमइ थकी नथी, तउ किम वदावु?। ते पुन्यास हरिकीर्त्ति रूपपुरमध्ये शून्यशालाइ रह्या छइ। तेहवइ मह कडूआ तत्र आव्या। तेहना आचरण देषी शाता पाम्या। वादवा लागा त्यारइ वादवा दीधा नही। यत. श्रीउपदेशमालायाम्-

> 'वदइ य वदावइ किइकम्म कुणइ कारवइ नेअ।
> अत्तट्ठा न वि दिक्खो देइ सुसाहूण बोहेउ॥' २

तिहा रहिता विचार्युं जे ए वारू, पछइ पुन्यासनइ कहि जे-'मुझनइ दीक्षा दिउ।' त्यारइ पन्यास कहि-'तुम्हे कुण छउ?' पछइ पोतानी वार्त्ता थडावद्ध सर्व माडी कही। पछइ पन्यासि विचारिउ जे को चोषो जीव दीसइ छइ। हलुकर्मी प्रत्येक ससारी दीसइ छइ। जे दूसम आरामा एवडी रिद्धि छाडी दीक्षानु परिणाम आव्यो छइ। तो जो हु ए धणीनइ दीक्षा नही देउ तउ वउ कपटी पासत्थादिक पाच मध्येनउ छेनी ससार मध्ये बोलसिइ। ते माटि ए जीवनी जिम गरज सरइ तिम करू।' त्यारइ मह कडूआ प्रति कही जे-'दीक्षानु भार मनु लइज आगलथी दशवैकालिना च्यार अध्ययन भणउ।' त्यारइ कहइ-'वारू मुझनइ ते भणावो।' पछइ पन्यासि 'धम्मो मगल मुक्किट्ठ' इत्यादि छ जीवणिया पर्यंति च्यार अध्ययन भणाव्या। अग्रेतन ६ अध्ययननउ अर्थ समलावु। पछइ मह कडइ पन्यास प्रति कह्यु-'पुन्यास! आ मार्ग्ग सिद्धातोक्त आहवो दीसइ छइ। सामत आम का?' पछइ त्यारइ पन्यासइ कह्यु-'हजी तुम्हो भणउ साभलउ। पछइ वार्त्ता करीसिइ।'

पछइ मह कडूअइ पन्यास पासइ सवी शास्त्र अभ्यास्या। सारस्वत, काव्यशास्त्र, छदशास्त्र, चिंतामणि प्रमुख वादशास्त्र आचारा[गा]दि ११ अगना अर्थ धार्या। उत्तरा प्रमुख १२ उपाग, छ छेद, [द]स पइन्ना, च्यार मूलसूत्र, अनुयोग, नदीसूत्र-एव ४५ सूत्रना अर्थ धारी प्रवीण थया। निजुत्ती, भाष्य, चूर्णि-पचागी प्रीछ्या। गीतार्थ श्रावक थया। श्रावकनइ गीतार्थ कहीइ ते अधिकार राजप्रश्नीयवृत्तौ चित्राधिकारे। पछइ पन्यास कहइ-'वच्छ! यतीनु मारग आचारागादिक सूत्रनइ विषइ कह्यु, ते हमणा आ देशनइ विषइ नथी दीसतो। ए सर्व पतीत ढोणा पूजणा यतीनी प्रतिष्ठा, कल्पित दान तप प्रमुख घणा वाना, पोथी पूजणा चैत्यना रषवाल थ[इ] रह्या छइ। ते सामत दसमु अछेरु जाणवु।' यत. श्रीठाणागे-

> 'अणतेण कालेण दस अछेरग भविसु, त जहा-उवसग्ग १, गब्भहरण इत्यादि।
> असजयाण पूया असयता।'
> 'असयमवन्त आरम्भपरिग्रहप्रसक्ता अब्रह्मचारिणस्तेषु पूजा-सत्कारो असयतपूजा।
> सर्वदा हि किल सयता. पूजार्हा । अस्या त्ववसर्प्पिण्या विपरीत जातमित्याश्चर्यम्।'

यथा सघपट्टके-

> सैषा हुडावसर्प्पिण्यनुसमयहसद्भव्यभाव(वा)नुभावात्
> त्रिंशच्चोग्रो ग्रहोऽय स्वन्व नग्गमिति वर्पस्थिति(तौ) भस्मराशि ।

अन्य धाश्चर्यमेतद् जिनमतहतये यत्समा दुःषमा वे-
त्येव पृष्टेषु दुष्टेष्वनुकूलमधुना दुर्लभो जैनमार्गः ॥' ३

पुनः षष्टिशतप्रकरणे-

'सपय दसमच्छेरयनामायरिएहिं जणिय जणमोह ।
सुद्धधम्माओ निउणा विचलंति बहुजणपवाहाओ ॥ ४

वृत्तौ समति दशमाश्चर्ये सोमसुंदरकृतायाम् । तथा महानिशीथि पणि एह ज १० अच्छेरा वखाण्या छइ । अनती चउवीसी ऊपरि एहहु हतु के हवडा छइ, अनइ भगवतीसूत्र मध्ये तो भगवति कह्यु छइ-'माहरु धर्म्म एकवीस सहस वरस लगइ निरतर चालसिइ अविच्छिन्न परंपराइ।' यतः भगवतीसूत्रे श०२०, उ०८-

'जंबुदीवे ण भंते दीवे भारहे वासे इमे(मी)से ओसप्पिणीइ देवाणुप्पियाण केवति काल तित्थे अणुसज्जसति?।

गो०-जंबुदीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए मम एक्कवीस महस्साइ तित्थे अणुसज्जस्सति।'

ते माटिं युगप्रधाननउ विहार उत्तर दिशि विषइ ज्याणवु ।

अन तउ श्रीवज्रसेन एकवीसमा युगप्रधाननी एक चद्रशाखा जाणवी । ते केतलइ कालि रसगारव्या पतित थया। यतः-श्रीमहानिशीथ सिद्धाति वीरि गोतम प्रति कहिउ छइ-' जे मुझ थिकी साढा बारसइ वरसि १२५० गइ पासत्था थासिइ ।' सूत्रम्-

'से भयव! केवइएण कालेण पहे कुगुरु भविहिंति? गोयमा! इओ य अद्धतेरसण्ह वाससयाणं साइरेगाण समइक्कताण पुरओ भवेसु। से भयव! केण अट्ठेणं? गोयम! तक्काल इड्ढिरस-सातारसगारवसगए ममीकारग्गीए अतो सपलिझंत बोंदी अहमहति कयमाणसे असुणी(णिय)समयत-(स)ब्भावे गणी भविंसु एएण अट्ठेण।'

'इत्यादि द्रव्यलिंगी मिथ्यात्वी जाणवा । ते माटिं दीक्षा लीधानु लाग दीसतु नथी । मइ लीधी पणि तेहवो सथाडो नथी जे हु पालु।' भगवति कह्यु छइ-'ये व्रतभगी पाहि पाटिकी वारू। यतः-' वर स णउ' इत्यादि । व्रत भगीना तप सयम क्रियाकलाप फोक जाणवा । यतः-

'सर्व्वारम्भपरिग्रहस्य गृहिणोऽप्येकासन ह्येकदा
प्रत्याख्याय न रक्षतो यदि भवेत् तीव्रोऽनुतापस्तदा ।
पट्कृत्वस्त्रिविध त्रिधेत्यनुदिन प्रोच्यापि भञ्जन्ति ये
तेषां तु क्व तपः क्व सत्यवचन क्व ज्ञानिता क्व व्रतम् ॥' ५

तथा वीरि महानिशीथनइ विषइ कहिउ छइ जे, आवति कालि सूरिमनधारी एहवा ज हसि जे येहनइ नाम लीधइ मायश्चित्त लागइ । यतः पत्र ३९ मइ–

'भूए अणागए काले केई होहिंति गोयमा सूरी ।
नामग्गहणेण वि जेसिं हुज्ज नियमेण पच्छित्त ।' ६

इत्यादि शास्त्रि घणा पदार्थ छइ । तुह्मो सर्व जाण छउ । ते यती तुह्मे दीक्षानु भाव करो छो ते साचु, पण तेहराउ इवडा लाग नथी दीसतो । पासत्थाना मंडल म ये दीक्षा किम पलइ, अनइ श्रीयुगप्रधान तउ शास्त्रि पंचम आरानइ विषइ बि सहस्र अनइ च्यार २००४ अधिक वखाण्या छइ । यतः श्रीप्रवचनसारोद्धारसूत्रे–

'जा दुप्पसहो सूरी होइति जुगप्पहाण आयरिया ।
अज्जसुहम्मप्पभिई चउरहिया दुन्नि सहस्सा ॥' ७

वृत्ति–इहावसर्पिण्या दुष्पमावसानसमये द्विहस्तोच्छ्रितवपुर्विंशतिवर्षायुष्कपुष्कल. तपःक्षीणकर्मतया समासन्न सिद्धिसौध शुद्धान्तरात्मा दशवैकालिकमात्रधरोपि चतुर्दशपूर्वधर इव तु शक्रपूज्यो दुःप्रसहनामा सर्वान्तिमसूरि र्भविष्यति तत त दुःप्रसह यावत् त व्याप्यैवेत्यर्थः। आर्यसुधर्मप्रभृतयः आरात् सर्वहेयधर्मेभ्योऽर्वाक् जाता । आर्य- सत्त्वोऽसौ सुधर्मस्तत्प्रभृतय.। प्रभृतिग्रहणाच्च जम्बूस्वामि प्रभव शय्यम्भवाद्या गणधरपरम्परा गृह्यते। प्रधानास्तत्काल प्रवृत्त्या [पा]रमेश्वरप्रवचनोपनिषद्वेदित्वेन विशिष्टतरमूलगुणोत्तरगुणसपन्नत्वेन च तत्कालापेक्षया भरतक्षेत्रमध्ये प्रधाना आर्या सूरयश्चतुरधिकसहस्रद्वयप्रमाणा भविष्यन्ति । अन्ये च त्वररहितसहस्रद्वयप्रमाणा इत्याहुस्तत्त्व सर्व विदो विदन्ति ।' यच्च महानिशीथग्रन्थे ग्रन्थकार.–

'इत्थ चायरियाण पणपन्ना हुंति कोडिलक्खाओ ।
कोडिसहस्सा कोडीसए य तहा इत्तए चेव ॥' ८

इति तत्सामान्यमुनिप्रत्यपेक्षया द्रष्टव्यम् । तथा दुष्पमकालसमस्तवेऽपि बे सहस अनइ च्यार युगप्रधानना २३ उदय छइ । प्रथम उदये युगप्रधान, यथा–

वीसं २० ते वी अडनवई [अ]डसयरी पचसयरि गुणनवई ।
संय संगसी पणनउई सेगसी छस्सयरि अडसयरि ॥
चउणवई अट्ठ(ट्ठ) सिअ मंग चंउ पनरुत्तरसय तिन्नी(त्ती)ससय ।
संय पणनउई नवनवइ चत्त तेवीसुदयसूरी ॥ ९

इत्यादि घणा ग्रथनइ विषइ छइ ते पणि आ ढेगनइ विषइ नथी, उत्तरदिग्नइ विषइ समवीइ छइ, ये माटि दक्षण भरतार्द्ध म ये अयोध्या छइ, ते पासइ अष्टापद छइ । ते पणि साम[न] दीसतो नथी । अनइ गौतम तु तत्र जै आव्या । श्रीआवश्यक चूर्णि उत्तराध्ययननिर्युक्तौ कहिउ छइ । अनइ आपण तो जगतीनइ पासि छीइ । ते माटि अयोध्या वेगरी जाणवी । जगतीथी अयोध्या ११९ योजन वेगरी छइ । मनुष्य योजन ४७६०० एतला थाइ । एतली भूमि ते कुण जै आव्यो । ये यती आतमामा छइ अनइ तिहा नथी । अत्र तो युगप्रधाननी वार्त्ता पणि नथी, मतांतर दीसइ छइ । यत.–

हुं नन्देन्द्रियरुद्र(११५९)कालजनितः पक्षोऽस्ति राकाङ्कितो
वेदाभ्रारुणकाल(१२०४) औष्ट्रिकभवो विश्वार्क(१२१३)कालेऽञ्चलः।
षट्‌त्र्यर्केषु(१२३६) च सार्द्धपूर्णिम इति व्योमेन्द्रियार्के(११५०) पुनः
जानन्त्रिस्तुनिकोऽक्षमङ्गलरवौ(१२८५) जाना कलौ चाग्रहात्॥ १०

संवत ११५९ पुनिमीआ ऊपना। प्रथम पूनिमनी पाखी अनादि छइ, चउदसिनी आचरणा छइ। तथा संवत १२०४ खरतर। संवत १२१३ आंचलीआ। संवत १२३६ सार्द्धपुनमिआ। संवत १२५० आगमीआ, संवत १२८५ तपा ऊपना। संवत १५०८ लुंका। आपापणा आग्रहथी मत चाल्या। तउ युगप्रधान कीहा मतमा लेखवीइ। चतुःपर्वीनी पणि आम्नाय दीसती नथी ते तो श्रीयुगप्रधान हसिइ। तिहा एक हसिइ ते माटिं तुम्हो युगप्रधान-नइ ध्यानि श्रावकनइ वेषि संचरी, पणइ भावसाधुपणइ वर्त्तो। तुम्हारा जीवनी गरज सरइ।'

सा श्रीकडुआ भण्या गुण्या डाहा, श्रीसिद्धांतोक्तवार्त्ता सर्व सत्य जाणी सवरीपणइ प्रवर्त्त्या। भाव साधु-पणइ प्राशुक जल सचित्त त्याग अ(प)ण करावीउ। भोजन श्रावकनइ घरि शुद्ध आहार करइ। अतीव वैराग्यवान, बाल्यब्रह्मचारी, बार व्रतधारी, अकिंचनी, ममता रहित आपणउ पारको नही। पृथ्वीनइ विषइ विचरवा लागा।

प्रथमतः श्रीपाटण मध्ये मह लींबा प्रतिबोध्या। सोल प्रहर उपरांत दधिनइ विषइ जीव देषाड्या। यतः अणहिल्लवाडइ पाटणि मह लींबा कडुबीआ जाल्हि(ह)रानातीय महामिथ्याती सुरत्राणमान्यगृहे अथ प्र[भु]रा अनेक रिद्धि, ओगणच्यालीस महिषी, शत एक अश्व केडि चढता इत्यादि घणी संपदाना धणी। संवत १५२४ वर्षे सा श्रीकडुआनु योग मिलिउ। विरागी जाणी घरि तेडी पधार्या। घणी आगति सागति कीधी। भोजननइ अवसरि पक्वान्न मीसवा लागा त्यारइ काल पूछिउ, उपरांत जाणी न लीधा। पोली वासी न कल्पइ, राति करी न कल्पइ, ओदन [रा]त्रि वासी न कल्पइ, सालणु अथाणु न कल्पइ—इम घणा धाना न कल्पइ। त्यारइ मह लींबा कहइ—'जे पूज्य! दधि साकर वावरउ।' त्यारइ सा श्रीकडुआ कहि जे—'पूज्य! केतलु काल थयु।' तउ कहइ—'अम्हारइ घरि ओगण-च्यालीस भइसि छइ, तेहनी सी वरति जणाइ। पछइ सा श्री कहइ—'अम्हारइ षोडश प्रहर उपरांत न कल्पइ।' पछइ मह लींबा कहि जे—'पूज्य! सर्वमध्ये जीव कहउ छ[उ] दूध मध्ये पूरा काढो छो। उपाणो साचउ करउ छउ, जउ दधि मध्ये जीव देषाडु तु हु जैनधर्म करु।' त्यारइ सा श्रीकडुइ तत्र दात रखवानी पोथीनइ योगि आतपि दधि मुकी जीव देषाड्या। मह लींबइ जैनधर्म साचो जाणी सा श्री पासइ मर्म मीठो समकित ऊचरिउ। रात्रिभोज-ननु पचखाण कीधु। घर मध्ये २७ घडा दहीना हता ते ढोलाव्या। वीसैं घर साथि श्रावक थया। पोतानी पीढणीइ चोमासु राख्या। वुहरा धनराज परी कीकाना पितामह प्रतिबोध्या। घणा घर साथि आव्या। घणा घर पाटणि थया।

संवत १५२५ वीरमगामि घणा प्रतिबोध्या। चतुर्मासक घर शत ३०० प्रतिबोध्या। तत(तत्र) चैत्यवासीइ सा श्री ऊपरि घायक मुक्या। सा श्री आसोईनी राति पोसह कीधु छइ। पेलु पणि पासि रह्यो छइ। सा श्री संथारा पोरसि भणावी १२ भावना भावी, संथारइ शयन कीधु। पेलो घायक ताकी रहिउ छइ पण सा श्रीनी पुन्याईनइ मेल्हइ तेहनउ हाथ ऊपडइ नही, विचारवा लागो एतलइ जालानु अजूआलु सा श्रीना शरीर ऊपरि आव्यु। सा श्री पासु पालटवा वेला चरवला वडइ पुंजी पासउ पालटिउ। घायकि दीठु, धन्य ए जे सूता जीव पालइ। हु पापी शु

काम करु छउ। आवी सा श्रीनइ पगे लागउ। सां श्रीइ पूछिउ–'तु कोण?' सघली वार्त्ता पोतानी कही। सा श्रीना वचनथी प्रतिबोध पाम्यु, त्रस हणवानु पचखाण कीधु।

संवत १५२६ सल्षणपुरि चतुर्मासक, तत्र घणा मनुष्य प्रतिबोध्या। पछइ सल्षणपुर मध्ये वुहरा पहिराज ते वोहोरा अटोल पेताना वडेरा प्रतिबो'या। तथा सा लाडण पोपाना वडेरा उसवाल प्रतिबो'या। इत्यादिक १५० घर आदि घर १५० थया। तत्रतः संवत १५२७ सूर्यपुर चतुर्मासक। तत्र २०० घर प्रतिबोध्या। तत्रत सेपइ कालि घणइ गामि प्रतिबो'या। वडी प्रमुख सघलइ गामि सा श्रीकडूआनु समवाय प्रवर्त्त्यों।

संवत १५२८ वर्षे श्रीअहम्मदावादि चतुर्मासक। तत्र दोसी देथरना वडेरा प्रतिबो'या। तेणीनी पीटणीइ देहरासर स्थापन, बिंतरदोष निवर्त्त्यों, तत्र–"रिसह जिनवर मूरति तुह्म तणी" स्तवन कृत। दोसी सोनाना वडेरा प्रतिबोध्या। परीष रीडा सा श्री पासि वारू भणी, पारी वना पितामह सा चउथाना वडेरा प्रतिबो'या। सा मुलानो पिता प्रतिबोध्यु। मह आणन्दना वडेरा इत्यादि घर शत ७०० शाखाइ प्रतिबोध्या। संवत् १५२९ स्तंभतीर्थि चतुर्मासक। तत्र सोनी लाडणनु पिता प्रतिबोध्या। ते धणीइ सा श्रीनइ पोतानइ घरि राप्या। सा श्रीनी वाणी साभूल्वा घणा मनुस्य आवइ, नगरमध्ये घणो प्रभाव चालु, ते नगरम'ये सोनी इका रामा, सा रामा प्रकृतिं सतापें दिन प्रति पोतानी मातानइ गालि प्रदान ताडण पणि करता। पछइ बाई आवी सा श्रीनइ वीनती कीवी जे–'पूज्यनी वाणीथी घणा मानव प्रतिबोध पामइ छइ पण रामानइ प्रतिबोधो तो वारू, जे मातानी भक्ति करइ।' पछइ बीजइ दि[व]सि सा श्रीनइ व्याख्यानि सा रामा आवी बइठा। सा श्रीइ व्याख्यानमा मातानी भक्ति करवानी वार्त्ता परूपी। श्रीठाणागना आलावा परूप्या, त्रणिना गुण ओसीकल न थाइ। ते वार्त्ता सा श्रीना मुखथी साभली पचखाण कीधु, जे मातानइ गाल न देउ। घरि आवी मातानी भगति कीधी। सा श्री पासि घणा मनुस्य साथि समकित ऊचिरिउ। पोतानी पीटणीइ सा श्रीनइ राप्या। बीजइ मालि देहरासर स्थापन। सा श्रीइ निंबप्रवेश कीधो। घणो उच्छव, साम्प्रति ते जागि, सरव बीजइ मालि छइ। सा मूलानु पिता सवत्री श्रीदत्त पिता, सवत्री सग्रामस्य पितामह, सोनी शिवा पितामह, तथा सोनी लाडण पितामह, सो० रींडा पितामह, सो० विमलसी पितामह, सवत्री ल्ट पितामह, जयवत पितामह इत्यादि घणी शाखाइ घर शत ५०० प्रतिबो'या। पार्श्ववर्त्ती कसारीग्रामे दोसी छाछा, दोसी पोंमरही, पासी सहिसा प्रमुख घर शत प्रतिबोधितवान्। संवत १५३० माडव चतुर्मासक। तत्र चैत्यवासी साढ्रे घणी चरचा, घर शत ५०० प्रतिबोध्या।

एव सर्वत्र प्रतिबोधता संवत १५३१ सूरति चतुर्मासक। तत्र घणो वाद, सा श्रीनु पुन्य घणु, सघलइ जयपताका, घणा प्रतिबोध्या। संवत १५३२ भरुअछि चतुर्मासक। तत्र चैत्यवासीइ घणा था(बा)ना कीधा। एक चैत्यवासीइ चेलु मोरूयु। सा श्रीनइ पासि आवी कांई दुविधा जपवा लागु। तत्र प्रभाणु, सा श्रीना वचनथी मुरा-[णु घ]णा नइ प्रतिबोध्या। संवत १५३३ चापानउर चतुर्मासक। तत्र वुहरा कान्हा परि राज तथा साह डूसा गट्टया लट्टया चोथाना वडेरा प्रतिबो'या, साम्प्रति जेहना परिवार राजनगरे छे, तथा मह रतनाना वडेरा यस्य सवानी मह वीरजी रायनी इत्यादि वारहीइर शत ३०० प्रतिबोधितः। तथा थरादि सर्व लुपक हतु, ते सर्व सा श्रीना कागल्यी चल्यु इति वृद्धवाद स्थिरपत्र(द्र) घर शत ९०० थया।

सवत १५३६ राधनपुर तत्र घणानइ प्रतिबोध्या। सवत १५३७ मोरवाडि, सोहीगाम प्रमुख सघलइ प्रतिबोधित। सवत १५३८ सघलइ विचर्या। सवत १५३९ नडोलाई मध्ये रूपि भाणा लुका साथि वाद कीधु। सिद्धात नइ अनुसारि प्रतिमा थापी। यतः श्रीभगवतीसूत्रे शत०२०, उ०९—

'कतिविहा ण भते! चारणा पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा चारणा पन्नत्ता, त जहा—विज्जाचारणा य जघाचारणा य।"

इत्यादि आलावा छइ। वयती हुता नदीसर रु[चक]ना चैत्य वादइ। तिहाथी आवी अहीना चैत्य वादइ। फट प्रगट अक्षर छइ—'इह चेइआइ वदइ।' तु महानुभाव जे तुम्हे कहु छु कुणि श्रावकि चैत्य कराव्या ते देखाडु, पण अहीना अशाश्वता चैत्य वाद्या, ते कहुना कराव्या ते कहु तथा कुणि श्रावकि प्रतिमा पूजी, देखाडउ ते पण मूल सूत्रना अक्षर साभलु ज्ञातामध्ये—

'तते ण सा दोवई रायवर(वर)कन्ना। जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइत्ता, मज्जणघर अणुपविस विण्हाया, कयवलिकम्मा कयकोउयमगलपायच्छित्ता। सुद्धप्पविसाइ मगल्लाइ वत्थाइ परिहियाइ मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव जिणघरे तेणेव उवागच्छइजिणपडिमाण अ(आ)लोएइ, पणाम करेइ। पणाम करेत्ता लोमहत्थय परामुसइ, एव जहा सूरीआभो जिणपडिमाण अच्चेइ ति तहा भाणियव्व जाव धूव दहइ, वाम जाणु अचेइ, दाहिण जाणु धरणितलसि निवेसेइ। निवेसइत्ता जाव पच्चुन्नमई करयलजाव एव वयासि नमोत्थु ण जाव ठाण सपत्ताण, वदइ नमसइ जिणघराओ पडिनिक्खमइ।'

इत्यादि तो ए प्रासादप्रतिमा जैननी भरावी, कइ मिथ्यातीनी भरावी? उड विचारयो। अत्र लुपक साथि घणी वार्त्ता छइ, तथा राजप्रश्नीय सूर्याभे सतरभेद पूजाइ भगवत पूज्या, ते विस्तर छइ, तथा वृत्ती श्रावकनइ वदनाना अधिकार, आणद श्रावक आदि देई १० श्रावक, तथा अवडनइ आलावइ चैत्यशब्दि जिनप्र[ति]माना अधिकार इत्यादि घणी युक्ति रूपि भाणानइ जरजरू कीधा। लुकाना घर १५० वाल्या।

सवत १५४० श्रीपत्तने चतुर्मासे(स)क तत्र परी पुनइ घणा घर साथि सा श्रीना वचन सदह्या। भणसाली सोना, भणसाली जीवराज, भणसाली देवाना वडेरा प्रतिबोध पाम्या। एव पत्तने घर शत ९०० सा श्रीकडूआना समवायना थया। मइ लींबानी पीटणीइ ५०० शत पोसा, तथा ता इति वृद्धवाद। तत्र सा पीमाप्रमुख ४ श्रावक, सवरी सा श्री पासि थया, तेह[ना] नाम सा पीमा १, सा तेजा २, सा कर्मसी ३, सा नाकर ४, द्वादश १२ व्रतधारक सा श्री कृत १०१ बोलना पालक, ते बोल लखीइ छइ। सयमार्थी सवरी गृहस्थनइ वेसि रहितउ दीक्षानु भाव सवरनु पप करइ ते एतला बोल पालइ—

१ प्रथम दीसि नीची दृष्टि हीडइ।
२ रात्रि अणपुजि न हीडइ, थडिल वर्जी बीजइ कामि पोटा कारण टाली न जाइ।
३ हीडतो वार्त्ता न करइ, को वाटि प्रश्न पूछइ तेहनइ एक बोल कहइ, घणी वार्त्ता स्थानकि करवी।
४ सचित्त आहार न जिमइ, औषधवर्जी। ५ पाछिली पुहरदिली बि घडी पछी चउव्विहार करइ।

६ जिमता पडसाड न पाडइ, अतिमात्र न जिमइ, छाडइ पण नही, अणभावतु न जिमइ ।
७ जिमता वार्ता न कीजइ । ८ विदल अन्न तथा काठ विदल टालवा ।
९ छूट्ट हाथथी काई नापीइ नही । १० घसती किसी वस्तु पाटि पाटला प्रमुख काई न ताणीइ ।
११ थडिल्नी घणी जयणा कीजइ, भूमि शुद्धप्रमुप । १२ मातु पुजी नगरा प्रमुख नु इइ तिहा परठवीइ ।
१३ मानाना कुड टाली निरोधन कीजइ, मोटा कारण टाला । १४ पाणी प्रमुख सर्व पुजी परठवीइ ।
१५ वचन परनइ पीडा ऊपजइ ते, तथा हास्यादिक न बोल्इ । १६ काया अणपुजी न खणवु ।
१७ पांच थावरनु आरंभ न कीजइ । १८ तथा निवाणथी पोतइ पाणी न लीजइ, लावइ ते गली वावरीइ ।
१९ अणगल पाणीइ लुगडा न धोईइ । २० आ(अ)गनिनु आरंभ आप कोजि(काजि) जाति न कीजइ ।
२१ वीजणइ वाय न वीजीइ । २२ वनस्पती आप काजि न छेदीइ ।
२३ त्रस जीव दूहवाणइ किसी इक आखडी कीजइ । २४ त्रसनु हणवानु पचखाण कीजइ ।
२५ सर्वथा मृपावाद न बोल्वीइ । २६ चोरी तथा पीआरी अणआपी वस्तु न लीजइ ।
२७ मानुपी तथा चतुःपदी स्त्रीनु संघट टाल्वु, संघट थयइ घृतनी जयणा ।
२८ पोतइ आपणु करी गुरथ न रापीइ । २९ पाछिली च्यार घडी राति पछी शयन न कीजइ ।
३० ऊघाडइ मुपि न बोल्इ, तिवारइ मुपि हाथ तथा वस्त्र देई बोलइ ।
३१ पहिली राति पुहरमध्ये न सूइ[ई] । ३२ दीहइ न सूइ, रोगातकि मोक्लु ।
३३ दिन प्रति एकाशन निविहार कीजइ । ३४ गाठसही पचखाण कीजइ, शक्ति ।
३५ त्रिकाल देववदन वेलाइ उभय कालावश्यक पडिलेहणा प्रमुख कीजइ ।
३६ दिन प्रति चैत्यवंदन ७ तथा ५ कीजइ ।
३७ भण्या गुण्यानु अभ्यास कीजइ, थोडु तोहइ गाथा १ भणीइ, गाथा सइ ५०० गणीइ ।
३८ पासत्थादि ५ कुदर्शनीनु संसर्ग न कीजइ । ३९ सामायक दिन प्रति घणीं कीजइ ।
४० एक विगइ दिन प्रति उपराति नहीं । ४१ घृत सेर पा उपरात दिन प्रति नहीं ।
४२ पनर दिनमा जघन्य तो उपवास २ कीजइ । ४३ लोगस १०, तथा १५ नु काउसग पणि कीजइ ।
४४ एक वरस उपराति एक ठामि पण न रहीइ । ४५ आत्मार्थि घर तथा हाट न करावीइ ।
४६ वस्त्र न नीपरावीइ, पाच उपरात पोतइ न राखीइ, गाठडी बाधी न मुकीइ ।
४७ गोदडा ओसीमा तकीई न वावरीइ । ४८ पल्यक माची प्रमुख न सूईइ, वइसीइ ।
४९ चोक जइ न वइसीइ । ५० कम्सीउ १, वाडिकी १, उपराति नहीं ।
५१ रोगि ल्पन ३, उपराति ओपध । ५२ स्त्रीशु एकाति गोष्ठि न कीजइ ।
५३ प्रशस्तनी नवबाडि पाल्वानु यतन कीजइ । ५४ मास दी[व]सि १ धोणी ।

५५ एकात संघट टाल्खु । ५६ च्यार कषाय न कीजइ ।
५७ कखा(षा)य ऊपनइ विगयत्याग । ५८ अभ्याख्यान न दीजइ ।
५९ पुठि पाछलि दोष न बोलीइ, चाडी पणि न कीजइ । ६० न सुगध तेल भोगार्थि चोपडीइ ।
६१ द्रव्य १२ उपराति दिन प्रति न लीजइ । ६२ सोपारी पान एलची प्रमुख भोगार्थि नही ।
६३ वस्त्र उत्क(ृ?)ट निषेध । ६४ रेसमी पणि नही ।
६५ पल तेल एकठा मेली न्हाण न कीजइ । ६६ हाथि न पचीइ, सचित्त न पचावीइ ।
६७ नीलवणि स्वाद अर्थि न य(ज)मीइ । ६८ चोमासइ टोपरा पारेक प्रमुख न वावरीइ ।
६९ स्त्री साभलतइ राग न गाईइ, राग नालापीइ । ७० आभरण न पहिरीइ ।
७१ निंइ पुरुष एकठा न सूईइ । ७२ स्त्री सूइ तिहा निरर्गल न सूइइ ।
७३ लुकानु धान पाणी न यमीइ । ७४ देवकु द्रव्य होइनइ नापी सकइ तिहा न यमीइ ।
७५ लुकामतीनान्न न यमीइ । ७६ एकली स्त्रीनइ न भणावीइ ।
७७ दहेरानी भूमिशयन न कीजइ । ७८ सगानइ काजि काई मागीइ नही ।
७९ पीआरु गरथ लेइ तेहना स्वजननी विण आज्ञाइ धर्मस्थानकि न परचीइ ।
८० लागट दिन २ एक घरि न यमीइ । ८१ मिथ्यात श्राद्ध सवत्सरी थाइ तिहा दिन ३ न यमीइ ।
८२ घेवर प्रमुख उत्कृट आहार नही । ८३ सीघोडा नीला सूका न खाईइ ।
८४ डगला पहिर्यानी जयणा । ८५ परवाल्न देषी न लडावीइ ।
८६ सुजण उपराति जिमइ, तिहा न ज्यमीइ । ८७ कदोईना पक्वाननी जयणा ।
८८ रातिना नीपना अन्न निषेध । ८९ गृहस्थनइ घरि वइठा गोठि न कीजइ ।
९० पादत्राण निषेध । ९१ ग्रहिल प्रमुख यानि न वइसीइ ।
९२ अश्व प्रमुखि न चढीइ । ९३ मासमा एकवार नख ऊतरावीइ ।
९४ कूलिर पकवान पोतइ करावी, वासी न राखीइ ।
९५ वाटिं स्त्रीशु ऊभा रही वा हीडता गोठि वार्त्ता न कीजइ ।
९६ वाटि हीडी न सकइ तिवारइ यानि वइसइ । ९७ [1]पचवयण न पहिरीइ ।
९८ एकली स्त्रीना वृदमाहिं भोजन अथवा वीजइ कामि न जावु ।
९९ सराग गीत न गावा, न साभलवा, राग आलपवा नही । १०० विमनु सग न करवु ।
१०१ पारकइ घरि जाता पुकारी जावु ।
इत्यादि बीजाइ बोल जेणी वाति सवरीनइ अपभ्राजना थाइ ते वस्तु न करवी, तथा सा श्री कडूआनी कीधी

[1] पचवर्णी वस्त्र

१०४ बोल सील पालवाना छइ, ते धरवा। अन्य पत्रथी मीळयो। स्त्रीनइ पणि सील पालवाना ११३ बोल छइ, ते अन्य पत्रि। ते वर्षिइ सा श्रीरूडआ पाटणमध्ये अमर(नड)वाडइ दरवाजइ बाहिरि जाता दिन दिन एक योगी सा श्रीनइ देषी घणु खुसी थयु। तेणइ योगीइ सा श्रीनइ पराणि त्रणी आम्ना आपी, मत्रनी जात्ररूपा सिद्धि पणि आपी इति वृद्धवाद, पणि सा श्री निगर्वी एकइ विद्या न चलावइ। वैराग्यवत जावजीव सा श्रीनइ एक घृत विगय मोकली दिन प्रति द्रव्य १० मोकला। पाच विगयनी अगड, जावजीव एकाशन, मास एक मध्ये आबिल १० करइ। इत्यादि घणी वातना पचखाण। एकाति श्रीयुगप्रधाननु ध्यान धरइ, दीक्षानु भाव धरइ।

तदनतरि सवत १५४१ वडोदरइ चतुर्मासक सा कुरपालगृहे स्थित। तत्र भट देपाळ साथि वाद, जैन बोल ऊपरि आव्यो, तत्र घणा घर मिथ्याती टली जैन थया, तत्र–"जय जगगुरु देवाधिदेव"स्तवन कृतवन्तः। तदनतरि सवत १५४२ गधारि चतुर्मासक सा देवकरणगृहे। तत्र चैत्यवासी साथि घणी चरचा, पछइ सा श्रीरूडआ ऊपरि चैत्यवासीइ पेत्रपाल मुक्यो। सा श्रीना सम्यक्त्वना प्रभावथी प्रभवी न सक्यो। तत्र सा श्रीइ वीरस्तवन कृत–"सखि सार नयर गधार गाम" इत्यादि।

तदनतरि सवत १५४३ चूडा, राणपुरि सा शत्रराजगृहे स्थितवत। तत्र सा श्री पासि सा राणा, सा कर्मण, सा शवशी, सा पुना, सा धीगा श्रावक ५ सवरी थया। चूडा राणपुरमध्ये घर शत २००। सा श्रीरूडआनी सदद्दिणना सामति तिहाना सामी सोझीत्रइ पणि छइ, तिहानी प्रतिमा अहमदावादि दत्रतपुरइ देहरइ बइसइ छइ, विमलनाथनी। दो० राजपाल पणि भण्या गुण्या येन–"वदी वीर जिणद" इत्यादि गुरुना मार्गनी सज्झाइ कृता। तदनतरि सा श्री सवत १५४४ जूनइगढि चतुर्मासक। तत्र ठाकर राजपालगृहे स्थिति। तत्र लुपकना १५० घर वाल्या। लुपकी साथि घणी चरचा हुडीपत्रथी मीळ्यो। जूनागढना सामी सवची वना, पीमा प्रमुख सामत यस्य सतानी सघवी रुपसी दीवेऽस्ति।

तदनतरि सवत १५४५ सोरठमध्ये विचरी अमरेलीइ चोमासु ठाकर कासीगृहे। तत्र रात वीदो नामि चहुआण सा श्री पासि आव्यो, धरथी वैरागी, सा श्रीनी सगति धर्म घणु प्रगम्यो, सवरीपणु पडवजिउ, घणु वैराग्य वत। एकदा सा श्रीनु वैआवच करता वार्त्ता गिरनारिनी प्रवर्त्ती। आचारागनी निर्युक्तीमध्ये तीर्थंकरनी ध्यान-निर्वाण भूमि वदनीक छइ, जेहनु भाग्य हुइ, ते भूमिका वादइ। तेहनइ विषइ अनशन लिइ एहवी वार्त्ता सा वीदइ पूछिउ, जे केतलइ उपवासि सीझइ ? सा श्री कहइ–'जे चुवीहार करइ तो थोडा कालमा सीझइ, त्रिविहारि काल विशेष थाइ।' एहवी वात्ता करी सा श्रीनु वेयावच करी, सथारइ आवी, सीमधरनइ नमोत्थुण करी, जावजीवाइ चोवीहपि आहार अनशन कीधु। रात्रि गिरनारि सन्मुख नीकल्या। व्याहणामा सा श्री वीदानइ न देषइ, जाणिउ थडिल गया हसि, व्याख्यानाते श्रावकि पूछिउ–'साहजी वीदो सा किहा।' सा श्री कहइ–'हु पणि वाट जोउ छु।' श्रावक जोया, लाधा नही। सा श्री कहइ–'जे रात्रि आहवी वारता प्रवरती एपे गिरिनारि गया हुइ।' सा श्रीइ सरोदइ जाणु जे तिहा गया छइ। कौ(के)डियी सा श्री प्रमुख सघ नीकलिउ। एक मजलनइ आतरइ पुहुता, जूइ तो शला उपरि सूता छइ। वार्त्ता पूछी, कहइ–'अनशन कीधु। तेणी रात्रि विहरमान सापि उच्चरिउ।' सा श्री प्रमुख सत्रि जूनागढनइ श्रावकि घणा उच्छव कीधा, सा पिमा प्रमुख सवरीइ अनेक साधुना सबध सभला वतइ सथारापयन्ना भणतइ, नीक्षमतइ, १७ उपवासि सतर वरसना दिव गत।

सा श्री शत्रुंजयनी संघ साथि यात्रा पधार्या पण म्लेच्छना भयवती तलहटी फरसी, "विमलगिरिप्रासाद पौढउ" गीत करी पाछा वल्या। तदनंतरि सा श्री संवत १५४६ अहम्मदावाद पासि पुरु अहम्मदपुरि चतुर्मासक। तत्र परीष चापसीइ आबू, राणपोर, चीत्रोडनु संघ कीधु, ते साथि सा श्रीकडुआ प्रमुख नव सवरीयाइ चाल्या, ते जिणि गामि देव पूज्या ते गाम नाम सर्वचैत्य परवाडिनु तवन छइ पोतानु कीधु, यथा-"जिणवरवचन अमृत-सम जाणी" इत्यादि। सा श्रीकडुइ सीरोहीमध्ये चैत्यवासी साथि वाद। चैत्यवासी निराकरण कीधा। तेणिं घणा वाना साथि कीधा, पण पुण्यवंत माणीनइ कुणइ प्रभवी न सकइ।

पछइ संघ साथि पालडीइ पधारिया। पाछलिथी वेषधरि सच करी एक वेषधर साथि चीठी मोकली कहि जे-'तुम्हे प्रश्ननइं पूछिउ तेहनु उत्तर साभलु' गाउ(चु) चीठी आपी वेषधर पन्छन्न थयु. सा श्रीइ विचारिउ जे वीरनी आज्ञा छइ, व्रतभंगीनु विश्वास न करवु, अगीतार्थनु संग त्याज्य, यतः-"वर(र) वाही वर(र) मचृ(च्चृ)" इत्यादि सबोधसप्ततिकायाम्।

त्यारइ संघ समक्ष सा श्रीइ सा राणा पाइ चीठी वाचतपेव ग्रथल थया, कहइ-'जे हु कइओ, मइ मत माडयु।' इत्यादि अनेक ग्रथलाई करवा लागा, सव समस्त विस्मय पामिओ। सा श्री कहइ-'जूओ ए कहूओ किराणो असयती एहवा छइ, एहनु विश्वास न करवु। एहना अवगुणनो पार को न पामइ। यतः-

> प्रोद्भूतेऽनन्तकालात् कलिमलनिचये नामनेपथ्यतोऽर्ह-
> न्मार्गभ्रान्तिं दधानेऽथ च तदभिमरे तत्त्वतोऽस्मिन् दुरन्चे।
> कारुण्याद् य[त् ?] कुबोध नृपु निरसिसिपुर्दोपसल्या विवक्षे
> दम्भाम्भोधेः प्रमितसलसकलगगनोल्लङ्घन वा धित्सेत(?)॥ ११

पछइ सा श्रीकहइ फासू पाणी पाई तरत साजो कीधो। सा श्री कहइ-'जे मइ एहनइ साजो करनार को न हुतउ अनइ श्रीजिनधर्मनी हेलणा थात।' समस्त सवनइ दृढ आस्ता थई, सघलइ यात्रा करी नडोलाईमध्ये घणा लोकनइ प्रतिबोध देई, सा वीरानइ सवरी, केटलाइक पोताना स्वजन साथि आव्या, कुशलि श्री अहमदावादि आव्या, सा श्री सजन रूपपुरमध्ये रह्या वासि।

तदनंतरि सा श्री संवत १५४७ स्थभतीर्थि चतुर्मासक। तत्र लघुशाली तपा साथि घणो वाद, गुरुतत्त्व चर्चा, सा श्रीनवकृत हुडीथी सर्व मीळयो। तत्र तपानु उपाध्याय रामविमल, तेणइ विचारिउ यतीमार्ग पलतु नथी, दिन प्रति ६ वार ऊचरी भग कीजइ छइ, ते वती गृहस्थ मारगि चाली जीवनी गरज सारउ। ते पाघडी धारी, मुडेवाल थई, सा श्रीनइ पगे लागइ। तत्र सा श्रीनइ पासि रहिया। सा श्री सोनी हका रामानी पीटणीइ रह्या। तेहनइ सर्व सद्दहिणा सा श्रीनी आवी। सा श्री अन्यत्र विचर्या, सा रामा कर्णवेधी स्थभतीर्थि रहया, ते भणी पडकमइ त्यारइ च्यार थुइ करइ, ते भीआनइ पासि पडक्म्या। तेणि पणि च्यार थुइ कीधी। ते सामत पणि स्थभि, एह ज रीति छइ, केतलीइक ते आचारणा जाणवी?। संवत १५४७ सा श्रीकडुआइ सा रीडानइ सूर्यपुर पत्रप्रेक्षण, छुपरचर्चा आश्री पूजा सबर करी वर्णवी छइ, ते पत्र सा श्रीतेजपाल अष्टम पट्टालंकार पार्श्वेऽस्ति।

तदनंतरि सा श्री संवत १५४८ पत्तने चतुर्मासक। तत्र परी थावर तथा डोसी समरथना वडेरा प्रतिबोधित।

श्रीपत्तने वु० धनराज परी कीकाना पितामहनु जिनप्रवेश कीधु। तत्र गीत–"माहरइ मंदिरि पासजी" इत्यादि। तिणि देहरासरि सा श्री देव जुहारवा पधार्या छइ। तेहवइ समइ सा दियो धर्मनु रागी, दीक्षानु भाव, पण चैत्यवासी वेषधरना करणी देषी श्रावकनइ वेषि वैराग्यवंत वर्त्तइ। तिणि कालि सा श्रीरूडआनी वा(व्या)ख्या साभली सा श्रीनइ मिलवा, प्रेम जीवनइ विषइ घणो ऊपनु। ते धणी जोता जोता श्रीपाटणमध्ये आव्या। सा श्रीरूडआनइ वु० धनराजनइ देहरासरि आणी तिहा आव्या। सा श्रीनइ देहरासरनइ विषइ पायडी ऊतारी देषी। सा दिपइ पणि पायटी ऊतारी देहरासरनइ विषइ आवी जिनप्रतिमा अवलोकी प्रणाम कीधउ।

प्रथम तिहा रहि छंद कीधु–" जिनभुवन जाए विमान पहिलु मुकीइ " इत्यादि सपूरण छंद प्रसिद्ध छइ। चैत्यवंदन करी बाहिरि आव्या, सा श्रीनइ पगे लागा। सा श्रीनइ भेटि आगलि बारव्रतनी चूपई मुकी, सा श्री वाची रलीआति थया। साप्रत सा चतु पदी प्रसिद्ध–" वीरजिणेसर प्रणमु पाय " इत्यादि। पछइ सा श्रीनइ प्रश्न पूछिउ–' जे पायडी उतारी देव जुहारवा ते वारू दीसइ छइ मान मुक्वु, पणि शास्त्रि अक्षर किहा छइ? ' सा श्रीइ अक्षर कह्या प्रवचनसारोद्धारसूत्रे, लघुवृत्तौ, बृहद्वृत्तौ, उपदेशचिन्तामणिवृत्तौ, चैत्यवन्दनभाष्यवृत्तौ, पडावश्यकि- (डावश्यक)कविवरणे, घणइ ग्रथि शिरोवेष्टन त्याज्य करवा कह्या छइ। मूलसूत्रे–मोलिं शिरोसेहर कीजइ ते आशातना ८४ आशातनामा जाणवी। ' मोलिं शिरोवेष्टन शिरसि वासोवेष्टन तत्य(दे)न त(त्य)जति ' इत्यादि घणा ग्रथनी साषि प्रीछव्या। ते विस्तर अप्टम[प]टपट्टालकार सा श्रीतेजपालकृत 'दशपदी' मा जोयो। सा देपा सा श्री- पासि सवरीपणु पडवज्या, साथि विचरवा लागा। परी पुना सा श्री पासि घणु भण्या, डाहा थया।

तदनतरि विचरता सवत १५४९ नडोलाई चतुर्मासक। वुहरा टीलागृहे स्थितः। वु० टीला पण मोटउ गृहस्थ वैराग्यवत। सा श्री पासि पचखाण कीधु, जे जावजीव छठनइ पारणु करु। पारणु करइ त्यारइ द्रव्य ७५ लागता वाणोतर पासि गणता। सा श्रीनइ पासि श्रावक ३ सवरी थया। सा थरपाल, सा धीरू, सा लींबा। एव श(स)वरी १४ सा श्रीनइ पासि विद्यमान वर्त्तइ।

तदनतर मरुयाडदेसमध्ये विचरी, सवत १५५० सादडीइ चोमासु पधार्या। दो० शवराजगृहे स्थितवान्, तत्र परतर साथि चरचा। वीरना पाच कल्याणक, कल्पसूत्रमध्ये, यात्रापचाशके, जबूदीपप्रज्ञप्तौ इत्यादि ग्रथनी साषि, छट्ठउ कल्याणक ते जिनवल्लभि थापिउ छइ। तथा स्त्रीनइ पूजानिषेध खरतरमते, सा श्रीइ ज्ञातानइ अक्षरि थापी। तत्र श्रावक २ सवरी थया। सा सीधर, सा कुपा। घणइ मनीशि व्रत पचखाण कीधा।

तदनतर सा श्री १५५१ सीरोहीइ चतुर्मासक। तिहा एक सवरी थयु। सा शवगण तत्र तपा साथि वाद, सामायकि प्रथम सामायक उचार, पछइ ईर्यापथिकी आवश्यकचूर्णौ, पचासके, दिनकृते(त्ये), धर्मरत्नवृत्तौ इत्यादि ग्रथि। तदनतर सा श्री सवत १५५२ श्रीस्थिरपत्रे(द्रे) चउमासक। तिहा हरिकीर्त्ति पणि रहइ छइ। सा श्रीरूडआना व्याख्या[न] सामली घणु रलीआति थया। सा श्री थरादमध्ये घणानइ प्रतिबोध्या। रत्नागर पेत्र, तत्र श्रावक ४ सा श्री पासि सवरीपणु पडवज्या। सा लूणा, सा मागजी, सा जमवत, सा डाहा। थरादनइ विषइ सा श्रीना धरमनी सदहण, समस्त नगरनइ स्थिरपत्र(द्र)वासी श्रावक सा रामा, ते सा श्री पासि घणु भण्या, केतला दिन सा श्री पासि पणि रह्या। तत्र वामी इदा सो पन्यास पासि वारू भण्या। थरादपेत्रनु वरणन केतलु लषीइ? साप्रत पणि विमल छइ। तदनतरि सा श्री सवत १५५३, सवत १५५४, सवत १५५५ जालोर [प्र]मुख सवलइ विचर्या।

यात्रा पण घणा ठामनी कीधी, तिहा यतीनी मतिष्ठानी चरचा, साधुना कृत्यनु विचार, तथा पर्व टाली पौषधना विचार आश्री आचलीआ, खरतर साथि वाद थयो । ठांणागे ज्ञाताया नद मणिकार, विपाकसूत्रि सुबाहु प्रमुषि त्रण्य पौषध कीधा, पर्व तु २ सामटा आवइ, त्रिचा पणि ३ न आवइ, विचारयो । श्रीवसुदेवहिंडै श्रीविजय सात दिन पौषध इत्यादि घणइ ग्रथि छइ । तिहाथी सा श्री सवत १५५६ आगरा भणी पधार्या । नागोर, मेरतइ जात्र आगरइ सवत्इ देव जुहारी घणानइ प्रतिबोध्या । घणा द्विज शु घणा चैत्यवासीसिउ चर्चा करी । सवत १५५८ पाटणि पधार्या । तिहा परीष पूनइ सा श्रीनइ पासि वृद्धशाखाया ओसवालज्ञातीय मातृ पितृ रहित वर्ष ११नु कुमार आण्यो, नामि श्रीवत । सा श्रीनइ कहि जे–'आ कुमरनइ भणावो ।' सा श्रीइ कुमारनु हाथ जोई मस्तक धूणिउ, कहिये । सा श्री कहइ–'आयु थोड छइ पण भणनार एहनी बरोबरी को नहीं आवइ ।' पछइ परीष पूनइ पोतानइ घरि राख्या, केतला दिहाडा सा श्री पासि भण्या । पछई सा श्री सवत १५५९ नवानगर भणी पधार्या, तिहा चोमासु करी, घणानइ समझावी धर्मनु मारग । सवत १५६० राजनगर तत्र चतुर्मासक । तत्र पटिल शवा, पटिल हासा सवरीपणु पडवज्या ।

तदनतर सवत १५६१ सूर्यपुरि चतुर्मासक । तत्र सा वेला, सा जीवा सवरीपणउ पडवज्या । तदनतरि सवत १५६२ वीरमग्रामि दो० तेजपालगृहे चतुर्मासक । तत्र शरीरे बाधा जाता । केतलइ दिवसि सुख जात । तदनतरि सवत १५६३ महिसाणइ दो० वासणगृहे स्थितवान् । तदनतरि सवत १५६४ श्रीपाटणि पधार्या । सा श्री पासि सवरी छइ, तेह नाम लिखीइ छइ—सा पीमा १, सा, तेजा २, सा कर्मसी ३. सा नाकर ४, सा राणा ५, सा कर्म ६, सा शवजी ७, सा पुना ८, सा धीगा ९, सा देपा १०, सा लींबा ११, सा सीधर १२, सा कवा १३, सा शवगण १४, सा लूणा १५, सा मागजी १६, सा जसवत १७, साहा डाहा १८, सा वेला १९, सा जीवा २०, पटेल हासा २१, पटेल शवा २२ धर्मर्थी पासि छइ ।

सा वीरा १, सा थिरपाल २, सा धीरू ३–जण ३ नडोलाईइ । सा रामा कर्णवेधी खभाति छई । सवत १५६३ थरामध्ये पुन्यास हरिकीर्त्ति दिव गतः । तत्र सा रामा श्रावक वखाण वाचइ, दूदासा पण साझइ वाचइ । केतलाइक दिन पछी पापी दिनि वार्त्ता चाली, जे आठमि शा वारी छइ? त्यारइ सा रामा कहि जे–'अमकडइ वारि।' दूदासा कहि जे–'इम नही । पन्यास तो आम कहिता ।' सा रामा कहइ–'ना, पन्यास आम कहिता ।' त्यारइ वादवार्त्ता प्रवर्त्ती । पछइ परठ कीधु, जे सा श्रीकडूआ पाटणि छइ, ए धणी जे कहसिइ ते सत्य, पूछीसिइ जे कहिसिइ ते करीसि । पछइ परठ करी पूछवा आवइ त्यार पहिलण सा श्रीनइ शरीरि पुन बाधा जाता, ज्ञात आयु स्तोक छइ । श्रीसघनइ तेडी समक्ष्य, सा पीमानइ तेडी सर्व भलाव्यु, जे सवनो मार्ग रूडइ पालयो, सा श्री कडूइ एतला बोल शास्त्रनी साषि प्ररूप्या, तद्यथा–

१ चैत्यनइ विषइ पावडी ऊतारी देव जुहारवा । २ श्रावकनी प्र[ति]ष्ठा शास्त्रि छइ पण यतीनी नही । ३ पाखी पुनिमनी सिद्धाति छइ पण चउदसिनी आचरणा । ४ पजूसण चुर्यिनु कालिकाचार्यि युगप्रधानि आचर्या-वती करीइ छइ । ५ मुहपती चरवलो श्रावकि लेवो आवश्यक समइ 'अनुयोगद्वारचूर्णो' इत्यादि । ६ सामायक पुनः करवा 'आवश्यके' । ७ पर्व टाली पौषध लेवो 'ज्ञातादौ' । ८ विदल टाल्वु काठथी अन्नथी 'कल्प-भाष्यादौ' । ९ मालारोपण उपधान निषेध ते टाली घणा वर्या लोहपरादि । १० स्थापना परिमाण अनेक सिद्धांति ।

ग्रंथ छइ, पत्र ४४ प्रमाण। तेथी सर्व साधुनउ मार्ग जोत्रो, पणि हीनाचारीनइ पगे न लागवु। परी पुना पछइ सा श्रीवतनइ कहइ–'मइ तुझनइ भणाव्यो गणाव्यो, माहरु कहिण करिजे, परसमवाईमध्ये आवि।' सा श्रीवत कहि जे–'पूज्य! कहउ ते करु पण धर्म तो आपणु जाण्यु थासिइ, वीतरागनइ मार्गी वरस शत सूली उपरि रहीइ पण धर्मबुद्धि अगीतार्थनु संग न करीइ।' इत्यादि घणी वार्त्ता। पछइ परी पुना कहइ–'जे आपण पभावि सा रामा कर्णवेधी छइ तेहनइ कागल ल्पीइ, चरचा आश्रयी। ते कहि ते प्रमाण कीजइ।' पछी सा श्रीवति वात कबूली, सा रामानइ कागल ल्प्या, पण परी पुनइ ए वार्त्ता सद्दही नहीं। ते कागल पण संप्रत हस्तपुरइ भंडारि छइ, पत्र १० प्रमाण। सा रामा पण घणु पंडित हुआ। परी पुनानइ रीस चढी, सा श्रीवत पासि जे पोतानी परतु हती ते ऊदाली लीधी, घणा मनुस्यनी पक्ष करी घर शत ७०० लेई पोसालि गयो, पण भंडार लेई न सक्यो। तिहा गया पछी वर्ष एकि मूत्रगच्छ(कृच्छ्र)नइ रोगि मरण प्राप्त.।

सा श्रीवत तिहाथी नीकल्या श्रीअहम्मदावादि पधार्या। तेहवइ दोसी देधरनी पीटणीइ श्रावक सर्व मल्या छइ, सा पीमानु दिवगतनु प्रस्ताव परी पुनानइ पोसालि गमन। 'सा श्रीवति शु कीधु हसिइ' एहवी विचारणा सर्व करइ छइ, तेहवइ सा श्रीवत तिहा पधार्या, फाटा वस्त्र को ओल्पइ पण नहीं, प्रथम दर्शन पूछ्यु–'जे किहाथी आव्या?' कहि जे–'पाटणथी आव्या।' तो वल्ता समाचार पूछ्या–'परी पुनानु गमन सभलाइ छि ते साचु?' कहि जे–'हा परु।' 'कांई सा श्रीवतनी पत्तरि जाणु?' कहइ–'हा, जाणीइ।' 'कहु सी परि छइ?' कहि जे–'जेहनइ तुमे पूछउ छु त पूज्यने पासइ छइ, पछइ सरव फेरवी मिल्या घणु रलिआति थया, वस्त्र बीजा परि नवा आप्या। सामी सर्वे कहइ–'जो तुम्हे छउ तउ सर्व छइ।' सा श्रीवत तिहा रह्या सुख समाधि, सा श्रीवति सुखशातानिमित्त 'श्रीरुषभदेवनु वीवाहलु' ढाल ४४ प्रमाण कीधो। सघलइ गच्छि प्रसीध छइ।

संवत १५७२ पासचंदना गुरु(?) तपामाहिथी मत नीकल्यो। लोकनइ विप्रतारवा मइला वेस करी क्रिया माडी, तीजइ गामि धर्मार्थीनु योग नही, तेणि जागि जागिथी मनुस्य ओसलु वीरम प्रमुख सघलइ पासचंदि लीधा। आचरीइ खरतरि पणि क्रिया उद्धरी, जेहनइ सवरीनु योग नहीं ते जाइ ज। सांप्रत पण केतलइ गामि सवरी टाली रापी रह्या छइ सा श्रीरूइआनी सामाचारी। अथ सा श्रीवत घणी विद्याना जाण। एकदा सा देधरनी पीटणीइ रह्या छइ। तत्र घणइ द्विजि विद्यानी ख्याति साभली, सा श्रीवत पासि आव्या। सा श्रीवत साथि प्रमाणवाद, बीजी गोठि कीधी, छंदशास्त्रनी वार्त्ता। पछइ विप्र कहइ–'तुम्हारी जोडि देपाडु।' पोताना कर्या काव्य देपाड्या। पछइ वाडव कहइ–'वणिकनइ एवडी शक्ति नु हइ, साचु तो मानीइ जो हवडा आ पीटणीइ ढोलीउ छइ तेहनु वर्णन करो।' पछइ सा श्रीवति ढोलीआनु वर्णन धर्मरूप कीधु। तद्यथा–

> पादाश्चत्वार(?) यस्मिन्निह चरित तपो दर्शन ज्ञानसिद्धा
> निर्लोभत्व मृदुत्व तदनु सरलता क्षान्तिरस्राश्चतस्र।
> धर्माच्छीर्पादिपञ्चव्रतनिचडपटीप्रच्छदः कर्ममुक्ति-
> स्तल्पे निद्राति चेतो भवभयविरत वासरो मे स धन्यः ॥ १२

तरत काव्य कीधु। सूत्र कंठ रलीआति थया कहि जे–'अह्मो द्विज हुता तरत न जोडाइ।'

अथ सा श्रीवत सघलइ विचरत पण सा मोरा, सा सरपति पातशाहना वजीर सा श्रीकडुआना समवाई सा श्रीवतनइ पातशाहनइ मलव्या। तत्र लहुआ व्यास साथि दिन २ चरचा। एकदा लहुइ व्यास पातशाहनइ वार्त्ता कहि जे–'श्रीवत आदाना खडमध्य अनता जीव कहइ छइ।' सुरत्राणि सा श्रीवतनइ तेडाव्या। नफर तेडाव्या आव्या। नफरनइं पूछ्यु, कहि–'जे हवडा हु आव्यो, पुनः शु काम छइ?' सेवक कहइ–'नथी जाणतो पण ल्हुओ व्यास आद्रपड ल्याव्या छइ, अनइ तेडइ छइ।' सा श्रीवति विचार्यु जे वार्त्ता भरावा दीसइ छइ। सा श्रीवत सुरत्राण भणी जाता सुरत्राण निजरि आवइ। तिहा गाइ एक दीठी, सा श्रीवत सुरभिनु पुच्छ जोवा लागा। सुरत्राणि पूछिउ–'जे श्रीवत धेनुनु पुच्छ शु जोयु?' सा श्रीवत कहइ–'ल्हूओ व्यास गोनइ पुच्छि तेत्रीस कोडि देवता कहे छइ ते जोतो हतो।' सुरत्राण कहइ–'किम लहुआ?' कहइ–'हा जी, अह्मारइ शास्त्रि छइ।' सुरत्राण कहइ–'लहुओ इम कहइ, जे कहइ छइ जे श्रीवत आदाना खडमा अनता जीव कहइ छइ।' सा श्रीवत कहइ–'हा जी, अह्मारइ शास्त्रि छइ, हु जीव देषाडु जो ए देव देषाडइ।' लहु व्यास कहइ–'देव दीसइ नही, उक्त प्रमाण।' पछइ सा श्रीवति आदु वावी देषाडयु, पड जीव प्रगट थया, जैन प्रभावना घणी थई। सा श्रीवत चापानेउरी पण सुरत्राण पासि रहिता।

एहवइ सवत १५७९ प्रभाति पासि कसारि, तिहा कडूआमतीनइ देहरइ देव जुहारवा पर समवाई आवइ ते पाघडी ऊतारी देव जुहारद, तेहनइ देव जुहारवा दि, नहींतरि नही। प्रभातिमध्ये सा धनुआ मनुआ राजमान्य, ते कसारीइ मनुआ देव जुहारवा आव्या। श्रावकि साभल्यु जे सा मनुआ देव जुहारवा आव्या छइ, अनइ आपणइ देहरइ पाघडी नही ऊतारइ तो वध भाजसिइ, त्यारइ श्रावक मिली देहरइ आव्या। सा मनुआनइ कहि जे–'पाघडी ऊतारो।' त्यारइ कहइ–'जे अह्मे पर समवाई, स्यावती ऊतारीइ?' ना ना कहिता पाघडी ऊतारी, सा मनुआनि विरोधी बोल्या नही, ते धणीना भाईनइ आगलीथी मनुष्यइ कहिउ–'जे कसारीनइ कडूआमतीइ तुम्हारा भाईनी पाघडी ऊतारी।' ते धणी चडी आव्यो। भाइ सन्मुख मिल्यु, पूछिउ–'किउ हतु जे पाघडी ऊतारी?।' कहि–'ना, हु ऊतारतो हतो।' तिणि हाथ धरिओ तेणिहानु तरत कोप शम्यो, पछइ सूधी नरति जाणी प्रजन मेली वध जे कसारीना कडूआमतीनइ कोकजी वस्तु वुहरावइ नही ते वार्त्ता कसारीना साभली चापानेउरि सा गोरानइ पासि आव्या। सामी जाणी मिल्या, समाचार पूछया–'कीहइ गामिथी पधार्या?' कहि जे–'प्रभाति पासि कसारीथी आव्या।' पूछिउ–'जे कसारीइ ढो छाछ, दोसी पासा, सहिसा समस्तनइ कुशल छइ?' त्यारइ कहि जे–'ते सर्व पूज्यनइ पासइ छइ त्यारइ बीजी वार मल्या, देवपूजा कीधी, भोजनोत्तर पूछ्यु–'आतली भूमि किम पधार्या?' सर्व वार्त्ता माडी, कही साभली। सुरत्राण कहइ–'जई स्थभतीर्थि मोतीनी फरमासि मोकली।' तेणि जोयु जे किहाथी विकृति ऊपनी। जाण्यु ये कसारीना चपानेउरि गया छइ, तिहा एहना सामी वलीआ छइ, सर्वे महाजन चापानेउरि मिली आव्यु। सा गोरानइ मिल्यु। कसारीना महाजन साथि मेल करी कुशलि घरि आव्या। सा गोरइ शत्रुंजय सघ कीधु। सुरत्राणनी आज्ञा मागी। सा श्रीवत पणि सेत्रुजय पधार्या। शत्रुजयनी यात्रा करी पाछा तलहटीइ आव्या। पेटमध्ये दूषवा आव्यु, सा श्रीवतनइ। सा श्रीवत अरिहत सिद्ध जपता दिव गतः। सर्वायु वर्षत्रयस्त्रिंश[त्] ३३।

तदनतरि सा श्रीवीरा गुजराति पधार्या। जिहा सवरीनु योग नही तिहा केतला दिन श्रावकि पणि वाच्यु। संवत १५८१ सा रामा इन स्थिरपत्रे(द्रे) दिव गतः।

तत्पट्टे सा राघव संवत १५८५ वर्षे रिपिमती उत्पत्ति । आणंदविमलसूरि क्रिया-उद्धरी, मात्री श्राविका विकानइ त्रिण आज्ञाइ दीक्षा दीधा वती गुरि ठवकु दीधु जे-'ए नाईनी वार्त्ता लोकमा तुझ साथि विपरीत समलाइ छइ ते सर्व विस्तर अन्य पत्रथी मीछयो हाथपोथीमा छइ ।' ते क्रिया उद्धरी सघलइ फिर[वा] लागा । धर्मार्थीना योग त्रिण कट्टूआमती सघलइथी ताणी लीधा । माडवना घर सर्व लीधा । इम जागि जागिना लीधा, बीजइ पेत्र जिहा श्रावक भगनार हता तिहा थोभ्या । संवत १५८६ सा श्रीवीरइ स्थभतीर्थ पासि कसारी-मध्ये दोसी पासा सहिसानी श्रीशातिनाथनी प्रतिष्ठा कीधी, ते प्रतिमा सामत प्रपुत्र दो० माहवानइ घरि छइ । संवत १५८८ सवरी श्रीदत्ति आबू, गोडी, चीतुड, कुंभलमेर प्रमुखनो सघ कीधु घणाइ उच्छवि । यस्य सताना सवरी महिपाल, अमीपाल, सा वीरा संवत १५९० श्रीअहमदा[वाद] चतुर्मासक रह्या, तत्र सा जीवराजनइ सवरी दीधा । दो० मगल प्रतिबोध्या । पुनमीआथी कट्टूआमती कीधा । संवत १५९१ पाटण चोमासु । सा रामइ पणि स्थभतीर्थ प्रमुखि मनुस्य ठामि राख्या । संवत १५९२ सा रामा कर्णवेधीइ श्रीवीरवाह वीरलु(वीवाहलु ?), लुपकहुंडी हुंढपत्र ३२९ छइ । अनइ अधिकार ५७४ छइ, सामत राजनगरनइ भडारि ते प्रति छइ । संवत १५९२, संवत १५९३ राधनपुर, स्थिरपत्र(द्र) प्रमुख सघलइ विचर्या । संवत १५९४ सा रामा कर्णवेधी दिव गत ।

संवत १५९४ सीरोहीइ चतुर्मासक । संवत १५९५ सादडीइ । इम सघलइ विचरी पछइ नडोलाईइ पधार्या । वृद्धावस्था छई, व्याहार पण करी न सकइ । संवत १६०१ नडोलाईइ शरीरि बाधा थई, वर्ष कठिण दिधा, अन्नतः रोगतः । बीजा सवरी सा जीवराजप्रमुख सर्व पासि हता । सा श्रीवीरानइ ऊषधनई अर्थि कसी वस्तु जोईती हती त्यारइ ते वस्तु श्रावकनइ घरि छती हती पणि ना कही । पछइ औषध कीधु जोईइ सा श्रीवीरा पासि छापरी ४ हती, ते मध्ये बीथी छापरी २ श्रावकना हाथमा आपी । कहि जे-'सा भाणानइ घरि अमकडी वस्तु छइ ते ल्यावुं ।' नाणु लेई तरत काढी आपी, ते वस्तु सा श्रीनइ आपी । सा श्रीइ औषध कीधु । पछइ सा श्री जीवराजनइ कहिउ-'जे दीठउ, ससारमा सर्व स्वर्थमय छइ, ते माटिं हवइ तुम्हो आजथी राख्या मात्र मतत्वमता(ममता) रहित द्रव्य राषयो, आमत्रण वा आमत्रण टाली भोजन करवा गयो, हाथनइ त्रिपइ मुद्रिका पहिरयो, वस्त्र २, तथा ४ बधता राषयो, काल कठिण छइ, आपण तो बारव्रतधारी श्रावक छीइ, सपेपीइ तेतलु वारू।' बीजी पण घणी सीपामण दीधी । सा श्रीवीरा संवत १६०१ दिन ४ अनशन पाळी दिव गत. । सा वीरा १४ वर्ष गृहस्थपर्याय, २५ वर्ष सामान्य सवरीपर्याय, ३० वर्ष पटोधरत्व, सर्वायुरेकोनसप्तति ६९ वर्षाणि परिपाल्य सा जीवराजस्य पदस्थापन कृत्वा स्वर्गे गत ३ ।

तत्पट्टे सा श्रीजीवराज सर्वत्र विख्यात यशस्वी, स च अहमदावादे परी जगपाल, भार्या बाई सोभी, तत्पुत्र सा जी[व]राज संवत १५७८ प्रसव, संवत १५९० सा वीरा पासि सवरीत्व जात, १२ वर्ष गृहस्थ, ११ वर्ष सामान्य सवरी, पश्चात्पट्टे(ट्ट)धरत्व समायात । अतीव यशवान(स्वी) आबाल गोपालप्रतीत सा श्रीजीवराज स्थभतीर्थे, राजनगरे, पत्तने, राधनपुरे, मोरवडि, थराद प्रमुख सवरइ देहरा उपाश्रये कराव्या । ठामि ठामि श्रावक ठामि राख्या, घणा अवदात छइ । संवत १६०३ सा राघव दिव गत थरादमध्ये ।

तत्पट्टे सा जेमा । संवत १६०४ सा नरपतिनइ सवरी दीधा । सा माजननइ सवरी दीधी(धा) ।

संवत १६०२ ब्रह्ममतीनी उत्पति लिखीइ छइ–सा श्रीजीवराज राधनपुरिस्थितेन राजनगरे पासचंदि [वि]जो[य]देवनइ पद दीधुं ते वती रिषि ब्रह्मउ मनशु पेद पाम्यु । एहवइ पासचंद हवतपुरमध्ये उपाश्रय करनार हता. जागइ कडुआमतीनइ ताणु पण मह आणंदि विचार्यु जो हवतपुरमध्ये उपाश्रय थासिइ तो साहमी शथल थासि, पासत्थानु संग वारू नहीं । ते वती रिषि ब्रह्मा साथि म० आणंद मिल्या जे–'तुह्मो चिंतामणि पर्यंत पडित तुह्मनइं पद नहीं ते शु कहिजे ? रजपूतमती हसिइ तुह्मे पणि एहवा छो जे नवो गच्छ माडो, तुह्मनइ पणि पूनिमनी पाखीनी सद्दहण छइ, रिषि ब्रह्मउ जे साचु पूनिमनी पाखी सिद्धांतनइ अक्षरि थापु, समवसरण त्रण्णे माकार आदि सर्व थापु, पण माहरि पासि श्रावको नथी ।' पछइ म० आणंदि कह्यु–'जे तुह्मारु हु श्रावक थाउ ।' म० आणंदि सरभरण, पोखण कर्युं । गच्छ नवो माड्यो ऋ० ब्रह्मइ, म० आणंदना प्रेमथी कडुआमतीमाथी आवु जाणी प्रतीत अर्थे 'नागिल-सुमतिनी चोपई' जोडी आपी पूनिमनी पाखी थापी । पासचंद उपाश्रय करता रह्या । सा श्रीजीवराजि राधनपुरि सांभल्यु ये मह आणंद ब्रह्ममती थया । सा श्रीइ मह आणंदनइ कागल लख्यु–'जे आहवी वार्त्ता सांभली ते शु छइ ?' पछइ म० आणंदि ऋषि ब्रह्मा कन्हइ आवी मिच्छामि दुक्कड देई कहि जे–'तुह्मारी संगति कार्यविशेषि कीधी ते सीधी, तुह्मारी पण गरज सरी ।' इम कही पोतानइ उपाश्रय आव्या । सा श्रीजीवराजनइ कागल लख्यो, रलीआति थया इत्यादि घणा अवदो(दात) छइ । सा श्रीजीवराज महाप्रभावीके संवत १६०९ पत्तने चतुर्मासक । तत्रथी आबू प्रमुखनी यात्रा । संवत १६१६ स्थिरपत्रे(द्रे) सा श्री चतुर्मासक, घणा उच्छव थया, मासखमण प्रमुख तप, तत्र सा डुगरनइ स[व]री चतु कीधा । संवत १६१७ राधनपुरि सा श्रीजीवराज चतुर्मासक रह्या । एहवइ प्रभातिमध्ये धर्मसागर साथि सो० पउमसी, ठाकर मेरु मास लगइ चर्चा चाली, दिन २ प्रति सो० पउमसी, सो० वस्तुपाल, सो० रीडा, सो० लाला प्रमुख समवाय ठाकुर मेरु साथि जई, यतीनी प्रतिष्ठा आश्री चर्चा करइ, पण यतीनी प्रतिष्ठा शास्त्रि नथी, श्रावकनी प्रतिष्ठा छइ, तद्यथा श्रीआवश्यकवृत्तौ–भरतः स्वयं प्रतिष्ठितवान् । षष्ठपञ्चाशके तृतीयगाथां–'जिणभवण बिंबठावण' इत्यादि द्रव्यस्तवमध्ये प्रतिष्ठा कही, अनइ महानिशीथिये तथा यती द्रव्यस्तव करइ, ते देवनु पूजारु तथा कुशीलीओ इत्यादि अध्ययन पाचमइ छइ, तथा कल्पसामान्यचूर्णौ वा विशेषचूर्णौ च श्रावक प्रतिष्ठा करइ । तत्र यती परवादीना विघ्न निवारवा आवइ इम छइ, पण प्रतिष्ठा करवा आवइ इम नथी, यतीनइ तु दसवी(वै)कालिके स्नान निषेधु–"सिणाण सोहपमज्जणं" इतिवचनात् । सोनइ रूपइ नाभडइ, महानिशीथे–"जत्थ य ह(हि)रन्नसुवन्न०" इत्यादि । तो साधु प्रतिष्ठा करज किम ? प्रतिष्ठानइ करनारि स्नान करवु, कंकण पहिरवु, तो प्रतिष्ठा थाइ इत्यादि घणी युक्ति निरुत्तरी कीधो । पछइ कहइ–'साधुनी प्रतिष्ठाना अक्षर छइ ते देपाडीसि ।' पछइ बीजइ दिनि कागल लख्यु ये कडूआमती सो० पउमसीह ठाकर मेर प्रमुख प्रतिबोध पाम्या छइ । हवइ केतलाइक बाकी बीजा छइ ? तेहनइ तेडी आपणा गच्छमाहि आवगिइ । ते कागल राधनपुरि सा श्रीजीवराजि सांभल्यु । सा श्रीचत्तसाथि दिलगीर थया जे–एहवा डाहा पासत्थाने पगे लागिसिइ तो बीजानु शु गजु ? पछइ सा श्रीइ सो० पोमसीनइ कागल लख्यो, वार्त्ता जणावी, जे आहवी वार्त्ता सांभलीइ छइ जे–'सो० पउमसी सा(सो०) वस्तुपाल, सो० लाला, सो० रीडा प्रमुखने तेडीनइ ठाकर मेर आपणा गच्छमध्ये आवसिइ, एहवु धनसागरि लख्यु छइ' ते सा श्रीनु कागल समवाय वाची विचारवा लागा, देषु मृषावादीना करणीये अच्छती वार्त्ता गामि गामि लिखइ छइ । पछइ सर्वनइ तेडी मेर ठाकर धर्मसागर कन्हइ आव्या–'यतीनी प्रतिष्ठाना अक्षर आपो । तुह्मे कह्यु हतु ये अक्षर छइ ।' पछइ कहि–'सिद्धांति तो नथी । वीरचरित्रनइ विषइ कपिल केवलीइ प्रतिष्ठा कीधी एहवा अक्षर छइ ।' पछइ सो० पोमसी कहइ–'ते ग्रंथ कह्नो

कीधु ? ' त्यारइ कहइ–' हेमाचार्यनु कीधु । ' तिवारइ कहइ–' प्रतिमा केवलीइ प्रतिष्ठी कीहा ग्रंथमध्येथी आणी।' सवध सघलु उदायन राजानु प्रतिमानो 'श्रीआवश्यकचूर्णि'मध्ये छइ, ते मध्ये तु कपिल केवलीनी प्रतिष्ठानु नाम ज नथी, अनइ निशीथचूर्णि, आवश्यकचूर्णि, जीवतस्वामिनी प्रतिमा विद्युन्माली देवताइ प्रतिष्ठी दीसइ छइ–'पढमपुत्र पइट्ठा' इत्यादि तुह्मे कहउ छउ जे वीरचरित्रि हेमाचार्यि कपिल केवलीनी प्रतिष्ठा आणी ते जाणीइ छइ, जे असंबद्ध अर्थ दीसइ छइ, जे माटि वीरचरित्रमा आण्यु छइ, वीरविहारि मुनिचद्र अणगार देवलोकि गया कह्या छइ, अनइ श्रीआवश्यकचूर्णि तु सुगतिगमन छइ, बीजा पणि अधिकार फारफेर छइ । सुमगल अणगारनइ लोचना तथा पोतइ आण्यु छइ, जे वीरनइ अभयकुमार प्रश्न–

पृच्छति स्माभयोऽप्येव कपिलर्षिप्रतिष्ठिता ।
प्रकाशमेष्यति कदा प्रतिमा परमेश्वर ! ॥ ६ ॥ १३
स्वाम्याख्याति स्म सौराष्ट्र लाट गुर्ज्जर सीमनि ।
क्रमेण नगर भावि नाम्नाऽणहिलपाटकम् ॥ ३७ ॥ १४

पुनः अग्रे

अस्मन्निर्वाणतो वर्षशतान्यभय ! षोडश ।
नवषष्टिश्च यास्यन्ति यदा तत्र पुरे तदा ॥ ४५ ॥ १५
कुमारपालभूपालश्चौलुक्यकुलचन्द्रमा. ।
भविष्यति महाबाहुप्रचण्डाखण्डशासनः ॥ ४६ ॥ १६

जे आगलि हेमाचार्य हसिइ त्यारइ कुमारपाल राजा हुसिइ त्यारइ प्रतिमा प्रगट थासिइ, इत्यादि घणो सवध छइ पणि ए अधिकार कुण सिद्धातमाथी कुण पचागीथी आण्यो छइ । ते माटि जे एहवा अर्थ अणमीछ्या ते कपिल केवलीनी प्रतिष्ठा आणइ ज ए वातनु सिउं पूछवु ! ते अधिकारना पत्र माशुक जलयोग्य दीसइ छइ ! पछइ धर्मसागरि मानालय कीधा । ठाकुर मेर कहइ–'जे आतला दिन अह्मो आशीर्वाद देता ते भाटनु आचार, अनइ नमस्कार पोथीनइ करतु पणि तुह्मानइ परगामि पोटा कागल ल्पवा नात्रइ, एतला दिन वीरनी आज्ञा रहीतनी सगति कीधी हुइ ते मिच्छामि दुक्कड।' सर्वनइ तेडी जयपताका पामी, सरव उपाश्रय आव्या। सा श्रीजीवराजनइ राधनपुरि कागल ल्प्यु। सवत १६१८ ठाकुर मेरनइ सुचा कागा साथि गवारमध्ये पाघडी उतारवा चरचा, पेलइ घणो क्षोभ देपाडयु पण अचल इत्यादि विस्तर । सवत १६१८ सा श्रीजीवराज पत्तने चतुर्मासक । तत्र उपाश्रय देहरा प्रमुख घणा धर्मकार्य । सवत १६१९ राजनगरि चतुर्मासक । सवत १६२० स्थभतीर्थि चतुर्मासक । तत्र वु० जिणदासनी प्रतिष्ठा कीधी । थावर दोसीनु घृतपटीमध्ये चैत्य कारापित । तत्रथी घणा मनुस्य साथि प्रभातिथी आबू प्रमुखनी यात्रा घणी जागि पधार्या । सवत १६२१ थिरपुर घणो प्रभाव, सा श्री आर्वि एक श्रावकि जावजीव त्रणि द्रव्य उपरात पचखाण कीधु । सवत १६२२ मोरवाडि प्रमुख सवन्इ विचर्या । सवत १६२३ पत्तने चतुर्मासक । तत्र सा तेजपालनइ सवरी कीधा । स्थिरपुरि सा नरपति, सा चापसीनइ सवरी कीधा । सवत १६२४ वर्षे भवरी सग्रामि आबूप्रमुखनु सघ कीधु । सवत १६२५ स्थभतीर्थे सा रत्नपाल्नइ सवरी कीधा । सवत १६२६ राजनगरि सा श्रीवत तथा सा वजूडनइ सवरी कीधा। सा श्री काशीप्रमुखनइ प्रतिबोध्या शाहपुरा । सवत १६२८ सा नरपति सा चापसीना भाई सा जिणदासनइ सवरी कीधा । सवत १६३० सा श्रीजीवराज राधनपुरि चतुर्मासक। सा माजम(न) राजनगरि चतुर्मासक, एहवइ पानआजमि विराध कीधु। तिणि मनुस्य मरीइ टगाइ ते देषी।

सा सा साजन वैरागी चित्तमा चीतवइ जे देपो जीव धर्म पापइ आतली वेदना परवशि पमइ छइ पण पोतानइ वसि पमतो नथी तो घणो काल समारमा भमीसिइ तो मनुस्यनु जवारु फोक न हारु। चउदसि ऊत्तरवारणु करी पाषीनइ दिनि पोसह कीधो। कालना देव वादी, श्रीचद्रप्रभ साषि जावजीवाइ तिविहं पि आहार अनशन कीधु। बीजइ दिनि पारणा वेलाइ पारणु न करइ त्यारइ जाण्यु जे बीजउ उपवास कीधु हुसिइ, पछइ वल्ती वार्त्ता कीधी जे–'मुझनइ सत्र महत्त्व आपइ, मइ अनशन कीधु छइ।' प० रत्ना, दो० मगल, दो० सोना, सा० धना प्रमुख सर्वे वीनती कीधी–'सा जी! ए कार्य दुष्कर छइ साजइ शरीरि ते माटिं उपवास ८ तथा १५ अथ मास करउ।' पछइ सा साजन कहि जे–'मइ जावजीवनु उचरिउ।' पछइ सघि राधनपुरि सा श्रीजीवराजनइ कागल लष्यु जे–'सा साजनिं अनशन कीधु छइ ते माटिं पूज्य अत्र वहिला पधारयो।' पछइ सा श्री सतरमइ उपवासि पधार्या। उच्छव विशेप थया, दिन ६१ अनशन पाली दिव गतः। सघि माडवी प्रमुख उन्छवि दहन सस्कार करी सहू घरि आव्यु। सा साजन साजन जपवा लागु। पछइ श्रीसघि धर्मसी पटेलनी वाडी मध्ये असारूइ थूभ कीधु। साम्प्रत वाटिकाम येऽस्ति। पछइ सा जीवराजि घणी जागिं प्रतिष्ठापइ, सारी यात्रा कीधी, तथा पत्तननु देहरु मलाणीइ पाड्यु ते दो० गलिकाठ सर्वराजमाथी पाछु आण्यु। देहरु कराव्यु, तथा म० जयराज, जयचदनइ कविलपानि राष्या हता। म० लीवाना सतानीआ तेहनइ अहमदावादथी दो० मगल, प० रत्ना, दो० सोना, सा० धना पाटण भै तरत मुकव्या। साहमीना एहवा राग हुइ, घणा कार्य कीधा। धर्मबाधव जाणवा, यतः–

> अन्नन्नदेशजाया अन्नन्नाहारवुड्ढिय[सरीरा]।
> एगस्स धम्मे पत्ता सव्वे ते बधवा भणिया॥ १७

तदनतर परी कीका नइ सा नरपति भणाव्या। सा नरपति वारू पडित घणी विद्यासग्रह कीधा। सवत १६३५ सा चापसी दिव गतः। सवत १६३६ सा तेजपालिं स्थिरपत्रे(द्रे) सा राइमलने सवरी कीधा। सवत १६३१(७) सा नरपति दिव गतः। सवत १६३८ सा गोवाल, सा देवजी प्रमुप पेलाडी जालुहरा प्रतिबोधितवान्। सवत १६४२ पत्तनथी परि कीका आबूनी यात्रा साथि सा जीवराजप्रमुख सवरी, स्थिरपत्र(द्र)थी सवत्री सीहइ आबु सघ कीधु। बेहु सघ एक ठाम मिल्या, स्थिरपत्र(द्र)थी सा जेसादिक घणा सवरी, मा श्रीजीवराजनइ मिल्या। सा माडणि आबू ऊपरि अनशन कीधु। घणा उन्छव कीधा ते 'सा माडणना रास'थी मीळवा। सा माडण दिन ५९ मइ दिव गतः। सवत १६४३ दोसी अमजीइ प्रतिष्ठा कीधी। सा श्रीजीवराजि प्रतिमा प्रतिष्ठी। तदनतरि सखरा सा सोमजी शवा तेणिं सघ कीधु। ते धणीइ सा श्रीनइ घणइ आग्रहिं साथिं तेड्या। सा श्री पोताना घणा सत्र साथिं पभातिना सोनी पना प्रमुख राजनगरना पण घणा मनुस्य साथि सवरी सर्वनइ तेडी सिद्धाचल्नी यात्रा पधार्या। तत्र श्रीविमलाचलि घणा उच्छव पृजा-स्नात्र थया। सा रत्नपालि तत्र अवतीसुकुमाल्नु नवु रास कीधु। तत्र गान, कुशलि यात्रा करी पधार्या राजनगरि। सवत १६४४ सा श्रीनइ शरीरि बाधा थई, समस्त सघ मल्यु, सा श्री पोतानु आयु स्तोक जाणी सा तेजपाल्नइ पदस्थापन, सवरीनइ बगी सीपामण दीधी, दिन ३ अनशन पाली, अरिहत सिद्ध जपता, दिव गतवान्। सा श्रीजीवराज १२ वर्ष गृहस्थपर्याय, ११ वरस सामान्य सवरी, वरस ४३ युगप्रधानरत्न, सर्वायुः षट्पष्टिवर्षाणि परिपाल्य स्वर्गमगमत्। सामीइ घणइ मडाण देहसस्कार सकल नगरि दिन दिन अमारिपटहो घोषः ४॥

तत्पट्टे सा श्रीतेजपालस्य चरित्रम् ।

पत्तनवास्तव्य श्रीश्रीमाली दोसी रायचद, भार्या बाई कनकाई, पुत्र सा तेजपाल, सा जीवराजनइ वचनि संवरीत्व वर्ष १३ गृहस्थपर्याय, वर्ष २१ सामान्य संवरीपर्याय, वर्ष २ पटोधरत्व । अतीवविद्यावान 'महावीरसम स्मरणकल्याणकारणो धर्म ' इत्यादिस्तोत्राणि कृतवान्, सावचू(चू)रि समाससहित कीधी छइ । सा राइमल्लनइ सा चोथाइनइ भणाव्या । सा चोथानइ थरादनो आदेश आप्यो । बीजा संवरीनइ घणी विद्यानु अभ्यास घणो । संवत १६४५ सा श्रीव्रति पण घणा स्तुति कीधा छइ । सा श्रीवत दिव गतः । संवत १६४६ सा श्रीतेजपाल पत्तने चतुर्मासक, तत्र शरीरि विशेष बाधा । सा रत्नपालनई पदस्थापन शुभपरिणामे दिव जगाम । सर्वायु. षट्त्रिंशद्धिति ३६ ।

तत्पट्टे सा श्रीरत्नपाल । स च स्थंभतीर्थे पासि कसारीग्रामे दो० वस्ता श्रीश्रीमालीवृद्धशाखाया भार्या बाई रीडी, पुत्र सा रत्नपाल । सा श्रीजीवराजना वचनथी संवरीत्व, सूक्ष्मविचारनइ विष[इ] घणु प्रवीण, रागांगी घणु हवा, घणा स्तवन स्तुति कीधा छइ, २४ तीर्थंकरनी, २० विहरमाननी, १३ काठीआनी भास कीधी छइ । संवत १६४७ स्थंभतीर्थे चतुर्मासक । तत्र बाई सहिजलदे घणु वैराग्यवान । श्रावकनइ घरि त्रिण आमत्रणि भोजन करवा जाता पोताना जीवनी घणी गरज सारइ, संसार असार जाणइ, सा श्रीनी वाणी सांभली जावजीवाइ तिविह पि [आ]हार अनशन कीधु, तेहवइ हरमजिथी सोनी सोमसी आव्या, ते धणीइ घणा उच्छव कीधा । अनशननी घणी शोभा थइ । सामी सामिणीनी घणी भक्ति, चुवीस पाखी, वात्सल(ल्य), नित्य रात्रिजागरण प्रमुख घणा व्रत पचखाण थया । सा श्रीरत्नपालना उपदेशथी बाईनइ दिनइ दिन प्रति नीझामतइ दिन ५९ अनशन पाली दिव गता । श्रावकि घणइ उच्छवि मांडवी प्रमुख आंडबरि देहसस्कार दिन दिन उच्छव वधतइ संवत १६४७ सा जेसा थराद दिव गतः ।

तत्पट्टे सा पेतसी संवत १६४८ राजनगरि चतुर्मासक । तदनतरि संवत १६४९ सा जिणदासनइ धर्मसागर साथि चरचा । तत्र धर्मसागरि सा जिणदासनइ प्रश्न जे, 'तुह्ये धर्मार्थी ?' तु कहि–'हा ।' 'तुह्ये धर्मार्थी तिम धर्मार्थी..जिणि जल नथी पामिउ ते जलार्थी कहिवाइ, तिम तुह्म धर्म नथी पाम्यु नइ धर्मार्थी कहावु छउ ।' पछइ सा जिणदासि धर्मसागरनइ कह्यु जे–'महानुभाव ! शास्त्रसन्मुख दृष्टि द्यो तो वारू छइ, जे ठाणागे–

'दुविहे धम्मे पन्नत्ते त जहा–अगारधम्मे अणगारधम्मे ।'

ते वती तह्मो श्रावकनु धर्म पाम्या छीइ, यतीनु धर्म नथी पाम्या, ते वती धर्मार्थी कहावीइ छइ, एकाति श्रीयुगप्रधाननइ ध्यानि वर्त्तीइ छइ पण मतातरी गच्छातरी देषी आस्था नथी आवती ।' पछइ धर्मसागर मौनावलबन भेजे । संवत १६४९ सा श्रीस्थंभतीर्थे चतुर्मासक । तत्र संघवी अमीपाल, सो० महीपाल, सो० पनीआ, सो० रूपमसीइ, सा श्रीना वचन सांभली विमलाचलनु संघ कीधु । घणा [illegible] प्रमुख संवरी साथि श्रीस्थंभतीर्थनो बीजा गामनो संघ कुशलि यात्रा करी सर्व घरि आव्यु ।

संवत १६५० राजनगरि चतुर्मासक । तत्र बाई सोनबाईइ अनशन उपवास ६१ मइ दिवगता । संवत १६५३ सा श्री पत्तने [illegible]क । तत्र घणी सपेसरानु संघ कृतवान् । संवत १६५४ सा श्री [illegible]

संवत १६५५ सा जिणदासि सा तेजपाल्नइ सवरी कीधा । सवत १६५६ सा श्री रत्नपाल राजनगरि चतुर्मासक। तत्र भणसाली सोनाना संतानीया, भगसाली जीवराज, भणसाली देवइ ऊभी सोरठनु सत्र कीधु । गिरनारि, सेत्रुजइ, देवकइपाटणि, दीवि प्रमुख सत्रलइ पधार्या । साथि सा श्री आदि सर्व सवरी घणी प्रभावना, घणा उच्छव सहित कुसलि यात्रा करी सर्व त्रग्नइ विपइ आव्यु। दिनि दिनि उच्छव अधिक। सवत १६५८ सा राइमल दिव गतः । सवत १६५९ सा वस्तुपालनो विंबप्रवेश कृतः सा श्री रत्नपालेन। सवत १६६० सा श्री रत्नपाल राजनगरे चतुर्मासक। तत्र भण० जीवराजि, भण० देवइ आनू, गोडी, राणपुर प्रमुखनो सत्र कीधु । पभातिना सामी, पाटणना सामि, राधनपुर थरादना सर्व सत्र साथि, सा श्री रत्नपाल आदि सवरी सा श्री रत्नपाल, सा जिणदास, सा पुजा, सा पेतसी, सा चुथा, सा महावजी, सा तेजपाल, सा रिषभदास, सा पुजीआ, सा गोपाल, सा हीरजी ११-इत्यादि घणा सवरी साथि हता । सत्रलइ देवपूजा विधिपूर्वक नाटक-उच्छवसहित श्रीसत्र सीरोहीइं पधार्यो । तत्र चैत्यवासी साथि चर्चा । सा श्री रत्नपाल्नइ आदेसि पुनः सत्रनइ आदेशि सा रत्न जिणदासि चर्चा कीधी, तद्यथा-चैत्यवासीइ कह्यु-'साभलो, अह्म वेषधर वेष प्रमाण ।' यतः-उपदेशमालाया-

> धम्मं रक्खइ वेसो सकइ वेसेण दिक्खिओमि अहं ।
> उम्मग्गेण पडत रक्खइ राया जणवउ व्व ॥ १८

ते वती वेष प्रमाण, ते माटिं अह्मो मान्यता जाणवा । पछइ सा जिणदास कहइ-'तुह्मो श्रीउपदेशमाला मध्ये जूओ, कह्यु छइ ये-

> वेसोवि अप्पमाणो असजमपए [प]वट्टमाणस्स ।
> किं परिअट्टिय वेस विस न मारेइ खज्जत ॥ १९

ते माटि ए गाथामध्ये असयमि वर्त्ततो वेष अप्रमाण जाणवो ।' पछइ कहि जे-'हिवडा वकुस चारित्र छइ, कुकुसा सरिपु ।' पछइ सा कहि जे-'हवडा छइ कइ सदाइ छइ? यतः- 'वकुसकुसीलेहिं वट्टए तित्थ।'

इति वचनात् सदा जाणवु, पण सिद्धातना भाव जणमीछि रह्यो छउ, प्रथमता वकुसचरित्र कह्यु ते ता निग्रथ जाणिवु, ते निग्रथनो अर्थ वाह्य अभ्यतर परिग्रहरहित ते निग्रथ जाणवु। अनइ वकुस ते कुकुसा माय, केवलीना चारित्र जोता स्नातक निग्रथ जोता जाणवो । अनइ सार भास परिग्रहा छइ ते तउ जाणु छउ ।' पुनः कहि जे-'महानुभाव छइ, पाचमु आरउ छइ। पुनः साह भाह-उपदेशमालाया-

> 'सघयणकालवलदूसमारआलवणाइ घित्तूण ।
> सव्व च्चिय नियमधुर निरुज्जमाओ पमुच्चति ॥ २०

> कालस्स य परिहाणी सजमजोग्गाइ नत्थि खेत्ताइ ।
> जयणाए वट्टियव्वं न हु जयणा भजए अग ॥ २१

> समिई-कसाय-गारव-इंदिय-मय-बभचेर-गुत्तीसु ।
> सज्झाय-विणय-तव-सत्तिओ अइयजयणा सुविहियाण ॥ २२

श्रीउपदेशमालानी २९३ मी आदि देई सर्व गाथा छइ, एणइ मेलि काल पडतइ पण जयणानु अग न माजवु, ते पाच सुम(समि)ति पालवी १, चार कषाय टालवा २, त्रण्णि गारव मुकवा ३, पाच इद्री दमवा ४, आठ मद छाडवा ५, नव वाडि सील पालवु ६, विनय करवु ७, सज्झाय करवी ८, तप करवु ९–इत्यादि जयणाना अग छइ, गाथा सघली छइ, ४२ दोष माहिल्यु दोष लगाडइ ते पासत्थु इत्यादि–उपदेशमालामध्ये ३५० मी गाथा जाणवी । ए आदि घणी छइ । ते माटि महानुभाव ! सर्व विचारउ, साधुनइ उठीगण न कल्पइ–ओघनिर्युक्तौ । चोमासा टाली पाटि पाटला न कल्पइ–ज्ञाता आवश्यके च । नित्य विगय ले ते पापी श्रमण–उत्तराध्ययने । मृत्तिकानु पण पात्र मुनि राषइ–श्रीठाणागे । श्रावकनइ कल्प समलावइ छइ ते आचरणा पण–निसीथसूत्रे निषेध । गांटि हींडता वार्ता करइ ते पासत्थो श्रावक टाली वजइ । कुलि पणि आहार लेवु, वर्द्धकि नापित–आचारागादौ । साधु पीटणीइ न रहइ–आचारागे । हाथ पग न धूइ–दशवैकालिके । इत्यादि घणा बोल पिंडनिर्युक्ति, तथा पिंडविशुद्धि नइ विषइ पणि छइ ते मीछयो ।

पछइ चैत्यवासी निराकरण थया । सा श्रीरूइआनइ मसादि आणद थयु । तिहाथी सघ थिरादि आव्यो । तिहा समस्त सघ[वत्स]ल १७ थया । ६० मण खाडनी ष(ज)लेवी पषती । तिहा दिन ३० श्रीसघ रह्यु । पछइ राधनपुरि । तत्र पण सघवत्सल । तत्रथी पाटणि सघवत्सल । इम सघलइ यात्रा करी कुशलि सघपति सा श्री प्रमुख सर्व घरि आव्यु । तदनतरि सा श्री सवत १६६७ स्वमतीर्थे चतुर्मासक पधार्या । तत्र शरीरे बाधा जाता । सा श्रीजिणदासनइ पट्टस्थापन । सा श्रीअनशन[पूर्वक] शुभध्यानेन दिव गत. । तत्र साहमीइ घणा उच्छव सूकडि प्रमुख देहसस्कार कीधु, दिने दिने सा श्रीरूइआनो समवाय दीपतो वर्त्तइ । सा श्रीरत्नपाल दश १० वर्ष गृहस्थ०, २१ वर्ष सामान्य सवरी, ५ वर्ष पट्टोधरत्व, सर्वायु' षट्चत्वारिंशदिति ४६ ।

तत्पट्टे सा श्रीजिणदास स्थिरपत्रे(द्रे) श्रीश्रीमाली वुहरा जेसग, भार्या बाई जिमणादे पुत्र जिणदास । सा नरपतिनइ वचनि सवरी । सवत १६६२ सा श्रीजिणदास राजनगरि चतुर्मासक । तत्र भणसाली देवा सुरत्राणमान्य ते धणीइ प्रतिष्ठानइ महूर्त्ति फागुण वदि १ दिने ते ऊपरि जागि जागि श्रीसघनइ कुकोत्री लिपी मोकली । सघ सघला गामथी आव्या, घणा उच्छव । श्रीरिषभदेवनी प्रतिमा १ पचासी आगुली, एहवी मोटी प्रतिमा हवडा कहीं नथी, ए टाली एक भणसाली देवइ भरावी । प्रतिमा आगुल ५७ भणसाली जीवराजि भरावी । प्रतिमा १ आगुल ५७ नी भणसाली कीकइ भरावी । एव प्रतिमा ३ मोटी । पुन प्रतिमा १ आगुल ३७ नी श्रीशातिनाथनी भणसाली देवइ भरावी । बीजी प्रतिमा घणी पुन प्रमुख स्वजनि भरावी । सघनी समस्त प्रतिमा १५० सा जिणदासेन तदादेशेन च सवरी श्रावकेण प्रतिष्ठिता । अत्र श्रावक प्रतिष्ठानी घणा दिन चर्चा जाता । साप्रत ते प्रतिमा राजनगरि घाचीनी पोलिमध्ये भणसाली देवेन चैत्य कारापित, देवविमान सदृश तत्र भूईहरामध्ये प्रतिमा ३ मोटी बइसइ छइ । प्रतिमा १ श्रीशातिनाथनी ऊपरि मूलनायक बइसइ छइ । पासि सर्व सघनी बइसइ छइ । प्रतिष्ठाना उच्छव वेदी वर्णन प्रमुख सर्व वाच्य सर्वेषा दृष्टमतीत सघेन आगतसघस्य वात्सल्य विहित । भणसाली जीवराजेन भणसाली देवेन वस्त्रप्रभावना कृता । सवत १६६३ सा श्रीपत्तने चतुर्मासक, तत्र परीष लटकणेन निंबप्रवेश करितः । मह लालजीइ निंबप्रवेशो विहितः, तत्र घणा उत्सव । सवत १६६३ सा माहावजीइ 'नर्मदासुदरीनु रास' कीधु । तदनतरि सवत १६६४ सा श्री रायधनपुरे चतुर्मासक, घणा उच्छव । सवत १६६४ राजनगरि भणसाली

पत्तनाणि सपेसरानु सघ कीधु । एहवइ पभाति सा श्रीरत्नपाल शिष्य सा महावजी चतुर्मासक । तत्र सोनी वस्तुपालनी भार्या वाई वैजलदे तिणि प्रतिष्ठा करवानु मन करिउ । सा श्रीनइ आदेशि प्रतिष्ठा कृता । घणा उत्सव सामीवत्सल वस्तु प्रभावना । तत्र दोसी हर्षा, भार्या बाई सहजलदे, सुत सा कल्याण, सा महावजीने वचने सवर १ थया । सवत १६६४ सवरी । सवत १६६५ सा श्रीपभाति चतुर्मासक । तत्र बाई सहजलदे बारव्रत ग्रहण, वस्तु प्रभावना । सा महावजी राजनगरे चतुर्मासक । तत्र भ० देवइ श्रीशातिनाथबिंबप्रवेशनिमित्त तत्र सा श्रीनइ आकारण । शुभेऽह्नि बिंबप्रवेशः कृतः मार्गशीर्षे मासे, घणा उच्छवः । सवत १६६[६] सा श्री राजनगरि सा श्रीवानइ सवरी कीधा । सा महावजी स्थभतीर्थे चतुर्मासक । तत्र सा महावजी दिव गतः । सर्वायुः वर्षत्रयोविंशति २३ ।

सा कल्याण स्थभतीर्थे स्थितः । तत्र बाई हेमाई धर्मनाथ बिंबप्रवेशनिमित्त सा श्रीनइ आकारण । शुभदिने मार्ग[सि]र शुदि ६ दिने बिंबप्रवेशः कृतः । तत्र सघेन सा कल्याणनइ सा श्रीनइ भणावा सोप्या । एहवइ पत्तने परी लटकणेन श्रीशत्रुजयनु मन कीधु । सघ करीनइ स्थभतीर्थे सा श्रीनइ तेडवा द्वो(दो०) सीरग मोकल्या, सघनइ पणि थर्हवा । सा श्री पासि पभाति आव्या । सा श्रीनइ तेडी पाटणि पधार्या । तत्रथी मोटइ मडाणि सघ करी राजनगरि पधार्या । थरादनु सर्व अहमदावादि आवु । साथि भणसाली देवा प्रमुख सर्व यात्राइ आव्या । सा श्रीजिणदास आदि सवरी, सा श्रीजिणदास, सा तेजपाल, सा पेतसी, सा चोथ, सा ऋषभदास, सा कल्याण, सा जीव, सा पुर्णीआ, सा रूडा प्रमुख घणा सवरी श्रीशत्रुजयनी यात्रा करी कुशलि राजनगरि आव्या । तत्र भणसाली देवेन सघवात्सल्य कृत । भण० समरशेन सघवात्सल्य कृत । बीजा सात सघवात्सल्य थरादनइ सघे कीधा । परी लटकणेनापि सघवात्सल्य कृत । एव प्रकारेण उत्सवेन कुशलेन पत्तन प्राप्त । तत्र सा श्री चतुर्मासक । सा तेजपाल कल्याणने राधनपुरि चतुर्मासक । सा श्री पाटणथी राधनपुरि पधार्या, बु० सोमसीनइ आग्रहि स्थिरपुरि पधार्या । सा तेजपाल, सा कल्याण, सा जीवा साथि तत्र दिन ४५ रह्या । तत्र ' वरणाग पत्तुआनी सज्झाय ' सा तेजपालेन कृता । तत्रथी वाचि सोहिगामि, मोरवाडि, महिमदावादि विचिरी राजनगरि पधार्या । श्रीसवत १६६७ पभाति चतुर्मासक । सवत १६६७ सा तेजपाल राजनगरि चतुर्मासक । तत्र सा तेजापालेन दशपदी कृता, पात्रटिकापचदशी इत्यादि १० बोल्ना विचार । सा श्री सवत १६६८ राजनगरि, सा तेजपाल पभाति । सवत १६६९ सा श्रीशरीरि बाधा ठवी पभाति । सा तेजपाल राजनगरि । सवत १६७० सा श्री राजनगरि चतुर्मासक । सा श्रीनइ आदेसि सा तेजपाल कल्याणनइ थरादना सघनइ आग्रहि थराद चतुर्मासक । सा श्रीइ सा विजयचदनइ सवरी कीधा । सवत १६७० वर्षे सा श्रीनइ देहि रक्तपित्त पीडा व्यापना । सा श्रीइ समस्तसघ तेडावी उत्सवसहित नगरमध्ये भणसाली देवानइ चैत्य आवी, देव जुहारी, उपाश्रय पधार्या । सा श्रीतेजपालनइ पदस्थापना(नं) कथित । सा श्री शुभध्यानि अनशनपूर्वक दिव गतः । सा श्रीजिणदास वर्ष १७ गृहस्थपर्याय, वर्ष ३३ सामान्य सवरीपर्याय, वर्ष ९ पटोधरत्व, सर्वायुरेकोनषष्टि ५९ वर्षाणि ।

तत्पट्टे सा श्रीतेजपाल स्थभतीर्थे । सो० वी(व)स्तुपाल, भार्या बाई कीकी, सुत सा तेजपाल सा जिणदासने वचने सवरी, प्रभावीक, अतीव विद्यावान्, येन भट्ट पुष्करमिष्ट(श्र)पार्श्वे सधादरेण चिंतामणिशास्त्रमधीत प्रतिदिन सुवर्णदानेनेति । सा श्रीतेजपाले स्थिरपने(द्रे) स्थितवति अतीव उत्सवः घणे मनीसि(नुष्ये) व्रत पचखाण कीधा । थरादमध्ये मोदी हसराजनी माता बाई जीवा, एकदा पुन साथि प्रेमकलह ऊपनइ कूपपतन करवा गया ।

वज्रचित्तां(ता) गुणखनीं कृष्णा दुष्करकारिकाम् ।
दीपिकां कटुवंशस्य वन्दे ता जगदुत्तमाम् ॥ २३

सा श्री प्रमुख सवरी नींझामतइ चित्त ठामि रापतइ श्रावण वदि १२ दिने दिन ६५ नु अनशन पाली शुभध्यानेन दिव गता । श्रीसंघि घणइ उच्छवि माडवीनइ मडाणि देहसंस्कार कीधु कान्हजाईनइ । संसारनु सर्व घरनइ विपइ आव्यु । सा श्री संवत १६७३ सा श्री राजनगरि चतुर्मासक । तत्र भणसाली देवइ द्वादश व्रतग्रहण साथि १५ मनुष्यइ बारव्रतग्रहण । तेहना नाम-परी वीरदास, भ० सतोषी, मा शवजी, सा हीरजी, सा देवजी, प० देवजी, सा पनीआ, दु० गणपति प्रमुख तेहनइ सुवर्णवेढनी प्रभावना । अन्यैः मुद्रिका प्रभावना कृता । सा कल्याणनइ संवत १६७३ पभाति चतुर्मासक । तत्र बाई हेमाईइ प्रतिष्ठा करवानी इच्छा कीधी । ते वती सा श्रीनइ तेडाव्या । तउ सा श्रीइ फाल्गुन मास शुदि ११ महूर्त्त लीधु । जलयात्रा प्रमुख उत्सव, संघवात्सल्य, सा श्री तेजपालेन प्रतिष्ठा कृता विमलनाथनी । बाई हेमाईइ संघस्य वस्त्रप्रभावना । संवत १६७४ सा श्री पुनः भ० देवानइ आग्रहि राजनगरि चतुर्मासक । सा कल्याणनइ पत्तने चतुर्मासक मुक्या । संवत १६७५ चैत्र सुदि पुन (नम) भणसाली देवइ श्रीआबू, ईडर, तारगानु संघ कीधु । सघळइ कंकोतरी मोकली । पभातिथी स० अमीपाल, सो० हरजी, सा० सोनपाल, स० भीमजी, सो० नाकर, सा सोमचंद प्रमुख सव आव्यो । सोझीत्राथी दु० राळा प्रमुख आव्या । परगछी पणि घणा आव्या । अहमदावादी पण सामी सर्व भ० मूलीआ, सा देवजी, सा लटकण, सा वस्तुपाल, प० वीरदास, सा हीरजी प्रमुख यात्रा आव्या । भणसाली देवा मोटइ मडाणि साचर्या, दृष्टप्रत्यय । साथि हस्ती, अश्व घणा सहित पालखी प्रमुख घणी सामग्री साथि पोताना स्वजन भणसाली देवा, भार्या देवल्दे, तत्पुत्र भ० रूपजी, भ० पोमजी, तत्पुत्र भ० लालजी, भ० देवानी, भगिनी बाई रूपाई, वेटी राजबाई, सोनाई, भ्राता भण० कीका, भ्रातृज भ० विजयराज, तथा भणसाली जीवराजना पुत्र भ० सूरजी, भार्या बाई सजाणदे, तेहना पुत्र भ० समरथ, भ० अमरशव, भाई नेहू साथि प्रेम, भ्राता भ० पचायर्ण प्रमुख घणइ परिवारि यात्रा पधार्या । अश्व, रथ प्रमुख घणो समुदाय वी[जा] परगच्छी घणा । प्रथम श्री संपेसरनी यात्रा । तिहाथी पाटणि पधार्या । पाटणनु संघ सन्मुखागमन । तत्र तत्र संघइ देव जुहार्या । परी० लटकणेन समस्तसंघवात्सल्य कृत । परगच्छी सो० रामजीइ पण संघवात्सल्य कृत । तत्र सिद्धपुरना देव जुहार्या । तत्रथी मजलि मजलि देव जुहारतो श्रीआबूइ पधार्या, अचलगढना देव जुहारी देलवाडि गया । तत्र सतरभेदपूजा घणी थई, घणा उत्सव, घणा दिन तत्र रही अचलगढि पुन: सप्तदशभेदपूजा । तत्रथी श्रीआरासणनी यात्राइ पधार्या । तत्रथी ईडर प्रमुखनी यात्रा । तारगइ पधार्या । तत्रथी सर्व वडनगर आव्यु, देव जुहार्या, भण० देवइ संघवात्सल्य कृत, नागरज्ञातीय विप्र जुहुरा जीवाकेन संघवात्सल्य कृत वस्त्रार्प्पण । भण० कीकइ, भण० समरथवि मुद्रिका २ प्रभावना समस्तसंघनइ कृता । राधनपुरी मह वीरजी, शवजी, पभाती बाई हेमाईइ पण प्रभावना कृता, घणा हर्ष पुहुता । एव प्रकारि यात्रा करी पटणी राधनपुरी संघनइ सीप देई, कुशलि राजनगरि पधार्या । सा श्री आदि सवरी । तत्र भणसाली देवानइ आग्रहि संवत १६७५ सा श्री तत्र चतुर्मासक । सा कल्याणनइ पभाति चतुर्मासक मेहल्या । एहवा थरादि दो० धीगानी भार्या दोसी देवसी डुगरसीनी माता बाई वाल्हाइ अनशन । घणा उच्छव । सा पेथसी, सा चोथा, सा रिषभदास प्रमुख सवरीइ निंझामतइ, चित्त ठामि रापतइ, उपवास ५७ मइ दिव गता । अथ सा श्रीतेजपालेन सज्ज्ञ(शत)प्रश्नी प्रमुख घणा ग्रन्था कीधा ।

अथ राजनगरमध्ये भणसाली पंचायण शत्रुंजयनु संघ छयरी पालतइ काढ्यो, चैत्रादि संवत १६७५ वर्षे कार्तिग वदि १३ दिने यात्राइ पधार्या । घणा उच्छव सहित भणसाली प्रमुख साथि [या]त्राइ पधार्या । भ०कीका, भ०मूलीआ, भ०समरशघ, भ०रूपजी, भ०अमरसघ, भ०पीमजी प्रमुख छयरी पालतइ पधार्या । साथि हस्ती, अश्व, रथ, पाल्खी प्रमुख घणी रिद्धि सहित पाटणथी राधनपुरथी केतलु संघ आव्यो । पभातिथी सो०सहिजपाल, प्रमुख सर्व वारणि आव्या । परगच्छी बीजा पण घणा आव्या । भण०पचायण छयरी पालदि, वाटिं अनेक उच्छव थातइ, आठमि पाखी एक स्थानकि रहइतइ, सचित्तत्याग करतइ, उभयकाल आवश्यक करतइ, त्रिकाल देवपूजा समाचरतइ, सर्व विधि भणसाली देवानी छयरीनी परि जाणवी । भण०समरशघ, भ०अमरशघ, माता बाई सजाणदे, अनेक प्रकारि लाहो लेतइ, सा श्रीतेजपाल प्रमुख सवरी व्याख्यान करतइ, श्रीशत्रुंजय पधार्या । तत्र आदीश्वरप्रमुख सघलइ देव जुहार्या । सतरभेदपूजा, स्नात्र, उच्छव पण घणा कीधा । पालीताणइ भणसाली देवाकेन सघवात्सल्य कृत । पचाइणि सघवात्सल्य कृत । भ०समरशघि मुद्रिकालह(हा)ण कीधु । तत्र दिन ८ रही संघ गोघइ पधार्या । तत्र सघलइ देव जुहार्या । तत्रथी मजलि मजल श्रीसघ पभाति पधार्या । तत्र साहमी सर्व सन्मुखागमन । घणइ उच्छवे चैत्यवंदन कीधा । घणी प्रभावना जाता । तत्र कडूआमती थरादना पभातिवासि मह धनापुत्र, म० नानजीइ समस्तसघवात्सल्य कृत । स्वमतीर्थीय सघि स्वकीय सघनइ वस्त्रप्रभावना । तत्रथी संघ कुशलि सघलइ यात्रा करी राजनगरि आव्यो । तत्र भणसाली देवानइ शरीरि बाधा जाता, सा श्री पार्श्वे तुर्यव्रत ग्रहण कीधु, शरीरे सुख जात । भ०देवइ अहमदाबाद मध्ये ज्ञुकारबद्ध सर्व गछि जामी १, मोदक १, लह(हा)ण कीधी । पोताना गच्छमध्ये साहमी सर्वनइ गदीआणा पचना सुवर्णना वेलीआ आप्या । बीजइ सघलइ गामि सामीनइ जामी १, मोदक १, अनइ व्रतधारीनइ सुवर्णना वेलीआ आप्या । घणु मोटी प्रभावना की[धी] । भ०देवइ घणी धर्मपद्धति चालती कीधी । तदनतरि भ०कीका दिव गत । संवत १६७६ वर्षे भ०देवा अनशनपूर्वक सा श्री नीश्रामतइ दिव गतः ।

संवत १६७६ सा श्री पभाति चतुर्मासक । सा कल्याणनइ राजनगरि चतुर्मासक । तत्र दीपोत्सवादि संवत १६७७ वर्षे फागुण शुदि ११ दिने हजतपुरमध्ये अभिनंदनचैत्य । तत्र १७ प्रतिमा, १७ भ०पचाइणि वर्ष १ प्रति रुपैआ २५ आपी पूजाती कीधी । तत्र बिंबप्रवेश उच्छव बुण्डाहा थरादना केन कृत० । तत्र सा कल्याणेन अभिनंदनस्तवन कृत—"प्रभु प्रणमु रे०" इत्यादि । स्वमतीर्थि सा तेजपालेन बीरना पाच स्तवन—'भगवती साधुवदना' रचा । थरादमध्ये वुहरा माना राइशत्रि गुडीनु संघ कीधु । घणा उच्छव थया । पुनः सा श्रीनइ राजनगरि सघि तेडाव्या, घणा धर्मकाज । संवत १६७७ सा तेजपाल कल्याण एकठा चतुर्मासक । तत्र एक दिन सा श्री सार्थि धडल पधार्या, सा कल्याणयुक्त । तत्र लुपकना बे वेषधर मल्या, ते सार्थि वार्त्ता करता, परतरना बे वेषधर आव्या । तेणि सा श्री प्रति कहिउ—'जे धर्मसागरि कह्यु ते मल्यु, जे देव गुरु अरि ।' त्यारइ सा श्री कहइ—'अम्हारा तो पाच सात हमिइ, पण तुम्हारी भक्ति घणी कीधी छइ ।' त्यारइ कहइ—'ते कहो ।' वलतु सा श्री कहइ—'स्पर्द्धा थाइ ना मरासो ।' त्यारइ सा श्री कहइ—'साभलु, प्रवचनपरीक्षाया—

'सव्वेहि पक्खिएहिं गच्छतो ग्वरयरो महावेण ।
जिब्भादोसद्गुणेण भामण-भामण-सरूवेण ॥ ७८ ॥'

'जम्बूदीवेणं भंते दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए कइ तित्थ[य]रा पन्नत्ता ?' गोयमा ! चउवीस तित्थकरा प० त०–उसभ-अजित संभव अभिनंदण-सुमति-सु-(पउम)प्पभ-सुपास ससि पुप्फदंत-सीतल-सेज्जंस वासुपुज्ज विमल-अनंत धम्म-संति-कुंथु-अर-मल्लि-मुणिसुव्वय-णमि-णेमि-पास-वद्धमाण २४ हवइ ।

'जुओ अही वंदना शब्द किहां ? पुनः समवायांगे–

'जंबुद्दीवेणं दीवे भारहे वासे उस्सप्पिणीए चउवीस तित्थयरा होत्था तं उसभ-अजित--जाव वद्धमाण इत्यादि ।'

'अत्र पण वंदना किहां ? महापद्म अधिकारे–होवसई नेहसि तेहनइ अनइ हवा तेहना होत्था ते वती कांई बाधा नही ।' ते पाठ देषी अणबोल्या रह्या, शुं करइ ?, प्रगट पाठ देषइ, सा कल्याण कहइ–'मनुस्यना एक बोल हुइ, ते वती आगलि चउवीसी ना वादउ, पण मत कदाग्रही आकरा ।' पछइ कहि ये–'अह्मारइ गुरि लिषी हती, सम्मति ते कांई हसिइ ।' वल्तु सा कल्याण कहइ–'सांभलो, प्रथम तुमारा गुरनइ ए समत्ति(म्मति) ल्पवी नावइ जे ग्रंथ मानीइ तेहनी ल्पवी, अनइ ल्पी ते पण गाथा फेर ल्पी, पनरमी गाथानी वृत्ति जोयो । इम ल्पुं तो किम लाभइ पण चउदमी गाथा चउसरणनी तिहां तुमनइ ऊपजइ छइ, पण अह्मनइ ते अर्थ अंगीकरता कांई नथी अडतु, अह्मे पण इम ज सद्दहीइ छइ तेहनो पाठ सांभलो, यत –

'रायसिरिमवकमित्ता तव-चरणं दुच्चरणचरित्ता ।
केवलसिरिमरिहंता अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १४ ॥ ३०

वृत्तौ बीजुं अर्थ कीधुं छइ ते मध्ये–

'यद्यपि शक्रादीनां सर्वास्वप्यवस्थासु जिना नमस्कारार्हास्तथापि गृहवासस्था' साधूनां न नमस्कारार्हा , अविरतत्वादिति दर्शितं, यच्च अनागतजिनास्साधुभिर्नमः क्रियन्ते तेऽपि चात्रावस्थासु एवेति भाव ।'

'तुह्मारइ संतुष्ट थाइ ते तो ए पण ए मध्ये तो जिम अह्म कहीइ छइ ते जीत्र छइ, जे इंद्रि गर्भमाथि नमोत्थु णं कीरेउ ते पण इम ज कह्यु जे 'नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स' तो जुओ इंद्रि गर्भमा छता केई अवस्था लेई वांद्या ?। द्रव्य अरिहंत, छता भाव लेइ वांद्या। भरति पण भाव लेइ वांद्या, अह्मे पण इम ज वादीइ छइ ते वती तुह्मनइ कहीइ छइ ए गाथाना अर्थ मध्ये तु विशेष इंद्रनइ वादवाना शब्द आव्या जे राजिमा वइठा हु तिहां इंद्र आवइ तु पण वादइ । अनइ साधु परतक्ष न वादइ पण भाव अवस्था लेइ आवती चउवीसीनइ द्रव्य जिन नइ वादइ ते वती कदाग्रह मुकी श्रीकल्पसूत्र प्रमाण करी द्रव्य तीर्थंकरनइ भाव अवस्था लेई वादता दूषण नहीं । पछइ सघवी कचरु झांपा थया, मरड करवा लागा, मरड करइ ज जे श्रीसिद्धांति छती मतमा उथापइ तेहनइ ए वातनु सिउ पूछवु । मनमा वीहीं की जो द्रव्य जिन आराध्य कहीसिइ, तो थापनाजिन मानवा पडसिइ । पछइ ते ल्प्या पाछा लेवानइ घणा वाना कीधा, पण लेइ सक्या नही । ते वार्त्ता घणी छइ ते धणीना ल्प्या हाथ पोथीमा छइ, अष्टम पट्टालंकार सा श्रीतेजपालनइ प्रसादि, बोल ऊपरि आव्यो इति ।

संवत १६७९ थरादमध्ये तपाना घर १७ छइ, अनइ कडवामतीना ७०० छइ, तत्र कडूआमतीनइ देहरइ तपा देव पूजवा आवइ, त्यारइ घरथी धोतीआ करी देव पूजइ, पछइ गीत गान सांभल्याना मन हुइ तो पाघडी उतारी रंगमंडपि वइसी सांभलइ, पाघडि बांध्यानु मन हुइ तो हेठा वइसइ, ए रीति सदा छइ। एहवइ गांधी हरजीना भत्रीज गांधी लालजी पाघडी बांधी रंगमंडपि बइठा, पछइ कडूआमती साथि वार्या, जे तुम्हे सदाइनी रीति म लोपु, पण वार्या न रह्या। पछइ नान्हइ साथि बोलाचालु कीधु। ते वार्त्ता ऊपरि गांधी हरजीइ तपाना साथनइ राधनपुरि लख्यु जे–'अत्र कडूआमती घणा छइ अह्मारी सार करयो, नहीतरि अह्मे पणि तपा फीटी कडूआमती थईसिउ।' ते कागल संवत १६७९ ना भाद्रवा सुदि २ त्रेलाधरनइ दिहाडइ आव्यु। कागल वाच्यु पछइ पुन्यास कहि–'धर्मनइ काजि चक्रवर्त्तिनु दल चूरीइ तो पुण पाप नही, सी विमासण करो छो?' पछइ तपानु साथ, राधनपुरना कडूआमतीनु साथ, तपानु उपाश्रय पाडवा आव्यो। माहि केतला पोसायत छइ, तिणि वार्त्ता जाणी पणि चित्त ठामि राषी वइसी रह्या, पेलइ आवी छापरु पाडयु, छापरु पाडता मध्ये एक पडयु धुजवा लागो, पोसात कहि–'बीहि मा अह्मथी तुह्मनइ भय नथी, अह्मारा मा श्रीनु उपदेश नथी जेकु हनइ पण तुमारा गुरनो ए उपदेश छइ।' पछइ मा रत्नना पुत्र मह वीरजी प्रमुख म शामजीइ बीजा मनुष्य लावी तपाना साथनइ वार्या, छापरु पाडी स्थानकि गया। पछइ राधनपुरइ साथि थरादि लख्यु–'जे अत्र आ पदार्थ थयु छइ।' कागल वाची खेद पाम्या, केतलो कडूआमतीनु साथ तपानु उपाश्रय पाडवा, जावा लागु, ते सा श्री पितसीइ वारी राष्या। दो० रत्नइ सेठ नाथा प्रमुख वार्या जे–'आकुला म थाउ, धर्मनु बोल ऊपरि आवशिइ।' पछइ थरादनु संघ अजमेरि सुरताण शाह शलीम भणी चाल्यो। राधनपुरी तण्या सेठ नालो पण पातशाह भणी चाल्यो। एहवीइ राजनगरिथी भणसाली देवाना पुत्र भ० पीमजी अनइ तपानु शांतिदास पण पातशाह कनइ जाइ छइ। सर्व अजमेरि एकठ मिल्यु। थरादनु संघ भणसाली पीमजीनइ मलवा गयु। भण० पीमजी कहइ–'जे द्रव्यनु काम होइ ते मुझनइ कहियो, पण जिम सा श्रीकडूआना समवायनो बोल उपरि आवइ तिम क[र]यो।' पछइ संघ कहि–'ये पूज्य संघ वडरागार छइ, तिहा घणो मामलु थयु, मोदी हसराजि बाई जइवानइ पुनि सेठ वालानइ हइडिमा घलाव्यु। पछइ त्रणी सुर पात्र(त)शा कन्हइ जाता संघवी चदूइ तपइ मी(नी)नति करी घरि तेडी आवी, संघनइ य(ज)माडी, तपाना साथ पाइं अपासरो करावी आपवो कबूलावी, अनइ रूपैआ १० केसरना, देहरइ डड आपवा एवा लख्या करी, सर्व पाछु वाल्यु। सघलइ गामि कडूआमतीनु यश थयु। सर्व कुशलि थरादि आव्यु।

पछइ राधनपुरी तपा राधनपुरि आवी पा(ल)टी(ल्टी) गया, जे आपण ठामो ठाम छइ। कडूआमतीनु शो आशरो आपण एहनु उपाश्रय नही करावी आपीइ। घणा दिवस केल्सि रह्यो। पछइ राधिनपुरी तपइ जत कीधु जे कडूआमतीनइ को य(ज)माडइ नही। पछइ राधनपुरी बीजा सघला गच्छवासी कडूआमतीनी भेरि थया। दाढी घणा झगडा चालइ। तपा घणा तु हि कडूआमती साथि न चालइ। पछइ अहमदावादि जत करवा आव्या, पण भणसाली रूपजी, भण० समरशनी(नी) लाजि कुणि जत न कीधु। भूठा पडी पाछा गया। पछइ थरादरी मध्ये मोरवाडि, सोढीगामि, वाव्रि प्रमुख सघलइ गामि कडूआमतीनइ तपानइ झगडा चालइ, पण कडूआमतीनु सघलइ यश ज।

संवत १६८० पछइ थरादनु संघ दो० रत्ना सेठि नाथा प्रमुख राधनपुरी म० वीरजी, परीष मला प्रमुख सर्व अहम्मदावादि आव्यु। तिहा आजमषाननइ मिली मोदी हसराज, मोदी रघूजा, राधनपुरी तपानइ तेडवा गया,

तेणि सामल्यु ते पुण नीकल्या जाण्यु, झाली जासिइ, ते माटिं साहमा नीकल्या वीरमगाममध्ये मल्या । तत्र मोदी हसराजि घणा कोड पुहुचाड्या, पछइ दीं ते सर्वनइ तेडी राजनगरि आव्या । तेतलइ आजमपान मृत्यु पाम्या । पछइ श्रीसंघि विचार्युं जे हवइ सु करवु? । पछइ परठ कीधु सुरत्राण कन्हइ जावानु । ते वात तपइ शांतिदासि जाणी विचार्युं जे थरादना तत्र जाइ मुझनइ पुणि तेडावइ, ते माटिं आगल्यथी चेतु, राधनपुरी तपा कनइ आवी कहि जे-' कइआमती सुरत्राण पासि जासिइ, ते माटिं तुमार बोल ऊपरि तो करु जो सागर मध्ये मतु करो । ' ते वाजि आव्या मतु कीधु । पछइ मतु करावी भ० रूपजी पासि आव्यु कहि जे-' काइ वस्तु मागु छु । ' भण० कहि-' शु? ' वरतु कहि जे-' थरादना नइ [रा]धनपुरीनइ मेल करी आपो । '-भणसाली कहै जे-' अम्हारइ मेल ज छइ ' अम्हारइ उपाश्रय करावी आपि डड परठ्यो प(छ)इ ते आपि । ' भणसालीनइ पछइ तेडाई दलपुरि जई थरादना सघनइ तेडी सर्वे वाचा शांतिदासि कबूली । सेठनइ वस्त्र, वाकीनइ श्रीफल आपी मेल कीधु । सा श्रीकइआना सघनो बोल ऊपरि आव्यो, धर्मजय । पछइ थरादनइ संघि राधनपुरिइ संघि सात दिन लगइ घर उपरी जिमणवार राजनगरनइ साह्मी(हम्मी)वात्सल्य कृत । अहमदावादी संघि राधनपु[र अनइ थ ?]रादना सघनइ घणा साहमी वत्स[ल] कीधा । भ० रूपजी, भ० समरसंघि, साहमीनइ वस्त्रप्रभावना कृता । इम अनेक उच्छव थया । सर्व कुशलि स्थानकि आव्यु । शांतिदासनइ माणसि आवी उपाश्रय कइआमतीनु कराव्यु, डड आप्यो, आणद वर्त्तिउ । पण राधनपुरी तपा तपा मध्ये नामा घात्या सागरस्मा(मा) मता कीधा, ते वती कलेस थयु, उपाश्रयमध्ये भीति प्रमुख प्रसिद्ध छइ इति ।

सा श्रीतेजपाल संवत १६८० स्थभतीर्थि चतुर्मासक । सा कल्याणनइ पत्तनि मुक्या । स्थभतीर्थे सा श्रीइ स्नात्रविधि नवीना कृता श्रीशांतिनाथनी । तत्र पभातिमध्ये सो० सहिजपालनी पुत्री वाई जीवाईइ सा श्रीनइ पासि प्रतिष्ठा कीधीना फल जाणी भाव कीधु । फागुण मासे महूर्त्त । सत्रलइ गामि कंकोतरी । सवरी आकारण घणा उच्छव फागुण शुदि ११ दिने जल्यात्रा प्रमुख घणी सामग्री हर्षे पुहुता । तदनतरि संवत १६८१ सा श्री सवनइ आग्रहि पुन: पभाति चतुर्मासक । संवत १६८१ चैत्रमासे थरादमध्ये वु० जसा वु०जीवाए धणीइ गुडीनु संघ कीधु । घणा उच्छव थया । कुशलि यात्रा करी घरि पधार्या । सा कल्याण राजनगरि चतुर्मासक । तत्र सा श्रीनइ आदेसि सा लटकणना पुत्र सा देवकरणनो बिंब प्रवेश कीधु । पुनः सा रूपजीनु बिंबप्रवेश मार्गशीर्षे कृत. । उत्सवो जात: । संवत १६८२ सा श्री राजनगरे चतुर्मासक । सा कल्याण पत्तने मुक्या । सा विजयचदनइ पभाति मुक्या । अथ राजनगरे सा श्री चतुर्मासकस्थिते भणसाली पचायण प्रमुख मनुस्य पचासि अठाई कीधी, घणी प्रभावना, घणा उच्छव थया । तत्र सा श्रीइ श्रीसमधरस्वामीनो ' शोभातरग[स्तवन] ' कीधु, अतीव सुदर, ढाल्य ४, त्रिचत्वारिंशत् प्रमाण । श्रीअजितनाथस्तुतिस्तत्स्यावचूरि: कृता । भणसाली समरसघि श्रीसपे[स]रानु संघ कीधु । भण० रूपजी, प्रमुख सर्व सार्थि श्रीपार्श्वनाथनी यात्रा करी, सघवात्सल्य करी, कुशलि पधार्या । संवत १६८३ चैत्रादि राजनगरमध्ये भणसाली अपानी पुत्री, सोनी पानीआनी पत्नी, भणसाली देवानी भगिनी वाई रूपाईइ प्रतिष्ठानइ अर्थि सा श्री प्रति वीनती कीधी, जे पूज्य मति प्रतिष्ठानु भाव छइ । सा श्रीइ संवत १६८३ जेठ शुदि ३ दिने महूर्त्त दत्त । सर्वनगरे कंकोतरी प्रेस(प)ण, सवरी आकारण, घणइ उच्छवि हस्तीप्रमुख जल्यात्रागमन, घणी प्रतिमा, रत्नमय सभवनाथनी प्रतिमा । वाईना आगुल ७ नी रत्नमय, वीजी प्रतिमा रत्नमय भणसाली समरसघनी, भ० पचायण, भ० [क]ल्याग, भ० धनजीनी वीजी पीतलमय, पाषाणमय, घणी प्रतिमा-एव प्रतिमा ७५ प्रतिष्ठाणी । तत्र प्रतिमा १ पीतलमय अगुल पाचनी सा श्रीइ भरावी । श्रीपार्श्वनाथनी, ते हवतपुरमध्ये चद्रप्रभुचैत्य धर्मना पासि

करसइ छइ, तथा प्रतिमा १, पाषाणमय अंगुल १७ नी श्रीविमलनाथनी सा कल्याणि भरावी, ते श्री अभिनंदन-चैत्य झारता डावा हाथनइ गभारइ मूलनायक समोसरण माडइ त्यारइ पण मूलनायक इत्यादि प्रतिष्ठाना घणा उच्छया वल्लभभावना। संवत १६८३ सा श्री पाटणि चतुर्मासक। सा कल्याणनइ स्थभतीर्थि, सा विजयचद्रनइ राजनगरि। तत्र फेर बीधी अभिनंदनचैत्य जात संघेन कारापित। तत्र सा श्रीइ बिंबप्रवेश वैशाषमासे कृतः। द्वुरा पदाकेन कारापितः। अथ संवत १६८४ सा श्री पभाति चतुर्मास, सा कल्याणनइ राजनगरि चतुर्मासक, सा विजयनइ राधनपुरि। राजनगरमध्ये सा श्रीनइ आदेसि सा कल्याणेन भ० पचायणनो रत्नमय श्रीपार्श्वनाथनी प्रतिमानु बिंबप्रवेश कृतः। घणा उच्छव थया। अथ भणसाली देवाना पुत्र भ० रूपजीइ अहमदावादि सामी सामिणिने माटीने थेपाड, पछेडी, चरवली दातनो, प(?) नुकरवाली, पोसानु वेप आप्यो, बाईनइ साडलु, दातनु चरवलो, नोकरवाली आपी, नवर चरवला सीपना, बीजइ गामि। ते वर्षनी संवच्छरी भण० रूपजीइ जिमाडी। सपरुइ गामि लपिया ये अह्मारी वती जिमाड्यौ। अनया रीत्या सा श्रीकडूआनो समवाय दीपतो छइ, सदा एहवो दीपयो। भणसाली पीमजी आगरड सुरत्राण पार्श्वेऽस्ति, सा श्रीइ 'नीरतरग' संस्कृत कीधु। 'जि[न]तरग' पणि कीधो। मझमड ग्रंथ हजार १० कीधु। भ० रूपजीइ श्रीसपेसरानु सघ कीधु, घणा उच्छव। अथ सा कल्याणेन 'धन्यविलास' कीधु, ढाल ४३ प्रमाण, तथा 'युगप्रधानपट्टावलीटीका' कृता, संस्कृतमयी, तथा 'युगप्रधान-वदना' प्रमुख घणा ठाम कीधा, एव विधि सा श्रीकडूआनो समवाय दीपतो वर्त्तइ छइ।

॥ इति कडूआमतीना गच्छनी पट्टावली ॥

अष्टमपट्टे विराजमान साश्रीतेजपालप्रसादात् कल्याणेन संवत १६८५ पोस शुदि १५ पुष्फ(ष्य)नक्षत्रे कृता ॥

वर्षि दक्षिण दिशि कर्णाटक देशी दिगंबर नामि सर्वे विसंवादी सातमें बोलनी परूपणा थापि, आठमो ए निन्हव हूओ।

पुनः श्रीवीरनीर्वाण पछी छ सत नें त्रीसें वर्षे श्रीगिरिनारें सा जावडें उद्धार कीधो।

१८ तत्पट्टे श्रीचंद्रसूरि–

तेहनो सद्धहडगोत्र:, श्रीवज्रसेनें चंद्रशाषानो उदय जाणी च्यार गुरुभ्राता मध्यें श्रीचंद्रसूरीनिं पाट थापना कीधी। अन्य त्रण गुरुभाई शालाइ रह्या घणा गौत्र मतिरोप्या। 'श्रीचंद्रगछ' एतु त्रीजु नाम कहिवाणु।

पुन. विक्र० संव० ३७७ वर्षे निर्वृतिकुलिराज चैत्रगच्छीय आ० श्रीधनेश्वरसूरी। सवा लाख ग्रंथ श्रीसिद्धाचल महातीर्थनो महिमा हूतो। ति वारे वल्लभीनगरें श्रीशिलादित्य राजाइ अल्पायु अनि विकल्प घणा जाणि ते पूर्वग्रंथ सवालक्ष हूतो ते माहि थकी सार सार संबंध दश हजारनइ संख्याइ उद्धरीनें 'श्रीसिद्धाचलमहात्म' कीधो।

हवि ब्रह्मद्वीपीका शाषानी उत्पति कहइ छइ–आहिर देशी अचलपुर नगरें परिसरें कृष्णा अनि वेना एहवे नामइ बिहु नदीनी वीचली ब्रह्म नामी द्वीप छें। तिहा च्यारसें अने निवाणु तापसनि परिवारि देवशर्म्मा नामि कुलपति रहे छे। ते मुख्य देवशर्म्मा आपणो महिमा वधारवा सर्वे तापसनें बिहु पगने विषि उपधी लेप करी संक्रातिना पर्वना पारणानि दिने बेना नदीना जल उपरी हिंडी अचलपुरे आवें। ते चमत्कार देषी मीथ्यात्वी गृहस्थ भोजन देइ प्रसंसा करे। तपस्वी[नी] महातपसक्ति चमत्कारि छे। जैननी नींदा करी श्राद्धने कहें–'तुम्हारा जैनमाहि कोइ एहवा प्रभावक नथि।' एहवे तिहा विहार करता श्रीवज्रस्वामीना मामा श्रीआर्यसमितिसूरी आव्या। तिवारें जैन गृहस्थे तापसनो सर्व संबंध कह्यो। ते गृहस्थवचन सांभली गुरु विचारी जे कोइक ओषधीना जोगथी कपट छइ पिण तपशक्ति नहि। गुरें श्रावकने तेडी कह्या–'ए तापसनें रुडि परि त्रि पग धोइ जीमाडज्यो।' गृहस्थे तिम ज कीधु। 'अमारो हर्ष छइ' इम कही बलात्कारि देवशर्म्मा तापसें ना ना कहिता वि पग घणि प्राक्रमि करी धोया। भोजन देइ बोलववा लोकवृंद साथइ हूया। पादलेप औषधी धोया थकी नदीमा अर्द्ध विचालइ बूडवा लागो। ति वारे लोके कपट कही निभ्रच्छीओ। मुष झापो हूओ। तेहवइ तेहनी प्रतिबोधवानें श्रीआर्य समितिसुरी तिहा नदीतटि आवी सकल लोकवृंद देषता, चिपटी देई गुरु कहें–'हे वेन्ने! अम्हे पेलइ पार जात्रा वाछु छु।' तेतलें नदीना बिहू कुल एकठा मिल्या। सकल लोकमनि विस्मय हूओ। ति वारि श्रीआर्यसमितिसूरी मनुष्यवृंद सहित तापस स्थानि कनइ जाइनइ धर्म्मोंपदेश देइने ते पाचसि तापस प्रतिबोधी दीक्षा दीधी। ते सघला श्रीआर्यसमितिसूरीना शिष्य हुआ। तेहनी सघाते तेडी श्रीगुरु संघ सहित शालाइ आव्या। श्रीजिनशासनोन्नति हूई। तिहा थकी 'ब्रह्माणगछ' हूओ। श्रीवीर नीर्वाण हूआ पछी छसइ अनि ईग्यार वर्ष गयइ हूति ते तापस साधु थकी 'श्रीब्रह्मद्वीपीका शाषा' केहेवाणी।

एवं पाट पन्नर सुधी श्रीथिरावली सुत्रि करी थविर कह्या, हवे तेहना शिष्य ते आचार्य कहे छइ।

१९ तत्पट्टे श्रीसमंतभद्रसूरि–

श्रीवैराग्यनिधी थका किवारइ वाडीनें विषइ रहइ, किवारइ यक्षनइ देहेरें वासो रहें। किवारइ वननें विषइ

र्हे। इम जावजीव अन्नथी निःस्पृहपणइ सकल सूरी छत्रीस गुणें सपूर्ण देपी लोकें वनवासी एहवु विरुद दीधु। तिहा थकी चोथु नाम 'वनवासीगच्छ' कहिवाणु।

श्रीवीर मुक्ति हूया पछी आठसइ नइ बीयासी वर्षे चैत्यवासी हूआ।

विक्र० स० ४२८ वर्षे श्रीअनगमेन तूअर थकी दील्ली नगरीनी थापना हूइ।

१७. तत्पट्टे श्रीवृद्धदेवसूरी–

श्रीविक्र० स० ५९२ वर्षे श्रीसाचोरपुर नगरें ओईसा नगर थकी आवी चहूआण श्रीनाहडइ श्रीवीरबिंब अढार भार सुवर्णमय समासाद थाप्यो। श्रीवृद्धदेवसूरीइ प्रतिष्ठ्यो।

१८ तत्पट्टे श्रीप्रद्योतनसूरी–

पहवे विक्र० स० ५९५ वर्षे अजयामेरुनगरें श्रीरुषभबिंबप्रतिष्ठा नीपजावी। पुन' सुवर्णगीरीइ दो० धनपतिइ द्विलक्ष द्रव्य सुक्रिति करी यक्षवसती नाम श्रीवीरबिंबप्रासाद सहित प्रतिष्ठा हूइ। एही ज सूरीइ प्रतिष्ठा कीधी।

१९ तत्पट्टे श्रीमानदेवसूरी–

सूरीपदना महिमा थकी पट्विगय त्यागी तेहने भक्तिवत गृहस्थ भक्ति करी आहार आपे तो आहार न लेवो। ते तपना महिमा थकी पद्मा १ जया २ विजया ३ अपराजिता ४–ए च्यार देवी श्रीगुरुनी भक्ति साचवे। अमारि पल्लवइ। श्रीसूरिइ नाडओल्नगरें 'लघुशान्ति' निपजावी तेहनइ समलाववाइ तथा तेहनें जल मत्री छाटवें चतुर्विध सघ थकी महामारि काढि सघ उपद्रव रहित हूओ। श्रीसूरी सघने कुशलकारी हूया। श्रीगुरुनो वृध सिंधदेशीं विहार हूओ।

उच गाजिपान देराउल प्रमुख नगरिं घणा सोढा राजकुमार प्रतिबोधी उपकेश कीधा। एहूनो विस्तार सघर 'प्रभावकचरित्र'मइ बुरें तें जोइ वाचज्यो।

२० तत्पट्टे श्रीमानतुगसूरी–

श्रीसूरीइ अष्टभयगर्भित भयहर कहिता 'नमीऊण' इस्यें नामइ स्तोत्र श्रीपार्श्वनाथनी स्तवनारूपइ श्रीपद्मावतीनी कृपा थकी नीपजावी ते माहि 'विलसतभोगभीसण ०' ए गाथा आठमीनइ कहिवें करी जेणइं श्रीनागराज वशि कीधो। पुनः श्रीसूरीइ श्रीचक्रेश्वरीना साहाज्य थकी वृद्धभोज राजानी सभानें विषें 'श्रीभक्तामर' एहवइ नामइ स्तोत्र प्रगट कीधो। ते भक्तामर स्तोत्रनी उत्पत्ति कहइ छइ। यथा–

मालवदेशी उजेंणी नगरइ राजा भोज वृद्ध छे। ते राज्य करै छै। तिहा मयुर १ अनें वाण २ एहवें नामइं बिहु बाडव महाविद्यापात्र रहई छई। एकदा ते बिहु विद्याविवाद करता राजसभाइ माहोमाहि अहकार धरें–'हु घणो भण्यो, तेह थकी हु अधिक पात्र छु।' इम बेहू मत्सर धरता देपी वृद्धभोज कहें–'रे दक्षो! तुम्हे बेहू कास्मिर देशी जाओ। तिहा सारदा जेहनइ विद्यावत कहइ ते मोटो पडित।' ते बिहू राजानो वचन साभली कास्मिर भणी

ए पिण त्रीजा कालकसूरीश प्रभावक जाणवा।

श्रीवीर निर्वाण थया पछी एक हजार वर्षमाहि एकवीस वर्षे ओछइ, पुन. विक्र० ५४५ वर्षे याकिनीमहत्तरा-सुत श्रीहरिभद्रसूरी प्रगट हूया। तेहनी उत्पत्ति कहै छे–

मगध देसी कुमारीया ग्रामि हारिद्रायण गोत्रैः हारिभद्र नामइ ब्राह्मण व्याकर्ण(करण)प्रमुख खट्शास्त्रनो वेत्ता रहै छे। घणु ब्रह्म कीयाइ करी कुशल छै पिण प्रतिज्ञावंत छै। जे कोई मुन्हे प्रश्न पूछइ तेहनो अर्थ न उपजै तओ हु तेहनो शिष्य थाउ। इम चिंतवी तीर्थयात्राइ निकल्यौ, भृगुक्षेत्रनें पाम्यो। तिहा एकदा स याइ नगरमा बाजारे जाता धर्मशालाइ साधवी प्रतिक्रमण सपूर्ण आवश्यकसूत्रनी गाथा गुणे छइ।

चक्किदुग हरिपणग पणग चक्कीण केसवो चक्की।
केसव चक्की केसव दुचक्की केसी य चक्की य॥ ५५

ए गाथा उभे रही हरीभद्रे साभली, शालाइ आवी कहइ–'भो साधवीजी! तुम्हे कीस्यो आ चिगाचिगायमान शब्द क्यो?।' ते साभली साधवी कहै–'नवु शास्त्र ल्पीइ ति वारे चिग चिग शब्द हूइ।' एहवु साधवी कथक वचन साभळी जे हरीभद्र चिंतवै जे महारी विद्यानो प्रयास निफल हूओ। ए गाथा साधवी कथक तेहनो अर्थ मुझ थकी न उपनो। साधवीनें कहें—'ए गाथानो अर्थ कहो।' साधवी कहै–'नगर बाहिरे वाडी अम्हारा गुरु रहै छे, ते अर्थ कहेस्यें। ति वारे हरिभद्रें वाडीमाहि जाइ गुरु वादि, गाथा पूछी, अर्थ साभली, प्रतिज्ञा सपूर्णि शिष्य हूओ। योग्य गीतार्थ जाणी श्रीगुरें आचार्य पद देइ 'श्रीहरिभद्र' नाम दीधु। श्रीसूरीइ तिहा थकी विहार कीधो। श्रीहरिभद्र भृगुक्षेत्रे मासकल्पि रह्या। तिहा रहिता श्रीहरिभद्रसूरीनें हस १, अनि परमहस २ नामि बिहू शिष्य शिरोमणी शास्त्रना पाठी छे, तिणे गुरू वीनव्या—'अम्हे बौधमतनी विद्यानो उद्यम करवा बौद्ध देसि जासु।' गुरु कहे 'ए नही।' तो ही पीण कपटथकी ते बिहू बौद्धमतनी विद्याना रहस्य लेवा बोद्ध देशी जाइ बौद्धाचार्य पासें बिहू सिष्य विद्या भणता हूया। एकदा पुस्तीकाइ शास्त्रना अक्षरनें विषें बोद्धाचार्यई खटीका दीधी दीठी। चित्ते विचारि जे कोइक जैन छै। ते बेहूनी परीक्षा करवानें निश्रेणीनइ पावडीइ जिनप्रतिमानो स्वरूप खडीनें पड थकी आलेखी, गुरु छात्रनें भणाववानइ मेढीइ बेठा एतलें बौद्धना विद्यार्थि स्वरूप उपरे पग मुकीनें भणवा आव्या। तेहने पाछीले हस १, परमहस २ आव्या। जिनबिंब देषी खडीना खडथकी प्रतिमा उपरइ जनोइनो आकार करी, ते उपर पग थापी, आवी आचार्य पासि भणवा बेठा। आचार्ये जाण्यु जे ए जैन छै। अनि बिहु शिष्ये जाण्यु जे आचार्ये आपणनें जैन जाण्या। मरणना भय थकी पुस्तीका लेइ नभमार्गे विद्यावली पोताना देशि निकल्या। आचार्ये जाण्यु। बौद्ध राजाने कह्यु–'ए जैन मालिम हूआ, आपणा मतनी विद्याना रहस्यनी पुस्तिका लेइ जाइ छे।' साभली राजाइ सैन चडाव्यु। विद्यायुद्ध करता प्रथम हसने हण्यो। बीजा परमहस साथि विद्यावाद करता परमहस लडथडीओ आवतो आवतो श्रीभृगुकछइ शकुनिकाविहारि तिणें बौद्धनी पुस्तिका नाषी। पछी ते बीजा परमहसने पिण हण्यो। तें बौद्ध सेन प्रातकाल हुओ जाणी पोताने देसि वल्यो। हवि प्रभाते गृहस्थ श्रीमुनिसुव्रतनें दर्शनि आव्या। देव प्रदक्षिणाइ गृहस्थनें रजोहरण १ अनि चुपडी २ लाधा। ते श्रीहरीभद्रनें दीधा। गुरे रजोहरण ओळख्यो। बौद्धपुस्तीकानि चुपडी ते माही घटाकर्णनो मत्र वाच्यो। श्रीहरीभद्रे चितव्यु जे मुझ शिष्य बिहू बौद्ध देशी विद्या भणवा गया तेहने बौद्धे केड करी हण्या दीसें छे। विद्याना रहस्य लेइ जाता जाणी हण्या। गुरुनें

क्रोप हुओ। शालाने यत्र कपाट करी, तेलपूरीत कढाइ लोहनी अग्नी चढावी, गूरुदत्त पूर्व आम्नाय करी, जेतले कढाइ राकरी नापइ ति वारे वौद्ध तपस्वी चउदशत भनि चुमालीस मन्त्राकर्पित शकुनीकारूपि कडाहनि प्रदिक्षणा दीये छे। तेहवें जाकिनी नामि साधवी, जेहना मुखथकी गाथा साभली वाडीमा जाइ गुरमुखथकी गाथार्थ साभली सपूर्ण प्रतिज्ञाइ हरिभद्रे व्रत लीधु छै; एतलें इहा याकिनी नामी साधवी ते श्रीहरीभद्रसूरीनें उपकारीणी हुई। ते माटी 'याकिनीसूनु श्रीहरीभद्रसूरी' एहवओ विरुद कहिवाणू। ते श्रीहरीभद्रनी गुरुवहिन याकिनी साधवीइ दवु जोयु, एतलइ शकुनीकारूपें वौद्धाचार्य आवता दीठा। साधवीइ जाण्यु जे क्रोधना फल कडवा छइ। घणा जीवनें असतोप उपनो जाणी आचार्यनि क्रोधनी शातिनइ हेति शिज्जातरी श्राविका साथइ लेई शाला द्वारि उभी रही गुरु प्रति कहै–'एक पचिंद्री जीवनो घात अजाणथकी हुओ तेहनी आलोयण कहो।' तिवारइ शालाइ रह्या गुरु कहे–'पच कल्याणक तप अनि उपवास दश चउविहार कह्या छे। एतले त्रिहू उपवासें एक कल्याणक तप जाणवो। पच कल्याणक तपनी आलोयण तुम्हने आवी।' ते साभली साधवी कहें–'अजाणपणेनी एवडी आलोयण कही छौ, तिवारइ जाणपणाथकी घणा पचेंद्रीय जीवना वधनी आलोयण कीसी हुइ?' ते साभली गुरु कहै–'ते कहयु स्यु।' गुरुने क्रोधनी शाति हुइ बोध सघला आकर्ष्या ते जीवता मुक्या। ए असार ससारे कुण गुरु कुण शिष्य इम चितवी सचितथकी कृत पाप शुद्धिनइ देती आकर्पित बोधनी सख्याइ चउदशत अनि चउमालीस प्रकरण 'पूजापचाशक प्रमुख, एक एक पचाशकै गाथा पचाम पचास हइ एहवा ५० पचाशक, त्रीस अष्टक, सोल षोडस, पुनः आवश्यक वृहवृत्ति'कारक विक्र० स० ५६५ वर्षे श्रीहरिभद्र स्वर्ग हुओ। इणि परि श्रीहरिभद्रसूरी हूवा।

पुनः श्रीहरिभद्रसूरीना भाणेज श्रीसिद्धर्षि 'उपमितिभवप्रपचा १, श्रीचद्रकेवलीचरित्र २, श्रीविजयचद्रकेवलीचरित्र ३' ना करणहार स्वर्ग हुओ।

इति हरिभद्रसवध ॥

२७ तत्पट्टे श्रीविबुधप्रभसूरी–

एहवइ श्रीवीर मुक्ति हूआ पछी एक हजार अनें चउद वर्ष गयइ हूतइ पुनः वीक्र० स० ६०१ वर्षे गये हूतइ मालवदेशी धारनगरइ 'श्रीसम्मति' ग्रथना करणहार श्रीमल्लवादीसुरी प्रगट हूया।

पुनः एहवें अवसरि आचार्य श्रीवप्पभट्टसूरि प्रगट हूया तेह वप्पभट्टसूरीसवध कहै छै–

कुमाहड देशि गोपाचलनी तलहट्टीइ गोपनगर वसें छे। तिहा चहुआण श्रीआम राजा राज करइ छे। एहवें अवसरइ श्रीभारद्वाजवशि प्रण्णवाहनकुलें हर्षपुरीयगछि आचार्य वप्पभट्टसूरी विहार करता आव्या। श्रीगुरु उपगारीपणें धर्म्मकथा कहै। तिवारइ श्रीआम सघ सहित गूरु प्रति वीनती करे–'जो तुम्हे महासाधु छो। भव्य जीवनें पवित्रनइ हेति जगम तीर्थ छो। ते माटे इहा गोपनगरें चुमासें तुम्हें अवश्य रहिवु।' गूरु कहइ–'जिहा श्राम तुम्हारि सुदृष्टि हुसि तिहा लगण रहिस्यु।' इम कही श्रीगूरु चोमासें रह्या। आम प्रमुख सघ श्रीगुरुनीं वहु विविध भक्ति साचवई। निरतर गूरु वादी गुरुमुखे धर्म्मव्याख्या सामले। गूरुवाणी रजितथको परम जैन राजा हुओ। एकदा पून्य तीथीनइ दिनें आमराजानी स्त्री नीला वस्त्र सिणगार पेहरी गुरुमुख आगली गूहलीइ स्वस्तिक करइ छै। तिहा पगले पगले वार वार मुखि मरकलडा करइ। तिवारइ आमराजाइ गुरु श्रीवप्पभट्टनें पुछ्यु–

'बाला चमकती पग पग कीस कुणइ मुहभंग।'

तदा गुरु कहइ–

'नून रमणपएसे मेहलया छिवइ नहपती॥' ५६

ए वचन साभली राजा म्लान मुख हूओ। एतलें श्रीमुक्ताफलिं वधावता नील वस्त्र देषी अवस्थाइ चक्षुना तेजहीणनें अंगे नीलावस्त्र उपरि श्रीसूरिनी तिहा दृष्टि रही। तिहा आमनि पिण दृष्टि हूई। चितस्यु संदेह हूओ। जे साधुनी दृष्टि नीलें सिणगार उपरि रही। व्याख्यान साभली घरे आवी राजाइ गुरुनी परिक्षा जोवाने अर्थि पोताना घरनी वडी दासीनइ नीला सिंणागर पहिरावि, रात्रि महर सवा गया पछी, शालाइ गुरु पासें मोकली। जिहा रात्रि वप्पभट्टि संथारापोरसी कही संथारेइ संथार्या छे, तिहा आवी आचार्यना चरण स्पर्श्या। कोमल हाथ जाणी गुरु कहइ–'ए कुण स्त्री?' तिवारइ ते कहइ–'हू राजानी राणी तेहनी मुख्य दासी। राजानी आज्ञा थकी इहा तुम्हारी भक्तिमा आवी छउ।' गुरु नीरादरइ निभ्रछी काढी। ते दासी म्लानमुखी थइ आम पासिं आवी सर्व स्वरूप कहयु। हवें श्रीगुरुइ उपयोग देता थका धर्म्मकथाइ नीला वस्त्रनो उपयोग हूओ। आममनें संदेह जाणी सुदृष्टिनी प्रतिज्ञा पूर्ण हूइ। प्रभातना पडीकमणानी क्रिया साचवी गतुकमनी हूया। विहार करता थका खडीना पड थकी शालाने बारणे ए गाथा लीषी–

दो तुयडाइ हत्थें वयणें धम्म अखरा य चत्तारि।
विउल च भरहवास को अम पहूत्तण हरइ॥ ५७

आम अनि अन्य राजानें माहोमाहे विरोध छई, तेहनइ नगरइ आव्या। तिणें आम गुरु आव्या जाणी घणो आदर देई, विहू हाथ जोडी कहइ–'हे पूज्य! जि वारी आम अत्र तेडवा आवें तिवारइ आमनगरइ जावु, नही तु नही।' एहवी प्रतिज्ञा करी तिहा रह्या। हवइ ग्वालेर नगरें गृहस्थ प्रातःकालि देव दर्शन करी शालाइ आव्या, गुरु नही। नगरइ वार्ता हूई एतलेइ आम राजा पिण आव्या। शाला जोता बारणीए लपीत गाथा देषी। आम राजाइ वाची, दासी मोकल्यानी वार्ता साभली। मनस्यु पश्चाताप करतो हूओ–'मुझ थकी अवज्ञा हूई।' केतलेक दिनें गुरु प्रति वीनती कहावी। तिवारइ गुरु धर्मस्नेह जाणी कहिराव्यु–'जे तुम्हे वेष परिवर्त्तइ आवज्यो।' तिवारे कौतुकरूपइ आम राजा कापडीना वेषे धूसर मलीन हूइ, मस्तकें आम्ल पत्रनो ओगओ धरी, बिहू कान उपरी तुअरी पत्र थापी, पुनः बिहू हस्तमाहि बीजोराना फल ग्रही, शत्रुनगरी जिहा गुरु विरोधी राजा सहित सघ समक्ष, व्याख्यान कहइ छइ, तिहा उतावलो आवी उभो रह्यो। आचार्यें आम ओलख्यो। साहमु जोइ आदर देइ कहइ–'आम! आवओ आम! आवओ।' ते साभली सकल सभा महाधुसररूप देषी, आमनो शत्रु राजा तें श्रीगुरुनें पूछें–'ए पुरपनइ मस्तके किस्यु?।' ते वारइ गुरु कहै–'ए आम्ल।' ते साभली विरोधी राजा पुन' पुछै–'ए पुरुपनें कानइ किस्यु?।' ति वारइ गुरु कहइ–'तु अरि।' ते साभली विरोधी राजा गुरु. .आमनइ कहइ... विहरति।' ए समस्या गुरुकथक साभली शाला बाहिरइ आम नीकली बारणइ खडीना खडथकी ए श्लोक लिख्यो–

'गिरौ गोपपुरे रम्ये प्रभो! तत्र पधार्यताम्।
सभामध्ये समागत्य प्रतिज्ञा पूरिता मया॥' ५८

सकल लोक देखता ए श्लोक लिपि आम पोतानइ घरे आव्या। बीजइ दीनें सघ तथा राजा पासें गुरै आज्ञा मागी–'अम्हे गोपनगरइ जास्यु।' तिवारइ आमनो शत्रू राजा कहइ–'जिवारइ तूमनइ तेडवा आम आवइ, ते तुह्मारो वचन छइ।' ते साभली गुरु कहइं–'ते तो काले वाण्यानमाहि आविनइं गया।' तिवारइ विरोधी राजा कहें–'तुम्हे मुझने कह्यौ नही।' गुरु कहें–'सघ समक्षइ मइ कहयु जे' आम! आवो आम! आवो! पुन तुम्हे पुछ्युं जे ए पुरुष मस्तके किस्यु?।' ते वारे अम्हे कहयु जें–'ए आम्ल।' पुनः तुम्हे पूछयु जे–'ए काने स्यु?।' अम्हे कह्यु जे–'तुअरी'। पुनः तुम्हे कह्यू जे–'एहना हाथमाहि स्यु।' जि वारें अम्हे कह्यो जे–'ए बीजोरा। एतले आम्रनें नामि आम राजा जाणिरा। पुनः तुअरि कहिता ताहरो ए शत्रु। पुनः बीजोरा कहिता तुम्हे राजा ए पिण राजा। ए श्लोक पिण पूर्ण प्रतिज्ञानो वारणइ सकल लोक देपता लिख्यो छे।' ते साभली आम शत्रु विचारी, जे साकडे आव्यो हुतो पिण तेहना पुन्य थकी कुशलें गयो। प्रतिज्ञा सपूर्ण, सघाज्ञा लेई गुरु ग्वालेरनगरं आव्या। आम राजाइ शालाई महोच्छवे पधराव्या। महाहर्षे पामी श्रीवप्पभट्टसूरीनें मुप बारव्रत उचर्या। एकदा गुरुनइ आम कहइ–'तुम्हे श्रीगुरु! मुझ उपरिं कृपा करी काइक ए जीव प्रत्यें सुकृत कहो।' तिवारइ गूरु कहइ–'आ असार ससार तेहनें विषइ दोप रहित श्रीजिनवर, तेहनी भक्ती, तेहिं ज सार, जेह थकी प्राणिने सद्‌गति हुई। यतः–

> कारयन्ति जिनानां ये तृणावासमपि स्फुटम्।
> अखण्डितविमानानि ते लभन्ते त्रिविष्टपम्॥ ५९

ते गुरुनो उपदेश साभली ग्वालेर नगरइ एक शत अनि आठ गज ऊचओ प्रासाद नीपजावी ते माहि श्रीवीरबिंब विक्रम स० ७५६ वर्षि भूमिगृह थाप्यो। श्रीवप्पभट्टि प्रतिष्ठयो। पुनः श्रीसिद्धगीरीइ त्रणि लक्ष मनुष्यें सघपति थई यात्रा कीधी। साडाबार कोटि सुवर्ण सुकृति करिं श्रीजैनधर्म आराधी आम चहूआण वि० स० ७६० वर्षि स्वर्गी हूओ। पुनः श्रीसूरीनें बाल्यावस्थाइ सातसें गाथा सूर्योदयें मुपपाठि चढती। तेहना घोपना शोप थकी सात सेर घृत जरतु। श्रीवीर निर्वाण हूआ पछी तेरसइ अनि पात्रीस वर्ष वीतइ पुनः वीक्रम स० ७६१ वर्षि श्रीआम प्रतिबोधक आ० श्रीवप्पभट्टसूरी स्वर्ग हूओ। उक्त च–

> यस्तिष्ठति वरवेश्मनि सार्धद्वादशसुवर्णकोट्याः।
> निर्मापितो आमराज्ञा गोपगिरौ जयति जिनवीरः॥ ६०

इति वप्पभट्टसूरीसबध॥

२८ तत्पट्टे श्रीमानदेवसूरी—

पोतानी देही असमाधीपणइ चितथकी श्रीसूरीमत्र वीसरी गयो। केतलेक दिनें श्रीसूरिनइ समाधी हूई। तिवारइ श्रीसूरि गिरीनार पर्वति आवी वि मासी चउवीहार तप कीधओ। अबीका आवी कहइ–'ए किम?' तिवारे श्री कहै–'मुझ देही असमाधी।' ते सूरीवचन साभली देव्याइ श्रीसुरिमत्र सभारी विजयादेवीनें पूछी श्रीसुरीनै मत्र कह्यो–

> विद्यासमुद्रहरिभद्रमुनीन्द्रमित्र सूरिर्बभूव पुनरेव हि मानदेवः।
> मान्यात् प्रयातमपि योऽनघसूरिमन्त्र लेभेऽम्बिकामुखगिरा तपसोज्जयन्ते॥ ६१

ग्राम श्रे० ते नग्न खड्ग हाथई झाली लेई श्रीगुरुने पासइ आवी साहस धैर्य धरी उभो रह्यो। गुरुइ गृहस्थनें कह्यु–'ध्यानथकी चुकै तेहना मस्तकइ तत्काल खड्ग दीजें विलंब नही।' इम विधि विद्या साधता साहसी धैर्यपणो देषी ते देव ईग्यारमइ दिने आवी कहइ–'तूठो, वर मागि।' तिवारइ गुरु श्रीदेवचद्रसूरीइ वीर ५० वरसिनओ वर माग्यो। श्रीमलयगिरीसूरीइ सिद्धातनी टीका करवानो वर माग्यो। अनि रु० सोमदेवि राजप्रतिबोधवानी शक्ति मागी। त्रिहू साधुनें ते देव वर देइ अलोप हूओ। गृहस्थनें कोटी द्रव्यनी प्राप्ति हूई। तिहांथकी देवदत्त वर लेई श्रीमलयगिरीसूरीइ मालवदेशे विहार कीधो अनि गुरु श्रीदेवचद्रसूरी १, अनि शिष्य रु० सोमदेव २–ए बिहू गुरु शिष्य श्रीगिरिनारि नेमीश्वरनी यात्राइ दर्शन करवा गया। तिहा मारगे कोइक गामि एक वणिक दरीद्री रहइ छे। पहिला तेहनइ माता पिता महाश्रीमत हूता। तेहनी भ्राति तिणे वणिके घरनी पुन.. . .थकी खर्णीने तिहा थकी द्रव्य प्रगट कीधो। व्यतराधिष्ठिते सेवतरा प्रगट हूया। तेह थकी घरनें म'य भागइ ढिगलो कीधो छे। प्रत्यक्षि लीहालानओ समूह छै। तिणें समयइ वि पोहरइ मध्यानइ श्रीगुरु अनि शिष्य तेहनइ घरे आहारनइ अर्थि गया। तिणे सूक्ष्मरज (?)दान दीधु। ते आहार देखी सोमदेव शिष्य वार वार गुरु साहमी दृष्टि करी सन्नाइ समझावई पिण गुरु सन्नाइ न समझ्या। तेतलि वणिक समझ्यो जे ए रुपी महाभाग्यनो स्वामी जाणी उतावलो आवी तत्काल सोमदेव रुपी प्रति निं हाथि उपाडी सेवत्राना ढगला उपरि बइसाड्यौ। एतले ते गृहस्थना पुन्यनइ योगइ ते सेवत्राना समुहना ढिगलाथकी रु० सोमदेवनी दृष्टिना प्रभावथकी ते व्यतर नाठौ। एतलें वणिकें साक्षात् प्रगटपणें सुवर्ण ढगलु दीठौ। तिवारे ते गृहस्थे घणा आग्रहे गुणनिष्पनि श्रीगुरुनइ वीनती करी। वि० स० ११६६ वर्षि रु० सोमदेवनइ श्रीगुरुइ आचार्य पद देई 'श्रीहेमचद्रसूरी' नाम दीधु। वि० स० ११६७ वर्षि गुरु श्रीदेवचद्रसूरी स्वर्ग हूओ। एहवइ अनेक ग्रथकारक श्रीमलयगिरीसूरी स्वर्ग हूओ।

श्रीमुनिचद्रसूरी जावजीव लगइ ७ विगयना नियमधारक श्रीसूरीइ सोरठ देसि प्रासादबिंब प्रतिष्ठ्या। सुमतादि चारित्रइ समर्थ यतः–

> सविग्नमौलिर्विकृतीश्च सर्वास्तत्याज देहेऽप्यममः सदा य'।
> विद्वद्विनेयाभिवृतः प्रभावप्रभागुणैः य. किल गौतमोऽयम् ॥ ७१
>
> अष्टद्येश(११७८)मितेऽब्दे विक्रमकालाद् दिवगतो भगवान्।
> श्रीमुनिचन्द्रमुनीन्द्रो ददातु भद्राणि सघाय ॥ ७२

४१ तत्पट्टे श्रीअजितदेवसूरी–

लघु गुरुभाइ सकल वादीमुगट विरूदधारक श्रीवादिदेवसूरि २। ए बिहू गुरभाई। ते मध्ये वड्डा गुरभाई ते पट्टधर अनि लघुभाई ते गछनो मर्यादाना सार सभालिवा करणहार। वि० स० ११६८ वर्षे निवृत्तिकुलि श्रीमहेन्द्रसूरीना उपदेशथकी घोघा बिंदरे श्रीमालिज्ञाति नाणवटी सा० हीरुइ श्रीनवपडा पार्श्वनाथनो बिंब भराव्यो। वि० स० ११७७ वर्षी 'श्रीनागुरी शापा' कहिवाणी। श्रीअजितदेवगुरु प्रति गुरुवाणि रजितथको अणहिल्लपत्तनाधीशः सो० श्रीजयसिंहदेव निरतर त्रिण प्रदक्षिणा देइ वादेई। श्रीसूरी पश्चिम दीसी-देवकै

पत्तनइं श्रीजिनशासनइं शोभाकारक हूया। अनि लघु गुरुभाई श्रीवादिदेवसूरी तेहना शिष्य श्रीरामचंद्रसूरी, तिणि स्नात्र विधि प्रगट कीधी।

तेहवइ श्रीमरुदेशीं जीराउली तीर्थनी उत्पत्ती हूई–आबूनी पासिं जीराउली गामइ घोसिरगोत्रि श्रे० श्रीधाग्ल रहे छइ, तेहनी गौ सेहली नदीनइ कांठइ बोरडीनी जालमांही सीमाडे चरवा जाइ छें। तिहां दूध झरइ। सयासमयइ ते गौ वणिकघरें दूध न दीइ। तिवारइ ते धाधल ग्रहस्थ जाणइ जे कोई सीममइं दोहीने दूध लीइ छें। तेहनीं भ्राती तेणे सघाते पुत्रनें मोकल्यो। जिहां गो चरइ तिहां पृथ्वीनइ ठिकाणि दूध करी गई। ते देखी पुत्र घरे आवी दूध झरण वात पिता प्रति कही। तिणइ धाधलइ आश्चर्य जाणी ते दूधझरण भूमीका पणी। एतलइ घणा कालनी श्रीपास मूर्ति प्रगट हूई। एतलइ अधिष्ठायकै स्वप्न दीधो, ते–'मुझनें जीराउली नगरइ थाप्यो।' तिवारइ धाधलइ प्रासाद नीपजावी महोत्सवें वि० स० ११९१ वर्षिं श्रीपार्श्वने प्रासादे थाप्या। श्रीअजितदेवसूरीइ प्रतिष्ठया। घणा दिनताइ श्रीपार्श्वनाथनी भक्ति साचवतो श्रे० धाधल सद्गतीनो भजनार हुओ। ते श्रीपरमेश्वर जे जीरापल्ली नगरइ रह्या। सकल भक्ति लोकनी वाछापूरक मारिउपद्रवनिवारक समभाव तीर्थ हुओ। यतः–

प्रबलेऽपि कलिकाले स्मृतमपि यन्नाम हरति दुरितानि।
कामितफलानि कुरुते स जयति जीराउलीपार्श्वः॥ ७३

इणि परि श्रीजीराउली पार्श्व उत्पत्तिः।

पुनः वि० स० ११९१ वर्षि दीली नगरें विल्हाती पठाण आव्या। चहूआणनइ काढया, म्लेछाण हूओ।

हवइ श्रीदेव लोडणपास तिर्थनी उत्पत्ति कहे छे–गुज्जर देसि सेरिसा नगरें नागिंद्रगछइ श्रीदेवेंद्रसूरि शिष्य सहित विहार करता आव्या। पिण गुरु शिष्यथकी वीराकर्षण विद्यानी पुस्तिका गुप्तपणि राखइ। एकदा गुरु रात्रिं निद्राइ आव्या। एतलइ एक शिष्ये ते पुस्तिका चद्रमानइ उद्योति वाची। बावन वीर आव्या। कहि–'किस्यु काम छे?।' ते शिष्य कहइ–'इणि पुरे जिनप्रासाद नही छइ ते माटि पश्चिम दिशि जैन कातिनगरीथकी श्रीजिनदर्शननो आ घणा पुन्य जाणी तुह्मारी शक्ति इहां एक प्रासाद लाव्यो।' तिवारें ते शिष्यना वचनें वीर कहें–'अह्मारु प्राक्रम प्रभाति कुर्कट शब्द न हूइ तिहां लगण, शब्द पछी नहीं।' शिष्यआज्ञा लही बावन वीर जैन कातिनगरीथकी रात्रि प्रासाद लेई सेरीसइं नगरइ आव्या। एहवें उपयकी गुरु जाग्या। तिवारें आकासि कोलाहल, बावन वीरनो आण्यो प्रासाद श्रीपासनो देखी चित्ते चितवइं ए किस्यु ? पुस्तिकानो उपयोग आव्यो। एतलि तिहां पुस्तिका नही। श्रीगुरुइ शिष्यना काम जाणी श्रीचक्रेश्वरी स्मरीनइ कहइ–'ए शिष्यने मालिम नही। रात्रि घणी छइ ते माटि तुमो कारिमा कुर्कट बोलावओ।' गुरुआज्ञाथकी ते देवीइ तिम ज कीधो। एतलइ प्रभात हूइ जाणी वीर स्वस्थानकि पोहता। एतलइ प्रासाद तिहां ज रह्यो। तेह थकी वि० ११.. वर्षे सेरिसा नगरइ श्रीलोडणपासनी थापना हुइ। आ० श्रीदेवेंद्रसूरी तिहां थकी विहार करी अणहील्ल पत्तनइ पचासरो प्रणम्या।

इति सेरिसा तीर्थ उत्पत्तिः।

४२. तत्पट्टे श्रीविजयसिंहसूरी–

चारित्रचूडामणि विरुद धरता विचरीं। एहवइ सोलंकी श्रीकुमारपाल प्रगट हुओ। तेहनी उत्पत्ति कहइ छइ–

गुर्जर देसि अणहिलवाडा पाटण पासें देइथली नगरइ सो० श्रीत्रिभुवनपालभार्या वाघेली कास्मीरी। पुत्र पांच, ते माहीं कनिष्ठ कुमारपाल नामी। तेहनो वि० स० ११७७ वर्ष जन्म हुओ। विक्रम स० ११९७ वर्षि श्रीपभायते श्रीसूरीमुखें धर्म्मोपदेश लह्यो। विक्रम स० ११९९ वर्षे कुमारपाल टीको हूओ। एतलइं गुरुनें घणइ ओच्छवइ शालाइ पधराव्या। स देव व्याख्यान सार काइक सुकृत कहो। तिवारें सूरी कहीइ–

दीर्घायु पर रूपमारोग्य श्लाघनीयता।
अहिंसायाः फल सर्वं किमन्यत् कामद भवेत् ॥ ७४

एहवा वचन श्रीगुरुना साभली चउमासइ जीवाकुलभूमिका जाणी गुरुमुखे कुमारपालि नियम लीधो जे–'चउमासें सैन्य चढाइ युध न करवओ।' ते वार्त्ता केतलेक दिनें दिल्ली नगरइ म्लेछइ सामळी। तिहा थकी सैन्य आवी अणहीलवाडें उतर्यो। सहिर पाखति गढ कोट नहीं, तिवारि कुमारपालि गुरु विनव्या–'सैन्य १ अनइ युद्ध २ नो तुह्म मुखइ माहरइ नीयम छइ।' सूरी कहइ–'धर्म्मथकी कुशल हुसइ।' श्रीसुरीइ कटेश्वरी पादर देवी समरीनें कहें–'जिनशासनइ ए राजा नियमधारक छें तेह थकी परचक्रनो उपद्रव निवारो।' ते गुरुआज्ञा लही देव्याइ रात्रि निद्राइ सुतो म्लेछनइ उपाडी कुमारपाल्ना महेलमा लावी मुक्यौ। प्रभाते जागी उठयो। स्वसैन्य अनुचर नही। एतलइ चढति दिनइ राजर्षिनइ अनुचरें दतधावननिमित्तें पावन जलसपूर्ण पात्र, अचलो लावी दीधो। ते देषी मुगल कहइ–'ए कुण स्थान? तू कुण?।' ते अनुचर कहइ–'ए राजा श्रीकुमारपालनओ मदिर। हू तेहनो सेवक।' ते मुगले सेवकना वचन साभली मनस्यु विचारइ हु एहनो राज्य लेवा आव्यो छु, पिण साकुडें हू आण्यो इणइ, अनइ एह महाभाग्यनो स्वामी मुझस्यु मैत्री वाछइ छइ। एहना पीर पिण साचा छइ। तओ ए राजानओ हु मित्र। तिवारइ मुगल्ल १, अनि कुमारपाल २–बिहू मित्र हुई माहोमाहि भेट आपि पीराणपत्तन नगरनो नाम देइ, कुमारपालनइ स्वधर्मि दृढतापणु १ अनि उपगारीपणु २ देषी प्रसंसा करतो दील्ली नगरइ मुगल पुहतो। श्रीजिनसासनइ महिमा हुओ। गुरुकीर्ति हुइ। एतलइ विक्र० स० १२०७ वर्षि सो० श्रीकुमारपालें अढार देशि अमारि पलावि। हवे ते अढार देशना नाम यथा–

कर्णाटे १ गुर्जरे २ लाटे ३ सौराष्ट्रे ४ कच्छ ५ सैंधवे।
उच्चाया ७ चैव भभेर्यां ८ मारवे ९ मालवे १० तथा ॥ ७५

कौंकणे ११ च तथा राष्ट्रे १२ कीरे १३ जालधरे १४ पुनः।
पञ्चाले १५ लक्ष्मेवाडे १६ दीपे १७ काशीतटे १८ पुनः ॥ ७६

'मारि' शब्द एहवओ मुषि कहिवइ करी चउविहार उपवास एक करइ। सकल प्राणि छाण्यो पाणी पीइ। पुन वि० स० १२०९ वर्षि 'हेमीव्याकरण' श्रीहेमाचार्ये प्रगट कीधो। विक्र० स० १२११ वर्षि सप्त लक्ष मनुष्ये मि ।चलो सघपति हूओ। वि० स० १२११ वर्षे लेउआ गाथापतिनइ दयापात्र जाणी साडेरिया विरुद दीधो।

वि० स० १२१३ वर्षे श्रीमाली म० वाहडदेइ श्रीसिद्धाचलइ चउदमो उद्धार नीपजाव्यो। वि० स० १२१६ वर्षे खंभातथकी श्रीशांतिपूजानें नूतन वस्त्रार्थि शालविना सात हजार घर पाटणी लावी वसाव्या। वि० स० १२१८ वर्षे श्रीहेमाचार्य अमावस्यानी पूर्णिमा देषाडी। वि० स० १२२१ वर्षे तारणगीरीइ श्रीअजितजिनबिंब थाप्यो। तिणही ज वर्षे सातसें लेखकने द्रव्य आपी एकवीस ज्ञानकोश लिपाव्या। न्यायघटा सदैव वाजइ। श्रीगुरु-उपदेशि चउदशत अनि चुमालीस, ८४ मडप सहित प्रासाद नीपजाव्या। पुन' एकवीस शत जीर्णोद्धार नीपजाव्या। एकदा म० वाहडदे श्रीगुरुने वीनती कहे जे—'नवीन प्रासाद नीपजावइ पुण्य किंवा जीर्णोद्धारनो लाभ ?।' मंत्रीनु वचन सांभली श्रीसूरी कहइ। यतः—

नूतने श्रीजिनागारविधाने यत् फल भवेत्।
तस्मादष्टगुण पुण्य जीर्णोद्धारे विवेकिनः॥

एहवओ गुरुवचन सांभली मंत्रीइ पन्नरशत जीर्णोद्धार निपजाव्या। तेमाहि प्रथम जीर्णोद्धार वि० १२२० वर्षे श्रीभृगुकच्छें श्रीशकुनिकाविहारनो कीधो, श्रीगुरुना साहज्यथकी। पुनः इणही ज वर्षि 'गछ' हूओ। पुनः एकदा कुमारपालनें रात्रि सुता थका पूर्वि बालावस्थाइ अभक्ष भक्षण खाधओ छइ तो गुरु ५ वारवत उच्चर्यो, ते मासनो स्वाद दाढामा उपनो जाणी चिंतवइ अभक्ष भक्षनइ संभरवइ खंडित हूओ। प्रभा॰ गुरु वादि पूछिओ। तिवारइ गुरु कहइ—'एहनी आलोयणा तुम्हे बत्रीस लक्षणा पुरुष उभो तेह थकी बत्रीस प्रासाद, बावन देवकुलिका सहित निपजावओ। ए व्रतभग हूआनी तुम्हने ए आलोयण दीधी।' ते गु० अंगीकार करी स्वपिता तिहुयणपालने नामि तिहूयणवीहार, बहुत्तरी देवकुलिका सहित निपजाव्यो। २४ बिंब रत्नमय, बिंब २४ स्वर्ण-पित्तलमय, बिंब २४ रूप्यमय, पुन' मुख्य प्रासादे एक सओ अनि ५ अंगुल प्रमाणी अरिष्टरत्नमय मूलनायक श्रीऋषभदेवबिंब स्थापित, सकल देवकुलिका सुवर्णकलसें नाणवी। निरतर सत्तरभेदि, पुनः पट् पर्वि अष्टोत्तरी, जिनभक्ति हुइ। बिहू टक प्रतिक्रमण, त्रि टक देव॰ साचवइ। सूर्योदये स्वगृहइ श्रीशांतिनाथनइ अर्चि, वीतराग एकशत आठ नाम समरी, पछी अढारसय कोटी गज युक्ति, तिहूयणपालविहारइ, श्रीऋषभदेव दर्शन करी, गुरु वादि, उपदेश सांभली, घरें आवी, सदैव मातसि साध॰ जीमाडी, पछी एकभक्त करइ। मासें मासें लक्ष साधर्म्मिक पोषि। प्रति वर्षि यात्रा सात सवा सवा लक्ष मनुष्यइ सा॰।

अथ द्रव्यसख्या—कोठार चार अघटित स्वर्ण भर्या। कोठार चार अघटित रूपि भर्या। कोठार १ सु॰ फटिक भर्यो। कोठार १ नानाविधि रत्ने भर्यो। पार्श्व पाषाणना खड च्यार। कोठार १ विद्रुमनो पडे भर्यो। १ लक्ष कोठार पवीत्र धानइ करी भर्या। अथ सैन्य द्विपद संख्या—७२ सामत। चारशत प्रधान। सातसे कोटवा॰ १८ लक्ष पायक। एक लक्ष दूत। ११ हजार गज (?)। १२ हजार अगमर्दक। १७ हजार सुयार। १५ अनि दासि। वि स्त्री। अथ चउपद संख्या—११ लक्ष हय। ११ हजार पाल्षी। ५० हजार रथ। ७५ करभ। १७ हजार वेसर। ७२ हजार महिषा। दीढलाप टषभ। एक लक्ष शकट। १५ सो कौतुक चडोल। परि पूर्वभवपुन्ये भोगवइ। पूर्वइ भवइ पोढक व्यवहारीयाने घरे कुमारपालनउ जीव चाकर हुवो। तिहां भद्रायकी नव कपर्दीकाना अढार फूल आव्यां। ते लेइ सिद्धगीरीइ श्रीपरमेश्वरनइ चढाव्या। तिणै पून्ये १८ देशनी साहिबी भोगवतो, श्रीगुरुवचनें सुकृत करतो, जिनसासन सोभावतो थको दिन नीगमइ। ५

थाप्यौ । पुनः वि० सं० १२८२ वर्षि प्रासादि कल्स दड ध्वज चढाव्यौं । श्रीनेमीश्वर थाप्यौं । तिहा श्रीभुवनचंद्रसूरीइ स्वशीष्य उ० श्रीजगचंद्रने तथा प० देवेंद्रने सूरीपन्इ कीधा । तिणहि ज प्रासादि त्रिहु भ्रातानी स्त्रीयइ नव नव लक्षद द्रव्य वावरीनें स्वस्वनामि त्रिहु आलीया नीपजावी नाम राख्यु । तिणहि ज वर्षि श्रीगिरनारी म० वस्तुपालें उद्धार कीधो । एतलइ श्रीआबु, सिद्धाचल, गीरनार–ए त्रिहु तीर्थे अढार लक्ष मनुष्यइ उ० श्रीदेवभद्र, आ० श्रीजगचद्र, आ० श्रीदेवेंद्र प्रमुख स्वेतांवर इग्यार आचार्य, पुन' दिगंवर भ० एकत्रीस आचार्य युक्ति यात्रा करी । सकल संघ सहित म० वस्तुपाल पाटणि आव्या । केटलिक दिनें गुरु श्रीभुवनचंद्र सूरि स्वर्ग हूआ । तिवारें मत्रीइ घणे आग्रही उ० श्री देवभद्र, आ० श्रीदेवेंद्रनइ वीनती करी पाटणें चौमासु राख्या । उतरीइ चउमासइ म०नी आज्ञा लही त्रिहु विहार कीधो । भीलडी नगरइ श्रीपास दर्शनि आव्या । एहवे तिहा हिंदूआणि देशथकी श्रीसोमप्रभसूरी पिण विहार करता भीलडी नगरें सह हर्षि पास दर्शनि आव्या । तिवारइ उ० श्रीदेवभद्र, आ० जगचद्र, आ० देवेंद्र–ए त्रिहुए श्रीसोमप्रभसूरीजें वादणइ करी रथा । तिवारी श्रीसोमप्रभसूरीइ खरतर, स्तनपक्ष, आगिम, राकापक्ष, त्रिस्तुणिक, उपकेश, जीरावल्ली, नाणावाला, निंवजिया इत्यादि आचार्यनी शाक्षि वि० सं० १२८३ वर्षि श्रीसोमप्रभसूरि १, मणिरत्नसूरिइ जावजीव आवल तपना धारक २, पुनः समता आदि गुण आगला जाणी स्वगछइ लेइ आ० श्रीजगचद्रसूरीनइ पोतानी पाटि थाप्या । श्रीवीजापूर नगरी उ०श्रीदेवभद्र, आ० श्रीजगचद्रसूरी, आ० श्रीदेवेंद्र–ए त्रिहु चौमासि रह्या, अनि श्रीसोमप्रभसूरी १, श्रीमणिरत्नसूरी २ वडाली नगरी चउमासइ रह्या । एतलि पुनः म० वस्तुपाल बीजी वार संघपति हूओ । श्रीसोमप्रभसूरी, श्रीमणिरत्नसूरी, आ० श्रीजगचद्रसूरी, आ०श्रीदेवेंद्रसूरी, उ०श्रीदेवभद्र सहित श्रीसिद्धाचल यात्रा जाता मार्गि श्रीवढवाणि नगरें संघ उतर्यौं । तिहा श्रीमालि शा० वृ० सा० रत्नें दक्षिणावर्त्त शखनें महिमाइ सप्त दिन ताइ नानाविधि सुखाशिकानइ भोजनि तथा सवस्त्र आभूर्षणि पहिरामणी सकल संघनइ कीधी । तिहा थकी मत्री मोरवी प्रमुख नगरें स्वज्ञाति साधर्म्मिक प्रति नगरें नगरें गामि गामि पकवान आभूषण वस्त्रइ संतोषती हूओ । श्रीसिद्धाचल, श्रीगिरिनारनी यात्रा करी देवकि पाटणी संघ आव्यौं । तिहा मत्रीइ नूतन प्रासाद निपजावि श्रीचद्रप्रभस्वामिनो विंव थाप्यौं । श्रीसोमप्रभसूरी १, श्रीजगचद्रसूरी २ प्रतिष्ठ्यौं । तिहा मत्रीइ स्वज्ञात घणु संतोषी सधर्म्मिकनि संतोष्या । अणहिल्पाटणि संघयुक्त श्रीसूरी अनि मत्री आव्या । उ० श्रीदेवभद्र, श्रीजगचद्र, श्रीदेवेंद्र श्रीसोमप्रभसूरीनी आज्ञा लही पाल्हणपुरइ चौमासाइ रह्या । श्रीसोमप्रभसूरी अकेवालीइ चोमासी रह्या । श्रीमणिरत्नसूरीइ हिंदुआणि देशि विहार कर्यौं । श्रीसत्यपुरि चोमासी रह्या । श्रीवत मत्रीइ संघयात्राना मनुष्य मनुष्य प्रति पाटणि सुवर्ण मुहर दीधी । चउमासइ उतरइ पाल्हणपुरथकी उ०श्रीदेवभद्र, आ०श्रीदेवेंद्रसूरी विहार करता आबु, दहिआणाक, नदिय, ब्राह्मणवाटक इतीयादि तीर्थ फरसी अजारी नगरइ श्रीवीरप्रासादे श्रीसुरीइ अठमतपि श्रीशारदानो स्मरण कीधो । ब्रह्माणी प्रसन्न हूई कहि–'तूझ किर्ति हुसि ।' ए सारदा दत्तवर लेई श्रीसुरीइ मेवाड देसि विहार कीधो । एहवि श्रीसोमप्रभसूरी एक शब्दना शत अर्थना कर्त्ता, पुन' 'श्रीसिंदुरप्रकरण' ग्रन्थना कारक श्रीश्रीपालि नगरि स्वर्ग हूओ । १ । अनि लघु गुरुभाइ श्रीमणिरत्नसूरीं 'नवतत्त्वप्रकरण' कर्त्ता ते त्रि मासि अतरि श्रीथिराद्र नगरइ स्वर्ग हूया । २ ।

हवि मत्रि वस्तुपाल्नइ अणहिल्लपटनि १, आसापल्लीइ २, खभायाति ३ प्रमुख नगरि छप्पन्न कोटि द्रव्य भूमध्यें जूइ जूइ शाति ते उपरि देवसनिधिओ भेरी शब्द हुइ .. ते समय द्रव्य सुकृति कीधो ते कहइ छइ—अढार

कोटि द्रव्य तीर्थयात्रामें उजमणि व्यय कीधा। आबु, पाटण, वडनगर, खंभायत, देवकि पाटणि, भृगुकच्छ, गुज्जा, धुंडिआला, साडेरा, प्रमुप नगरइ पाच हजार प्रासाद नीपजाव्या। सवा लाप जिनबिंब निपजाव्या। ते माहि एकतालिस हजार सुवर्ण पीतल धातुमयि जाणवा। श्रीतारणगिरी, श्रीभीलडी नगरि, श्रीईडरगढि, श्रीविज्जानगरि, श्रीशंखेश्वरि, श्रीविज्जापुरी चिंतामणि पासप्रासादि, पुरहातिज पद्मप्रभप्रासादि इत्यादि त्रेविश शत जिर्णोद्धार निपजाव्या। नव शत अनि चउरासी धर्म्मशाला निपजावी। पाच शत समोसरण निपजाव्या। पुनः देवकि पाटणि ज्ञानकोश ईग्यार लिपावी सोधाव्या। बत्रीस हजार श्वेत चंदननी ठवणी, उगणीस हजार रहिल नीपजावी। बहितालीस हजार सापुडी, कवली नीपजावी। पुनः स्मरणी श्वेत चदन, मोती, प्रवाला, सूत्र प्रमुपनी नीपजावी, नगरी गामि गामि देशदेशातरे पुण्यार्थे दीधी। पुनः द्रव्य सख्या कहइ छइ–आठकोडी अनि त्राणु लाख टका यात्रा, स्नात्र, प्रासाद, बिंबथापनइ, श्रीपुंडारिकगीरीइ, आत्महेतुना कारण माटि सुकृतिइ वावर्या १। पुनः अढार कोटी अनि आसी लक्ष टका श्रीरैवताचलि सुकृतिइ कीधो २। पुनः बारकोर्टि अनि त्रहिपन्न अधिक श्रीअर्बुदाचले सुकृति कीधा ३। एतले ए ओगणीस सयकोटी, अनि आसी कोटि, भद्सी लक्ष, वीस हजार नवसय अनि ताणु टका ते नव चउकडीइ उणा एतलो द्रव्य मत्री श्रीवस्तुपालइ त्रिहू तीर्थे सुकृति कीधो। पुनः कवित–

> पाच अरब नइ खरब कीधां जेणे जीमण बारह।
> सात अरब नें खरब दीध दूबल परिवारह।
> द्रव्य पच्यासीय कोडी दीध भोजक बड भट्ट।
> सत्ताणु सय कोडी फूल तबोली हट्ट।
> चदन चीर कपूर मषि कोडी बहुत्तरी कप्पडे।
> पोरवाडवश श्रवणे सुण्यो श्रीवस्तुपाल मत्रिमडले॥

इत्यादि अनेक सुकृतिकारक श्रीभुवनचद्रसूरी उपदेशात् श्रीअंबिका कवडयक्ष सानिधकारक, नागर लघुशापा बिरुदधारक एव वर्ष १८ सुकृत कीधु। सर्व आयु वर्ष ३६ सपूर्णी तेहनो वि० स० १२९८ वर्षे वालीया गामि स० श्रीवस्तुपाल स्वर्ग हूओ १। पुनः वि० स० १३०२ वर्षे लघुभाई म० तेजपाल गामि स्वर्ग हुओ २।

इति म० वस्तुपाल–तेजपालसबध।

४४. तत्पट्टे श्रीजगचद्रसूरी–

श्रीगुरु जावजीव आंबील तप अभिग्रहना धारक थका मेवाड भूमडली विहरता श्रीआहाड नगरि आव्या एहवइ गछना साधुसमुदाय मतइ क्रिया आचारि शिथलपणि जाणी, पहिला दीघा जें श्रीआ० सारदाइ वर ... कृपायकी पुनः श्रीदेवभद्रनो साहज्य पामी उग्र क्रीयानो आरभ श्रीआहड नगरइ कीधो। तिहा श्रीसूरी कालि चउमासि रह्या। एतलें जावजीव आंबील तप करता वर्ष बार हूया। तिवारइ चित्रोडपति राउल जयसिंघ मनुष्य मुपि, छ विगयना त्यागकारी, सचित्त परिहारी, आंबिल तपना कारक सामली शालाइ आवी ... कुशल कहें। ए श्रीसूरीनो वड अनि जिहा लगिणि चिरजीवी हुइ तिहा लगण आंबिल तप देही कुशल वादी कहे–'गुराजी तुम्हारी कुण गछ अनि कुण तप?' तिवारि उ० श्रीदेवकुशल कहे..... एहवा वचन ...

श्रीदेवेंद्रसूरी खंभायति आवी चौमासी रह्या। श्रीगुरु सदैव उपगारीपणि धर्मकथा कहै छै। एकदा गुरुवाणी रंजित थको श्रीगुरु प्रति श्रीमालि सा० सोनी भीमजी वीनती करइ–'श्रीगुरु मुझने कृपा करी काइक हित शिक्षा कहो।' तिवारी गुरु कहइ–'सत्य वचन मुखथकी बोली मनुष्य जन्म सफल करओ।' ते सांभली भीमजी मनस्यु विचारइ जे सोनारनओ व्यापार तो मिथ्या वचननो ज छइ, पिण मुझस्यु गुरुनु वचन किम लोपाइ, एहवु मनि धारी गुरुमुखि सो० भीमजीइ एहवु नियम लीधु जे मइ सदाकालि सत्य बोल्यु पिण असत्य नहीं। ते घणें यत्नें सत्यनीयम जालवीनें राषइ। एकदा सोनी भीमजीनइ महितटि चोरे ग्रह्यो। भीमजीनइ भील पूछइ–'तुझ घरी केतलो द्रव्य छइ?' तिवारें सोनी भीमजी मनस्यु विचारीनें कहें छइ जे–'चार हजार रुकमनो घर नापरो छइ।' भील्ल तेतलो ज द्रव्य मागइ, तिवारइ सो भीमजीनइ पुत्रइ खोटा नकलची द्रव्यें नीपजावी डंड भरावानी चोरनी आप्या कही, परषी लीओ। भील्ल कहि–'इहा कुण पारखू। एहि ज सोनार छइ।' कारागारथकी काढी कहइ–'आ द्रव्यनी परिक्षा करी।' तिवारइ भीमजी चित्तस्यु विचारइ जे–'कृतकर्म उदय आव्या छइ, अनि वली उदय आवइ, तओ हु मिथ्या न कहु।' एहवु जाणी, कही–'ए द्राम सकल खोटा छे।' ते भीमजीनु वचन चोर सांभली मनस्यु चिंतवइ जे एकतओ आपणा पुत्रनें झूठो कीधो, अनि आपि पण वदीखाने रह्यो। इणि सोनी भीमजीइ किस्यु कीधु? तिवारइ भीमजी कहइ–'मिथ्या कह्यानो माहरइ नीयम छे।' चोर पिण तिम ज अन्य मनुष्य मुखि सांभल्यु। सत्यवादी जाणी पल्लीपतिइ पाच वस्त्र पहिरावी गामनो कामदार थापी घणें आदरें घरें मुक्यो। श्रीगुरुकीर्ति हुई।

इति सूरी उपदेशात् सत्ये सो० भीमजी संबंध।

श्रीदेवेंद्रसूरीइ श्रीखंभायत नयरि छ 'कर्म्मग्रंथसूत्र' अनि तेहनी टीका, 'सिद्धपचासीकासूत्र' अने तेहनी टीका, 'श्राद्धदिनकृत्यसूत्र' अनि तेहनी टीका, पुनः 'भाष्य' ३ तेहनी टीका, इत्यादि ग्रंथकारक श्रीदेवेंद्रसूरी सत्यपुर नगरें वि० सं० १३३४ वर्षि स्वर्ग हूओ। एहवे देवना योगथकी श्रीगुजरातइ वीजापुर नगरइ श्रीविद्यानंद सूरी पिण दिन तेरनइ गछ निराधार हुओ। पछी वडगछीक वृद्धशालिक श्रीक्षेमकीर्तिसूरी प्रमुख गोत्रीक आचार्य मील्ली श्रीपाल्हणपुर नगरि उ०श्रीधर्म्मकीर्तिनइ सूरीपद देइ श्रीधर्मघोषसूरी नामइ पाटथापना कीधी। तिणही ज अवसरि ते प्रासादमंडपि गोमुख यक्षि कुंकुमवृष्टि कीधी। एहवइ वृद्धशाला विरुदधारक श्रीविजयचंद्रसूरी तत्पट्टे श्रीक्षेमकीर्तिसूरीइ 'श्रीबृहत्कल्प'नी टीका वि० सं० १३३४ वर्षि बहितालीस हजार नीपजावी।

४६ तत्पट्टे श्रीधर्म्मघोषसूरी–

विजयवंत विहार करता तारणगिरें श्रीअजितनाथ वांदी श्रीवीज्जापुरें चौमासिं रह्या। तिहां सकल गृहस्थ सदैव श्रीगुरुमुखि धर्म्मव्याख्या सांभलि एतलि श्रीमाली वृद्धशाखा सा० पेथड उपदेश सांभली शुभाशय थकी बूज्यौ। श्रीगुरुनइ कहइ–'मुझ पूर्वं तूछ पुण्यनइ योगे करी महारइ घरे सामानपणाइ अल्प द्रव्य छइ तेह थकी मुझनें पांचमो परिग्रह परिमाण व्रत उचरावओ। आत्मार्थे माहरइ रुक्म पंचशत रापवा ते उपरांत नीयम। तिवारि श्रीसूरी कहै–'हे गृहस्थ! तुम्हारा पूर्वकृत पुण्ये करी तुम्हारे भाग्यनो उदय हुणहार छइ, तेह थकी तुम्ह निमित्तइ पांच हजार रुकमनी जयणा रापो। अधिक हूइ ते सुकृति करज्यौ।' इम कही परिग्रहप्रमाण व्रत श्रीगुरुइ उचराव्यो। तिवार पछी सा० पेथड लाटापल्ली गामि वस्त्र, गुड, घी, साकर, खाड, लवण, तेल, हींग, हल्द प्रमुख व्यापार थकी केतलेक दिने पुन्योदये राजा श्रीसारंगदेवनो कामदार हूओ। माहावृद्धि पाम्यो। तिवारइ पोताना

पुत्र झाझणनें वडाउली गामि परणाव्यो। सा० झाझण पोतानो स्वामी जाणी राजा श्रीसारंगदेवनई जुहार करवा गयो। तिवारें सारंगदेवइ सा० झाझणनी बाल स्त्रीनें ओत्सवइ वईसारी पोताने देशि, नगर, गामप्रति प्रतिमनुष्यइ सुवर्ण गदीयाणो एक रूकूकीनें ठिकाणें दीधो। तिवारि सा० पेथडनइ घरें थोडइ दिनइ घणो सुवर्ण हुओ। मनस्यु विचारइ जे माहरइ तो श्रीगुरु वचनानुसारी पांच हजार रुकानो खप छइ। पिण द्रव्य अधिक सुकृतइ देउओ। एहवइ श्रीपर्व आव्यइ हुंते परिग्रह परमाण व्रतना दायक उपगारि गुरु श्रीधर्म्मघोपसूरीनें चैत्यपरवाडि, श्रीचिंतामणी पासना दर्शनना अवसरे ७२ हजार टका सघनें पहिरामणी कीधी। सत्रवात्सल कीधो। श्रीगुरु उपदेशथकी बावन देवकुलिकायुक्त कोडाकोडी नामि प्रासाद प्रमुप ८४ प्रासाद निपजाव्या। शत जीर्णोद्धार निपजाव्या। पुनः च्यार ज्ञानकोश अणहिल्लपत्तनें लिपाव्या। त्रिण शत प्रासादनें शिपरइ स्वर्ण कलस नीपजाव्या। श्रीगुरुने वचने श्रीसिद्धाचलि १, तारणगिरे २, श्रीविजानगरे ३, श्रीपोसीना गामि ४, इडरगढि ५–ए पंच तीर्थनो संघपति हूओ। उप्पन्न घडी सुवर्णव्ययइ श्रीसिद्धाचलइ श्रीवर्त्तमान चौवीसीइ प्रथम जिनना मुखागारइ सा० पेथडे इन्द्रमाल्क पिंहरी। वर्ष बत्रीस समटः श्रीगुरुमुपि ब्रह्मव्रत लीधो। पुनः एकवीस धडी सुवर्णनी खोल, आगुल त्रणनी प्रमाण जाडी उपजावी ते खोली मूल गभारानो मंडप कीधो। इणि परि सा० पेथड पूत्र सा० झाझणें अढार भार कांचन वावरी स्वन्यायोपार्जित लक्ष्मी सफली कीधी।

एकदा एकादशी दिनें वृद्ध सप्त (?) श्राद्धी व्याख्यान अवसरइ श्रीगुरुनें वादी कहें–'चेलाओ! तुम्हे ते पाट महेल्या किम निसरी गया।' तिवारइ गुरु कहि–'हम हीज वईसओ।' तिवारें ते श्राद्ध व्यतरी कही–'अमारी नीति हुइ ते किम मिटइ।' एतलि सप्त श्राद्धीरूप व्यतरीनें चेले पाटला आवा लीवा, ते बेठे एतले श्रीगुरुइं पाटलइ थभी। धर्म्मकथा विसर्जनइ ते घरें जायवा उठी, तिवारें पाटला आसनी विलगा आव्या। लोके हास्य हुओ। ते व्यंतरी राकपणु मुखइ उचरइ–'आज पछी एहवो साधुनो अविनय नही करु।' श्रीगुरें दया आणी, पाटलाना बंधनथकी मुकी। ते गुरु वांदी घरें पुहती, पिण चित्ते गुरु उपरि रोप वहइ। एकदा ते स्त्रीए कार्मण ५ वटका साधुनें वहिराव्या। ते वटक गोचरी आलोता श्रीसूरीइ दीठा। तिवारइ ते व्यतरी गुरुदृष्टि नाठि, ते वटक श्रीसूरीइ साधुनें आहारे निपेध्या। एकांति भूमि मुकाव्या। बिजे दिनइ प्रभाति जोया ते पाषाणना वटक दीठा। पुनः केतलेंक दिनें ते व्यतरीइ श्रीगुरुनो सुस्वर जाणी, स्वरभंग करवानें गुरुनी गलनालकठि केशनो गुच्छ कीयो। एतले श्रीसूरिइ ते व्यतरी कर्तव्य जाणी गळनालकंठि रजहरण फेरव्यो। श्रीसूरिनइ समाध हूइ। उप्ण कालि श्रीवीजापुरथकी विहार करता गोधिरा नगरइ अव्या। तिहा डाकिणिना उपद्रवथकी साजनी वेलाइ साधु घटाकर्णने मंत्री मंत्रीने कपाट देता, अनें जे दीवसइ श्रीसूरी आव्या तेहि ज दिनें उतावली रात्रिइ कोइक अजाण साधुइं घण्टाकर्णनो मंत्र भण्या विगेर शालाना कपाटनी जयणा कीधी। गुरु पिण पोरसी कही पाटि सथार्या छइ, निद्राइ आव्या। एतलीं व्यतरी च्यारे मीली आवी सथार्यानी पाटि च्यारे पाइया उपाडी आकासे लेई चाली। एतलइ श्रीगुरु जाग्या, डाकिणी जाणी, चिंहु दिसि रजहरण फरव्यो। तेतलें डाकिणी आकासें मस्तकि पाट सहित अधर लटकइ। वाच दीधी–'तुम्हारइ गछइं उपद्रव नहीं करु।' प्रभात कालि सवाग्रहि मूकी। तिहा थकी सूरी विहार करता मालव देशि मांडवगढि आव्या। तिहा श्रीसूरीना उपदेशथकी प्राग्वाटज्ञाति वृद्धशापाइ स० पृथवीधर वहितालीस हेम घडी वेची प्रासाद एकवीस स्वदेसि अनि धार नगरइ प्रमुपइ निपजाव्या। ते माहि मूलनायक सकल बिंब सप्तधातुना थाप्या। श्रीधर्मघोपसूरीइ प्रतिष्ठ्या। श्रीगुरु व्रह्मडल नगरे आव्या, तिहा रात्रि अहिडस हुओ,

तिहां सघ साक्षि श्रीऋषभना मुख आगलि श्रीरत्नाकरसूरीइं स्व चारित्रपडण आलोयणिरुपि 'श्रेयः श्रिया मगल०' रूप स्तवने पचवीसी निपजावी। तेहमाहि पोताना आत्मानी शिक्षारूपइं वैराग्यना काव्य कहे छै–

वैराग्यरङ्गः परवञ्चनाय० ॥ परोपवादेन मुख्व सदोष०॥

एहवा ८ काव्यरूप आलोयण लेई लघुकर्म्मि हूइ घणा जीवनें उपगारीथका वि० स० १३८४ वर्षि सा० समर उपदेशक श्रीरत्नाकरसूरीनो स्वर्ग हूओ। यदोक्त–

मह्याडंबरजुत्तो सूरीपय वडापल्लीए जाय।
रयणायरसूरी नामेण जाओ सासणमि सिणगारो॥ ९५

इणि परि श्रीरत्नाकरसूरिसबध॥

पुन. वि० स० १३७५ वर्षि श्रीसोमप्रभसूरी स्वर्ग हुओ।

४८ तत्पट्टे श्रीसोमतिलकसूरी–

तेहनो वि० स० १३५५ वर्षि जन्म। वि० स० १३६९ वर्षि दीक्षा। वि० स० १३७३ वर्षि सूरीपद। श्रीसूरी विहार करता श्रीसिरोही नगरइ चोमासि रह्या। तिहा श्रीचद्रशेखरसूरी १, श्रीजयानदसूरी २, श्रीदेव सुदरसूरी ३–ए त्रिहु शिष्योनें श्रीसूरीइं सूरीपदि कीधा। एहवइ 'देवा प्रभोऽय०' स्तवनकारक श्रीजयानदसूरि श्रीगुरु चिरजीवीथका स्वर्ग हुया। 'नव्यक्षेत्रसमास, सत्तरीसयठाणा, श्रीतीर्थराजस्तुती' प्रमुख ग्रथकारक श्रीसोमतिलकसूरी वि० स० १४२४ वर्षि स्वर्ग हुआ।

४० तत्पट्टे श्रीदेवसुदरसूरी, लघु गुरुभाइ श्रीचद्रशेखरसूरी–

श्रीदेवसुदरसूरीनो वि० स० १३९६ वर्षि जन्म। वि० स० १४०४ वर्षि लघु मरुदेसि महेश्वर गामि व्रत। वि० स १४२० वर्षि अणहिल्लपत्तनीं सूरीपद। एहवइ वि० स० १४४८ वर्षि श्रीअहीमदाबाद नयरपणु। वि० स० १४५५ वर्षि ओ० वृ० सा० आवाभाई सा० गणिआ श्रीसिद्धाचलि सघपति हुया। पुन' वि० स० १४५६ वर्षि सा० आवाइ व्रत लीधो। श्रीदेवसुदरसूरीनो शिष्य हुओ। वि० स० १४६२ वर्षि पातसाह गज्जनीषान आव्यइ हूतई श्रीसिद्धाचलि सा० समरा थापक मूलनायकबिंब श्रीचक्रेश्वरीइ असुरनो उपद्रव जाणी अलोप कीधो। पछी सवा त्रीण पहोरे पाछो मूक्यो। पुन' रायखडि वडालीवास्तव्य ओ० वृ० सा० गोविंदइ असुरनो उपद्रव देषी तारणगिरइ श्रीकुमारपाल थापित प्रथालानो श्रीअजितनाथनो बिंब भूमीगृहे भडारी प्रासादमध्यें नवीन बिंब थाप्यो। श्रीदेवसुदरसूरीइ प्रतिष्ठयो। तिहा श्रीसूरीइ स्वपच शिष्य तेहने सूरीपदें कीधा। ते पाचेना नाम कहे छइ–पहिला श्रीज्ञानसागरसूरी ते 'आवश्यकअवचूरी १, ओघनिर्युक्तिनी अवचूरी २' प्रमुख ग्रथकारक॥ १॥

बीजा श्रीकुलमडनसूरी ते 'श्रीकुमारपालचरित्र' ना कारक॥ २॥

त्रीजा श्रीगुणरत्नसूरी जेहनी अवष्टम १, रोष २ अनि विकथा ३–ए त्रिहुनी ते नीम छइ। 'क्रियारत्नसमुच्चय १, षट्दर्शनसमुच्चय २' प्रमुख ग्रथकारक॥ ३॥

चोथा श्रीसाधुरत्नसूरी ते 'यतिजीतकल्प' नी टीकाना कारक ४-ए च्यार शिष्य श्रीगुरु चिरंजीव थकइं क्रम आयुइ स्वर्ग हुआ । अनि पाचमा शिष्य श्रीसोमसुदरसूरी विद्यमान विहरत जाणी श्रीसूरीइ श्रीसोमसुदरसूरीनें कछदेशि विहारनी आज्ञा दीधी । एतलइ श्रीसोमसुदरसूरी केतलेक दिनें देवकइ पत्तने गया । नवखडइ, श्रीसिद्धक्षेत्र, श्रीरैवताचल फरसी देवके पत्तने गया। गुरु देवसुदर गोपगिरइ श्रीवीरदर्शन करी केतलेक दिनें दील्ही नगरइं पधार्या तिहा श्रीमाली वृ० सा० जगसिंह १, भाइ सा० महणसिंहि २ श्रीतपागछइ समस्त सघनें सघराउल नीपजावी श्रीजिनदर्शननइ समयइ चुरासि हजार टका सुकृति करी सद्वस्त्र आभूषणि तिलकें ए रीते हूओ । एहवइ ओडछा नगरइ वि० सं० १४६२ वर्षि श्रीदेवसुदरसूरी स्वर्ग हूओ ।

५०. तत्पट्टे श्रीसोमसुदरसूरी–

तेहनो वि० स० १४३० वर्षे जन्म । विक्र० स० १४३७ वर्षि व्रत । वि० स० १४५० वर्षि वाचकपद । वि० स० १४५७ वर्षि सूरीपद हूओ । श्रीगुरु गुजपत्तनइ, अजारइ, माडवी प्रमुख नगरे विचरता चउनारी नगरीइ महाक्रियावत महिमामदिर गुरू प्रतिदेषी तिहा कोइक रुठइ द्रव्यलींगीइ द्रव्य देइ शस्त्रधारक पुरुषनइ गुरुघातार्थि सज्ज कीधो । ते दुर्बुद्धि वसतीइ गुरु घातार्थि गुप्तपणइ रह्यो । जेतलइ अनुचित काम करवा उद्यम करइ एतलइं प्रमाने अजूआल्इ श्रीगुरु रजहरणि निद्रामाहि पुजी पासु पालटयू । वधकारक पुरुषइ चितव्यू जे निद्रामाहि पिण जेहनइ जीव उपरइ एहवी कृपा छइ, एहवा महापुरुषनो वध करी मुझनीं कुण गति जासु । एहवो विचारी परलोकथकी बीहतो श्रीसूरीनइ नमी स्वघरे पोहतो । तिहा थकी गुरु विहार करता केतलेक दीनें मालव देशि आमझरे नगरइ आव्या । एहवइ सो० सग्राम प्रगट थयो, तेहनो सबध कहे छे, सो० सग्रामसिंह–

गुजरात देशि वढीयारखडे लोलाडा ग्रामि प्राग्वाट वृ० पूसगोत्री सोनी अवटकइ सग्राम नामे रहि छइ । ते कोइ समयानुयोगि मालव देशि माडवगढि चिकथा श्रीग्यासदिननें राज्यें, माता नाम देवा, स्त्री नाम तेजा, पुत्री नाम हांसी–ए परिवार सहित जेतलइ माडवगढि नगरनी पोलि पइसइ तेहवइ डावी दिशि महामणीधरें फुण कीधो छइ अनि तेह फुणि उपरि दुर्गा पईठि सहर्षित शब्द करइ छइ । ते अचरिज देषी सपरिवारि सग्राम उभो रह्यो। एहवइ तिहां एक आहेडी उभो छइ । ते सग्रामने देशातरी जाणी कहइ–' ए शकुनी जे नगरमा पइसइं तेहने ते महारुद्धिना देणहार छै । ' तेह चिकथा श्रीग्यासदीन हज्जूर रहइ । ते शब्द अनि शकुन साभली चित्ते धरी सहर्ष ओछाइ सो० सग्रामइं नगरपोलि प्रवेश कीधो । राजदरबार पासइ आवी रह्यो । अल्प द्रव्यथकी थोडु थोडु तेल, नाना प्रकारनो घी, गुड, हिंग, मिरची, साकर, श्वेत, रक्त वस्त्र, पुन. सोगधिक प्रमुखनो व्यापार करइ । पून्य प्रमाणि सुषि तिहा काल नीगमी । एकदा उष्णकालि चि० श्रीग्यासदीनें असवारी कीधी । एतलइं घणा तापयोगि चिकथा स्वदरवारनी वृक्षवाटीकाइ, सुदराकार शाषाइं, प्रतिशाषाइ, हरितपल्लव पत्रइ, मनोहर सुघटाइ, शीतल सुछाया दीपी उभा रही वीसामओ लेइ स्वस्त हूई । ते सहकारनें देखी आरामिकनइं चिकथा कहइ–' सब आवकू फल हइ पिण इस आवकू फल क्यु नहीं ? ' तिवारें आरामिक कहइ–' पा० सिलामित इस आवके दर्सतमे सब गुण अछें, पिण एक अपव बुरी हइ, जे फल नहीं । वाजीए आव हइ । ' एहवो वचन पुष्पपालकनो साभली श्रीग्यासदीन कहइ–' इस वाझीए आवकी सूरत देषी कूण कामका । इसै वाडीसे काट डालो । ' एहवइ पुन्योदय थकी सो० सग्राम पिण ते वाटिकानइ जुइ छइ । तिणि चिकथा कहिण साभली मनस्यु विचारि जे ए उत्तम नव-

पल्लव वृक्ष ते तूरत काढसिइ, एहनइ हु अभयदान देउ। धर्म्म प्रभावि महा मगलिक हुसइ। तिणहि ज वेल-
इद, चित्तइ सग्रामि सकल जन देषता चिकथा श्रीग्यासदीननें सिलाम करी अरजी करइ छइ–' जे ए आंब जन-
वध्य हइ पिण मुजे एक मुहमाग्या दीओ। महा पसाय करो। आवतइ जेष्ठ मासें इस आवके फल श्रीपातसा-
भेट करु।' ते अचिरज वात साभली चिकथा सग्रामनइ कहइ–'आवतई जेष्टी इणि दिनें ईस आवके फल न ला-
तओ इस आवका जैसे हवाल तैसे तेरा हवाल।' ते वात सग्रामि अगिकार कीधी। चिकथो १, अनि सग्राम
स्वघरि आव्या। पूर्वोदयना योगथकी सो० सग्रामनो अत्र थकी भाग्योदय हुओ। ते वात सघली मातानइ स्त्री
कही। हवइ सग्रामइ ते सहकारनइ पछवाडइ किनायत तथा चदूआ बधावी स्नात्रादिकइ शुचि हूइ पवित्र वस्त्र प
निर्मल चित्तें धूप, दीप, चदन, अक्षत, पुष्प ते आवानइ अर्चइ, एतले शीलगुणइ साहसीक जाणीनइ; पूर्वभवी वणि
सा० आवो नामि द्रव्यधारक इणि स्थानिकें रहितो, ते वाणियो मरण पामी इणही ज स्वद्रव्य स्थानिके बी
भवइ आवो वृक्ष हुओ। ते आवानो जीव आवी सग्रामनइ कहइ–' तें मुझनि अभयदान दीधो छई तेह थकी
तुज प्रति तूठों। ए आवाना मूल हेठि द्रव्य छइ ते तू भूमि पणि काढि लेजे। ए तूझ भाग्यनो छइ।' ते वच
सग्रामि तिम ज लघु लाघवी कलाना योगथकी माता स्त्री पूत्री प्रमुषी ते द्रव्य स्वगृहे थाप्यो। आवानी मूि
पाणी लूण माटीइ करी सिंच्यो। अनुक्रमि उष्णकालि ते सहकारी सुगध सुहर आवी तिम ज फल हूया। ते फ
यत्नें जालवी सच्चारि आछादि गीत वाजींत्रइ चि० श्रीग्यासदीनने चरणे भेटी कीधा। सग्राम हाथ जौडी कहइ
'पा० सिलामित! ए फल सुगधओ वाजीए आवके।' ते साभली ग्यासदीन त्रूठो, पाच वस्त्र देइ घरि कामदा
कीधो। ते सपदावत हूओ। एहवइ तिहा विहरता श्रीसोमसुदरसूरी आव्या। सो० सग्राम सघ समस्तना आग्रह
तिहा माडवगढि श्रीसूरि चउमासइ रह्या। सदैव सुर्येदयी 'श्रीभगवतीअग'नी व्याख्या कहइं। सो० सग्राम १
माता २, स्त्री ३ सहित निश्चल निर्म्मलइ चित्ते सद्दहणाइ साभली। जिहा छत्रीस हज्जार वार 'गोयमा! गोयमा!
एहवु नाम आवइं तिहा सो० सग्राम नामि नामि एक एक सोनइओ मुकइ। एतलइ श्रीभगवतीसूत्र अग सपूर्ि
छत्रीस हज्जार सोनइआ सो० सग्रामइनी नेश्राई हूया। तेह थकी अर्ध सोनइओ मातानी नेश्रानो। तेह थकी अ
सोनइओ भार्यानी नेश्राइ हूओ। एव सख्याइ त्रहिसठि हज्जार सोनइया हुया। सो० सग्राम श्रीगुरुनइ कहइ–'अ
ज्ञानद्रव्य लीओ।' गुरु कहइ–'साधु हुइ ते ए द्रव्य पाप दोषनु मूल जाणी एह थकी वेगलो रहि, जेह थकी
पचमहाव्रत जाइं। तिण थकी ए ज्ञान द्रव्यइ ज्ञाननो यत्न करो।'

> लिखापयन्ति जिनशासनपुस्तिकानि व्याख्यानयन्ति च पठन्ति च पाठयन्ति।
> शृण्वन्ति रक्षणविधौ च समाद्रियन्ते ते मर्त्य देव शिवशर्म नरा लभन्ते॥ १६
>
> भक्ष्याभक्ष्य तथापेय पेय वा कृत्याकृत्ययोः।
> गम्यागम्य तथा ज्ञेय हेयोपादेयकादिकम्॥ १७

जेह थकी श्रीवीरवाणी ओलखी प्राणी प्रत्यक्ष सुखनें वरइ। एहवु वचन श्रीगुरुनु साभली सोनी सग्रामे
पहिलाना त्रहिसठि हज्जार सोनईया, पुनः अन्य द्रव्य स्वघरथकी लीधो तेहनी सख्या एक लाष अनि पिस्तालिस
हजार सोनइया एकठा मेली वि० स० १४५१ वर्षि श्रीकल्पाध्ययन सूत्र १, अनि आ० श्रीकालकसूरीकथा २–एक
सचित्रीत स्वर्णाक्षरे तथा रूपाक्षरि लिखावी सकल साधु प्रति ज्ञानपुण्यार्थे ते प्रति वांचवा भणवा दीधी। केतलिक
प्रति ज्ञानकोशि ज्ञानलाभार्थि थापि। पुन, गुरुवाक्ये मालवमडले श्रीमाडवगढि श्रीसुपासनओ प्रासाद, मगसिपुरि

श्रीमुगसिपासनो त्रिंबमासाद वि० स० १४७२ वर्षि थाप्यो। भेड़, मदसोर, ब्रह्मडल, सामलीया, धार, नगर, खेडी, वडाउलड़ प्रमुप नगरइ सो० सग्रामि सत्तर मासाद निपजाव्या। इणिहि ज सूरीइ प्रतिष्ठ्या। एकावन जीर्णोद्धार निपजाव्या। इत्यादिक सुकृत श्रीगुरुवचनि सो० सग्रामइ कीधो इति।

श्रीसूरी चरित्र, तप, शीलनइ आराधताः द्रव्य १, क्षेत्र २, काल ३, भाव ४ अनुमानें विहार करता, पुनः गुर्जरि वटपद्र नगरइ, सखेहडा नगरइ, डभोइ नगरें जबूसर न०, आमोद्र न०, खभायत न०, अहिमदाबाद न०, आसापल्लीइ, कोठर्व (?) पुरइ, फुरमान वाटिकाइ, शिकदरपूरी, विसलनगरि, श्रीवृद्धनगरइ आव्या। तिहा माग्वाट व्य० स० देवराजें श्रीअभिनदनस्वामीनओ विंब सप्त धातुमयि निपजाव्यो। ते श्रीसूरीइ प्रतिष्ठ्यौं। तिणहि ज अवसरि स० देवराजिनइ हर्षि स्वच्यार शिष्यनइ सूरीपद कीधा। तेहना नाम प्रथम मोहननदन नाम श्रीमुनीसुदरसूरी नाम दीधो १। वीजा शिष्य जयउदय नाम श्रीजिनकिर्तिसूरि दीधो २। त्रीजा शिष्य श्रीभुवनधर्म्मनो नाम श्रीभुवनसुदरसूरी दीधो ३। चोथा जयवतहर्ष तेहनो नाम श्रीजिणसुदरसूरी दीधो ४। वि० स० १४७८ वर्ष छत्रीस हजार टका व्ययइ सूरीपदोत्सव कीधा। ए च्यार शिष्य युक्त श्रीसूरी नगरी गामइ स्नात्रोपदेशना दायक तिहां थकी तारणगिरि श्रीअजित दर्शन करी हणाद्र, पोसीणा नगरइ आव्या। श्रीगुरुना उपदेशें मा० व्य० सा धुलइ श्रीरपम १, श्रीशान्ति २, श्रीनेमि ३ श्रीपास ४, श्रीवीर ५—एव पचतीर्थीना मासाद पाच जुदा जुदा निपजाव्या। तिहा थकी श्रीअर्बुदाचलनी यात्रा करी श्री भार्या नगरइ आव्या। तिहा समस्त सघइ श्रीगुरुनें उपदेशी भार्या नगरइं मासाद कीधो। एव मट्टां प्रमुप नगरइ अर्बुदासनि श्रीसूरीना उपदेशथकी सप्त मासाद नीपजाव्या। एकवीस जीर्णोद्धार हूया। श्रीसूरी नीतोहडा नगरें आव्या। तिहा समति नृपकारक मासादि वि० स० १४८१ वर्षि देववचनथकी तेडावीने वाचायक्षनी मूर्ति नीतोडे मासादमा थापि। तिहा थकी श्रीसूरी जीवितस्वामी नदीपुरें, पुनः वीरवाटकें श्रीवभणवाडिनी यात्रा करी सरस्वतीनें नमी अनुक्रमि मेवाडदेशी गोडवाडखडे नाडलाइ नगरि श्रीनेमि प्रमुप सकल मासादना देव नमी तिहा वर्षाकालि रह्या। केंतलेक वर्षे श्रीसूरि राणपूर नगरइ चौमासि रह्या। पातशाह श्रीपीरोजना हूकमथी प्रा० व्य० स० धरणि श्रीगुरुनो उपदेश लही वि० स० १४६९ वर्षे श्रीराणपुरें मासादारभ कीधो। पुनः वि० स० १४९८ वर्षि चतुर्मुपमासाद सपूर्ण हुओ। तिहा श्रीसूरीइ कृष्णसरस्वती विरुद्धारक श्रीमुनिसुदरसूरी १, 'महाविद्याविडवन 'टीकाना कारक श्रीजिनकीर्तिसूरी २, कठगत एकादशाग सूत्रार्थधारक श्रीभुवनसुदरसूरी ३, 'दीपालीकादि-माहात्म्य 'कारक श्रीजिनसुदरसूरी ४—ए च्यार शिष्य युक्ति श्रीसकल, वसादि नव पाठक युक्तः पडित, गणि, रुषी युक्त इत्यादि पाच शत साधुनइ परिवारि करी सहीत वि० स० १४९९ वर्षे सा० धरण निर्म्मापित त्रैलक्यदीपिका नामि चतुर्मुपमासादें श्रीरुपभादि अनेक बिंबनी प्रतिष्ठा कीधी। प्रथम स० १४९५ वर्षि सा० धरणो श्रीसिद्धाचलि सघवि हूओ। स्त्री वर्षे १८ मइ सा० धरणो वर्षे २१ मइ श्रीसिद्धाचली मुख्य तीर्थकरनें आगली श्रीपातसाह मत्री ते स० सयाते इद्रमालनइ अवसरइं सजोडे चोथु व्रत उचरी, गुरुमुखी तिहा पोतें, स० धरणि इद्रमाल पिहिरि। पुनः स० धरणो मुख्य जिनना मुखागिलें बिहुं हाथ जोडी शुभ निर्म्मलाशयथी विनती करी किसु मागइ छइ ? गाथा—

सुलहो विमाणवास एगच्छत्ता वि मेइणि य सुलहा।
दुल्लहा पुण जीवाण जिणदयरसासणे बोए॥ ९८

इणि परि सुशील व्रत आराधतो, निरतर श्रीजिनभक्ति साचवतो अन्य घणा साधर्म्मिक पोपतो संसारनि

विपइ रहि छइ ।

श्रीगुरुइ स्वशिष्य श्रीभुवनसुंदरसूरीनइ श्रीशीरोही नगरइ चौमासानी आज्ञा दीधी । पुनः श्रीजिनसुंदरसूरी श्रीश्रीमाल नगरी चौमासानी आज्ञा कही । तिणें तिहां गुरुआज्ञा लही विहार कीधो । श्रीगुरु राणकपुरथकी वि शिष्य युक्ति नाडओल नगरी चोमासी आव्या । वर्षाकाल सपूर्ण स्वपट्टधर श्रीमुनिसुंदरसूरीनइ गछ भलावी श्रीगुरु आम नृपतिनिर्मापित श्रीवीर दर्शनइ उत्कंठित गोपनगरें चउमासी रह्या । एहवइ 'भाष्य त्रिणनी चूर्णि १, कल्याणक स्तव २, रत्नकोश ३, पुन. योगशास्त्रनो ४, उपदेशमालानो ५, षडावश्यकनो ६, नव तत्त्वनो ७, आराधना पताकानो ८' इत्यादि ग्रथनो बालावबोधरचना कारक श्रीसोमसुंदरसूरी वि० स० १५०१ वर्षे स्वर्ग हुया ।

५१ तत्पट्टे श्रीमुनिसुंदरसूरी–

तेहनो वि० स० १४३६ वर्षि जन्म । स० १४४३ वर्षे व्रत । स० १४६६ पाठकपद । स० १४७८ वर्षि सूरीपद । बाटलीना नादना एकशत अनि आठ शब्द तेहना ओलखणहार, श्रीकृष्णसरस्वती बिरुदधारक, 'श्रीउपदेश रत्नाकर' ग्रथकारक, 'श्रीशांतिकर स्तवन'निर्मापितेन तन्मंत्रितजलेन योगिनीकृत मारि उपद्रवनिवारक, सुलभबोधी प्राणिनें उपदेशदायक, श्रीमुनिसुंदरसूरि स० १५०३ वर्षे श्री कोरटानगरें स्वर्ग लह्यी ।

५२ तत्पट्टे श्रीरत्नशेखरसूरी, श्रीजयचंद्रसूरी–

श्रीरत्नशेखरसूरीनो स० १४५७ वर्षि जन्म । स० १४६३ वर्षे व्रत । स० १४८३ वर्षे प०पद । स० १४९३ वर्षे वाचकपद । स० १५०२ वर्षे सूरीपद । श्रीसूरीइ अजमेर नगर पार्श्वे वीठारपुरें श्रीनेमिबिंब प्रतिष्ठ्यौं । 'श्राद्ध-विधि सूत्र-वृत्ति १, श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र-वृत्ति २, आचारप्रदीप ३' प्रमुख ग्रथकारक । श्रीसूरीनइ वाणदेव्या दत्तवर थकी हस्तसिद्धि जाणवी । स० १५११ वर्षे स्वर्ग हूओ ॥ १ ॥

लघु गुरुभाई श्रीजयचंद्रसूरी 'प्रतिक्रमणगर्भहेतु १, वीसस्थानिकनो विचारामृतसंग्रह २' इत्यादि ग्रथकारक कुमुठीइ गामि स्वर्ग हुया ॥ २ ॥

५३ तत्पट्टे (१) श्रीलक्ष्मीसागरसूरी, (२) श्रीसोमदेवसूरी, (३) श्रीसोमजयसूरी–

श्रीलक्ष्मीसागरसूरी तेहनो वि० स० १४६४ वर्षे जन्म हुओ । स० १४७० वर्षे व्रत । स० १४७९ वर्षे प० पद । वि० स० १५०१ वर्षि पाठकपद । स० १५०८ वर्षे आ० पद । स० १५१५ वर्षे गछनायकपद । श्रीसूरीना उपदेश-थकी वागडदेशि गिरिपुर नगरें सा० साल्हे श्रीगंभीरापासनो प्रासाद निपजाव्यो । पुन. मालव देशि धारनगरें श्रीगुरुना उपदेशि प्रा० वृ० स० हर्षसिंहइ सप्त घडी सुवर्णमुकुति प्रासाद ईग्यार निपजाव्यो । एहवि गुजराति अणहिल्लपत्तनइ जिनबिंबोत्थापक सा० लूको प्रगट हुओ । सा० लुकानी उत्पत्ती कहि छइ–

यथा गुर्जरे अणहिल्लाख्य पत्तने नूतनपाटकि प्रा० वृ० धवेचा गोत्रें सा० लुको एक सामान्य पणि रहि छइ । ते पुनिमगछ गुरु सयोगइ जैनलिपि शिख्यों । तिणें वि० स० १५२८ वर्षे ज्ञानकोशि जैन सिद्धान्त वार ७ लिख्या । ते सकल ज्ञानद्रव्य लेता थका साडासत्तर दोकडा रह्या लिखवाना । सा० लुको गृहस्थनें कहें–'साडासत्तर दोकडा.... ज्ञानि पिण घणो लिख्यो छे । ज्ञानद्रव्य माहि थकी काढी आप्यौं ।' तिवारें गृहस्थ कहै–'सा० लुका तुम्हे जैन सुधर्म्मि छो, एतलो तुम्हने ज्ञानलाभ हूओ ।', शाल्इ जाइ साधुनइ कहे–'तुम्हे श्रावकनइ कहो, तुम्हारइ उपदेशि

ज्ञानकोश ए लिपावइ छइ।' साधु कहे-'अह्म पासि द्रव्य नहि अनि पुस्तक पिण ज्ञानकोशथकी गृहस्थ मागी वाची पाछा ते गृहस्थनइं दीजइ छइ। ज्ञानद्रव्य पिण गृहस्थ जाणइ।' साभली सा० लुको क्रोधी आव्यो। एहवइ सध्यानें अवसरें उत्सवइ जिनभक्ति जिनमदिरि वाजारि थयो। तिहा वामभागि कपालि मदिरनो थाम भागो। प्रभाति कुणगिरि वाजारि कोइक हाटि बेठो। एतलि तिहा गुजराति सैयद लेखक मिल्यो। ते पिण म्लेछनी पारसीना हिरफइ वरख लिखइ। ते पिण कह्युं-' सा० लुका लेखक! ए तुम्हा कपालि क्या लगा हइ?।' लुको कहि-' देवमदिरका थमा लगा।' ते साभली म्लेछ कहइ-' तुह्मारे जे दुनीया छोडिके हुये सी साहिबकी वदगी करइ कै, साहिबके हजूर मुक्तिमइ बेठो, हे अल्ला अनत ते जय हइ, असत्या नापाकीसे दुर हइ।' ते म्लेछवचन साभली सा० लुकाने चित्तइ म्लेछबुद्धि प्रगट हुइ। सा० नइ म्लेछधर्म्म प्यारो जाणी तिणें सैयदइ पीर हाजीनो आम्नाय दीधो। अनि साडासत्तर दोकडा पिण गृहस्थें दीधा। तेहना क्रोधथकी म्लेछनी बुद्धि चित्ते धरी। सा० लुको गृहस्थनइ कहइ-' ए गुरु सावद्य उपदेश छइ। जेह वचनथकी हिंसानो पोष हुइ। निरवद्य वचननो उपदेश कही नहि छइ।' अनि साधु प्रति इम कहइ 'साधुनी जेम में पिण आगिमना पुस्तक वार सात लिख्या छइ तिहा श्रावकनी क्रीयाइ जिनपडिमानो पाठ मइ न दीठो। अनि छइ पिण नही, ते माटि पचेंद्री जीव ते एकेंद्री जीवनइ नमइ अनि ए एकेंद्रीयना दलथकी कायना जीवनी विराधना हुइ। तेह थकी जिनबिंब आराधक नही। ए प्रासादबिंब सर्व मिथ्या छइ।' ते साधु कहइ-' सा० लुका! तुम्ह प्रत्यक्षपणि किम अनत ससारी थाओ छओ। श्रीसिद्धात द्रव्यथकी लि० साधु पोतानइ भणवा सिद्धातनी यत्न करइ। तिवारि ते द्रव्यनेआइ कहिवाणो। तेह थकी ठवण नीक्षेपइ अनी नदी प्रमुख सिद्धान्ते पूर्वि चोरासी अगिम कह्या छइ ते वीरनीर्वाण हुया पछी त्रिणवार वार दुःकाल तिहा ८४ आगिमनो विछेद थयो। तिवारे सकल सुविहित गीतार्थे मिली साधुमुखथकी जिम साभल्यु तिम छइ। पछी तो ते केवलीनइ गम्य, मनुष्य कुण मात्र। हा पिण नहि ना पिण नही।' इम घणइ नयइ श्रीगीतार्थि समझाव्यो पिण ते लुको कदाग्रह न मुकइ। जिनबिंबनी निंदा करतो जाणी ज्ञातीपक्ति बाह्य कीधो तेह थकी घणै क्रोधी ससारपणु तजी वि० स० १५३० वर्षे समणोपासक वेष आदरी अणहील्लवाडा सिद्धपुर नगरें आव्यो। तिहा प्राग्वाटि तपा लुकाइ ज्ञातिभेद हुओ। तिहा थकी केतलेक दीनें श्रीसीरोही अरटवाडि गामइ आव्यों, तिहा उपकेश वृद्धशापाइ सा० भाणो रहि छइ, तिणि समणोपासक सा० लुकानो साभली स्वहस्ति सा० भाणें दिक्षा लीधी। वि० स० १५३२ वर्षि प्रथम वेषधर रु० भाणो हुओ। पुनः वि० स० १५४० वर्षि श्रीसीरोही नगरवास्तव्य ओ० स० वृ० साथरीया गौनइ सा० भीदें रु० भाणा हस्ति दीक्षा लीधी एतले वि० स० १५३५ वर्षे श्रीसत्यपुरें सा० लुकानो आयु पूर्ण हुओ। तिहा थकी रु० भाणो शिष्य रु० गुजराति अहिमदावाद नगरमाहि शाहापुरी उष्णकालि आवी रह्या। तिहा रु० भीदानो उपदेश साभली लघुशापाइ सा० नानचदि रु० भीदा हस्ते दिक्षा लीधी। नानारुषि नाम दीधु। तेहनो शिष्य रूपरुषि हुओ इत्यादि कुमती छें तेहनो सग तजवो। सुमति भजवी। उत्तम जीवे स्वआत्महित कारणि चित्तई शुद्ध सद्दहणा श्रीजिनभक्ति तेहि ज मुक्तिपथ गमनरूप जाणी आदरजी। यथोक्तम्-

वरगध १-धूप २-चोक्खगहि ३ कुसुमेहि ४ पवरदीवेहि ५।
नैवेद्य ६-फल ७-जलेहि ८ जिणपूआ अट्ठहा होई॥ १

इत्याद्यष्टविधिना जिनराजपूजा ख्याता कृता सुरगणैः सदैव ।
खण्डीकृताऽसुमतिभिः कलिकालयोगात् ॥ १००

इति श्रीजिनबिंबउथापक सा० लुकाउत्पत्ति समाप्त ।

एहवि माडवी विदरें तपा श्रीसोमदेवसूरी १, खरतर श्रीजिनहससूरी २, अचलीक श्रीजयकेसरसूरी ३-ए त्रिहु गछना आचार्य तिहा आव्या । तिवारइ सोरठ देशि लुकाना मतनो विस्तार जाणी ए त्रिहु गीतार्थे मिलि वि० स० १५३९ वर्षि आपआपणा गछथकी आज्ञाधर्म्म थाप्यो। एतलइ इहा थकी आदेशनिर्देशनी मर्यादा थपाणी। पुनः पात्रमाहि सफेदानी ओली एक दीधानी आलोयण अठमनी साधुनइ कहावी । ते पहिला खरतरसघाटक समुदायमध्ये जे गीतार्थ दीक्षाइ वृद्ध हुइ तेहनइ मोटा मोटा क्षेत्रनी श्रीपूज्य चीट्ठीका देता। इम सकल सघाडे ए नीती । पछइ ते वृद्ध गीतार्थ साधु प्रमाणें क्षेत्रि आज्ञा लही साधु बे तथा च्यार विहार करता । एहवे वि० स० १५४७ वर्षि गूर्जर देशि थानधार खडई श्रीयक्षनी उत्पत्ति हुइ । श्रीसूरीद्र श्रुतगामें बल्दुठइ पाच मासाद प्रतिष्ठ्या । वि० स० १५३७ वर्षि हाडोती देशि सुमाहली गामे श्रीसूरीनो स्वर्ग हुओ ।

२. आचार्य श्रीसोमदेवसूरीनो वागड देशि वढियार नगरें स्वर्ग हूओ ।

५४. तत्पट्टे श्रीसुमतीसाधुसूरी–

तेहनो जन्म अर्बुदासनें वेलागरी नगरे मा० वृ० नारण गोत्रि सा० टिड्ड, स्त्री रुडी कुक्षे वि० स० १४९४ वर्षे जन्म । वि० स० १५११ वर्षे दीक्षा । वि० स० १५१८ वर्षे गछनायकपद । श्रीसूरीयें जेसलमेरे, कृष्णगर्ढे, अर्बुदासनइ, देवके पट्टणि, गढे नगरें, खभायतें, गधार, ईडर नगरइ ज्ञानकोश गितार्थ पासी सोधाव्या । ज्ञानजल कीधो । श्रीगुरुना उपदेशथकी मालव देशी माडवगढि मा० वृ० सरहडीया गोत्री पातशाहना द्रव्यना भडारी खजानाना भलामणिया सा० सहसा भाई सुल्तान श्रीअर्बुदगिरि उपरि अचलगढि इग्यार लाष द्रव्य सुकृति करी पाच लक्ष मनुष्यनो सघ लेई श्रीऋषभदेवनो चतुर्मुषप्रासाद नीपजावी ते माही सप्तधातु चउद शत मण प्रमाणें तेहना बिंब चार कराव्या । तेमाहि आठ बिंब काउसगीया अने च्यार बिंब चतुर्मुखप्रासादि मूलनायक श्रीऋषभदेवना जाणवा । वि० स० १४५४ वर्षे श्रीसुमतिसाधुसूरीइ प्रतिष्ठ्यो । श्रीसूरी अतिचाररहित चारित्रधर्म्मने आराधता, सुधपरूपक बिरदधारक वि० स० १५५१ वर्षे खमणुर गामि श्रीसूरीइ स्वर्ग हूओ ॥

५५ तत्पट्टे (१) श्रीहेमविमलसूरी, (२) श्रीकमलकलससूरी, (३) श्रीइद्रनदीसूरी–

ए त्रिहु गुरुभाइ तेमाहि श्रीकमलकलससूरीथकी वि० स० १५५५ वर्षे 'कमलकल्सागछ' हूओ ।

पुन श्रीइद्रनदीसूरी अणहिल्लवाडा पाटण पार्श्वे कुतपुर ग्रामें स्वशिष्यनें आ० पद देइ गामनें नामें श्रीकुतपुरसूरी नाम दीधु । तिहा थकी वि० स० १५५८ वर्षि 'कुतपुरागछ' कहिवाणो । एतलइ ए विहु लघु गुरुभाइना भिन्न गछ हुया । अनि श्रीहेमविमलसूरी जे क्रियाभ्रष्ट साधुसमुदाय गछमर्यादा शिथल जाणी देशआज्ञा देता हुया । श्रीगुरु ब्रह्मचारी चुडामणिबिरुदधारक निर्लोभतापणें सकलजनविख्यातकीर्ति सवेगरगइ समतावत पक्वान्नादिक त्याज्यता, घणा जीव लुपाकमतनइ तजी श्रीसूरी हस्ति दीक्षा लेइ तपानिश्राइ चारित्रना भजनारा हूवा । रु० गणपति, रु० श्रीपति, रु० वीपा, रु० जगा प्रमुष नवदीक्षित साधु ६८ युक्ति प्रतिबोधी तपा कीधा । त्यारें अन्य साधुक्रिया

उद्धारवा तत्पर थया। सपरिग्रहि जे आवाना पात्रा, त्रपणी, लोट प्रमुप जेहने जाणता तेहनें संघ अने पंक्ति बाहिरनी आलोयणा कहेता। एकभुक्त, उपवास, पारणि नीवी, छठ, अठम, नीवी पारणें गठीसही प्रमुख तपना कारी भूमंडलें विचरइ। एहवय समयइ कडुक नामि गृहस्थनी परूपणा हुइ। जे क्रियाशिथिल साधु समुदायमा रहि ते चारित्रियानें चारित्र न संभवे। पिण ते इम न कहिवु। इम हुति पिण गछनायकनें चारित्र संभवइ, यदागमे— 'साले नामे गगे आयरिए एरडे नाम परिवारे।' एवं चउभंगी जाणवी। हवइ कडुक गृहस्थनी उत्पती कहइ छइ—

गुर्जरात देशि वडनगरें नागरज्ञाति वृद्धशापाइ टोकर गोत्रि सा० वाणारसी, तेहनी स्त्री हरी, पूत्र कड्ओ नामि छइ। पिण ते देव गुरुनो. . .। प० हर्षकीर्तिगुरु मिलया। तिणी भव्यात्मा जाणी कडुओ बोलाव्यो। यती जाणी नम्यो। गुरु पासे रह्यो। वृद्ध जाणी कडुओ विशेष भक्ति साचवें। एहवइ गुरुआणा लही शिष्य अम्मदावादइ चौमासें गया। गुरुनी सेवा करता केतलेक दिनें गुरुमुखथकी कडूओ श्रीसिद्धांतनो समझू थयो। सचित्त त्यागी श्रावकनी करणीइं आगलो हूओ। तिवारि गुरु कहइ—'सा० कड्या! तुमे घरे जाओ संसारि थाओ।' ते गुरुवचन सांभली कड्ओ कहइ—'तुम जे हवा. . .।' सा० कड्याना वचन सांभळी योग्य जाणी प्रसन्नपणइ गुरुमुखि वीसइ वर्षे सा० कडूइ चोथु व्रत आदर्युं। श्रीपंडितजीइ कह्यु—'जे तुम्हे गुरुलोपा न थासो।' तिवारइ कड्ओ कहइ—'पिता माता जो वृद्धनागर हुइ अनि वणिकनो पुत्र छु तओ उपगारी गुरनें नहि लोपु।' तिवारे गुरें सा० कडूयानइ क्षेत्रपालनो वर दीधो। गुरु कहें—'तुमारो उदय थिरापद्र नगरइ श्रीमालि वृद्धशापा थ्रु अवटंकि छइ, अस्मिन् देसि नही छइं। तें माटि तुम्हे तिहा जाओ।' सा० कडूओ गुरु वादी आणा लही केतलेक दिनें श्रीशंखेश्वर पासनइ नमी अनुक्रमि थिरापद्रइ आव्यो। जिम श्रीपंडित श्रीहर्षकीर्तिइं कह्यु हुतु, ते तिम ज सत्य हूओ। एकदा सा० कडुओ गृहस्थ प्रति उपदेश कहइ—वि हज्जार अनि च्यार युगप्रधान कहइ छइ, पण ते नि हज्जार अनि वि जाणु, एक एह संदेह १। पुनः पांचमा आरामा सुसाधु सुचारित्री नही, ए संदेह छइ २। संप्रति वर्तमान कालि चारित्रिया साधु मुज दृष्टि आवता नथी, एतलें एहनो पिण संदेह ३। इम गुरुलोपी मिथ्याप्ररूपण करतो त्रिण थुईइ स्वमत थापतो हूओ। एतलइ गुरुवेष तथा गुरुकथन लोप्यु। तेह थकी कड्यानें शिष्यनो उदय न हुइ। एतली वि० सं० १५६२ वर्षे साधु वेषोत्थापक कड्क गृहस्थथकी 'कडुकमति' नाम प्रगट हूओ।

इति कडुकमतोत्पत्ति।

पुनः एहवइ लुंकाना गछथकी रु० विजयइ 'विजामति' नामि मत प्रवर्ताव्यो। एहवइ 'पासचंदमति' प्रगट हूओ, तेहनी उत्पती कहइ छइ, पासचंदमत—

अर्बुदासन्नि हमिरपुरनगरइ लिंबगोत्रिइ प्रा० वृ० सा० पासवीर नामी अल्पद्रव्यें भारवाहकनी आजीविका करतो रहइ छइ। एकदा हाथि कुठार लेइ पर्वतदिशि वडि पीप्पल वृक्ष चढता इंधण लेता भूमि पड्यो। देही गाढो लागो। पिप्पल वृक्ष हेठि उभो छइ। एहवइ तिहा नागुरीशापा शालाधारक श्रीचंद्रकीर्तिसूरी, तेहना शिष्य प० लक्ष्मीनिवास तेहना शिष्य एकान्तरि चोविहार उपवासकारक प० श्रीसाधुरत्न, तेहनी श्रीआबूनी यात्रा करी घाटी उतरी हमीरपूरनें मारगि आवता देपी पासवीरें वंदणा कीधी। प० साधुरत्ने योग्य जाणी धर्मोपदेश कर्यो। तेहमा वनस्पति छेद्याना मोटा पाप कह्या। ते सांभली लघुकर्मि प्राणी तुरत बूझ्यो। कणेद्र नगरें वि० सं० १५६५ वर्षे पासवीरने दीक्षा देइ रु० पार्श्वचंद्र नाम दीधु। तिहा थकी गुरु १, शिष्य २ नागोर नगरे आवी शालाइ रह्या। एकदा

ओरडइ जीर्णपत्रनी मुद्रा दीधी देषी रु० पासचद्रगुरु श्रीसाधुरत्ननइ–'इणि ओरडइ किस्यु छइ। कदहि उघाडता नथी ?।' तिवारइ गुरु कहइ–'आगि महावारावर्षि दुर्भिक्ष हुओ, ते समयइ साधु शिथलचारि जाणि तेहना पुस्तक ज्ञान आसातना देखि, तिहा वृद्धगितार्थे मिली ए ओरडामा ज्ञानना डाबा भरी यत्र कीधो छइ। ते थकी आपणे कीस्यें कामि उघाडवु नही। वृद्धवचन कुण लोपीइ ?।' एहवओ वाक्य गुरु श्रीसाधुरत्ननु सामली शिष्य रु० पासचंद्र मौन हुइ रह्यो। एक दिन गुरु नगरमा कोइक कार्यार्थि गया। एतले पासचद्र गुरुआज्ञा विगर ते ओरडो उघाडी जोयओ पुस्तक जिम तिम मुक्या दीठा। एहवें गुरु आव्या एतलि उतावलिमा आगले पडचा ते अढी पत्र लेइ रजोहरणि घालि यत्ने राख्या। पछी गुरुनें किमाड उघाड्यो। गुरु कहइ–'एवडी देर क्यु हुई ?।' शिष्य कहइ–'इमहि ज।' पछी ते अढी पत्र वाची क्षेत्रपालनो आम्नाय जाणी एकाति ठिकाणें साधनविधि कीधो। एतलइ कालो अनि गोरओ बिहु क्षेत्रपाल आवी वर दीधो। अनुक्रमि वि० स० १५७४ वर्षे रु० पासचद्रे वीरदत्त वर साहज्यथकी 'पासचद्र' नामि मति उत्पन्न।

ते माहि थकी श्रीपासचद्र शिष्य रु० ब्रह्म नामइ, तेह थकी अणहिल्लपटनि वि० स० १५७८ वर्षी 'ब्रह्ममति-गछ' प्रगट हुओ। एतलइ जे जिहा थकी फाटो हुओ, तिणइ तिहा थकी पोताना मूल गुरुनी सामाचारी लोपिनें सूत्रविरुद्ध सामाचारी प्रवर्तावी, अनें सूत्रोक्त जे पर्व ते पुनः अन्यथा कीधा। पोतानि मति भेदी करी नवा नवा गछना नाम थाप्या। तिवारि ए मति कहीइ।

इति पासचद्र मतोत्पत्ति।

हवइ श्रीहेमविमलनो वि० स० १५२२ वर्षे जन्म। स० १५३८ वर्षि दीक्षा, हेमधर्म्म नाम दीधु। स० १५५५ वर्षि गुर्ज्जरात्रि वढियारखडि पचासरा नगरइ श्रीमाली वृ० स० पातइ सूरीपदोत्सव कीधो। स० १५५६ वर्षे क्रिया उद्धरी। स० १५६८ वर्षे स्वर्ग हुओ।

५६ तत्पट्टे (१) श्र.आणदविमलसूरी, (२) श्रीसौभाग्यहर्षसूरी–

श्रीआणदविमलसूरीनो वि० स० १५४७ वर्षे जन्म। स० १५५२ वर्षे व्रत, अमृतमेरु नाम दीधो। स० १५७० वर्षे कर्पटवाणिज्य नगरइ आ० पद हुओ। स० १५८२ वर्षे देसूरी नगरइ गछनायक पद हुओ। एक्दा गुरु श्रीसौभाग्य-हर्षसूरीनइ कहइ–'आपणे बिहु क्रिया उद्धरीइ।' तिवारी श्रीसौभाग्यहर्षसूरी कहें–'आपणि शालाधारक विरुद्ध गुरुनो छइ।' तिवारइ श्रीआणदविमलसूरी कहें–' . . .' वायन्न साधुस्यु क्रिया उद्धरि सपरिग्रही जाणता ते साधुनें गछ वाहिर काडता, भव्य जीवनइ धर्मोपदेश देइ तारता, पुनः जेसलमेरु देसि जल दूर्लभ जाणि श्रीसोम-प्रभसूरीइ विहार निषेध्यो छइ। पिण लुकामत व्यापितु जाणी उ० श्रीविद्यासागरनइ विहारनी आज्ञा देता हुया। तथा जेसलमेर खरतर, मेवाति विजामति, मोरबीइ लुका, वीरमगामि पासचद्र, इत्यादि नगरि श्रीसूरीइ छठ तपनइ पारणि रक्षा तक्रनइ करवइ, पट्विगयत्यागी, महातपस्वी जाणी घणा जीव श्रीजीनपूजानी सद्दहणा आणी। पुनः श्रीसूरीना उपदेशथकी ओ० वृ० वाफणा गोत्रे दो० कर्मि चितोडगढवास्तव्य स० १५८७ वर्षे श्रीसिद्धाचलि सोल्मो उद्धार कराव्यो। श्रीसूरीइ अजयामेरु, सागानयर, जेसलमेरे, मडोवरे, नागोरि, नाडलाईइ, सादडीइ, सीरोही नगरे, पाटणि, महिसाणें प्रमुख अनेक नगरें घणा जिनबिंब प्रतिष्ठ्या। कलियुगि श्रीसूरि युग-प्रधानोपम. सम जाणिवा। यत उक्त–

वदन्ति तस्मै च जनो निरीक्ष्य निरीहितज्ञानतपःक्रियाढ्य. ।
अवातरत् सर्वगुणः किमेष श्रीमज्जगच्चन्द्रगुरुर्द्वितीयः ॥ १०१

श्रीसूरी छठ, अठम, चउथ, विंशतिस्थानक तपना कारक, षट्कायजीव यत्नावत, समतासमुद्र, जन्म पर्यंत अतिचार आलोइ । पाच दिवस अणसणइ अहिम्मदाबाद नगरइ निशापाटकि वि० स० १५९६ वर्षे श्रीआणदविमलसूरी स्वर्ग हुओ ।

अनि श्रीसौभाग्यहर्षसूरीथकी गुर्जराति विजापुर नगरइ वि० स० १५८२ वर्षे 'लघुशाली' नामें गछ भिन्न हुओ। एहवें समइ श्रीसिद्धाचलि असुरनो उपद्रव हुओ ते कहइ छइ–

गुर्जर देशि अणहिल्लपत्तन्न पासि कुणगिरि नगरी श्रीमाली लघुशापा अडालजा गोत्रि सो० भाणसी रहे छे। तेहनी स्त्री कोडाइ नामि अत्यत रूप सुदराकारे देषी चित्रथो श्रीशेरशाह आसक्त हूओ । ते स्त्रीनइ दरबारे राखी, तेहनी मोहनीइ क्षण वेगलो न रहि । एकदा कोडाइ पवित्रपणि स्मरणि स्मरइ छइ, एतलइ शेरशाह काम विहलि आव्यो। कोडा कहई–'तसबी पढति हू।' शेरशाह कहइ–'किणके नामकी?।' कोडाइ कहइ–'मेरे पीरके नामकी।' ते सामली शेरशाह कहइ–'उनकी जमी अस्थल किहा है?।' कोडाइ कहइं–'सोरठ देशि है, शत्रुजय पाहाडइ रहइ छइ।' तिवारे स्त्रीनो प्रेर्यो शेरशाह सैन्य लेइ देश द्रव्य उत्तरावा नीकल्यौ। अनुक्रमि पालिताणि नगरी आव्यो। सैन्य सर्व तिहा उतर्यौं। तिणहि ज रात्रि शेरशाह १, कोडाइ २ अनि चमरनो त्रिजनार विलाति फकीर आगारशाह नामि ३–ए त्रिहु लस्कर थकी छाना पाहाडे चढ्या। श्रीरुषभदर्शन कोडाइने हुओ। कोडाइ कहइ–'ए नेठे सो मेरे पीर।' एतलइ चित्रथइ सुवर्ण मुहरनो ढिग जिनने आगि कीधो। ते देखी महाम्लेछ अगारशाह द्वेषी हुओ, मनि विचारई जे, ओरतकें लीइ चित्रथेने काफिराणा कीया। पूतलेंकु पाउ लगा। एतलइ चित्रथो अनि कोडाई ए विहु दर्शन करी उतावलि पाछा निकल्या। अगारशाह कपटथकी पछवाडें अतरइ रह्यौ। मूढि श्रीमूलनायक उपरि गुर्जे शस्त्र नाखी आसातना कीधी। तिवारि तीर्थरक्षक देव कोप्या। म्लेछ नाठो। हिंदु जक्ष जाणी त्रासता चिहु दिशि भयकर देखि सुहाली पुगथारिइ थकी पसी देवल बाहिरइं अथडाइ हेठो भूमी पड्यौ, तत्काल निधन हुओ। प्रत्यक्ष पीर हुइ, हिन्दु यक्षनइ कहइ–'असुरनो उपद्रव जिवारि किवारइ ओक्षति हुंइ, तिवारइ मुझ ठिकाणि धूप, दीप, अबीर, अक्षत, यव, तथा सुगधरी, पुष्प मरूओ, सवा वहित रातो वस्त्र, गुलीरगनो नीलो वस्त्र, बाभण चढुओ, तथा ध्वजा सवा वहितनी, सवासेर गुड बाटि देवो, तिहा हु महा असुराणइ साहज्यकारी छु। ए तीर्थनो उपद्रव टालवा समर्थ छु। तुम्ह सकल देवनो भक्त छुं।' तिणि तीर्थरक्षक देवि असुराण जाणी स्थानीक किधु। केतलेंक दीनें चित्रथो अनि कोडाइ पाटणि आव्या। एतलि वि० स० १५९५ वर्षे श्रीसिद्धाचलि असुरनो उपद्रव हुओ, तिवारइ सकल सघ श्वेताम्बराचार्य एकठा मिली ए तीर्थे दुग्धधाराइ जैनमतना आम्नायना प्रयोग करवइ थकी श्रीगिरीथकी असुरछाया निवारण कीधी।

५७ तत्पट्टे श्रीविजयदानसूरी–

तेह गुर्जरखडि राओदेशि जामला नगरइ ओ० वृ० करमयागोत्रि सा० जगमाल, स्त्री सुर्याई पुत्र। तेहनो वि० स० १५५३ वर्षे जन्म। वि० स० १५६२ वर्षे व्रत, उदयधर्म नाम दीधु। वि० स० १५८७ श्रीसीरोही नगरइ गछनायकपद हूओ। श्रीसूरी अप्रमत्तपणि भव्य जीवनइ धर्मोपदेश देता भूमडलि विहार करता संमति

एहवइ श्रीगुरु तेजस्वी यशस्वी हुतइ उ० श्रीसोमविजय ग०, उ० श्रीविमलहर्ष ग० गछ भलामण कीधी। श्रीविजयसेनसूरीनें सत्र भलामणि कहीरावी। प० श्रीगुणहर्ष, प० श्रीकुशलराज ग० प्रमुष गीतार्थ श्रीसूरीनें 'उत्तराध्ययन, नंदीसूत्र, चउसरण' सभलावइ। अपड निश्चल शुभ ध्यानइ नमस्कार समरता, श्रीमत्तपागच्छाधीश्वर, शाहश्रीअकबरप्रतिबोधक, तत्प्रदत्त जगद्गुरुबिरुदधारक, अनेकजल स्थल तिर्यंचजतुजातिअभयअमारीपटहाभिवादनोपदेशदानमह त्यतिलाभग्राहक, निरतिचारअणशणआराधक सर्व आयु वर्ष ६९ अनि मास त्रिक सपूर्णि भट्टारक श्रीमद्धीरविजयसूरी वि० स० १६५२ वर्षि भा० सीतैकादशी दिनें सूर प्रतिबोधी स्वर्ग पहुत्ता। ते माटे श्रीसूरीनइ नाम स्मरणी कुशल श्रेणी हुइ। यदुक्त–

> श्रीअकबरभूपाल कृपालु भूशिरोमणिम्।
> विदधे यश्च तस्मै स्तात् श्रीहीरगुरवे नमः॥ १०४

५९. तत्पट्टे श्रीविजयसेनसूरी–

तेहनो वि० स० १६०४ वर्षे ओ० वृ० इणवल गोत्रि सा.. कुक्षि जन्म। स १६१३ वर्षे व्रत। स० १६२६ वर्षे प० पद। वि० स० १६४१ वर्षे गछनायकपद हुओ। ते श्रीसूरीइ अहिम्मदाबादथी जिहा गिरपुर नगरें पातीसाह श्रीजिहागीरनी सभाइ लाहोरना अपर मति शास्त्रवादि जीत्या। तिवारइ जिहागीर साही घणइ आदरथकी श्रीगुरुनें 'सवाइ जगतगुरु' विरुद दीधो। एहवइ स० १६७१ वर्षे अहिम्मदावादी नगरइ हाजापाटणि चतुर विधि सघसाक्षि उ० श्रीधर्म्मसागरइ पाच बोल्नो मिथ्या दुःकृत दीधो। पुनः श्रीसूरीनी आज्ञा लही समस्त गीतार्थ मिलि 'सर्वज्ञशतक १, धर्म्मतत्त्वविचार २, प्रवचनपरीक्षा ३, इरीयावहीकुलक ४'–प्रमुष ग्रथ...ज्ञानकोशी अहिम्मदावादि खभायति, पाटणि, गधारी प्रमुष नगरइ थाप्या। वि० स० १६६९ पत्तनि उ० श्रीसोमविजयने सागर आश्री वात सूरीनें सघातइ विरोध हुओ। वि० स० १६७१ वर्षे श्रीखभायति पासि नायर गामि श्रीविजयसेनसूरी स्वर्ग हुया।

६०. तत्पट्टे श्रीविजयतिलकसूरी–

तेह गुजरात देशि वीशल नगरइ प्रा० वृ० हलसर गोत्रि सा० देवराज, स्त्री जयवतीगृहे स० १६५१ वर्षे पुत्ररत्न जन्म्यो। वि० स० १६६२ वर्षे पावइ गढि व्रत, रामविजय नाम। स० १६६७ वर्षे प० पद, जिर्णगढि हुओ। स० १६७३ वर्षे खभायते गछनायक हुओ। तेहना अमात्य उ० श्रीसोमविजय ग०, उ० सिघचद्र ग०, प० श्रीश्रीहर्ष, प० हर्षाणद, प० राजविमल प्रमुष गीतार्थयुक्त श्रीमरुधर देशि विचरें। एहवइ वि० स० १६७३ वर्षे वातसूरी थकी 'वातपक्ष' कहिवाणो। ते माहि थकी वि० स० १६८६ वर्षे अहिमदावादी उ० श्रीधर्म्मसागर, तस्य शिष्य प० लब्धिसागर तस्य शिष्य प० नेमिसागर, उपाध्याय श्रीमुक्तिसागर थकी 'सागरगछ' कहिवाणो एहवइ लुकागछ थकी वि० स० १६७२ वर्षी 'ढुढकमती' हुओ। वि० स० १६७५ (?) वर्षे श्रीसीरोही नगरइं श्रीविजयतिलकसूरी स्वर्ग हुओ।

६१ तत्पट्टे श्रीविजयानदसूरी–

मरुधर देशि रोहा नगरें स० १६४२ वर्षे चायण सा० चहूआण गोत्रि सा० श्रीवत भार्या सिणगारदे पुत्र। तेहनो जन्म... । सा० श्रीवतइ श्रीहीरविजयसूरीना मुखथकी उपदेश सामली ससारनो स्वरूप असार जाणी दक्ष

मनुष्य सवाति व्रत लीधो। तेह देशना नाम-मुष्य पिता सा० श्रीवत वृद्ध, तेहनु नाम रु० श्रीवत दीधो। इवी च्यार पुत्रना नाम वृद्ध पुत्र ते धारो तेहनु नाव धर्मविजय, २ बीजो पुत्र अजो तेहनु नाम अमृतविजय, ३ त्रीजा पुत्र मेघानु नाम मेरुविजय ४, लघुपुत्र वर्ष ९ नो कल्लो नाम तेहनु नाम कमलविजय ५-ए पाच पिता सहित पुत्र ते। पुनः सा० श्रीवतनो बनेवी स० सादूल वृद्ध छै, माटि रु० सादूल नाम दीधो ६, तस्य पुत्र स० भक्ति तेहनो नाम भक्तिविजय १, सा० श्रीवतनी वहिन रगादे तेहनो नाम रगश्री दीधो ८, सा० श्रीवतनी पत्नी सिणगारदे तेहनो नाम लाभश्री दीधो ९, सा० श्रीवतनी पूत्री सहिजा तेहनो नाम सहीजश्री दीधो १०-एव दश सबधी साथी न्यारसें अनि सत्तावन मण घृति ज्ञाति, गोत्रि, मित्र, साधर्मिक प्रमुख सप्तक्षेत्र पच जीर्णोद्धार इत्यादि सुकृति करीनें श्रीहीरें स्वनेश्राइ श्रीसिरोही नगरह श्रीरुपभचैत्ये स० १६५१ वर्ष व्रतइ, पहिला कह्या ए नाम दीधा। ते माहि लघु कमलविजयनें श्रीगुरुए समतादिक गुणि योग्य जाणी उ० श्रीसोमविजय ग० ने वाचनाइ भलाव्या। अनुक्रमि पुन्योदयि पट्शास्त्रना ज्ञाता हुया। तिवारें श्रीविजयसेनसूरीइ अणहिल्लपत्तनइ श्रीपचासर पासप्रासादे कमलविजयनें प० पदि कीधा। वि० स० १६७५ वर्षे श्रीसिरोही नगरइ गछनायकपद हुओ। प्रा० वृ० पोल्व्यिा गोत्रि स० वीरपाल सुत स० आबा, भाइ स० मेहाजलि पदमहोत्सव कीधो। सकल सहिर पुनः साधर्मिक सतोपी मनुष्यि मनुष्यि पीरोजी एक एक दीधी। श्रीसूरीनें उपदेशि रजितथकी श्रीसिद्धाचल १, गिरीनार २, तारणगीरी ३, अर्बूदगीरी ४, घोघा नवखडपास ५, शखेश्वरपास ७, वभणवाड ८-एव सप्त तीर्थनो सघाधिपति हुओ। ते सघनो वर्णन। कवित-

सत्तर सहस्र गुजरात सुभट मिल सोरठ सारी।
हाटा बद्ध हज्जार वडकै वडकै व्यापारी।
खभायत निजखेत सहिर घोघा सारीखा।
हील्ला झाल्ला हलख पांति कीधा पारिखा।
पूरव उत्तर दक्षिण पश्चिम कृपाण कोइ न सकि कलि।
ताहरि सघ वीरपाल तणा मेहाजल दुनीआ मली॥ १०६

श्रीसीरोहीइ, नाडलाइ, भमराणी, चचरडी, आबु प्रमुखि एकसठि प्रासादि जीर्णोद्धार कीधो। वि० स० १६८२ वर्षे श्रीशातीलपुर नगरें श्रीसघाग्रही विजयदेवसूरीने श्रीविजयानदसूरीनें गछमेल हुओ। पुनः स० १६८५ वर्षे अणहिल्लपटनि श्रीविजानदसूरीथकी कपट करीनें श्रीविजयदेवसूरी गछभेद करी सागरनें गछमाहि लेइने देवसूरी जुदा हुया। २ गछ हुया अणहिल्लपत्तनि। श्रीविजयानदसूरीयें सखेंडइ नगरइ श्रीआसापुरीप्रासाद दत्तवर थकि स० १६९१ वर्षे पचागुलीनो उपद्रव देवसूरीइ कीधो। ते श्रीसूरीइ आसपुरी देव्याइ उपद्रव टाल्यो। जय हुओ। श्रीगुरुगछि मगलश्रेणि हुइ। केतलेक दिने मुगसी पासनी यात्रा कीधी। श्रीगुरुने अतरीक पासनी यात्रानो हर्ष हूओ। केतलेक वर्षे दक्षिणे बुहरानिपुर नगरे चोमासइ रह्या। खानदेशी कुकणें विचरता सूरति चोमासी रह्या। अनुक्रमि कान्हमि विचरता खभायति तत्शापा श्रीअक्बरपुर नगरें श्रीसूरी सघाग्रही चउमासि रह्या। तिहा श्रीमालि वृ० शापाइ परिष वजीयाना आग्रहथकी श्रीविजयराजसूरीने भट्टारकपद दीधो। पा० वजीयायें पदोत्सव कीधो। श्रीगुरुनी आज्ञा लही श्रीविजयराजसूरीइ दोसी मनीयानें आग्रही अहमिदावाद नगरें विहार कीधो। एकदा श्रीगुरुमुखि पा० वजीओ सभा समक्ष धर्मोपदेश समाधिपर्णि साभलि छइ। एहवें वाणोतरइ आवी

वधामणी दीधी–'जे लोहना गजते अधिकरणें भर्या जिहाज समुद्रि आव्या।' वाणोतर कहे–' शेठजी लाभ वहोत छे।' एतले श्रीगुरइ खाडा, कुसि, कुदाला, छरी, तेहना शास्त्रे पाप देखाड्या। श्रीगुरुनइ वचनइ रंजितथकी घणा जीवनइ असमाधिना कारक एह लोहना गजनइ समुद्रमाहि जन्सरणि कीधा। गुरुमुखि एहनी आलोयणि लीधी। जो तेहनइ समुद्रमाहि ...जहा लगइ चिरजीवी रहु आयु पर्यंत जण जण दीठ मजाल्लानी जपमालीका देवी पूर्णार्थि। पुन. श्रीसूरीनें उपदेशि समुद्रे जलचर जीवनी घणी यतना कीधी। श्रीगुरुनइ एहवा परोपकारी देखी प्रथम गुणवाणीया प्रमुख ए आशिर्वचन कहे छइ–

> श्रीमज्जैनप्रवचनरहस्य प्राकाशि [येन] वचनगुणम्।
> श्रीविजयानन्दसूरिर्जयतु चिर सघहितकर्ता॥ १०६

एहवइ आशापुरी दवरथकी स्वआयु नजीक जाणी कर्म्मरोग टालवा हेति धर्म्मरूप ओपध धैर्य्य धरी करता हुया। गछनी भलामणी उ० श्रीहीरचद्र ग०, उ० श्रीवीजयराज ग० ने दीधी। सघनी हित शिक्षा श्रीआचार्येनें कहावी। श्रीगुरुनें उ० श्री कुशलवर्धन, उ० श्रीदेवविमल ग० प्रमुख गितार्थ ' उत्तराध्ययन, चउसरणि, निझामणि चउद पूर्वनो सार नमस्कार ' करता सवी आयु ६९ वर्ष सपूर्णि दिन ३ अणसण आराधी स० १७११ वर्षे आसाढ कृष्ण प्रतीपदइ श्रीअकबरपुर नगरइ बालपणि व्रतधारक जल थलचर तिर्यचजीवरक्षाकारक युगप्रवरसम विरुदग्राहक श्रीगुरुहीरवचनाराधक सूरीश्रीविजयानदनो स्वर्ग हुओ। यथोक्तम्–

> शुद्धप्रागवाड्वशाभ्रप्रभासनदिवाकर'।
> दद्यादानन्दमानन्द सद्गुरु सनतोदय॥ १०७

६२ तत्पट्टे श्रीविजयराजसूरी–

तेहनो गुज्जर देशि कडी नगरें श्रीमाली वृ० शाषाइ गोत्रि मणिकार अवटके सा० खीमचद तद्गेहिनी गमतादे पुत्र स० १६७९ वर्षि जन्म, नें नाम कुवरजी। स० १६८९ वर्षि वजीरपुरइ व्रत, नाम कुशलविजय। स० १७०१ वर्षे चापानेर नगरइ पडितपद हुओ। स० १७०४ वर्षे श्रीसिरोही नगरें आचार्यपद हुओ। श्रीमालीवृद्ध-शाषा पा० वजियइ पाटमहोत्सव कीधो। प्रा० सा० राउते पदोत्सव कीधो। स० १७०६ वर्षे श्रीखभायते भट्टारकपद हुओ। श्रीसूरीनइ उपदेशि श्रीअहिम्मदावाद नगरें वालेला गोत्री चापानेरी अवटकि श्रीमाली वृ० शाखा दो० मनीया सुत दोसी शातिदाशि दुर्भिक्षना योगथकी घणा माणी सीदाता जाणी स० १७२० वर्षे दुर्बल रक ससारीनें मास १९ पर्यंत वस्त्र, अन्न, घृत, गुड, खाड, शरकरा, वतुपान, गृह नानाविधि ओपध दानशालाइ आपवइ करी अभयदाने आधारपणें हूयो। यथोक्तकाव्यम्–

> व्योम(?)युग्ममिताब्दवाहशशधर(१७२०)प्रोज्जृम्भमाणप्रथ
> नानादेशदरिद्रदीनजनताऽन्नादिप्रदानायुधे।
> सत्रागाररणाङ्गणे निहतवान् दुर्भिक्षविश्वद्विप
> हाजापाटकमण्डन स जयति श्रीशातिदासो भट॥ १०८

अथ कवित–

> गयो मह्रा निर्मलो चैत्र धुधलो दीठो ... ,
> भादरवे न भीजवी आलुसाइ मुइ मेह्ली आमा ।
> चाल्या महिना च्यार भुइ-नर-वहोत हुआ निरासा ।
> विपरीत काल वीसोतरो प्राणिमात्र पोषण भरण ।
> शातिदास मनीया सुत तसु कवी आया तोरे शरण ॥ १०९

अर्बुद उपरि स० १७२५ वर्षे स्वनामे श्रीशातिनाथनो प्रासाद नीपजाव्यो। पुनः श्रीहमीराचल, तारणगिरि आरासणि, नदीय, राणकपुर, सखेश्वर, भीलडीक–एव सप्त तीर्थइ जीर्णोद्धार कीधो । पुनः स्फाटिक शा‍ि प्रमुख बिंब २१ थाप्या । स० १७४२ वर्षे श्रीविजयराजसूरी स्वर्ग हुआ ।

६३ तत्पट्टे श्रीविजयमानसूरी–

तेहनौं दक्षिण देशि बुहरानपुर नगरे मा० वृ० दो० वाघजीश्री स्त्री वीरा पुत्र स० १७०७ वर्षे जन्म। स० १७१७ वर्षे मालपुरे व्रत । स० १७३६ वर्षे श्रीसीरोही नगरइ सा० धर्म्मसी धनराजि आचार्यपदनो उछव कीधो । स० १७४२ वर्षे नाडलाइ नगरे गछनायक पद हुओ । एहवइ अणहिल्लपाटण पासें सडेर नगरइ स० १७४७ वर्षे प० नयविमलथकी ' सवीज्ञमत ' हूओ । स० १७७१ वर्षे श्रीसाणद नगरें श्रीविजयमानसूरी स्वर्ग हुआ ।

६४. तत्पट्टे श्रीविजयऋद्धिसूरी–

वृद्ध मरुधर देशि भेटाहल्ला नगरें श्री० वृ० लिंग गोत्रि सा० जसवत स्त्री यसोदा तेहनो पुत्र स० १७२७ वर्षे जन्म । स० १७४२ वर्षे पिता सा जसवत पुत्र सहित श्रीरुकपुरें दीक्षा । स० १७६६ वर्षे श्रीसीरोही नगरें आचार्यपद हूओ, सा० हरराज खीमकरणइ पदोत्सव कीधो । स० १७७१ वर्षे गछनायकपद श्रीसाणद नगरें हुओ । महेता देवचद, महेता मदन तिणें पाटमहोछव कीधो । स० १८०६ वर्षे श्रीसूरति वदरे स्वर्ग हुओ ।

अथ आसीर्वाद कही छैः–

> जयन्तु गुरवो जैनास्तीर्थक्षेत्र शिष्यमततौ ।
> येषां नाम्नापि जायन्ते रसना सफला सताम् ॥ ११०
> ससारवाञ्छां सतज्य भूयसी जग्राह दीक्षा शिवभूतिदा वराम् ।
> ज्ञानामृतापूरितमानसः सन् नित्य पुनातु प्रतिवासर गुरुः ॥ १११
> पट्टावलीय रचिता सुयत्नैः शृणोति यो मञ्जुलभावभक्त्या ।
> तस्यालये चिन्तितकामसिद्धि' श्रीकल्पवल्लीव फलानि जन्यात् ॥ ११२

इति श्रीसुविहितनतपागछपट्टधरनाम्नी श्रीवीरवंशावली समाप्ता ॥

लोंकागच्छ पट्टावली ।

पाटणरा वासी रूपजी साह कोडीधज हुवा। साधारी सगतसु धर्मदेशना सुण मतिबोध पायो स० १८२०। अढारै गुमासता सगातै रूपजी साह आपण पैह लकै लेदेरै मतिबोधसु दीक्षा लीनी। इण भात लकौ लेही हुतौ। तिको पुस्तक लिखतौ। सो एक दिन शास्त्र लिपता मतिमारौ आलावौ छूट गयौ, तरा वादस्थल हुवौ। मतिमारौ आलावौ उथापनें साधा सगते विवाद करै, नइ दयाधर्म मूल थापीयो। हिंसा जिहा धर्म नहीं इसी मरूपणा करनै रूपसी साह पाटणरा वासी क्रोडीधज, तिणोंनै मतिबोध देनै माहें द्रढ कीनी। तिणारा रूपसी साह कह्यौ दीक्षा ल्यौ ने दया मू० मवर्तावौ।

तरा लकैजी कह्यौ–'हु राक म्हारौ उपदेस कुण मानै?' था सरीपा दीष्या लेनै धर्म चलावै तौ धर्म चलै। जद रूपसी साह १८ मोटा सेठा गुमासता साथै दीक्षा लीनी। आपण पैइं जनै धर्मपरूपणा गुजरातमा कीनी '*लाकामत*' थापीयो। *महामभावीक श्रीलाकागच्छरा थापणवाला श्रीरूपऋपजी हुवा।*

१. श्रीरूप ऋपजी। २. तत्पट्टे श्रीजीव ऋपजी।

३ त० श्रीकुवरजी ऋषि। ४ त० श्रीमल्लजी।

५ त० श्रीरत्नसीजी। तिका वीवाहमहोच्छव वरनो लीपावता दिल्मा हिंसा देपनें ससारसु विरक्त हुवा। अस्त्री छोडनै श्रीमल्ली उण स्त्रीसहित भेला दीक्षा लीनी। इसा मभावीक हुवा।

६. त० श्रीकेसवजी। ७. त० श्रीसिवजी ऋपि हुवा।

८ त० श्रीसिंघमल्लजी। ९. त० सुपमल्लजी।

१०. त० श्रीभागचदजी। ११. त० श्रीबालचदजी।

१२ त० मोणकचंदजी। १३ त० पूनचदजी।

१४ त० श्रीजगचदजी पचछरा वासी चुतरचदजी पासै चारित्र लीनौ। तिवार पछी जोग्य जाण आचार्य श्रीपूनचदजी आपरौ आउपौ अल्प जाण स० १८७६ वैशाप सुदि ८ गुरौ श्रीजेसलमेररौ श्रीगुजराती लाकागच्छरे श्रीसघकृत महामहोच्छवपूर्वक आचार्य श्रीपूनचदजी आपरै पाटै आचार्यपद दीनौ इत्यादि।

श्रीआचार्य श्रीजगचद्रजीरी आज्ञामै श्रीसघ मवर्त्ता॥ शुभ भवतु॥

पार्श्वचन्द्रगुरु पट्टावली।

श्रीसाधुरत्न पन्यास तत् सि(शि)ष्यगरिमा हि लब्ध्यम्बुधि परमभट्टारक श्रीपाश्वचन्द्रसूरी १। तत्सम्बन्धो यथा– अर्बुदाचलपार्श्वे हमीरपुरनगरे प्राग्वसे साहा वेला, भार्या विमलादे, तत्सुत पासाभिधान सवत् १५४० जन्म, सवत् १५४९ पण्डितश्रीसाधुरत्नपार्श्वे दीक्षा। सवत् १५५४ नइ उपाध्यायपद, सवत् १५५८ क्रिया-उद्धार, सिद्धान्तोक्तक्रिया पाचमि सवच्छरी, चतुर्मासु पूर्णिमाइ। देवन्देवीना काउसग्गादि मिथ्यात्वऊथापक, विधिवादादिक ११ बोल प्रगटकरण।

आचाराग १, सूयगडाग २, प्रश्नव्याकरण ३, ठाणाग ४, तन्दुलवेयालीय पइन्नादि ५–एहना वालावि(व)बोध कीधा। श्रीषेत्रसमासना टबा कीधा। सघयणीना टबा, नवतत्त्वना बालावि(व)बोध, चउसरणबालाविबोध, आवश्यकना टबा कीधा। आराधना वडी १८ ढालनी ग्रथ ७०० प्रमाण कीधी। एषणासतक ग्रथ कीधउ। जबुदीवपन्नत्ती वृत्ति १६०० शुद्धकर्ता।

जोधपुरे राठउडवशे रायमल्लदेप्रतिबोधक, शुद्धपरूपक, शुद्धक्रिया जिनोक्तकरण, कटुमतिप्रतिबोधक, वचनसिधि(द्ध), देवतादि आकर्षण(क), विद्यासास्त्रपारग, बहुश्राद्धप्रतिबोधक, सवत् १६१२ वर्षे मागसिर शुदि ३ दिने अणसणसहितेन निर्वाण प्राप्तः ज्योधपुरमध्ये

इति श्रीपार्श्वचद्रसूरिसम्बन्धः।

तत् सिष्य श्रीविजइदेवसूरि तश्या(स्य) साषा। श्रीरुणनगरे सवालाष चिंता[म]णि त्रिभिर्वर्षे पठित्वा विद्यापुरे राजसभाया वादजी(जे)ता दिन १५ यावत्। तत्र आचार्यपद प्राप्तः, श्रीविजइदेवसूरी नाम स्थापना कृता। विहाथी श्रीपूजजीकइ पधार्या। पछि श्रीपूजि आचार्यपदस्थापना विहानी राषी। पुण कर्म्मयोग्यइ श्रीपूज्य छता देवगत हूआ, पाट न चालयउ।

श्रीपासचदसूरिनइ पाटिइ श्रीसमरचद्रसूरि। अणहिल्लपत्तने श्रीश्रीमालीज्ञातीय दोसी भीमा, भार्या वल्हादे, तत्सुत सवत् १५८२ जन्म, सवत् १५९५ दिष्या, आबालब्रह्मचारी, महासिद्धाती, बहुरागागी सवत् १५९९ उपाध्यायपद, सवत् १६-५ आचार्यपद, सवत् १६२६ वर्षे वैशाप वदि १ दिने निर्व्वाण प्राप्तः।

श्रीसमरचद्रसूरिनि पाटि श्रीरायचद्रसूरि जबूग्रामे श्रीश्रीमालीज्ञातीय दोसी यावड, भार्या कमलादेवी, तत्सुत राजकुमारे सवत् १६२६ दीक्षा। श्रीविमलचद्रसूरि। तत्सिष्य श्रीजइचदसूरि। तत् सष्य (शिष्य) श्रीपद्मचन्द्रसूरि विराजमान। श्रीराजनगरे वास्तव्य श्रीश्रीमालीज्ञात(ती)य सघवी शिवजी सुत सवत् १६९८ वर्षे वैराग मने श्रीजयचन्द्रसूरिपार्श्वे दीक्षा ग्रहिता, जोग्य ज्ञात्वा स्वपदे स्थापिता, महान् महोच्छवेन शुभजोगे शुभदिने सा साकर चुधरी मेयइ महोच्छव कृतः॥

इति श्रीगुरुपट्टावली सपूर्णा।

लिपिताऽस्ति स्ववाचनार्थे श्रीइहमदपुरे नगरे॥

स्थानकवासी पट्टावली ।

श्रीसर्वज्ञाय नम ।

श्रीमहावीर निर्वाण पुहुता पछी श्रीसुधर्मास्वामि पाचमा गणधर पाटि वइठा । श्रीसुधर्मस्वामि पछी श्रीजबूस्वामि । जबू पछी केवलज्ञान विछेदत(न) गयु । तेणे लोकनें विषइ एक अधारो हूओ । तिवार पछी श्रीप्रभवस्वामि श्रीसिज्जभव आदि देई । त्रावीस पाट लगइ निरतु मारग चाल्यु । त्रेवीसमें पाटि श्रीआर्यसाधु जेणें 'पन्नवणा' ऊधर्यो पूरवमाहिथी । तिवार पछी छ पाट लगें चौद पूरव रह्या, अनइ वैरस्वामि लगें दस पूरव रह्या । तिवार पछी पूरव विछेद गया । वरस १००० जगमाहिं बीजु अधारु हुउ । पछइ केतलाएक कालें देवर्द्धि खमासमण चारित्रीयानि अल्प धारण जाणी सिद्धान्त पुस्तकें लिखु । तेहवि कालनें अवसरें बार वरसी एक दूकाल पड्यो । ते अन्न दुर्लभ हुआ पछइ उत्तम ऋषि हुता, ते सथारो करी, देवलोक पुहुता, अनइ भि(भ्र)ष्टाचारी रह्या ते कदमूल फल पत्रादि भखी रह्या । तेणें कालें चद्रगछ विवहारीया धनाढि हुआ । तेहनइ धान अनइ धननु अत आव्यु । पछइ विस भखवा लागु तिवारें गुरें जाण्यू पछइ कह्यु–'अम्हे तुम्हनें जीववानु उपाय कहु जु तुम्हें च्यार पुत्र मुझनइ आपु ।' सेठि कह्यु–'आपस्यु ।' पछइ कह्यु–'आज थकी सातमे दिन धानना वाहण आवस्यइ ।' ते तिमज हुओ । च्यार पुत्र लेइ वेसि पहिराव्या । जेहथकीं विद्याधरादि च्यार गछनी थापना हूई । गुरें निमित्त भाख्यु थु ते दक्षण समुद्र दूरडा भणी वाहणें जुआर आवी जुआरे जुग उधर्यो, ते जुआरिनु नाम तिहाथी देराणु जुआरि । पहिलउ आचारगि बीजु नाम दीधु छइ । पछइ साध भि(भ्र)ष्टाचारी रह्या था ते दक्षण दिस आव्या, चद्रगुप्त राजाना सुहुणा विवहार सूत्रनी चूलिका मध्ये कह्यो छइ । तेहनइ अणुसारें थोड़ सो लिखीए छइ–दखण दिस धर्म रहिसइ तथा कुमति करी डाडा साही नाचस्यइ । चेइनी थापना करस्यइ तेहना द्रव्यना आहार करस्यइ । मालारोपण करस्यइ । उज्जमणा करस्यइ । रातीजगादि करस्यइ । च्यार वर्णमाहि वाणीयानें कुलें धर्म हुस्यइ । सूत्रनीं रुचि अल्प मनुष्यनि हुस्यइ ।' ए आदि घणा बोल छइ । ईंनइ जूना भडार भरुयचि तथा खभातइ पाटण छइ, ते मध्ये नीसरी छइ । तेहना केतला बोल लिखीए छइ–

श्रीवीरमोक्षात् वर्षे ४७० विक्रमात् श्रीकालिकाचार्य ३३५ वर्षे निगोदव्याख्या[ता], ४५३ वर्षे कालिकाचार्येण गर्दभ वीजिता । ५२३ वर्षे कालिकासुरि पाचमथी चउथइ पजूसण आण्या । ६०९ वर्षे दिगबरमत उत्पत्ति । ७८० वर्षे स्वातिसुरिभि॰ पचकार्थं पूर्णमाथी चउदस पख्य थाप्यउ । ८८० वर्षे देहरा प्रतिमा धरममडाणा । पाठ १ सवत् ४१२ चैत्यस्थिती । १००८ वर्षे पोसाल मडाणी । १०५५ हर(रि)भद्रसूरि १४४४ बीज होम्या । सवत् ११५९ पूर्णिमापक्ष । सवत् ११०१ गुरथी चेलु पुस्तक दशवैकालक देखी अलगु थयु । चाउडनि देहरि वाद कीधु । तेणें 'चाउडगछ' कहिवाणु । चामुडास्थिति । सवत् १२४४ जिनवल्भ वाद कीधु । सवत् १२०१ वाराणि नीसरिउ । सवत् १२०४ वाद कीधु, पछइ जीप्यु, पछइ जिनवलभ 'खरतर' कहिवाणु, बीजा कुडा कहिवाणु । पछइ जिनवलभइ सघ पटा कीधा । पछइ मरावी नाख्यु । खरतर । सवत् १२१४ आचलिका । सवत् १२३६ साधुपूर्णिमापक्ष । स० १२५० आगमिक । सवत १२८४ वस्तुपाल–तेजपाल ।

सवत् १२८५ तपा गाढ क्रिया इणि परि ए आदि गच्छ मडाणा । तेहनों केतलाएक अवदात लिखीए छइ पालीथकी श्रावकनी ताई व्रत साहरी दीधउ । तथा पाचसइना मस्तक कणयरनी काबस्यु पाड्या । तथा नरदास केलानी कथा कहि छइ । मैथुन सेववा, रात्रि आहार करवा, आबा केला फल खावा । चोरी लेवु । मृखावाद बोलवा । खिडा तरवारि झालवा । खासडा पहिरवा । वाहली खणवी । देहरामाहिथीं आपणें हाथि करी द्रव्य छेदवा ।

भमरी घर भाजवा। अनतकायनु लेवु-ए आदि घणा बोल छइ। ते मध्ये केतलाएक डीलि कीधा, केतलाएक इहीने लपटे थके शास्त्रनें विपइ जोडिउ। एहवा अणाचारी असाध देखी कोई कोई महातमा भलि आचारि प्रवर्त्तता। ते कुण कुण सिंयपटाना करणहार ए कथा मोटी छइ, पणि थोडुसु लिखीए छइ-गुरुनीं पोथी चेली वाची। तिवारि पछीं खोटीं जाणी पोसाल बाहरि निसर्युं। भल्इ आचारें रहिवा लागु। तिवारें गुरें चर मोकली मराव्यु। पछइ तेणि सत्रपटो जोडिउ। तेहनी गाथा आकृष्ट मुगत्र मोनानी(?)' इत्यादिक जोडी छइ।

एहवा हुता पणि रही न सकइ। ते किणि कारणें। जु श्रीमहावीरदेव निर्वाण पुहुता, तिवारें रासि भसमग्रह लागु। ते कहु जु २००० वर्षइ ल्गइ। साधु-साधवी श्रावक श्राविका पूजा सत्कार नहीं पाम्यइ। ते २००० वरस पूरा हूआ आसरिसइ। तेहवइ ऋषि श्रीनाना हुआ। वरस १५ तथा २० बाटि। तथा ऋषि श्रीभीमा, ऋषि श्रीरतना हुआ, तेतले साह ल्कु। नाणावट माडतउ ते कन्हलि तुरकि तुरत महिमुदी १ रा दूकडा लेई, चिडी ते देखीता लीधी। तेहनइ वैराग ऊपनु। व्यापार करवाना पचखाण करी पोसालि आव्यु, पछइ लिखवा लागु। लिखता लिखता आपणि पोति सूत्रनीं परति कीधी, ते साह ल्कु भणणहार हुतउ, पछइ मोटका साह रतनसी, पा० ल्खमसी प्रमुख ने आगलि कह्यु, ते पातिसाह लगइ वात हुई। पछइ अहमदाबादमध्ये सिद्धांतनु दगलु करावी कुमारी कन्या तीरइ एक परति कढावी, तेणें कन्याइ दशवीकालिकनी परति काढी। ते परिति पडितें वाचीनइ, श्रीदया मूलधर्म थाप्यु। देहरा प्रतिमा खोटी जाणी, श्रीपाटणमाहि घणा देव हुआ। पछइ पातिसाह मुद्रा फरवदाना छापा आण्या, देहरा पाडवा भूल फरोसी न करवी। एकइ कहिउ-' ए परमेस्वर न मानें।' पछइ कादीइ साहिज दीधु। सीख दीधी। पछइ जिनमतीइ कहिउ-' चद्रमा तुरकना देवा। सूरज हिंदूना देव। ने आम्हें सूरज मानु छु।' पछइ पातिसा छाप कर दीधी। हवइ सवत् १५०८ ऋख श्रीनाना गुजरातमाहे हुआ। तिवार पछी ऋप श्रीभीम। ऋखि श्रीरतना। ऋखि श्रीकदा। ऋखि वीता। ऋखि श्रीसखा। ऋखि श्रीरूपा। ऋपि जीवराजजी। ऋखी चद। ऋपि श्रीलाल्जी प्रमुख हुआ। सवत् १५२० वर्षे श्रीजिनमा(शा)सन दीपतु हुउ। साधु साधवी श्रावक श्राविका पूजासतकार पाम्या।

❀

तिवारि सवत् १५०८ लुको गच्छ हुओ। मारग दीपाव्यो। पछि लुका मोकल्या पडीया। पछि ऋपि श्रीधरमसीरे मनमध्ये सदेह पडीओ, पछि गुर पासि आना मागिनि सवत् १७०१ श्रीधरमसीजी जिन्य(न)मारग दीपाव्यो। श्रीमहावीरनि वारि पच महाव्रत हुता ते सुध्य पालीया। निंदोप आहार कीना। पछि घणा पुरपनि तारिया। मिथ्यात मुकाव्या, सुध कीरीया पाली। प[छी] लोक 'ढुढिया' नाम दीधु। तिवार पछि ऋखि श्रीधरम श्रीमानी देवगत प(पा)मा अस सुद ४नी दिवस। तिवार पछी १ ऋखि श्रीसोमजि ऋपिश्री पयट व(बे)ठा। २. तिवारी पछि ऋपि श्रीमोघजी ऋपि पयट बठा। ३. तिवारि पछि ऋपि श्रीदवारक ऋपिश्री पट बठा। ४. तिवारी पछि ऋपि श्रीमोरार ऋपिश्री पयट बेठा। ५ तिवारी पछि ऋपि श्रीनथा ऋपिश्री पयट बठा। ६. तिवारि पछि ऋपि श्रीजअवदजि समीजि श्रीपयट बठा। ७. तिवारि पछि ऋपि श्रीमोरारजी समीजी पयट बठा। ८. तिवारी पछी ऋपि श्रीनाथा ऋपिश्री समीजी पयट बठा। ९. तिवारी पछि ऋपि श्रीजीवण ऋपिश्री पयट बठा। १० तिवारी पछी ऋपि श्रीमगजि ऋपिसमिजी पयट बठा॥

इति पयटावलि समपूर्ण।

लखितग ऋपि श्रीइसवरजी लखि छ॥ महसती मगनाइ आर्याजीनी छे॥

——

श्रीउदयसमुद्र रचिता

पूर्णिमागच्छगुर्वावली ।

णि ठामि तिणि ॥

अनुक्रमि दसपुव्वधर मुणिंद, सिरिवयरसामि पणमइ सुरिंद ।
तसु सीसवर जीणि गच्छ च्यारि, थाप्या सोपारापुर मझारि ॥
तिहिं चंद्रगच्छि गुणनिहाण, पुहु चंदप्पहसूरि जुगपहाण ।
विहिपक्ख गयणमंडण मयकु, कमि छत्र निकंदण मनि निमकु ॥
जिणि अणहिल्लपुर पाटण विदितु, चउरासी वादी सूरि जित्त ।
सावई पइट्ठ पूनिम पमाण, छई मासि नढक्कउ जिणह आण ॥
जणई चउपट ऊवट कीरीय दूरि, चउदसीआ दीक्षा पचसूरि ।
छत्तीस सूरि सिद्धत सार, उद्धरारी असजिमतणउरा भार ॥
तसु पढम सीसु सूरि धम्मघोष, सिद्धराय नमसीय रहीय रोष ।
जे निरीह सिरोमणि मणहराणि, परहरइ पचसई जिणहराणि ॥
जिणि अवहीअ मूकीय गकमन्नि, चूरेविणु दम्मह लप तिन्नि ।
एगतर वरिस पचास जेण, खीच कजीउ पारीय मणिवरेण ॥
सिरिदेवभद्दसूरि सुगुरुराउ, जिणदत्तसूरि पणमु धरीय भाउ ।
सिरिसतिभद्दसूरि गुरुपहाव, जगुणा जाणई निम्मल गुणसहाव ॥
जसु पट्ट महोच्छव वीरठामि, मेघमडप वूठउ पाद्रगामि ।
सिरिभुवणतिलकसूरि भुवणभाणु, सूरि रयणप्पह आगमि सुजाणु ॥
सिरिहेमतिलकसूरि कथुदुगि, गोधण जक्ख आणिउ जिणह मग्गि ।
वीनउउ नरेसर ममरसीह, पडिबोहीउ लिहीअ सुचद लीह ॥
सिरिहेमरयणसूरि नमउ पाय, पहु हेमप्पहसूरि गयकसाय ।
गुरु रयणसेहरसूरिवर पससु, जिणवरपयपकजरायहस ॥
दूसमि दलि भूयतलि जे भडति, नव नवगुणश्रेणिहि नितु वडति ।
सिरिरतनसागरसूरि मुणिवरिंद, श्रीसघह पूरइ मनि आणद ॥
चदणरस सीतल सीयल सार, गुणगणमणि सोहइ वह विचार ।
श्रीगुणसागरसूरि गुणभडारु, तम्हि वदिउ भवियण सव्वे वार ॥
जिनशासनभासन भानुरूप, समतागुणि गजइ मोहभूप ।
तसु पट्टि पइट्ठिय इगमगति, श्रीगुणसमुद्रसूरि गुरु जयति ॥
कलियुगि कल्पत्तर कामधेनु, चिंतामणि सुरघट सगुणश्रेणि ।
तरस पट्टि पूरव गणहर समान, श्रीसुमतिप्रभुसूरि उदयउ भाणु ॥
तस बधव नदन अतिउदार, बालापणि धरिउ गच्छभार ।
जनरजन गुरु सेवक साधार, श्रीय पुण्यरयणसुरि पुनि भडार ॥

तसु पाटि प्रगट गुरु गुणनिहाण, श्रीसुमतिरयण[सू]रि जुगपहाण ।
जस वाणी सरस अमी समाण, तुमि वदु भवियण नित सुजाण ॥ १८

इति गुरावली ।

❀

आज हरिख हईइ मझ्न अतिघणा, गुण गावा श्रीसहगुरु तणा ।
पुनिमपाखि निरमल जसधरू, श्रीसुमतिरतनसूरि मुनिवरू ॥ १
अन्तराय सवे निराकरी, यतिधर्म्म चिंतामणि चिति धरी ।
सात वरीसे संयम श्रीवरी, गुरुचरणकमल सेवा करी ॥ २
रूप निरुपम भाग्य सोहामणा, लक्षण गुणलावण्ये नीही मणा ।
दिन थोडे आगम बहु भण्या, ए महीयलि महिमा पुण्य तणा ॥ ३
सहजइ सललित रलीआमणा, विधि विनयादिक गुणमणि तणा ।
सोभागइ सिरिजबू जइया, निरखता गुरुनइ मनि वइया ॥ ४
मडवगढि साह देवा तणु, पुत्र करइ महोत्सव तिहा घणु ।
मान मागइ गुरुपद थापणई, मन विलसइ भावइ आपणइ ॥ ५
पन्नरसततालई वैशाख धरि, गुरु पचमि जग माडिउ सपरि ।
सवि सुजन रोमाचिऊ सशा, वेगट करइ सजाई हसमशा ॥ ६
कर जोडी पूज्य पाए नमइ, प्रभु पात्र कहु जे तुम्ह गमई ।
परिवार पूछी तव दाखीआ, जागराज जसादिक हरखीआ ॥ ७
नह्वण आवार करावीआ, अनुपम अलकार पहरावीआ ।
सूहवि सवि हेजि वधावीआ, दूरि दूजण दोष निवारीआ ॥ ८
नादि मडप घालया मोकला, चिहु दिसिना सत्र जोवा मल्या ।
रगि धवल मगल महिला दीइ, आवी लगनवेला आणदीइ ॥ ९
गुरुइ सइ हाथि वास आरोपीइ, विधिमारग किसिउ ना लोपीइ ।
श्रीसूरिमत्र काने निइया, परमाणद हृदयकमलि वस्या ॥ १०
वरीग पनरमइ सूरिपद लहई, नामई सुमतिरतनसूरि गहइ ।
गुरु आदेशइ उपदेश दीध, सुधारस वचन विलास कीध ॥ ११
घण वाजित्र वाजइ मधुर सरइ, याचिकजन जय जय उचरई ।
साहमीवत्सलि सवि करई पोषीइ, चउरासी गच्छ सतोपीइ ॥ १२
साते क्षेत्रे निज वित वावरइ, जीवराज कीरति जगि विस्तरई ।
आचारिज दिनि दिनि दीपता, तप तेजई रवि ससि जीपता ॥ १३
हृद पचमहाव्रत सादरू, छईतालीस दोष निरादरू ।
जिनशासनमडनसुदरू, सवि सुविहित साधु पुरदरू ॥ १४

शीतकाले यथा दीनाः प्रार्थयन्ति दिवाकरम् । उदयन्त निरीक्षन्ते तथाऽहं तव दर्शनात् ॥
अज्ञानतिमिरान्धाना ज्ञानाञ्जनशलाकया । नेत्रमुन्मिलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥
बहुया बहुया दिवसडा, जे मइ सुगुरु सदिट्ठ । लोचन बे विकसी रहिया, हईयडइ अमीयपइट्ठ ॥
यथा स्मरति गा वत्स , चक्रवाकी दिवाकरम । सती स्मरति भर्त्तार, तथाऽहं तुम(तव) दर्शनात् ॥
ते दीहाडउ दीह धुरि, ते रयणी सुकइत्थ । तमासह मूलह नही, जेह गुरु नयणे दिट्ठ ॥

❀

सिरि अमरराय पणमीय पाय, जगमडण वीर जिणदराय ।
पट्टोधर गणधर सुहम(म्म)सामि, तस पट्टि पइट्ठीय जत्रसामि ॥
तीणइ वशि प्रसिद्धउ सिद्धिगामि, गणहरचूडामणि वइरसामि ।
तस सीर वइरमणि गच्छ च्यारि, थाप्या सोपारापुर मझारि ॥
तिहिइ चद मणिंद कल सिणगार, आगमविहइ मडण गुणभडार ।
सूरी सिरिशीलगण मुणिंद, तउ देवभद्दसूरिमणि वइरद ॥
पट्ट धम्मघोषसूरि धम्मघोष, जसभद्दसूरि निद्दलीयदोप ।
तीणइ पट्टि पइट्ठीय तिन्नि सूरि, जस नामि पणासइ पाव दूरि ॥
पहिलु प्रभ सर्वाणदसूरि, दह दिसि जस वासीय जस कपूरि ।
शरिअभयदेवसूरि चयरसेण, चिउ गणहर निउ(ह)णे मोहसेण ॥
तउ मूलपट्टि महिमासमद्द, वादीसर सिरिसूरह जणह चद ।
लोलीआणइ वादि अढार दीस, छोडाव्या छागह जिण बत्तीस ॥
तउ विनयसिंहसूरि पट्टि तास, शरिअभयसिंहसूरि गुणनिवास ।
पडिबोहइ महीयलि भवीय जतु, विधिमारग प्रगटइ उलसतु ॥
नउ जस वाणी रसि अतिउदार, पालइ स(सु)विहित आचारसार ।
शरिअमरसिंहसूरिराज, पणमता तस पाइ सरइ काज ॥
तिणइ अनुक्रमि सोहगरि निहाण, शरिहेमरयणसूरि जगपहाण ।
स(सु)विहित जिन चूडामणिसारिच्छ, जेणइ सोभउ श्रीआगमह गच्छ ।
एकमना भवीयण जे थुणइ, नवनिद्धि कद्धि तीह घरि अगणइ ।
शरिअमररयणसूरि सगुरुराय, एहन(ने) शि[शि] प्रणमी जइ तास पाय ॥
श्रीसोमरयणसूरि पाइ प्रणाम, लीजता नासइ दुरिय नाम ।
शरिगुणनिधानसूरि गुणनिहाण, शरिउदयरतनसूरि अतिस जाण ॥
शरिसोभाग्यसुदरसूरि उदयु भाण, श्रीधर्म्मरत्नसूरि जुगपहाण ।
तस पट्टि प्रभाकर रवि समाण, देसण रस रजइ भवीय जाण ॥
आगमचह(विहि)इ संपि सचरति, श्रीमेघरत्नसूरिगुरू जयवति ।
श्रीधर्म्मरतनसूरिगुरू जयवति ॥

इति श्रीगुरुस्तुतिः ॥

सवत् १६८१ वर्षे आसो सुदि १ शुक्रे पूज्य भट्टार्क श्री ५ श्रीमेघरत्नसूरी । भाणजी लप्यत आगमगच्छे धधूकपक्षे